मासिक प्रकाशन • अक्तूबर '९८

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका



दिल को
ा बनाता है !

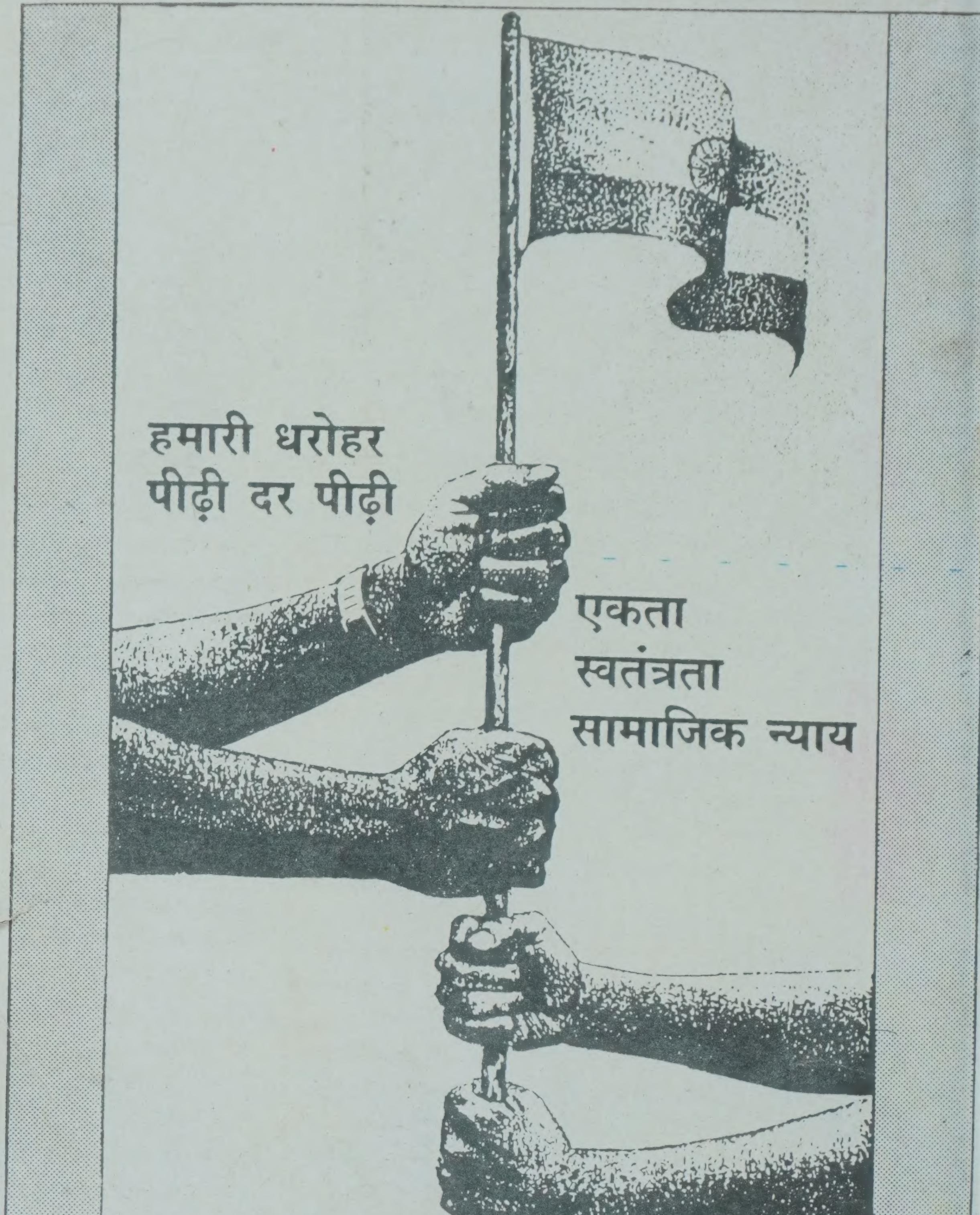
कैसे सुखी हों ?

में चलनेवाले
लोग

के
ारी
ठौर
ात हैं !

रुपए

ुस्तान टाइम्स प्रकाशन


हमारी धरोहर
पीढ़ी दर पीढ़ी
एकता
स्वतंत्रता
सामाजिक न्याय
davp94/236

प्रसिद्ध भविष्यवक्ता, प्रकाण्ड ज्योतिषी व हस्तरेखा विशेषज्ञ
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली की अनमोल पुस्तकें



पृष्ठः 312 • मूल्यः 40
डाकखर्चः 6/-

बृहद् हस्तरेखा शास्त्र

आप खुद अपने हाथ की रेखाएं पढ़कर अपना भविष्यफल जान सकते हैं । किसी पण्डित अथवा ज्योतिषी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। इस पुस्तक में पहली बार हस्तरेखा का प्रैक्टिकल ज्ञान चित्रों सहित समझाया गया है ।

हस्तरेखा के 240 विभिन्न योगों का पहली बार प्रकाशन जैसे-आपके हाथ में धन-संपत्ति का योग, पुत्र योग, विवाह योग, विदेश यात्रा योग आदि हैं या नहीं ?

आपके हाथ की रेखाएं क्या कहती हैं? कौन से व्यापार से आपको लाभ होगा ? नौकरी में तरक्की कब तक होगी ? पत्नी कैसी मिलेगी ? प्रेम में सफल होंगे या नहीं ? विवाहित जीवन सुखी होगा कि नहीं, कब होगा आदि । नेता बनेंगे या अभिनेता ? लेखक बनेंगे या प्रोफेसर ? विदेश यात्रा पर कब जायेंगे ? मन की शांति एवं कष्टों का कब अन्त है ? इत्यादि सैकड़ों प्रश्नों के उत्तर ।



पृष्ठः 272 • मूल्यः 40
डाकखर्चः 6/-

प्रैक्टिकल हिप्नोटिज्म

- सम्मोहन क्षेत्र का अद्‌भुत प्रायोगिक प्रामाणिक ग्रंथ, जिसमें हिप्नोटिज्म के मूल सिद्धांतों का सचित्र बेबाक प्रामाणिक विवरण है।
- ग्रंथ में भारतीय व पाश्चात्य दोनों विद्याओं का अपूर्व संयोजन होने से पुस्तक प्रामाणिक एवं संग्रहणीय हो सकी है ।
- पुस्तक में हिप्नोटिज्म को सरल-सरस ढंग से चित्रों द्वारा समझाया गया है जिससे साधारण पाठक भी एक अच्छा सम्मोहन विशेषज्ञ बन सकता है।
- पुस्तक में हिप्नोटिज्म के प्रकार, प्रयोग, शक्ति, हिप्नोटिज्म के सिद्धांत, त्राटक, भावना, इच्छा-शक्ति, न्यास, ध्यान, सम्मोहन के तथ्य आदि पर पूर्ण प्रामाणिकता के साथ सचित्र विवरण है।
- रोग-निवारण, कष्ट दूर करने व जीवन में प्रतिदिन आने वाली बाधाओं, समस्याओं व कठिनाइयों के निराकरण में इस पुस्तक का विवरण पूर्ण उपयोगी है।



पृष्ठः 380 • मूल्यः 40
डाकखर्चः 6/-

मंत्र रहस्य
मंत्र-शक्ति के चमत्कारों का अभूतपूर्व ग्रंथ

- मंत्र, मंत्र का मूल स्वरूप, मंत्र की मूल ध्वनि व उसके सफल प्रयोगों पर एक प्रामाणिक सचित्र पुस्तक।
- असंख्य दुर्लभ मंत्र व उसके प्रामाणिक प्रयोग, जिसके माध्यम से साधक एक सफल मंत्र-शास्त्री एवं ज्ञाता बन सकता है।
- जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए अद्‌भुत एवं आश्चर्यजनक ग्रंथ, जिसके माध्यम से साधक स्वयं के कष्टों को दूर करने में समर्थ हो सकता है ।
- तांत्रिक, मांत्रिक एवं अन्य सभी विद्याओं के प्रामाणिक मंत्रों का अपूर्व संग्रह।
- मंत्रों के मूल स्वरूप, मंत्र चैतन्य, मंत्र कीलन-उत्कीलन, मंत्र ध्वनि, मंत्र प्रयोग, मंत्र विनियोग एवं मंत्रों के सफल प्रयोगों के लिए एक प्रामाणिक सचित्र ग्रन्थ।

अपने निकट के बुक स्टॉल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुक स्टॉलों पर मांग करें । वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पताः

पुस्तक महल 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-2 फोनः 3268292-93
शाखाएं: • बंगलोर • बंबई • पटना फोनः 653644

VAN./007/93/H.



हॉकिन्स हैवीबेस

इन विक्रेताओं के पास उपलब्ध

दिल्ली: अशोक विहार ऊषा क्रॉकरीज़, 31. सेंट्रल मार्केट • **चाँदनी चौक** बाबुल, 1900 बैंक ऑफ़ इंडिया के सामने • भगवानदास जगन्नाथ, 633. कूंचा नटवां के सामने • **कनॉट प्लेस** जानकीदास एण्ड कं., 23. एफ़ • **कमला नगर** क्रॉकरी एम्पोरियम, 11/एफ़ • **करोल बाग** जैन बर्तन भण्डार, 2790 अजमल खाँ रोड • विशाल बर्तन भण्डार, 2568, अजमल खाँ रोड • **कोटला मुबारकपुर** भगवानदास अग्रवाल, 482/1, सुभाष मार्केट • राजस्थान हार्डवेयर स्टोर, एच.-482, सुभाष मार्केट • **कृष्णा नगर** श्री कृष्ण बर्तन स्टोर, डी 4/1 लाल क्वार्टर. • **लाजपत नगर** नेशनल बर्तन भण्डार, 34 सेंट्रल मार्केट • **मोती नगर** भूटानी बर्तन स्टोर, ए-5/49 मेन मार्केट • **पहाड़ गंज** फ़ैन्सी बर्तन भण्डार, 4553 मेन बाज़ार • **पश्चिम विहार** जैन बर्तन भण्डार (रजि) 43/5 ज्वालाहेड़ी मार्केट • **राजौरी गार्डन** न्यू वैरायटी स्टोर, जे 83, मेन मार्केट • **सदर बाज़ार** भारत क्रॉकरी हाऊस, 120, न्यू कुतुब रोड. • ब्रिज किशोर एण्ड सन्स, 4522, पहाड़ी धीरज • **सरोजनी नगर** वंदना, दुकान नं. 93 एस. एन. मार्केट • **सब्जी मंडी** क्रॉकरी एण्ड एलायड स्टोर, 1535 चन्द्रावल रोड • **वज़ीरपुर** चावला ब्रदर्स सी-3, वज़ीरपुर इन्डस्ट्रियल एरिया • **यूसुफ़ सराय** जैन यूटेन्सिल, 15/2, मंदिर वाली गली • मुनीलाल बिशन स्वरुप, 72/6 मेन मार्केट • राम किशन एण्ड सन्स, 72/7 मेन मार्केट.

बिहार: औरंगाबाद: ओल्ड जी.टी. रोड पर्ल एण्ड कं. • संगीता ☐ **बेगूसराय: मेन रोड** देव ब्रदर्स ☐ **भागलपुर: डी.एन. सिंह रोड** लाइट सेन्टर • मेला स्टोर्स ☐ **बोकारो स्टील सिटी: सेक्टर 4** बॉम्बे वैरायटी स्टोर्स, ई-13 सिटी सेन्टर ☐ **दलसिंगसराय: मेन बाज़ार** लक्ष्मी नारायणलाल, विजय शंकर प्रसाद ☐ **दरभंगा: लालबाग** लवली कॉर्नर • **टावर चौक** भारत स्टोर्स ☐ **डिहरीओनसोन: सिनेमा रोड** ग्लासीना ☐ **देवघर: श्याम गंज रोड** बैद्यनाथ इलेक्ट्रिक स्टोर्स ☐ **गया: जी.बी. रोड** पप्पू ट्रेडिंग.कं., गोल पत्थर ☐ **हज़ारी बाग: मालवीया मार्ग** जे.ए. भवन, आदर्श बाज़ार ☐ **जमशेदपुर: साकची बाज़ार** बिन्देश्वरी प्रसाद काली प्रसाद, डालडा लाइन • कुकर हाउस, 25 ओल्ड आलू लाइन • नील कमल स्टील सेन्टर, 24 ओल्ड आलू लाइन ☐ **कटिहार: मंगल बाज़ार** भौमिक ब्रदर्स • **शाह कटरा** रूप रंग, न्यू मार्केट रोड ☐ **खगड़िया: बैंक रोड** श्याम इलेक्ट्रिकल्स, सुपर मार्केट ☐ **लहेरियासराय: बाकरगंज** दयाल क्रॉकरी हाउस ☐ **मोतिहारी: मेन रोड** दुल्हन ज्वेलरी एण्ड स्टील हाउस ☐ **मुंगेर: टाउन हॉल रोड** जालान ट्रेडर्स ☐ **मुज़फ़्फ़रपुर: सरैयागंज** बजरंग स्टील हाउस • किचन किंग ☐ **पटना: अशोक राजपथ** स्टील कॉर्नर, बाँकीपुर पोस्ट ऑफ़िस के सामने • **बोरिंग रोड** एच.सी. एन्टरप्राइज़ेस, नेपाली कोठी, गैसोलिन पेट्रोल पम्प के सामने ☐ **पूर्णियाँ: भट्टा बाज़ार** लखनलाल एण्ड कं. ☐ **राँची: चर्च रोड** भोला मेटल स्टोर • **मेन रोड** कैलाश क्रॉकरी हाउस • (प्रभात) श्री हनुमान साईकल स्टोर्स • उदयन, पुरुलिया रोड के सामने ☐ **रक्सौल: बैंक रोड** पवन जनरल स्टोर्स • **पटेल पथ** सीकरिया ब्रदर्स ☐ **साहिबगंज: अग्रसेन चौक** सरस्वती साइकल एण्ड इलेक्ट्रिकल्स ☐ **सासाराम: नवरतन बाज़ार** अशोका स्टोर.

चण्डीगढ़: सेक्टर 15 डी इंडियन क्रॉकरी हाउस, दुकान नं. 45 • **सेक्टर 17 ई** जगतसिंह एण्ड सन्स, एस सी ओ 32 • **सेक्टर 19 सी** जैन ग्लास हाउस, एस.सी.एफ़ 14 • **सेक्टर 20 सी** कपूर चन्द पवन कुमार, एस्.सी.एफ़. 7 • **सेक्टर 22 डी** बावा शीश महल, एस.सी.एफ़. 16 • **सेक्टर 26** अगरवाल डिस्ट्रीब्यूटर्स शोरुम नं. 30. • **सेक्टर 35 सी,** न्यू इंडियन क्रॉकरी हाउस एस.सी.ओ. 89

हरयाणा: अम्बाला कैन्ट: सदर बाज़ार अलायड होम एप्लायसैन्स ☐ **एन.आई.टी. फ़रीदाबाद: मार्केट नं. 1** कृष्णलाल संजीव कुमार, दुकान नं. 116 ☐ **जगाधरी: मनोहर नगर** ओ.पी. मेटल इण्डस्ट्रीज़ ☐ **करनाल: जी.टी. रोड** नेशनल रेडियो एण्ड इलेक्ट्रिक कं. ☐ **रेवाड़ी: मोती बाज़ार** हरसहायमल सुखदेव सहाय ☐ **रोहतक: रेलवे रोड** प्रकाश क्रॉकरी हाउस ☐ **सिरसा: रोड़ी बाज़ार** अग्रवाल बर्तन भण्डार

मध्य प्रदेश: भिलाई: सर्कुलर मार्केट गार्गी जनरल स्टोर्स, 15/16 कैम्प नं. 2 ☐ **भोपाल: रोशनपुरा नाका** दर्वेश बर्तन भण्डार, टी.टी. नगर ☐ **बिलासपुर: सदर बाज़ार** कॉसमॉस क्रॉकरी सेन्टर • विजय स्टोर, गोल बाजार ☐ **देवास: सुभाष चौक** शंकरलाल लालूराम पात्र भण्डार, ☐ **धार: बोहरा बाज़ार** कुतुबी स्टोर, 16 ☐ **गाड़रवाड़ा: झंडा चौक** मंगल कलश ☐ **इन्दौर: आज़ाद सिलाई मशीन के नज़दीक** कुकर हाउस, 370 जवाहर मार्ग • **पिपली बाज़ार के पास** एन.आर. इलेक्ट्रॉनिक्स, 23 राम लक्ष्मण बाज़ार ☐ **जबलपुर: करमचंद चौक** स्टील पैलेस • **मढ़हाताल** इलेक्ट्रिकल्स एण्ड इलेक्ट्रॉनिकल्स, 7ए सिविक सेन्टर ☐ **कोरबा: मेन रोड** गणेश स्टील एम्पोरियम • **बजरंग टाकीज़ के पास** अग्रवाल ट्रेडर्स ☐ **कोतमा:** मोतीलाल पन्नालाल ताम्रकर, एस.बी. आई रोड ☐ **महू: तीन गली** बाबा प्लास्टिक एण्ड क्रॉकरी सेन्टर, 566 ☐ **नागदा: महात्मा गांधी मार्ग** रामचन्द्र प्रेम कुमार कसेरा, 99 ☐ **रायपुर: मालवीया रोड** सुराना सेल्स • सुरेश ब्रदर्स • **गिरधर भवन के पास** खेमराज जसराज, सदर बाज़ार • **गिरधर भवन के सामने** एम.एस. ट्रेडर्स, सदर बाज़ार ☐ **रतलाम: दो बत्ती** रुपायन ☐ **रींवा: कला मंदिर रोड** गुप्ता सेल्स कॉर्पोरेशन, सूर्य किरण बिल्डिंग ☐ **सागर: कटरा बाज़ार** मॉडर्न स्टोर, कटरा मस्जिद ☐ **सिवनी: बारा पत्थर** विशाल स्टील सेन्टर ☐ **उज्जैन: पटनी बाज़ार** महालक्ष्मी पात्र भण्डार, 125

प्रादेशिक वितरण तथा सेवा केंद्र: भोपाल: हमीदिया रोड रेडयो पैलेस, ३० शाह बिल्डिंग.

राजस्थान: अजमेर: स्टेशन रोड गोयल ब्रदर्स, केसरगंज ☐ **अलवर: होप सर्कस** जनता बर्तन भण्डार, 39 ☐ **भीलवाड़ा: बालाजी मार्केट** राजस्थान कमर्शियल कारपोरेशन, दुकान नं. 77 ☐ **जयपुर: नेहरू बाज़ार** अशोका डिपार्टमेंटल स्टोर, मयूर सिनेमा के पास • **राजा पार्क** लौंग लाइफ़ डिपार्टमेन्टल स्टोर, 372 गली नं. 1 • **त्रिपोलिया बाज़ार** महावीर जनरल स्टोर, 215 ☐ **जोधपुर: मेहता बिल्डिंग** सलूजा एजेन्सीज, रतनाड़ा रोड ☐ **खेतड़ी नगर: सुभाष मार्केट** अमर ज्योति फ़ैन्सी स्टोर, दुकान नं. 38 ☐ **श्री गंगा नगर: पब्लिक पार्क** लायलपुर बर्तन भण्डार, दुकान नं. 46-47 ए ☐ **उदयपुर: बापू बाज़ार** शाह लक्ष्मीलाल प्रकाशचन्द्र जैन, दुकान नं. 108 • **सूरजपोल के अन्दर** लकी स्टोर

उत्तर प्रदेश : इलाहाबाद: चौक गुर प्रसाद हीरालाल, जैन भवन. • **बिजली घर के निकट** नावेल्टी हाउस, 6 सी कमला नेहरू रोड • प्रिया स्टोर्स, 6 सी, कमला नेहरू रोड • **वी.एन. मार्ग,** डायमण्ड टी सेल्स, 43 चमेली देवी धर्मशाला के सामने ☐ **आगरा: जौहरी बाज़ार** दादा ग्लास एण्ड क्रॉकरीज़ ☐ **अलीगढ़: रेलवे रोड** गुलाटी स्टोर्स • जय भारत क्रॉकरी हाउस ☐ **अलमोड़ा: कचहरी के पास** आनंद

HC/3219/K/HN

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हो, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. **प्रकृत्या**— क. प्राकृतिक, ख. भौगोलिक, ग. स्वभाव से, घ. मौलिक।

२. **अद्वितीय**— क. बेजोड़, ख. अद्भुत, ग. निर्विकल्प, घ. एक ही।

३. **अधर्म्य**— क. दुष्कर्म, ख. निंदा, ग. धर्म-विरुद्ध, घ. कर्त्तव्यहीनता।

४. **आसीन**— क. वह चीज जिस पर बैठा जाए, ख. बैठा हुआ, ग. ठहरा हुआ, घ. स्थगित।

५. **आसेतुहिमाचल**— क. हिमालय तक, ख. भारतीय, ग. देश के विभिन्न भाग, घ. सेतुबंध रामेश्वर से हिमालय तक।

६. **कुलाचार**— क. सम्यक व्यवहार, ख. उच्च कुल का, ग. कुल की रीति-नीति, घ. वंश की रस्म निबाहना।

७. **धृतात्मा**— क. दृढ़ चित्तवाला, ख. युधिष्ठिर, ग. संन्यासी, घ. विरक्त।

८. **त्वरित**— क. यथाशीघ्र, ख. तीव्र गतिवाला, ग. शीघ्र लौटना, घ. अचानक।

९. **आशीर्वचन**— क. प्रार्थना, ख. विनय, ग. आशीर्वाद, घ. शुभ वाणी।

१०. **धृष्टता**— क. अपमान, ख. ढिठाई, ग. दृढ़ता, घ. असंयम।

११. **ध्वंसावशेष**— क. विनाश, ख. ऐसी बरबादी जिसमें कुछ शेष न बचे, ग. खंडहर, घ. पुरातत्त्व की चीज।

१२. **निवर्तमान**— क. बीता हुआ, ख. जो वर्तमान में न रहे, ग. अवकाश-प्राप्त, घ. जिसका अस्तित्व न हो।

१३. **समयोचित**— क. अवसर के अनुकूल, ख. समय के साथ-साथ, ग. सामयिक, घ. वर्तमान समय का।

उत्तर

१. ग. स्वभाव से। वह **प्रकृत्या** सहनशील है। (व्युत्. -प्र.कृ.)

२. क. बेजोड़। ख. अद्भुत। कश्मीर का प्राकृतिक सौंदर्य **अद्वितीय है**। (अ+द्वि+तीय)

३. ग. धर्म-विरुद्ध। नैतिकता के विपरीत आचार **अधर्म्य है**। अ+धर्म्य (व्युत्. -धृ)

४. ख. बैठा हुआ। वह उच्च पद पर **आसीन** है। (व्युत्. -आस्)

५. घ. सेतुबंध रामेश्वर से हिमालय तक। भारत सहस्रों वर्षों से **आसेतुहिमाचल** सांस्कृतिक एकता में आबद्ध रहा है। (आ+सेतु+हिमाचल)

६. ग. कुल की रीति-नीति। **कुलाचार** का पालन करना चाहिए। कुल+आचार

(व्युत्. –आ, चर्)

७. क. दृढ़ चित्तवाला, धीर। भगवान विष्णु **धृतात्मा** कहे जाते हैं। (धृत+आत्मा)

८. ख. तीव्र गतिवाला, फुर्तीला, तेजी से। वह आदेश का पालन **त्वरित** करता है।
(व्युत्. –त्वर)

९. ग. आशीर्वाद। यह गुरु के **आशीर्वचन** का प्रताप है जो फलीभूत हुआ है।
(व्युत्. –आशिस्)

१०. ख. ढिठाई, उद्दंडता। जो छात्र **धृष्टता** दिखाते हैं वे दंडित होते हैं। (व्युत्. –धृष्)

११. ग. खंडहर। पुरातात्त्विक **ध्वंसावशेषों** से प्रकट होता है कि भारत प्राचीनकाल से सभ्य और सुसंस्कृत रहा है। (ध्वंस+अवशेष)

१२. ग. अवकाश-प्राप्त (रिटायर्ड)। **निवर्तमान** उच्चाधिकारी के संस्मरणों से स्थिति पर सही प्रकाश पड़ा है। नि+वर्तमान
(व्युत्. –वृत्)

१३. क. अवसर के अनुकूल। प्रशासन को **समयोचित** कार्रवाई करना चाहिए।
(समय+उचित)

पारिभाषिक शब्द

Precaution = पूर्वोपाय/एहतियात
Objection = आपत्ति
Occupation = व्यवसाय/धंधा
Negligence = उपेक्षा/गफलत
Qualified = अर्हता-प्राप्त/योग्य
Adjacent = संलग्न
Opposite = विपरीत/खिलाफ

ज्ञान-गंगा

अदृष्टो द्रष्टा।

(बृहदारण्यक उपनिषद् ३/७/२३)

आत्मा स्वयं अदृष्ट रहकर भी द्रष्टा है, देखनेवाला है।

क्षमा गुणो ह्यशक्तानां, शक्तानां भूषणं क्षमा।

(महाभारत, उद्योगपर्व ३३/४९)

क्षमा असमर्थ मनुष्यों का गुण है, तथा समर्थों का भूषण है।

कारणगुणपूर्वकः कार्यगुणो द्रष्टः।

(वैशेषिक दर्शन २/१/२४)

कारण के गुणों के अनुसार ही कार्य के गुण देखे जाते हैं।

प्राक्तनं पौरुषं तद् वै दैवशकेन कथ्यते।

(योगवाशिष्ठ ६/३५)

पूर्वजन्म का पौरुष ही यहां इस जन्म में व्यक्ति का दैव कहलाता है।

मनसः परिणामोऽयं सुखदुःखादिलक्षणः।

(विष्णु पुराण)

सुख-दुःख वस्तुतः मन के ही विकार हैं।

कार्यमणवपि काले तु कृतमेत्युपकारताम्।
महानप्युपकारोऽपि रिक्ततामेत्यकालतः॥

(योगवाशिष्ठ ७/२६)

समय पर थोड़ा भी कार्य किया जाए तो वह बहुत अधिक उपकारक होता है। असमय में बड़े-से-बड़ा उपकार भी निष्फल चला जाता है।

—महर्षि कुमार पाण्डेय

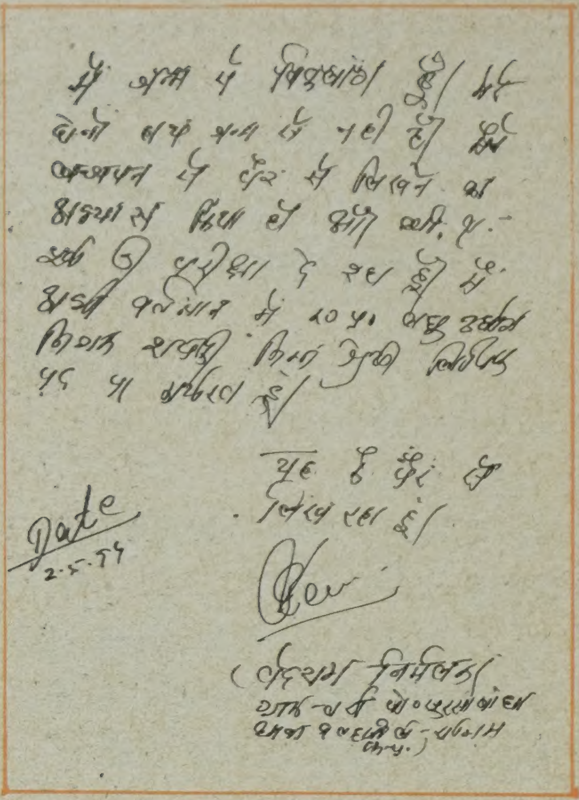
आस्था के आयाम

विकलांगता जीवन की चुनौती में बाधक नहीं

कौन कहता है कि आकाश में सूराख नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो ।

कवि दुष्यंत कुमार की इन दो पंक्तियों ने अब तक जाने कितने ही नौजवानों में जोश भरा है किंतु जिस नौजवान के हाथ ही न हो वह क्या करे, कैसे पत्थर उछाले ? रायपुर निवासी श्री वेदराम निर्मलकर एक ऐसे ही नौजवान हैं, जिन्हें कुदरत ने दोनों हाथों से वंचित रखा है । पर




मैं जन्म से विकलांग हूं। मेरे
दोनों हाथ जन्म से नहीं हैं। मैंने
बचपन से पैर से लिखने का
अभ्यास किया है और बी. ए.
पूर्व की परीक्षा दे रहा हूं। मैं
[illegible]

यह मैं पैर से
लिख रहा हूं।

Date
2.5.94

(वेदराम निर्मलकर)
[illegible]

वेदराम ने फिर भी हार नहीं मानी, उन्होंने हाथ से न सही, पैर से पत्थर उछाला और देखते-ही-देखते एक ग्रामीण, अनपढ़, गरीब परिवार से निकलकर रायपुर-जैसे बड़े शहर में अपने पैरों के भरोसे न केवल आजीविका का साधन जुटाया, वरन आर्थिक कमी के कारण रुकी हुई अपनी शिक्षा भी पुनः प्रारंभ की । इस वर्ष वेदराम स्वाध्यायी छात्र के रूप में बी. ए. पूर्व की परीक्षा दे रहे हैं । मैंने उन्हें परीक्षा हाल में परीक्षा देते हुए ही पहली बार देखा । पैर में पेन फंसाये उन्हें लगातार तीन घंटे दत्तचित्त हो, सुंदर अक्षरों में प्रश्न हल करते देखना अपने आप में रोमांचक है । (प्रस्तुत चित्र परीक्षा हाल का ही है)

जहां तक पत्थर उछालने की बात है, वेदराम सचमुच पैर से पत्थर भी उछाल लेते हैं । एक इंटरव्यू में उन्होंने बताया कि बचपन में अपने

साथियों को पत्थर मारकर आम, इमली तोड़ते देखकर उन्हें भी पत्थर चलाने की तबीयत होती थी। पर हाथ तो थे नहीं, सो उन्होंने पैर में पत्थर फंसाकर निशाना लगाना शुरू किया और शीघ्र ही उसमें कामयाब हुए। इस कामयाबी ने उनमें जोश भरा। फिर तो साथियों के साथ-साथ वे स्कूल भी पहुंच गये और स्वयं ही अपना दाखिला भी करवा लिया। पैर में पेंसिल फंसाकर लिखना सीखने में उन्हें अपने साथियों की तुलना में जरूर कुछ ज्यादा वक्त लगा, किंतु एक बार जो अक्षर-यात्रा शुरू हुई तो फिर रुकी नहीं।

जहां अधिकांश साथियों ने पांचवीं के पहले या पांचवीं के बाद पढ़ना छोड़ दिया वहां वेदराम ने पांच किलोमीटर दूर दूसरे गांव के मिडिल स्कूल में दाखिला लिया, फिर हायर सेकेंड्री और फिर कॉलेज में भी पहुंचे। आर्थिक तंगी की वजह से पढ़ाई बीच में ही रोकनी पड़ी। हालांकि वेदराम के अन्य चार भाई लगभग अनपढ़ हैं, किंतु उनकी पढ़ाई का बोझ उठाना भी गरीब मजबूर पिता के लिए भारी था।

इसलिए कॉलेज की पढ़ाई बीच में छोड़कर वेदराम ने नौकरी की तलाश शुरू की। अंततः मुश्किलों के बीच उन्हें लघु उद्योग निगम में लिपिक का पद मिला जहां वे वर्तमान में कार्यरत हैं। किंतु उनकी मंजिल तो अभी आगे है तभी तो उन्होंने वर्षों बाद स्वाध्यायी छात्र के रूप में पुनः परीक्षा देनी प्रारंभ की है।

वेदराम को अपनी अपंगता का कोई मलाल नहीं है और हो भी क्यों ? कौन सा काम है जो वे नहीं कर पाते हैं। जो बिना हाथों के सुई में धागा डाल लेता हो, साइकिल चला लेता हो, उसे तकदीर की कमतरी का मातम मनाने की फुरसत कहां है भला। ऐसे ही लोगों के लिए तो किसी शायर ने कहा है—

ऐसा नहीं की हर तरफ खुश्क हो जमीं,
प्यासे जो चल पड़ेंगे दरिया भी आएगा

—डॉ. शोभा निगम

एक बंदी गणितज्ञ

वह दो हत्याओं के मामले में आजन्म कारावास भुगत रहा था। जेल की एकांत कोठरी में यदि उसके लिए कोई आलंबन बचा तो वह गणित विषय था। उसने गणित और विज्ञान विषय लेकर इंटरमीडिएट किया था। जेल में उसे गणित का गहराई से अध्ययन करने का समय मिला। गणित ने ही उसे जीवन के प्रति नयी आस्था दी। धीरे-धीरे उसके सामने गणित के रहस्य खुलते गये और उसने लगभग असंभव समझे जानेवाले अनेक प्रश्नों का समाधान भी कर लिया।

इस बंदी गणितज्ञ का नाम है— शिवाजी राव गेडशीकर।

गेडशीकर के अनुसार वह कुतुबनुना और पटरी से वृत्त का वर्गीकरण कोण का समत्रिभाजन कर सकता है।

उसके काम को प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. जयंत नारलीकर और डॉ. एन. सी. राणा ने कंप्यूटर से जांचा है।

नागपुर विश्वविद्यालय के गणित विभाग के प्रमुख डॉ. टी. एम. कराडे ने इस मौके पर कहा कि श्री मेडशीकर ने अंतरराष्ट्रीय छाप छोड़ी है ●



सिर्फ सत्ता का लक्ष्य

सांप्रदायिकता प्रेरित मारकाट, हिंसा कभी धर्म युद्ध नहीं होती । धर्म का समर्थन सियासत के खिलाड़ी शक्ति और सत्ता के लक्ष्य संधान में करते हैं । आध्यात्मिक दर्शन के दृष्टिकोण से धर्मयुद्ध शब्द से हमारा परिचय महाभारत काल से ही है । 'महाभारत' ऐसा ही एक धर्मयुद्ध था, जिसमें धर्म की अर्थवत्ता, मानवीयता एवं न्यायिक मूल्यों से जुड़ी हुई थी ।

'कादम्बिनी' के अगस्त '९४ में प्रकाशित रिपोर्ताज 'पाकिस्तान में मुहाजिरों पर अत्याचार की दर्दनाक दास्तां'— पाकिस्तान-जैसे इसलामी देश में मुसलमानों के एक तबके की दोयम दरजे की स्थिति का परदाफाश करता है । ये वही मुल्क है जो कश्मीर के सिलसिले में मुसलमानों के अधिकारों को लेकर जनमत संग्रह की वकालत करता है । यह रिपोर्ट हिंदुस्तानी अकलियत की आंखों पर लगी पट्टी को खोल पाने में सहायक होगी ।

मजहबी उसूलों के हिमायती सोचें कि स्त्री के प्रति चरम अमानवीय प्रतिहिंसा की काली छाया में आध्यात्मिकता का कौन-सा परम लक्ष्य हासिल होना संभव है । निश्चय ही यह रिपोर्ट हिंदू राष्ट्रवाद, मुसलिम राष्ट्रवाद, ईसाई राष्ट्रवाद आदि चीजों के स्थान पर भारतीय राष्ट्रवाद को विकास के लिए प्रेरित कर सकेगा । यथार्थतः धर्म एक जीवन दृष्टि है पूर्णतः मानवीय । निश्चय ही पाकिस्तान में मुहाजिरों की त्रासदी पाकिस्तान के इसलाम मुल्क समाज में मजहब के सियासी पहलुओं की पोलपट्टी खोलती है ।

— संजय अनिकेत दाऊदनगर (बिहार)

इस लेख पर हमें काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं । कुछ पाठकों के नाम : रामशंकर त्रिपाठी; मनकापुर (गोंडा); ऋषिकेश प्रसाद, जमालपुर; मुकेश भारद्वाज, अलीगढ़; सरोज कुमार दीक्षित, लखनऊ; भगवत स्वरूप शर्मा, ऋषिकेश; शकुनचंद गुप्त, लालगंज; खुर्रम बरेलवी, बरेली; आयशा, भोपाल ।

कपड़े के धागे की तरह

अंतर्मन में एक विचार हमेशा उठता रहता है कि हिंदू हो, मुसलमान हो या अन्य कोई, वह अपने आप को सबसे पहले आदमी क्यों नहीं समझता । 'न हिंदू है कोई न है कोई मुसलिम यहां' लेख पढ़कर सुखद अनुभूति हुई ।

साठे क्षेत्र के अलावा भी देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां हिंदू और मुसलमान भाई-भाई की

अनुवादक

अगस्त अंक में तमिल कहानी, 'मोहक गुलाब की मनोरम सृष्टि' का अनुवाद डॉ. पी. के. बालसुब्रह्मण्यन ने किया है ।

तरह रहते हैं। उत्तर प्रदेश का ललितपुर शहर भी इस बात की मिसाल है। यहां सदनशाह बाबा की मजार पर हिंदू और मुसलमान दोनों जाते हैं। यहां हिंदू और मुसलमान कपड़े के आड़े-खड़े धागों की तरह बुने हुए हैं।

दीपावली हो या नवरात्रि दुर्गा उत्सव, ईद मुबारक हो या मुहर्रम के ताजिया दोनों संप्रदाय के लोग बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। ६ दिसम्बर '९२ के पहले के दिनों की बात है, देश में दोनों संप्रदाय के लोगों के बीच संबंधों में एक सन्नाटा छाया था। ऐसे दिनों में भी ललितपुर इन सब बातों से अछूता रहा।

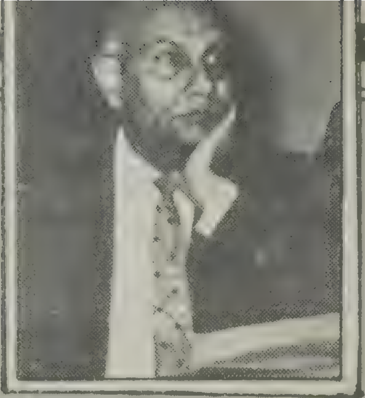
सच बात तो यह है कि सांप्रदायिकता को हवा राजनीति देती है। सांप्रदायिकता तो जहरीला नाग है, जिसकी जगह सभ्य समाज में नहीं बिलों में है। लेकिन राजनेता इस जहरीले नाग को मारने के लिए हांका लगाकर उसे बिल से बाहर निकालते हैं।

— **महेश प्रकाश श्रीवास्तव**, मेहर (सागर, म. प्र.)

गाजियाबाद जिले के साठे क्षेत्र के बारे में पढ़कर ऐसा अनुभव हुआ, मानो साठा क्षेत्र कीचड़ में कमल हो। हिंदू-मुसलिम के सौहार्द्र की गाथा कह रहा साठे क्षेत्र से हमारे देश के जागरूक देशवासियों को नसीहत लेनी चाहिए।

— **राकेश करहेरिया**, लश्कर, ग्वालियर

अगस्त माह की 'कादम्बिनी' के 'काल-चिंतन' की समग्रता को यदि दो सशक्त पंक्तियों में समाहित-अभिव्यक्त करना चाहें, तो



श्री लक्ष्मी निवास बिड़ला नहीं रहे

भारतीय उद्योग के पितामह स्व. श्री घनश्यामदास जी बिड़ला के ज्येष्ठ पुत्र एवं बिड़ला परिवार के प्रमुख श्री लक्ष्मीनिवास जी बिड़ला का २९ अगस्त १९९४ को लंदन में हृदय गति रुकने से निधन हो गया । स्व. श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला देश के प्रमुख उद्योगपति थे । इसके साथ ही वे विद्वान, लेखक, एवं चिंतनशील व्यक्ति थे । उन्होंने हिंदी एवं अंगरेजी में अनेक पुस्तकें लिखी हैं । सस्ता साहित्य मंडल के अध्यक्ष के रूप में उनकी हिंदी-सेवा सदैव स्मरण की जाएगी ।

श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला १९६७-६८ में फिक्की के अध्यक्ष रहे । इसके पूर्व १९५१-५२ में वे इंडस्ट्रियल चैंबर ऑव कॉमर्स, कलकत्ता के अध्यक्ष थे । पश्चिम बंगाल सरकार के उद्योग बोर्ड के भी अध्यक्ष पद पर वे रहे । राजस्थान चैंबर ऑव कॉमर्स के भी वे अध्यक्ष रहे । रूस ने उनके योगदान के लिए उन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया था तथा १९८६ में उन्हें भामाशाह पुरस्कार मिला था ।

स्व. बिड़ला अपने पीछे एक पुत्र श्री सुदर्शन कुमार बिड़ला और दो पुत्रियां श्रीमती उषा देवी एवं श्रीमती स्नेहलता माहेश्वरी छोड़ गये हैं ।

स्व. श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला कादम्बिनी के लेखक परिवार के सदस्य रहे हैं । 'कादम्बिनी' परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि ।

— संपादक

निम्नलिखित शेर उद्धृत करना पर्याप्त है—

''कितनी दीवारें खड़ी हैं एक घर के दरम्यां ?
घर कहीं गुम हो गया दीवार-ओ-दर के दरम्यां !''

— प्रो. समरेन्द्र सराफ, सागर

'कादम्बिनी' उत्तम श्रेणी की मासिक पत्रिका है । मैं जब ३ रुपये में आती थी, तभी से इसकी शिष्या हूं । सबसे अति उत्तम श्रेणी का है 'काल चिंतन', इसकी तुलना के लिए मुझे कोई पत्रिका नहीं मिली । पत्रिका में से दस वाक्य, 'जीवन एक चुनौती है इसका सामना करो' ऐसे दस वाक्य रोल अप पर लिखवाकर टांग रखे हैं ।

— दयावती शर्मा,
डंगरिया, (जि. श्रीगंगानगर)

'कालचिंतन' का एक-एक वाक्य साहित्य की निधि है । मैंने तो इन्हें कागजों पर लिखकर दीवारों पर टांग रखा है । जैसे ''वह धरती ही तो है जहां नश्वरता और अमरता के बोल सदियों की संपत्ति बनते हैं ।''

— अमित अवस्थी, पीलीभीत

विज्ञान की छात्रा होने के कारण शुरू में 'कादम्बिनी' से संपर्क न रख पायी । इसी वजह से साहित्य से भी पहचान न हो पायी । लेकिन जब से 'कादम्बिनी' का साथ मिला है, तब से ऐसा महसूस होने लगा है कि साहित्य में मेरी रुचि बढ़ती जा रही है ।

आज के इस दौर में एकमात्र 'कादम्बिनी' ही ऐसी पत्रिका है जिसमें साहित्य के साथ चिकित्सा, तकनीकी, चिंतन, यात्रा-संस्मरण आदि पक्षों को भी बराबरी का साथ मिला है ।

— शुभा मिश्रा
मनकापुर, जिला— गोंडा (उ.प्र.)

कायरों से आशा नहीं

अगस्त अंक में लेख, 'ओ राष्ट्रवादियो, कायरों से कोई आशा न करो' पढ़ा । लॉर्ड लिटन के जमाने में ६४४ समाचार-पत्र भारत में चल रहे थे । भारतीय समाचार-पत्र अंगरेजी और भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होते थे । उस समय भारत में कुछ आंग्ल समाचार-पत्र भी थे जो सदा सरकार का पक्ष लेते थे । इनमें 'टाइम्स ऑव इंडिया', 'मद्रास मेल', 'स्टेट्समैन' तथा 'सिविल एंड मिलिटरी गजेट' आदि पत्र शासकवर्ग के प्रवक्ता थे ।

इन पत्रों की चुनौती का उत्तर देने के लिए उसी युग में 'अमृत बाजार पत्रिका' (१८६८) 'ट्रिब्यून' (१८७७) 'पॉयनियर' (१८७९) का प्रकाशन आरंभ हुआ, इन्होंने राष्ट्रीयता का आदर्श ग्रहण किया । शिक्षा के प्रचार के साथ इन पत्रों का प्रकाशन तथा संचालन तीव्र गति से बढ़ता गया, जिसके कारण १८७७ में देशी भाषाओं में बंबई प्रेसीडेंसी और उत्तर भारत में ६२ तथा बंगाल एवं दक्षिण भारत में क्रमशः २८ एवं २० समाचार-पत्र प्रकाशित होते थे जिनके नियमित पाठकों की संख्या एक लाख थी ।

सर चार्ल्स मेटकॉफ़ ने भारतीय भाषाओं के समाचार-पत्रों पर से प्रतिबंध हटा लिया था, जिससे इनकी संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई । किंतु लॉर्ड लिटन ने आते ही समाचार-पत्रों की आलोचना से घबराकर उन्हें कानून के शिकंजे में कसने के लिए उनकी स्वतंत्रता का अपहरण करनेवाला 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' (१८७८) पारित किया । इस अधिनियम का समूचे देश में विरोध किया गया । लॉर्ड लिटन के बाद लॉर्ड रिपन (१८८०-८४) भारत का वायसराय बनकर आया जिसने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को रद्द करार दिया ।

— वनिता सिन्हा

द्वारा/श्री अनूप कुमार सिन्हा, एच. एन. लेन, रेलवे क्रासिंग के निकट, पोस्ट— रमना आमगोला, मुजफ्फरपुर

जीवंत धर्म

जुलाई अंक 'जीवंत है बारह धर्म' शीर्षक लेख में लेखिका ने मत व्यक्त किया है कि इसलाम तलवार की नोक पर फैला है लेकिन इसलाम के प्रचार-प्रसार का एक बड़ा कारण उसकी सादगी, और दावत ही है। आज भी अनेक देशों में लोग स्वेच्छा से यह धर्म अपना रहे हैं ।

— आबिद मजीद इराकी,

जहांनाबाद (बिहार)

अगस्त अंक में स्वर्गीय गोपालसिंहजी नेपाली से संबंधित लेख 'उड़ री चिनगारी' पढ़कर पुरानी यादें झिलमिलाने लगीं आंखों में । कदाचित सन १९६४ की ही बात है । ग्वालियर में आयोजित एक साहित्य-समारोह में नेपालीजी ने अपना वह अनूठा गीत सुनाया था—**'कोई खिड़की से यूं न निहारा करे, मन दुबारा, तिबारा पुकारा करे ।'** मुझे बहुत अच्छी तरह से याद है— गीत के बोल यही थे । लेकिन श्री प्रियदर्शन नारायणजी ने लिखा है कि ''खिड़कियों से न कोई निहारा करे...'' यह कुछ अटपटा-सा लग रहा है ।

— आर. पी. कटारिया,

जयपुर

वर्ष ३४, अंक १२, अक्तूबर, १९९४

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

कादम्बिनी आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

कविताएं

आवरण– छाया : ब्रह्मदेव पारदर्शी : अरुण बेसेकर

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कहानियां एवं व्यंग्य

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : **दुर्गाप्रसाद शुक्ल,**
मुख्य उप-संपादक : **भगवती प्रसाद डोभाल,**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज,**
उप-संपादक :: **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह,** प्रूफ-रीडर : **प्रदीप कुमार,**
कला विभाग-प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी,**
चित्रकार : **पार्थ सेनगुप्त ।**

संपादकीय पता : **'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।**

फोन : ३३१८२०१/२८६
टेलेक्स : ३१-६६३२७,
फैक्स : ०११-३३२११८९

चंदे की दरें :

मूल्य : **९५ रुपये; द्विवार्षिक : १८५ रुपये;** विदेशों में : **पाकिस्तान, भूटान और नेपाल; विमान से ३४० रुपये; समुद्री जहाज से १४० रुपये ।** अन्य सभी देशों के लिए : **विमान से ५१० रुपये; समुद्री जहाज से १९० रुपये ।**

शुल्क भेजने का पता :
प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि.,
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१ ।

काल-चिंतन

प्रश्न
प्रश्न
प्रश्न !
प्रश्न करना उसकी आदत थी । प्रश्न करते-करते समय बीत गया ।

□

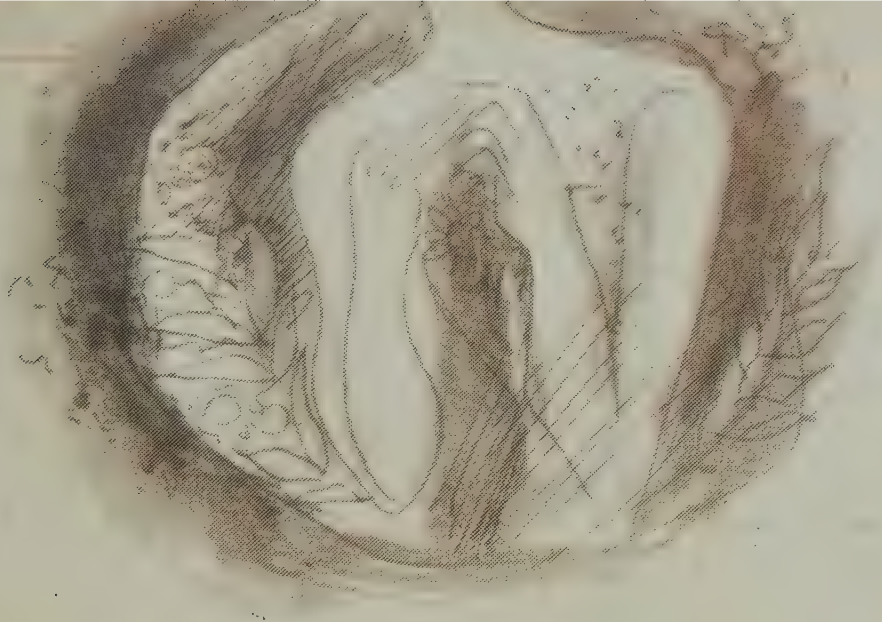
—वह निरंतर प्रश्नों के घेरे में आवृत्त रहा और अपने बौद्धिक तत्वों से उलझता रहा ! उसने कभी समझा ही नहीं कि प्रश्न उभरा है तो उत्तर अवश्य होगा ।
—कई व्यक्ति ऐसे होते हैं जो सत्य और तथ्य के बीच भेद नहीं कर पाते ।
—सत्य जहां है, असत्य रहना अनिवार्य है ।
—तथ्य है तो भ्रम का अंकगणित अमिट नहीं हो सकता ।

□

—अपनी बात के लिए मैं कुछ बातें पूछना चाहूंगा :

- *आपको अपने जन्म का ज्ञान है ? आपने जन्म लिया तो स्वेच्छा का मानदंड किसके पास था ?*
- *युवा होने पर बौद्धिकता के द्वार किसने खोले थे ?*
- *बौद्धिक द्वार अवरुद्ध रह गये तो जिम्मेदार कौन है ?*
- *अपने क्रिया-कलापों के अभियंता क्या आप स्वयं हैं ?*
- *जीवन के अंतिम क्षणों का इतिहास कौन लिखता है ?*
- *जीवन के बाद शेष रहने या न रहने का अभिमत निर्धारित कहां से होता है ?*

□



—लीजिए, उसकी आदत प्रश्न करने की थी, हमने प्रश्नों के द्वार खोल दिये । ये अनंत हैं ।

—प्रश्न सदैव अनंत होते हैं, उत्तर हवनकुंड की समिधा है, वह भ्रम में नहीं जीता, उत्तर एक हो न हो ; होता है शिलालेख की तरह, आवृत्त भले करते रहें इतिहास के पृष्ठ या कोरे कागज पर आड़ी-तिरछी लकीरें खींचनेवाले परिपक्व किंतु बालबुद्धि से अल्पज्ञानी ।

● ज्ञान, अज्ञान की मथानी से ही निकला वह अंतिम सत्य है जो असत्यों से निरंतर युद्धरत रहा है और अंततः अपने गंतव्य तक पहुंचा है ।

● मथानी के इस आग्रहपूर्ण विवेचन को मेरुदंड माना जा सकता है ।

—तब सत्य सहस्र ऊर्जाओं से ओत-प्रोत किसी परख का मुहताज नहीं होता ।

—सत्य स्वर्ण कलश है, सत्य विनष्ट धातुओं को भस्म कर शेष रहनेवाला तत्व है ।

—सत्य काल और परिधि की सीमाओं के परे है क्योंकि उसने पहले ही सबको भस्मसात किया है ।

□

—जन्म हमारी नियति नहीं है ।

—जन्म अजन्मे क्षणों की प्रयोगशालाओं और प्रतिबंधित धारणाओं-अवधारणाओं का वह अवगाहन है जहां आकृति-रासायनिक प्रक्रिया बनती है और हम वहां होते ही नहीं ।

—युवा स्थिति को लीजिए :

● युवावस्था ही हमारा साम्राज्य है । हम अपने को आपेक्षित आकांक्षाओं के



साथ सम्राट बना सकते हैं या नहीं, हमारी ऊर्जा शक्ति में निहित है ।

● यही मनुष्य-जीवन का स्वर्णयुग है । इसी स्वर्णयुग में अभिषेक होते हैं, इसी स्वर्णयुग में अपराधों के द्वार खुलते हैं, इसी स्वर्णयुग में नश्वरता-अनश्वरता का वातायन बनता है ।

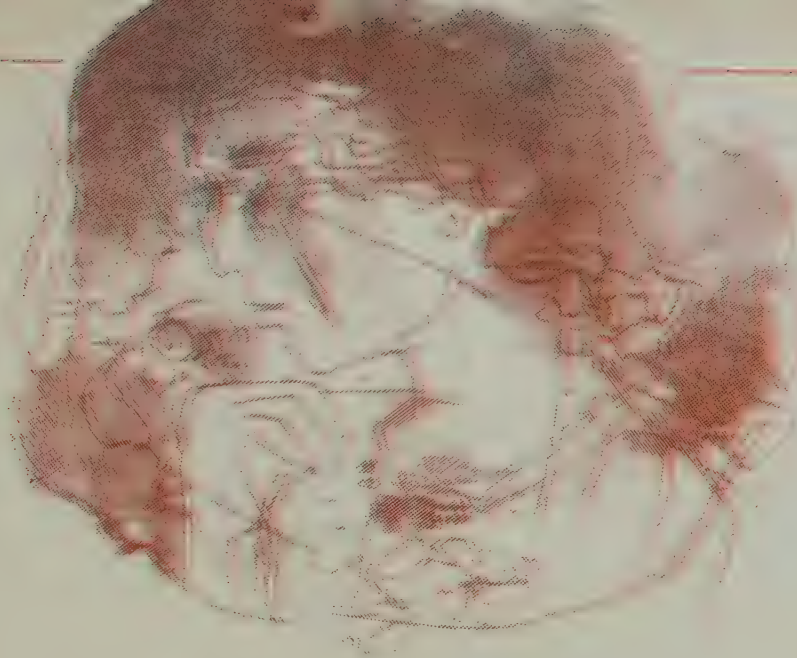
● यह स्वर्णयुग सीमित भी है, असीमित भी है । यह निर्भर करता है मनुष्य जीवन की समस्त जीवन प्रक्रिया और उन अवधारणाओं पर जो जाने-अनजाने फिसलकर पारे की तरह चुपचाप प्रवेश कर जाते हैं । कई बार ये महावन की जंगली घासों में पनपते कीड़े हैं और या तो विध्वंसक सर्प बनते हैं अथवा जुगनू बनकर महा-अंधकार को चुनौती देते हैं ।

● सच पूछा जाए तो युवा-अवस्था ही हमारे समूचे जीवन की कथा-गाथा है । इसे सम्हालकर रखिए, वरना इसका गुण अद्‌भुत है—यह कस्तूरी मृग हो सकता है । इसके विपरीत यह कपूर भी होता है, कब उड़ जाए, पता नहीं ।

—यौवन कस्तूरी मृग बना तो ऐश्वर्य और सनातनता के राजमहल बनते हैं ।

—यौवन कपूर बना तो किसी भी क्षण उड़कर परागहीन पुष्प की तरह विनष्ट होने को छोड़ देता है ।

—बचाइए अपनी युवावस्था और युवा मानसिकता को, वह शक्ति पैदा कीजिए जो ऊर्जास्रोत को बलवती बनाये और भोग के समस्त द्वार खुलते जाएं । ऐसा न हो कि शेष रहे उड़े कपूर का वह खालीपन जो पछतावे में छोड़ जाए कि स्वर्णकाल तो था, योग्यता हमें पीछे धकेलती रही । जीवन के स्वर्णिम पृष्ठ भोग, ग्राह्यता, स्वीकार्य, मेरुदंड का सम्यक् सीधा आकार और प्राप्ति के महाप्रसाद से हमें सदा वंचित करते रहे ।



—हर क्षण को भोगिए क्योंकि हर क्षण हीरे से भी मूल्यवान है ।

□

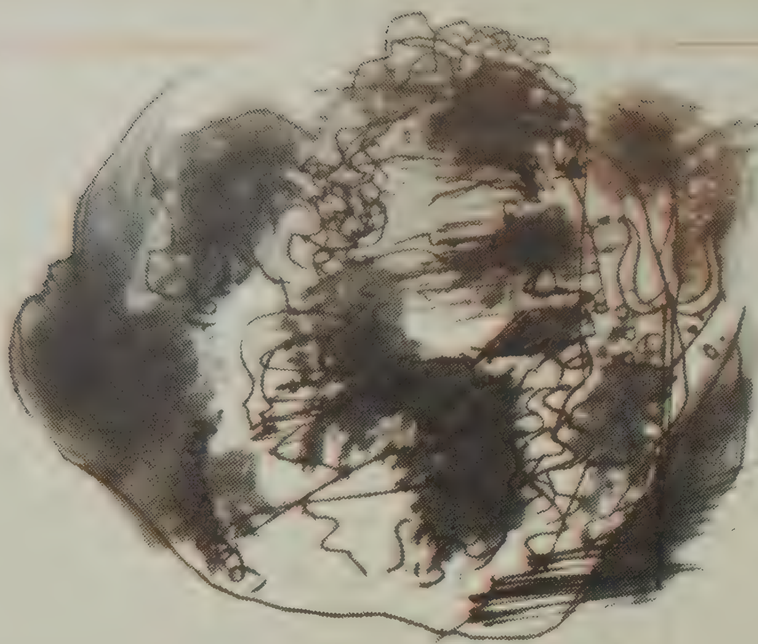
—बौद्धिकता के सभी द्वार यौवन खोलता है ।
—सार्थक और सफल होने के लिए आयु सीमारेखा नहीं है ।
—महापुरुषों की प्रतिच्छाया प्रमाण है कि लघुक्षण में ही वे विराट बन गये हैं ।
—कार्यों और निकायों से ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है ।
—सामर्थ्य है तो प्रस्तर प्रतिमा से सीधी खड़ी आकृति को तिलांजलि देकर जीवित रहते सीधे खड़े होने का सामर्थ्य जुटाइए ।
—बुद्धि, विवेक और कार्य-कौशल को कोई चुनौती नहीं दे सका । जीवित रहते प्रस्तर प्रतिमा से दृढ़ बनिए, निर्जीव नहीं, सजल, सचल, अविराम, अभिभेद्य ।

□

—जीवन के बाद शेष रहने का अभिमत इसी जीवन परिधि से निर्धारित होता है ।

□

—कालचक्र की आत्मा नहीं होती ।
—कालचक्र संवेदनहीन है ।
—कालचक्र उद्दंड है ।
—कालचक्र अविश्वासी है ।
—कालचक्र सारी आस्थाओं और अनास्थाओं को विनष्ट करता हुआ, अपने निर्धारित प्रतिमानों में हमारे लघु जीवन को परिभाषित करता है । जो, जैसा



चाहे करने के लिए वह मुक्त है ।
—कालचक्र न आक्रमणकारियों के वश में आया और न उन साधु-पुरुषों के जिन्होंने अपना जीवन संतुलित सेवा में बिता दिया ।
—पता नहीं है आज तक कि 'काल' क्या है, 'काल' चाहता क्या है, 'काल' के चक्रावरण की दिशा क्या है ?
—काल निरंकुश भ्रमण करता एक ऐसा 'ग्रह' है जो देखा नहीं जा सकता ।
□
—यही सब लेकिन नहीं है; काल सदय स्वामी है, उसकी परिधि-तुला कभी धोखा नहीं देती ।
—इसलिए प्रश्नों के घेरे मत बनाइए ।
—जीवन के हर क्षण का, हर तरह से भोग कीजिए ।
—सीमाओं में जो सिकुड़े रहेंगे, बांधेंगे अपने को आयुभर के कैदी की तरह प्राणहीन चलते-फिरते पुरजे होंगे ।
—हम भोग की उपज हैं ।
—भोगना हमारा अधिकार है ।
—तब प्रश्न कहां ?
—प्रश्न करते-करते अपने को जीवित शव मत बनने दीजिए ।
—अधिकार नहीं है आपको कि मनुष्य जन्म पर धब्बा लगायें । श्वेत-वस्त्र में आये हैं, उसी श्वेत वस्त्र में जाइए कि यहां अश्रेय कुछ भी नहीं है, सभी श्रेय है ।

आखिर कब तक?

समाचारपत्रों को क्यों खींचा जा रहा है

मीडिया को लेकर इन दिनों खासी चर्चा हो रही है । मजे की बात तो यह है कि एक ही पार्टी के पदाधिकारी और समझदार व्यक्ति अलग-अलग बयान दे रहे हैं । चंदूलाल चंद्राकर कहते हैं, विदेशी अखबारों को भारत से प्रकाशित होने के लिए पूरी सुविधाएं दी जाएंगी ।गाडगिल साहब फरमाते हैं कि बाहर के अखबारों को भारत की जमीन दी जाए या नहीं अभी इस पर कोई विचार नहीं हुआ है । इस पूरे मुद्दे पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अर्जुन सिंह एकदम मौन हैं । प्रधानमंत्री नरसिंह रावजी 'हां' भी कहते हैं, 'नहीं' भी कहते हैं । हमारी समझ में नहीं आता कि उदारीकरण की नीति में समाचारपत्रों को क्यों खींचा जा रहा है ।

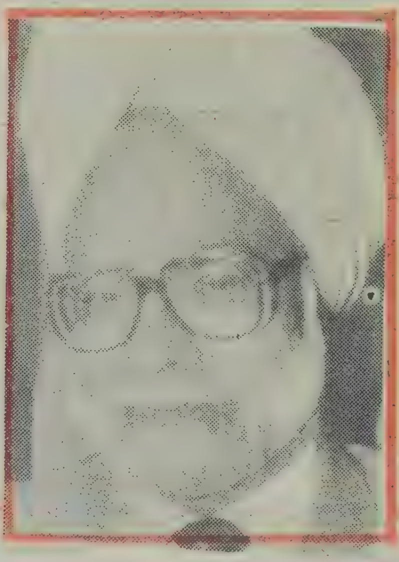
मुझे कल्पना करने दीजिए कि कराची से निकलनेवाला 'डान' नयी दिल्ली से निकलने लगा है, न्यूयार्क का 'न्यूयार्क टाइम्स' भी राजधानी में आ गया है, खाड़ी देशों के 'खलीज टाइम्स' ने अपना दफ़्तर कस्तूरबा गांधी मार्ग पर खोल लिया है, टोक्यो से निकलनेवाला दुनिया का सबसे अधिक प्रचारित दैनिक पत्र 'अशाई सिंगुन' भी दिल्ली में आ गया है । यह कल्पना करने के बाद आप ही सोचिए कि इस देश का क्या होगा ? यहां की हर छोटी-सी खबर सारी दुनिया को मिलेगी और हिंदुस्तान के अखबार महज सूचना केंद्र हो जाएंगे । 'हिंदुस्तान टाइम्स', 'टाइम्स ऑव इंडिया', 'इंडियन एक्सप्रेस' या 'हिंदू' आदि अखबारों की कमर में क्या इतनी ताकत है कि ये भी रूस, अमरीका, चीन, जापान जाकर मशीनें लगा लें और अखबार निकालें । भारत को महमूद गजनवी ने अकेले नहीं लूटा, लुटेरे तो आगे-पीछे भी आते रहे हैं । अब यदि हमारी सरकार हमारी बौद्धिक संपदा को नीलाम करेगी तो इस देश का हर विद्वान

आदमी विदेशी अखबारों में लिखेगा । उसे पारिश्रमिक भी अच्छा मिलेगा और खासा नाम भी होगा । भारत के अखबारों में अब भी इने-गिने अच्छे कॉलमिस्ट हैं । विदेशी अखबारों के आने के बाद वे भी नहीं मिल सकेंगे । नरसिंह रावजी को यह नहीं भूलना चाहिए कि नयी फसल तो बोयी जा सकती है, कारखाने लगाये जा सकते हैं लेकिन एक बार बुद्धिजीवी हाथ से निकल गया तो वह भी नोबेल पुरस्कार पाने की होड़ में इस देश को धत्ता बता देगा । जो देश बौद्धिक रूप से दिवालिया हो जाता है उसका भगवान ही मालिक है । महात्मा गांधी के शब्दों में—

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम,
सबको सम्मति दे भगवान ।

मनमोहन सिंह की शतरंज

वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने इस पूरे देश में शतरंज की चादर बिछा रखी है । सारे दरवाजे खोल दिये हैं । जिसका मन हो भारत आ जाए और यहां का कच्चा माल लूटकर विदेशों में ले जाए । उस माल से पक्का माल बनाकर सौ गुने दामों पर भारत में बेचने की उसे पूरी आजादी है ।बचपन में लिप्टन और ब्रुकबांड चाय का नाम हमने खूब सुना ही नहीं घर में आकर एक आदमी मुफ्त में चाय दे जाता था और हम मजे में पीते थे । अब हालत यह हो गयी है कि बिस्तर से उठते चाय न मिले तो लगता है बीमार हो गये हैं । असम के बागानों से चाय की हरी पत्तियां लंदन जाती थीं । फिर उन्हें सुखाकर उनमें कई तरह का छिड़काव किया जाता था । कहा जाता है कि इन पत्तियों में हलका-सा अफीम का छिड़काव भी होता था । भारत की चाय मि. लिप्टन और मि. ब्रुकबांड भारत में ही खासी कीमत पर बेचते थे । यह किस्सा फिर दोहराया जानेवाला है । पिछले अंक में हमने लिखा था कि नीदरलैंड से लीद और गोबर भारत आएगा । पता चला है कि



समझौते पर हस्ताक्षर हो चुके हैं । अब एक और समझौता नीदरलैंड के साथ हुआ है जिसके अनुसार गुलाब, गुलदावटी और लाल वाले फूल भारत के बाजारों में हॉलैंड से आकर बिकेंगे । हॉलैंड की कंपनी फ्रैमिंगो इंटरनेशनल और दिल्ली की कंपनी कोनोरिया केमिकल एंड इंजीनियरिंग लि. के बीच चौदह करोड़ रुपये का समझौता हुआ है । ये दोनों कंपनियां मिलकर हिमाचल प्रदेश में फूल उगाएंगी । गुड़गांव की विश्व फ्लोरा लिमिटेड और हॉलैंड की मोरहीम राजेश एंड ट्रेडिंग के बीच बारह करोड़ रुपये का समझौता हुआ है । गुलाब की खेती बीकन फ्लोरा मिल्स लि. और फ्लोडिक कंपनी के बीच ८.२ करोड़ रुपये के समझौते के साथ की जाएगी ।

एक जमाना था जब हिंदुस्तान के सुगंधित गुलाब, मोगरा, बेला और चमेली दुनियाभर में जाते थे और अब वह दिन आ गया है कि विदेशों के सुगंधहीन पुष्प हमारे मेजों की शोभा बढ़ाएंगे । मुझे आश्चर्य तो यह है कि हॉलैंड का विख्यात फूल ट्यूलिप इस समझौते से पूरी तरह बाहर है ।

शाही फूल है तो शाही महल भी चाहिए

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव उत्तराखंड के मामले को नहीं सुलझा पा रहे, लेकिन उन्होंने उत्तर प्रदेश पर्यटन विकास निगम के दो सस्ते होटल निजी लोगों को बेचने की ठान ली है । उनकी जगह पांच सितारा होटल बनाये जाएंगे और अपेक्षा की जाएगी कि यहां की जनता मनमाने पैसे देकर इन आलीशान होटलों का घटिया खाना खाये । मैं तीन बार स्कॉटलैंड गया । स्कॉटलैंड में पुराने पब और पुराने ढंग के होटल अब भी चहल-पहल के केंद्र बने हुए हैं और वहां की युवा फसल उन्हीं पबों में जाना पसंद करती है । स्टाकहोम (स्वीडन) का सबसे पुराना इलाका जिसे हम दिल्ली का चांदनी चौक कह सकते हैं गमलास्तान है । गमलास्तान में राजा का शाही महल बना हुआ है और बड़े-बड़े लेखक, कलाकार, नोबल पुरस्कार विजेता इस पुराने इलाके में रहना पसंद करते हैं । स्टाकहोम का नया शहर तो पूरी तरह सीमेंट से भर दिया गया है । वहां के लोग कहते हैं, "दे हैव सीमेंटेड अवर हार्ट्स ।" कहने का मतलब यह है कि वहां की सरकार ने सहज प्रकृति को हमसे छीन लिया है और हमारी सभ्यता को सीमेंट से बंद कर दिया है । भाई मुलायम सिंह यादव एक ओर तो आप जातिवाद का डंका पीट रहे हैं दूसरी ओर 'पहाड़ियों' के बारे में कोई ठोस राय नहीं बना पा रहे हैं । आप हमारी जेब पर अब कैंची क्यों चला रहे हैं कि बनारस, हरिद्वार, इलाहाबाद, मथुरा-जैसे धार्मिक स्थानों में जाकर हमें पंद्रह सौ से दो हजार रुपये देकर पांच सितारा होटल में ठहरना पड़े । मैं निजी तौर से आपको बुद्धिमान आदमी मानता हूं । यदि मेरी ही बुद्धि



भ्रष्ट हो गयी है तो बात अलग है । भाई साहब यहां पर्ण कुटिया बनाइए जिनमें हमारे ऋषि और मुनि तपस्या करते थे । फाइव स्टार संस्कृति उत्तर प्रदेश-जैसे पिछड़े राज्य में शोभा नहीं देती । यह काम पंजाबियों के हाथ में ही छोड़ दीजिए और कम-से-कम अपनी संस्कृति और सभ्यता की पहचान तो बनाये रखिए ।

पता नहीं कितने होटलों का ठेका दे दिया गया है, लेकिन अब भी समय है । मेरे मन में जो आपकी समझदार और मोहक छवि है वह आप बिगड़ने मत दीजिए, क्योंकि समाचारपत्रों और संपादकों को आप तालाब में पाली हुई मछलियां मत समझ लीजिए कि एक जाल डाला और मछलियां बाहर ।

हरियाणा के मुख्यमंत्री भजनलाल ने अपने राज्य में जापानी सिटी बसाने का ठेका पूरा कर लिया है लेकिन हरियाणा और उत्तर प्रदेश में बहुत अंतर है । उत्तर प्रदेश की तो एक-एक इंच जगह भरी हुई है और हरियाणा में सैकड़ों मील जमीन खाली पड़ी है । खाली जमीन को भरने दीजिए भरी जमीन का नाश मत कीजिए । हिंदुस्तानभर के सारे तीर्थ-स्थल उत्तर प्रदेश में ही हैं । उत्तर प्रदेश यानी इन दिनों मुलायम सिंह-कांशीराम-मायावती, वह आलीशान महल है जो कौरवों और पांडवों के जमाने में रहा है ।

हिमाचल प्रदेश का वाइसराय लॉज

शिमला में एक खासी आलीशान इमारत है जिसका नाम है— वाइसराय लॉज । अंगरेजों ने इसे बहुत प्यार-मोहब्बत से बनाया था क्योंकि उनके खानदानी वाइसराय दिल्ली की तपती लू से दूर शान के साथ शिमला की उस लॉज में रहें । मैं इस लॉज में ठहर चुका हूं और अंगरेजों की आरामपसंद आदत का कायल हूं । पता चला है कि हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने नरसिंह रावजी को पत्र लिखा है कि यह लॉज हिमाचल सरकार को सौंप दी जाए ताकि इसे संग्रहालय-सह-पर्यटक परिसर में बदला जा सके । इस पत्र के बाद प्रेसीडेंट एस्टेट और मानव संसाधन विकास

मंत्रालय के बीच दरार पैदा हो गयी है । सन १९६२ में इस भवन को सामाजिक विज्ञान का शोध संस्थान बनाने के लिए प्रेसीडेंट एस्टेट ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय को दे दिया था । इस समय इस मंत्रालय का एक संस्थान यहां चल रहा है ।

यहां पूरी इमारत १२० एकड़ में फैली है । इसमें पर्यटन मंत्रालय का भी हिस्सा है । जो यहां आलीशान होटल बनाने का प्रयत्न कर रहा है । विद्वान राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने इस एस्टेट को उचित अध्ययन के लिए दे दिया था । श्री आर. वेंकटरामन ने प्रश्न उठाया था कि इसके बारे में फैसला केंद्र सरकार भी नहीं कर सकती । डॉ. शंकर दयाल शर्मा अपने काम से काम रखते हैं इसलिए मौन हैं, 'लेकिन सोनिया गांधी ने वहां इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्रस्ट की एक शाखा बना दी है । सोनिया गांधी इस भवन के प्रति आकर्षित हुईं और उन्होंने हिदायत दी कि इस भवन को सुरक्षित रखने के लिए यहां स्नान गृह और रसोईघर-जैसी चीजें नहीं होनी चाहिए । अपने पाठकों को हम बता दें कि शिमला में वाइल्ड फ़्रावर हॉल है । अंगरेजों के जमाने में गरमी के दिनों में यहां प्रधान सेनापति रहा करते थे । बाद में वह हिमाचल प्रदेश सरकार के हाथ पड़ गया उसने वहां होटल बनाया । प्रमाण यह हुआ कि प्रधान सेनापति की प्रेतात्मा ने एक दिन अचानक आग लगा दी और पूरा वाइल्ड फ़्रावर हॉल जलकर राख हो गया । दिल्ली के राष्ट्रपति भवन को देखकर मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि भारत की राजधानी का केंद्र जितना आकर्षक है दुनिया के बड़े-से-बड़े देश की राजधानी उतनी आकर्षक नहीं होगी । यहां तक कि अमरीका का व्हाइट हाउस भी उसके आगे पानी भरता है । आप इंडिया गेट की उस जगह आकर खड़े हो जाइए जहां पहले जॉर्ज पंचम की प्रतिमा थी । वहां से सीधे देखिए तो आंख राष्ट्रपति भवन के गुंबद से टकराती है और तब समझ में आता है कि ऐसी आलीशान राजधानी कोई बता तो दे कि और है कहां ? हमें उदार होकर स्वीकार करना चाहिए कि दूसरे हमलावरों से अलग अंगरेजों ने अपनी बनायी सारी धरोहर हमें सुरक्षित सौंप दी । ऐसी स्थिति में शिमला की वाइसराय लॉज पर अब क्यों नजर लग रही है कि अंगरेजों की छोड़ी हुई आलीशान बिल्डिंग तहशनहश हो जाएगी । इस प्रसंग के अंत में यह बताना मैं जरूरी समझता हूं कि राष्ट्रपति संजीव रेड्डी ने तो लगभग घोषणा कर दी थी कि दिल्ली के राष्ट्रपति भवन को अस्पताल बना दिया जाए । ये है, "मेरा भारत महान ।"

— राजेन्द्र अवस्थी

कौटिल्य का अर्थशास्त्र उपभोक्ता-संरक्षण, संपत्ति-अधिकारों, कानून-व्यवस्था, कर-प्रणाली और विदेशी मामलों पर एक विशद ग्रंथ है । इन सबके बारे में कौटिल्य की समझ और इनके सूक्ष्मतम ब्यौरे प्रस्तुत करने की उनकी योग्यता सम्माननीय है । विभिन्न समस्याओं के जो हल उन्होंने सुझाये हैं, वे सेवानिवृत्त वित्त-सचिव वी. के. कौल भी आर्थिक उदारीकरण के पक्के समर्थक रहे हैं । पर दुर्भाग्य से पूर्व प्रधानमंत्री आर्थिक सुधार लागू करने की न तो कल्पना ही कर सके और न साहस ही ।

कराधान के संबंध में समस्त आधुनिक चर्चा-परिचर्चा दक्षता और निष्पक्षता के मुद्दों पर

कौटिल्य की दृष्टि में

प्रेरणा और मार्गदर्शन के शाश्वत स्रोत हैं । यहां कौटिल्य द्वारा प्रस्तावित वित्त-नीति की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण और वर्तमान आर्थिक नीतियों से उसकी तुलना प्रस्तुत है—

ठोस वित्त नीति

कौटिल्य के अनुसार, ''समस्त गतिविधियां सर्वप्रथम कोष पर निर्भर करती हैं, अतः राजा को इस पर सर्वाधिक ध्यान देना चाहिए ।'' स्वातंत्र्योत्तर भारत के इतिहास में पहली बार प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिंह राव ने कौटिल्य की इस परिष्कृत प्रज्ञा का गंभीरता से अनुसरण किया है । उन्होंने देश में उपलब्ध सर्वाधिक अनुभवी, प्रतिभावान, प्रतिबद्ध और गैर-राजनीतिक व्यक्ति को अपना वित्तमंत्री नियुक्त किया है और उन्हें एक ठोस वित्त-नीति परिपादित और लागू करने की स्वतंत्रता दी है ।

निष्पक्षता के तकाजे से यह मानना होगा कि प्रोफेसर भगवती और श्रीनिवासन (आधुनिक काल के कौटिल्य) काफी समय से आर्थिक सुधारों का सशक्त समर्थन करते आये हैं । केंद्रित है ।

उदाहरण के लिए, चेलैया-समिति की रिपोर्ट में अब तक प्रचलित करों के हानिकारक प्रभावों की विस्तार से और असाधारण स्पष्टता के साथ चर्चा की गयी है और उन्हें न्यूनीकृत करने के लिए अनेक सिफारिशें की गयी हैं । वस्तुतः कौटिल्य बहुत पहले ही इसे समझ चुके थे और ठोस वित्त-नीति के निरूपण में इनके महत्त्व को रेखांकित कर चुके थे । आदर्श वित्त-नीति की उनकी अवधारणा इस प्रकार है :

''जो अधिकारी राजस्व की हानि करता है, वह राजा (के धन) को खाता है, जो (अनुमानित से) दुगुना राजस्व वसूल करता है, वह राष्ट्र (की अस्मिता) को खाता है (क्योंकि उससे लोगों के पास अपना अस्तित्व बचाने और पुनः उत्पादन करने के लिए संसाधन नहीं बचते) और जो (कोई लाभ कमाये बिना) सारा राजस्व व्यय कर देता है, वह कामगारों (श्रम) को खाता है ।''

दोषी कौन ?

इससे यह ध्वनित है कि अपनी लापरवाही के कारण देय राजस्व एकत्र न करनेवाला अधिकारी तो दोषी होता ही है, क्योंकि उससे सार्वजनिक मदों (जैसे राष्ट्रीय सुरक्षा) के प्रावधानों पर बुरा प्रभाव पड़ता है । दूसरी ओर, किसी अति उत्साही अधिकारी द्वारा देय (उचित *वसूल करना चाहिए, जब वह देय हो जाए । जैसे माली कच्चे फल नहीं तोड़ता, वैसे ही राजा को भी प्रजा से वह धन वसूल नहीं करना चाहिए जो देय न हो, क्योंकि उससे लोग नाराज और कमजोर हो जाएंगे और फलस्वरूप राजस्व का मूल स्रोत ही नष्ट हो जाएगा ।''*

कौटिल्य आर्थिक विकास में पूंजी-निर्माण

आर्थिक उदारीकरण

• सुरेश कांत

भाग, जो सामान्यतः आय का १/६ भाग था) से अधिक राजस्व की वसूली को भी उत्पादन पर अत्यंत हानिकारक प्रभाव डालनेवाला समझा जाता था । साफ जाहिर है कि कौटिल्य को एक आदर्श कर-स्तर का बोध था । उनका यह उद्धरण इसकी और पुष्टि करता है :

''माली बाग से तभी फल तोड़ता है जब वे पक जाते हैं, वैसे ही राजा को भी तभी राजस्व

के महत्त्व को रेखांकित करते हैं । निम्नलिखित उद्धरण उनकी दूरदृष्टि की झलक देते हैं :

''जैसे हाथियों को पकड़ने के लिए हाथियों की ही जरूरत होती है, वैसे ही और धन कमाने के लिए भी धन की ही जरूरत पड़ती है ।''

और—

''निरंतर तारे गिनते रहनेवाले (अंधविश्वासी) आदमी के हाथ से धन निकल जाता है । धन कमाने के लिए एकमात्र (मार्गदर्शक) तारा स्वयं धन ही है । आकाश

कौटिल्य लिखते हैं, ''खाली कोषवाला राजा नागरिकों और देश की क्षमता को खा जाता है ।'' इससे जाहिर है कि कौटिल्य की नजर में घाटे की वित्त व्यवस्था अवांछनीय थी । घाटे की वित्त-व्यवस्था आय के स्थायित्व के लिए ही की जानी चाहिए, पर यह जानने के लिए कौटिल्य-जितनी प्रतिभा की जरूरत नहीं कि नियमित रूप से इस्तेमाल किये जाने पर यह केवल मुद्रास्फीति बढ़ाती है ।

के तारे भला इसमें क्या मदद कर सकते हैं ?''

पूंजी निर्माण कैसे

कौटिल्य की वित्त-नीति का दूसरा मूल तत्व पूंजी-निर्माण को प्रोत्साहित करना ही था । वे ''उत्पादन बढ़ाने के लिए बंजर धरती पर खेती प्रारंभ करनेवाले कृषकों को या जिन्होंने सिंचाई-यंत्र लगवाया हो या उसकी मरम्मत करवायी हो उन्हें, दो से पांच वर्ष तक की सीमित अवधि के लिए कर से छूट'' देने की सिफारिश करते हैं । उल्लेखनीय है कि उन्होंने किसी उद्योग को नकद सब्सिडी देने की सिफारिश कभी नहीं की ।

कौटिल्य मुक्त अंतरराष्ट्रीय बाजार का महत्त्व भी समझते थे । वे संरक्षणात्मक प्रशुल्कों की वकालत नहीं करते और आयातों पर केवल समतुल्य शुल्क ही लगाये जाने का समर्थन करते हैं, ताकि स्वदेशी वस्तुएं घाटा न देने लगें । वस्तुतः वे आयातों पर उच्चतर प्रतिलाभ-दर (घरेलू उत्पादन पर ५ प्रतिशत की तुलना में १० प्रतिशत) की अनुमति देते हुए आयातों को प्रोत्साहन देते हैं । साथ ही, अपनी विकासोन्मुखी नीतियों के अनुक्रम में वे आयातित निविष्टियों (जैसे दुर्लभ बीज) को आयात-प्रशुल्कों से मुक्त रखने की संस्तुति

कौटिल्य की नजर में आर्थिक भ्रष्टाचार

कौटिल्य को मानवीय स्वभाव की भी सूक्ष्मतम जानकारी थी । यही कारण है कि वे भ्रष्टाचार की संभावना को नकारते नहीं, अपितु कुछ हद तक उसे अवश्यंभावी बताते हैं । उनके अनुसार—

यथा ह्यनास्वादयितुं न शक्यं
जिह्वातलस्थं मधुं वा विषं वा ।
अर्थस्तथा ह्यर्थचरेण राज्ञः
स्वल्पोऽप्यनास्वादयितुं न शक्यः ।।

अर्थात जैसे जिह्वा पर रखे हुए मधु या विष का स्वाद लिए बिना नहीं रहा जा सकता, उसी प्रकार अर्थाधिकार पर नियुक्त पुरुषों से थोड़ा-बहुत राजकीय धन चुराये बिना नहीं रहा जाता । वे अवश्य ही यत्किंचित धन अपहृत करते रहते हैं । और—

मत्स्याः यथांतः सलिलं चरंतो
ज्ञातुं न शक्याः सलिलं पिबंतः ।
युक्तास्था कार्यविधौ नियुक्ताः
ज्ञातुं न शक्याः धनमाददानाः ।।

यानी जिस प्रकार पानी में प्रविष्ट मछली पानी पीती दिखायी नहीं देती, उसी प्रकार छोटे-बड़े अधिकारी अपने-अपने कार्य पर नियुक्त रहते हुए राज्य के धन का अपहरण करते आसानी से नहीं देखे जा सकते । यहां तक कि—

अपि शक्या गतिर्ज्ञातुं पततां खे पतत्रिणाम् ।
न तु प्रच्छन्नभावानां युक्तानां चरतां गतिः ।।

आकाश में उड़नेवाले पक्षियों की गति का तो फिर भी पता किया जा सकता है, किंतु गुप्त रूप से राज्य के धन का अपहरण करनेवाले इन छोटे-बड़े अधिकारियों, कर्मचारियों की गति का पता लगाना बड़ा ही कठिन कार्य है ।

इसके निवारण के लिए कौटिल्य का सुझाव

करते हैं। रोचक बात यह है कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित आयातों पर प्रतिबंध लगाये जाने की सिफारिश करते हैं। स्पष्ट है कि संरक्षणात्मक व्यापार-नीतियां मूलतः भारत की नहीं हैं।

कर-ढांचे का स्थायित्व कौटिल्य की वित्त-नीति का चौथा महत्त्वपूर्ण तत्व है। वे किसी आपात-स्थिति (जैसे युद्ध) के दौरान या उसके बाद ही करों में वृद्धि किये जाने को उचित ठहराते हैं, अन्यथा नहीं। उनकी मानें तो बजट का अनावश्यक और अनुत्पादक सस्पेंस और गोपनीयता खतम होनी चाहिए। वस्तुतः

है कि राजा अनुभवी, ईमानदार और कर्मठ मंत्रियों, अधिकारियों, कर्मचारियों को नियुक्त करे। प्रत्येक मंत्री, कर्मचारी और अधिकारी अपना कार्य ठीक-ठीक कर रहा है या नहीं, इसे गुप्तचरों से पता करवाता रहे। अज्ञानी, प्रमादी या बेईमान मंत्री, अधिकारी या कर्मचारी अपनी मूर्खता, आलस्य या लालच से राष्ट्र की बड़ी हानि कर सकता है। ऐसे अयोग्य व्यक्तियों का पता लगवाकर राजा उनकी धन-संपत्ति जब्त कर ले और उन्हें पदच्युत कर दे, ताकि वे आगे धन का अपहरण न कर सकें और जो धन अपहृत कर लिया हो, उसे उगल दें। इसके विपरीत, जो मंत्री, अधिकारी, कर्मचारी राज्य के धन का अपहरण न करके, न्यायानुसार स्वयं को और राजा को समृद्ध बनाते हैं, राजा उनको सदैव पदोन्नत और पुरस्कृत करता रहे।

[illegible] कौटिल्य की नजर में घाटे की वित्त-व्यवस्था आय के [illegible]।

करों या तत्संबंधी कानूनों में हर प्रस्तावित परिवर्तन से जनता को पहले ही अवगत कराया जाना चाहिए, ताकि उस पर खुली बहस हो सके।

सरकारी कर्मचारियों की योग्यताओं और दायित्वों के आधार पर कौटिल्य उनके वेतनों की (६० पणों से ४८,००० पणों तक) एक व्यापक रेंज प्रस्तावित करते हैं। वे लिखते हैं, "राजा को राज्य के खर्च पर बच्चों, बूढ़ों, निराश्रितों और अकिंचनों का पालन-पोषण करना चाहिए।" वर्तमान कर-प्रणाली में सब्सिडियों का लक्ष्य गरीब जन नहीं हैं और इसलिए वे व्यर्थ जाती हैं, क्योंकि अमीर भी (बल्कि अमीर ही) उन्हें प्राप्त करते हैं, जो उन्हें पाने के पात्र नहीं हैं।

कौटिल्य लिखते हैं, "खाली कोषवाला राजा नागरिकों और देश की क्षमता को खा जाता है।" इससे जाहिर है कि कौटिल्य की नजर में घाटे की वित्त व्यवस्था अवांछनीय थी। घाटे की वित्त-व्यवस्था आय के स्थायित्व के लिए ही की जानी चाहिए, पर यह जानने के लिए कौटिल्य-जितनी प्रतिभा की जरूरत नहीं कि नियमित रूप से इस्तेमाल किये जाने पर यह केवल मुद्रास्फीति बढ़ाती है।

राज्य के धन का अपहरण

कौटिल्य के अनुसार सार्वजनिक मदें, जैसे राष्ट्रीय सुरक्षा, लाभ के लिए नहीं होतीं, किंतु

कौटिल्य की नजर में आय और व्यय

कौटिल्य के अनुसार—

एवं कुर्यात् समुदयं बुद्धिं चायस्य दर्शयेत् ।
ह्रासं व्ययस्य च प्राज्ञः साधयेच्च विपर्ययम् ।।

अर्थात समाहर्ता (कलेक्टर) कर-संग्रह के कार्य को बुद्धिमत्तापूर्वक करे । वह सदा आय को बढ़ाने तथा व्यय को कम करने की चेष्टा करे ।

आय के स्रोत

समाहर्ता निम्नलिखित सात मार्गों, यानी स्रोतों (जिन्हें कौटिल्य ने 'राष्ट्र का आय-शरीर' कहा है) से राष्ट्र की आय एकत्र करे—

१. दुर्ग : इसमें शुल्क (चुंगी), दंड (जुरमाना) और पौतवाध्यक्ष (नाप-तौल अधिकारी), नगराध्यक्ष, लवणाध्यक्ष, मुद्राध्यक्ष, सुराध्यक्ष, सूनाध्यक्ष (फांसी देनेवाला अधिकारी), सूत्राध्यक्ष (कपड़ा-अधिकारी), सुवर्णाध्यक्ष, वास्तुक (शिल्पी), वेश्यागृह, द्यूतगृह आदि से प्राप्त आय सम्मिलित है ।

२. राष्ट्र : इसमें कृषि-भाग (छठा भाग), बलि (उपहार आदि), वृक्षों आदि का कर, वणिक् (व्यापार-कर), नदीयालस्तर (नदी पार करने का शुल्क), नाव चलाने का कर, नगर से प्राप्त धन, पशुशालाओं से प्राप्त धन, वर्तनी (मार्ग-कर) आदि से प्राप्त आय सम्मिलित है ।

३. खनि : इसमें सोना, चांदी, हीरा, मणि, मोती, शंख, लोहा, नमक तथा अन्य खनिज पदार्थों की आय सम्मिलित है ।

४. सेतु : इसमें फूल, फल, कंद-मूल आदि वनस्पति की आय सम्मिलित है ।

५. वन : इसमें मृग, हाथी आदि पशुओं और लकड़ी की आमदनी सम्मिलित है ।

६. व्रज : गाय, भैंस, बकरी, भेड़, गधा, ऊंट, घोड़ा, खच्चर आदि जानवरों को 'व्रज' कहा गया है क्योंकि ये अपने गोष्ठ में रहते हैं । इनकी आमदनी व्रज-आय कही गयी है ।

७. वणिक्पथ : स्थल-मार्ग और जल-मार्ग

गैर-सार्वजनिक वस्तुओं के उत्पादन को दक्ष प्रबंधन द्वारा लाभ देना चाहिए, न कि राज्य के धन का इस्तेमाल करके उपभोक्ताओं का शोषण करना चाहिए । वे लिखते हैं, "जो विभाग राजस्व की हानि करता है, वह राज्य के धन का अपहरण करता है ।" कौटिल्य अगर आज सार्वजनिक क्षेत्र में व्याप्त घोर अक्षमताओं और भारी नुकसानों को देख पाते तो भयभीत हो उठते । सार्वजनिक क्षेत्र की 'प्रगति' ने अनेक बुराइयों को जन्म दिया है, इसलिए मौजूदा ढांचा गिराया ही जाना चाहिए । इससे बचनेवाले संसाधनों का उपयोग पर्यावरण की सफाई, सड़कें चौड़ी और पारगमनीय बनाने तथा कार्मिकों व उपकरणों का अद्यतन शोध एवं विकास-तंत्र गठित करने में किया जाना चाहिए, बजाय इसके कि उन्हें सार्वजनिक उपक्रमों में उंडेलकर बजट-घाटा और मुद्रा-स्फीति बढ़ायी जाए । इससे लोग सरकार पर निर्भर रहने की मानसिकता से भी मुक्त हो सकेंगे । आज आदमी विवेकशील है । जैसे ही सरकार मौजूदा

व्यापार के दो मार्ग हैं । इनकी आमंदनी वणिक्पथ-आय कही गयी है ।

जो आय प्राप्त हो चुकी हो, उसे कौटिल्य ने 'सिद्ध' कहा है, जो आय अभी प्राप्त करनी है, उसे 'करणीय' और गत वर्ष से बची आय को 'शेष' नाम दिया है ।

व्यय के मार्ग

व्यय के सात मार्ग, यानी मदें (जिन्हें कौटिल्य ने 'राष्ट्र का व्यय-शरीर' कहा है) निम्नानुसार हैं—

१. देव-पूजा, पितृ-पूजा, दान, स्वस्ति-वाचन आदि धार्मिक कृत्यों पर व्यय ।

२. अंतःपुर, रसोईघर आदि निजी आवश्यकताओं पर व्यय ।

३. कोषागार (अन्न-घृत आदि का भंडार), शस्त्रागार पण्यागार (राजकीय विक्रेय वस्तुओं का भंडार), कुप्यगृह (धातुशाला) आदि की व्यवस्था पर व्यय ।

४. कर्मांतों (कारखाने), विष्टों (मजदूर) आदि पर व्यय ।

५. अश्व-सेना, हस्ति-सेना आदि पर व्यय ।

६. गाय, बैल, घोड़ा आदि उपयोगी पशुओं पर व्यय ।

७. लकड़ी, चारा आदि के संग्रह पर व्यय ।

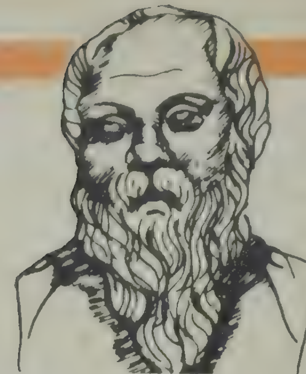
कौटिल्य के अनुसार व्यय दो प्रकार का होता है—'नित्य', जो प्रतिदिन होता रहता है और 'लाभ', जो पक्ष, मास या वर्ष में एक बार होता है । समस्त व्यय करने के बाद आय का जो शेष बचता है, उसे वे 'नीवी' कहते हैं । उनकी राय में समाहर्ता को इस 'नीवी' की वृद्धि में सदा सचेष्ट रहना चाहिए ।

समाहर्ता से संगृहीत आय तथा व्यय का लेखा-जोखा रखना गाणनिक (लेखाकार) का कार्य है । इस अधिकारी के विभाग को कौटिल्य ने 'अक्षपटल' कहा है । गाणनिक की सहायता के लिए अन्य अनेक कर्मचारी होते थे, जो निबंध-पुस्तकों (रजिस्टरों) में राज्य के आय-व्यय का सारा ब्यौरा रखते थे । भिन्न-भिन्न अधिकरणों से प्राप्त धन और उन पर होनेवाले व्यय का विवरण पृथक-पृथक पुस्तकों में रखा जाता था ।

सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण और नये उपक्रम शुरू न करने का निर्णय लेगी, विद्यार्थी (बिना किसी नकल-विरोधी कानून के ही) संदिग्ध उपायों से डिग्रियां लेना और फिर निश्चित अवधि, अधिक लाभ व कम जिम्मेदारीवाली सरकारी नौकरियां पाने के लिए उपयुक्त राजनेता के सत्ता में आने की प्रतीक्षा करना या घूस देना छोड़ देंगे । शिक्षा तब सार्थक बनकर छात्रों में अग्रणी वैज्ञानिक या सफल उद्यमी आदि बनने की संभावनाओं का विकास कर सकेगी ।

निष्कर्ष यह कि वित्तमंत्री के रूप में डॉ. मनमोहन सिंह आर्थिक उदारीकरण के रास्ते पर चलकर कौटिल्य के सशक्त, समृद्ध और उन्नत भारत के सपने को साकार करने में जुटे हैं । ऐसा भारत, जहां लोग अपनी ऊर्जा सामाजिक दृष्टि से अनुपयोगी गतिविधियों के बजाय उत्पादक कामों में लगायें।

—बी-९, रिजर्व बैंक ऑफिसर्स फ्लैट्स
१६/८२, सिविल लाइंस,
कानपुर-२०८००१



मां के साथ व्यवहार भी अच्छा नहीं रहा । शायद इसलिए प्लेटो का सुयोग्य दार्शनिक शिष्य अरस्तू कहता है, ''सुकरात के सारे बच्चे बुद्धिहीन और आवारा निकले । हो सकता है कि घर की गरीबी तथा पिता की उपेक्षा से वे उच्छृंखल बन गये हों । जांतिपी उनके बीच अधिक दिन न रह सकी । पति की मृत्यु के कुछ ही समय बाद उसका भी स्वर्गवास हो गया ।

सुकरात आवारा लड़कों का बाप था

● शराफत अली खान

पाषाण-मूर्तिकार सोफ्रोनिस्कस का पुत्र सुकरात ई.पू. ४६९ में एथेंस में पैदा हुआ था । माता फेनारिती दाई का काम करती थी । सुकरात ने अपने जीवन की शुरुआत मूर्तिकार की तरह की । वह एक अच्छा मूर्तिकार था । ईसा की दूसरी शताब्दी तक सुकरात के हाथों की बनी हुई मर्कुरी देवता तथा ग्रेशस देवी की मूर्तियां एथेंस के नगरकोट के महाद्वार की शोभा बढ़ा रही थीं ।

सत्य की खोज

सुकरात ने अपना विवाह ५० वर्ष की उम्र के बाद किया और करीब ४८ वर्ष की उम्र के बाद सुकरात ने सत्य की खोज के सिवा और कोई कार्य नहीं किया ।

प्लेटो के ग्रंथ 'फायडो' से मालूम होता है कि एथेंस के न्यायालय द्वारा मृत्यु-दंड पाते समय ई.पू. ३९९ में उसका सबसे बड़ा लड़का लेंप्रोकल्स सयाना होते हुए भी नाबालिग था । बाकी दोनों, सोफ्रोनिस्कस जिसका पिता के नाम पर उसका नाम रखा गया था । मेनेजेनस छोटे थे । मृत्यु-दंड के दिन सुबह सुकरात की पत्नी जांतिपी अपनी बाहों में उठाकर मेनेजेनस को लायी थी । विवाह के समय जांतिपी की उम्र लगभग पच्चीस वर्ष की रही होगी ।

हजारों में से एक थी

प्रत्येक क्रियाशील विचारक की कुछ जरूरतें होती हैं। सामान्य प्राणी की तरह उसको भी रहने-खाने संबंधी व्यवस्था की जरूरत पड़ती है। साथ ही, उसकी भावना का क्षेत्र विशाल होता है। संघर्ष की शुरुआत के समय हंसने और विरोध करनेवाले अधिक होते हैं, जिसकी वजह से उसके हृदय में बार-बार ठेसें लगती हैं। ऐसे समय वह किसी ऐसे साथी को ढूंढ़ता है जो उसके साथ हमदर्दी दिखाये, उसकी जरूरतों को समझे और स्वतंत्रता में भी बाधक न हो, दरअसल प्रत्येक सुकरात के पीछे कोई ऐसा व्यक्तित्व होता है। सुकरात के पास जांतिपी है। हजारों में से एक को चुना है सुकरात ने अपने लिए।

देवता की भविष्यवाणी

डेल्फी के गुफा मंदिर की देववाणी सच थी अथवा झूठ, उस पर तर्क हो सकते हैं, परंतु डेल्फी की घोषणा ने सुकरात के जीवन को कंटकमय बना दिया था यह निर्विवाद है। वह अब तक सुख से जी रहा था। पिता भी मरते समय कुछ संपत्ति छोड़ गये थे। उसके हाथ की बनी मूर्तियों की बिक्री भी अच्छी थी। परंतु डेल्फी की घोषणा की सत्यता जानने के चक्कर में सुकरात ने सत्य पर चर्चा शुरू कर दी। प्लेटो के ग्रंथ एपोलॉजी में सुकरात स्वयं स्वीकार करता है कि उसे अपने एक घनिष्ठ मित्र शेरेफॉन के मुख से डेल्फी स्थित अपोलो देवता के गुफा मंदिर की देववाणी मालूम हुई कि 'सुकरात सबसे अधिक बुद्धिमान मानव है।' और वह कथन की सत्यता जानने के लिए निकल पड़ा। उसने अपना पुश्तैनी धंधा छोड़ दिया। एथेंस की गली-बाजारों में चर्चा शुरू कर दी।

चर्चाओं में उसने बहुत कुछ सीखा। सवेरे घर से निकल जाना और, दिनभर चर्चा में डूबे रहना और संध्या समय घर वापस लौट आना, यही उनकी दिनचर्या बन गयी थी। सुकरात सत्य की चर्चा के अतिरिक्त किसी अन्य विषय पर सोच ही नहीं सका। परिवार के भरण-पोषण की चिंता का भार सुकरात की पत्नी जांतिपी ने अपने सर ले लिया। उसने सुकरात को घर की चिंता में कभी नहीं डाला। परिवार के खाने-पीने की व्यवस्था के लिए सुकरात को उत्पादक श्रम करने के लिए मजबूर नहीं किया। यदि उसने क्रोध भी किया तो इस बात पर नहीं कि सुकरात उसका व बच्चों का ध्यान नहीं रखता, बल्कि इस बात पर कि वह स्वयं का ध्यान नहीं रखता।

आवारा और बुद्धिहीन पुत्र

सुकरात को सजा सुनाने के महीनेभर बाद विषपान कराया गया था। सजा सुनाने के बाद उनके मित्र उनके बिछोह की कल्पना से ही अत्यंत व्याकुल थे। इसलिए मुकदमे के बाद से लगातार उसको किसी भी तरह बचाने के प्रयत्न में लगे हुए थे। किंतु जिसको वे बचाना चाहते थे, उसे खुद ही बचने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। फिर भी उसका मित्र क्रीटो सुकरात से जेल से भाग चलने का अनुरोध करता है। पहले तो वह अपनी दोस्ती का वास्ता देकर कहता है कि सुकरात को अपने लिए न सही उसके लिए मृत्यु को टालना चाहिए, किंतु सुकरात को मौन देख क्रीटो उन्हें उनके बच्चों का वास्ता देता है।

हालांकि सुकरात सामान्य व्यक्तियों के समान बच्चों के लिए कभी चिंतित नहीं रहे थे, शायद यही कारण था कि सुकरात के पुत्र पिता के स्नेह के अभाव में प्रतिभाशाली निकलने के बजाय आवारा और बुद्धिहीन निकले । फिर भी बच्चे तो बच्चे ही होते हैं । संभव है सुकरात बच्चों के नाम से भावुक हो जाए । यही सोचकर क्रीटो कहता है, "सुकरात इस तरह शहीद बनकर बच्चों को भाग्य के भरोसे छोड़कर ठीक नहीं कर रहे हैं ।" क्रीटो कहता है, "यदि आप जिंदा रहें, तो निश्चय ही उनका बेहतर रूप से पालन-पोषण कर सकते हैं और उन्हें समुचित शिक्षा दे सकते हैं । बहुत संभव है आपके बाद उनकी हालत अनाथों की-सी हो जाए ।"

भागकर बच्चों का हित नहीं

क्रीटो को जवाब में बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी पर चर्चा करते हुए सुकरात कहते हैं कि उनके इस तरह पलायन से उनके बच्चों का हित नहीं, अहित ही होगा । यदि वह अपने साथ बच्चों को ले जाएंगे, तो इससे बच्चों को उनके अपने देश के लिए अजनबी बना देंगे और यदि उनको लिए बिना देश छोड़ें, तो बच्चों का इससे क्या हित होगा ? वह जीवित रहें या मरें, उनके मित्र तो यूं भी बच्चों की देखभाल करेंगे । अतः यह निश्चित है कि भागकर वह बच्चों का कोई हित नहीं करेंगे ।

मृत्यु-दंड के लिए प्रस्तुत अपने अंतिम भाषण में सुकरात ने न्यायाधीशों से अनुरोध किया, "जब मेरे बेटे बड़े हो जाएं और आपको लगे कि वे धर्म के मुकाबले अन्य चीजों को अधिक महत्त्व दे रहे हैं, तब आप उनका वैसा ही तिरस्कार कीजिए, जैसा कि मैं आप लोगों का करता रहा हूं । यदि वे जिन वस्तुओं की अधिक परवाह करनी चाहिए, उनकी परवाह न कर दूसरी बातों की परवाह करते हैं और अपने को बड़ा ज्ञानी समझते हैं, जबकि असल में वे वैसे नहीं हैं, तो आप उनकी अवज्ञा कीजिएगा । यदि आप ऐसा करें, तो मैं स्वयं तथा मेरे पुत्र यही समझेंगे कि आपने हम पर बड़ी कृपा की है ।" जांतिपी ने कंगाली में दिन गुजारे । इतिहासकार जेनोफॉन लिखता है कि सुकरात की घरेलू संपत्ति की कुल कीमत आज के रुपये के मूल्य के हिसाब से पांच सौ रुपये भी नहीं थी । जांतिपी किसी तरह परिवार का भरण-पोषण करती थी ।

जांतिपी के गर्भ से सुकरात के तीन पुत्र हुए । लेकिन कोई भी पुत्र इतना योग्य नहीं था कि पिता द्वारा शुरू की गयी सत्य की खोज को आगे बढ़ा पाता । सुकरात की मृत्यु के बाद उनका अपनी मां के साथ व्यवहार भी अच्छा नहीं रहा ।

शायद इसलिए प्लेटो का सुयोग्य दार्शनिक शिष्य अरस्तू कहता है, "सुकरात के सारे बच्चे बुद्धिहीन और आवारा निकले । हो सकता है कि घर की गरीबी तथा पिता की उपेक्षा से वे उच्छृंखल बन गये हों । जांतिपी उनके बीच अधिक दिन न रह सकी । पति की मृत्यु के कुछ ही समय बाद उसका भी स्वर्गवास हो गया ।

—वन-विद्, कार्यालय-वन रेंज अधिकारी, बदायूं, सा.वा. वन प्रभाग, बदायूं-उ. प्र. पिन-२४३६०१



उपनिषद की कहानियां-८

प्रणव साधना

● डॉ. सुधा पांडे

(अगस्त अंक में प्रकाशित पूर्व कथा में सौर्यायणी गार्ग्य को आश्वलायन द्वारा विज्ञान स्वरूप आत्मा के संबंध में ज्ञान प्रदान किया गया था। आत्मा के स्वरूप को जो जान लेता है, वह सर्वज्ञ हो जाता है। अब इस आख्यान में शिव के पुत्र सत्यकाम की जिज्ञासा और महर्षि पिप्पलाद द्वारा उसके प्रश्नों का शमन)

पूर्व दिवसों की भांति पिप्पलाद किसी अन्य दिन संध्या उपासना से निवृत्त हो चिंतन में रत थे, तभी उन्होंने शिव के पुत्र सत्यकाम को अपने समीप बुलाया। सत्यकाम अपने सभी ऋषिकुमारों में अतिप्रिय था, गुरु के प्रति भी उसकी विशेष भक्ति भावना थी। गुरु के मन में भी उसके लिए अतिरिक्त वत्सलभाव विद्यमान था। ज्ञान को तर्क-वितर्क की अपेक्षा वह भक्ति भाव से अधिक सुलभ मानता था। इसी भाव से वह गुरु के समक्ष विनम्र भाव से बैठ गया, उसका तेजस्वी व्यक्तित्व गुरु से छिपा नहीं था। अन्य शिष्यों की भांति पिप्पलाद ने सहज स्नेह से सत्यकाम को संबोधित करते हुए कहा—वत्स तुम्हारी सेवा और निश्छल

महर्षि पिप्पलाद ने सत्यकाम को ओंकार की उपासना का महत्त्व समझाते हुए बताया था कि उससे व्यक्ति का जीवन सूर्य के समान भास्वर हो उठता है । भारत के अनेक धर्मों यथा हिंदू, बौद्ध, जैन, सिख धर्मों में भी ओंकार की उपासना, उसके महत्त्व को स्वीकार किया गया है । आज भी संत-महात्मा एवं आध्यात्मिक व्यक्ति मन की शांति, तनाव से मुक्ति आदि के लिए ॐ का मानसिक जाप करने का परामर्श देते हैं ।

भक्तिभाव को देखकर मुझे भली-भांति ज्ञात हो गया है कि तुम कृतविद्य हो गये हो तथापि तुम्हारे मन में कोई भी संदेह हो तो तुम उसे निःसंकोच मुझसे कहो । सत्यकाम का अंतर सरल भक्तिभाव से भरा था, उसी भाव से उसने गुरुदेव से निवेदन किया—'भगवन् । आपके द्वारा प्राप्त ब्रह्म विषयक ज्ञान और उपदेश ने मेरे अंतर्मन को पूर्ण संतुष्ट कर दिया है । अब मेरे मन में तर्क-वितर्क या वाग्जाल फैलाने की कोई कामना नहीं है । फिर भी मैं एक अति सामान्य प्रश्न आपसे पूछना चाहता हूं ।'

पिप्पलाद ने उसी सहज भाव से कहा, 'वत्स ! निःसंकोच पूछ सकते हो । सत्यकाम ने कहा—आपने ब्रह्मविद्या की शिक्षा देते समय स्पष्ट किया था कि प्रणव मंत्र ओम सभी विद्याओं की निधि है । फिर भी कृपा कर मुझे यह स्पष्ट करने की कृपा करें कि मनुष्यों में वह व्यक्ति जो प्राण के अंत तक ओंकार का ध्यान करता है, वह उस ध्यान से किस लोक को जीत लेता है ?'

पिप्पलाद ने उत्तर दिया—

'हे सत्यकाम यह जो ओंकार है यह निश्चय ही पर और अपर ब्रह्म है इसीलिए तत्वदर्शी भक्त ओंकार के द्वारा ही अपर ब्रह्म या पर ब्रह्म किसी एक को प्राप्त कर लेता है । सांसारिक लोग ब्रह्म के अपर रूप की उपासना करते हैं । अपर रूप वह है जो इस संसार में दिखायी देता है, पर रूप वह जो सृष्टि से परे है, योगी लोग इसकी उपासना करते हैं । वास्तव में ब्रह्म के इन दो रूपों में कोई भेद नहीं है ।'

सत्यकाम ने पुनः जिज्ञासा प्रकट की, 'भगवन ! मुझे किंचित विस्तार से स्पष्ट करिए, इस प्रणव साधना को योगी और सांसारिक किस प्रकार करते हैं और उनकी साधना किन रूपों में पृथक होती है ।'

महात्मा पिप्पलाद ने कहा, 'जो साधक इस ओंकार की केवल एक मात्रा का ध्यान करता है वह मनुष्य लोक में उससे ही ज्ञानयुक्त होकर शीघ्र ही पृथ्वी में समृद्ध हो जाता है । मनुष्य लोक में जन्म लेकर वह तप ब्रह्मचर्य और श्रद्धा से संपन्न हो जाता है । एक मात्रा ओंकार का अभिप्राय यही है कि यदि मनुष्य ओंकार में ध्यान एक अंशमात्र लगाये, तो वह संसार में परमात्मा की महिमा अनुभव करता है, अर्थात

नाम जप से ब्रह्मसुख प्राप्त कर पाता है ।'

पिप्पलाद ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा, 'वत्स ! जो विद्वान भक्ति समेत ओंकार की दो मात्राओं का ध्यान करते हैं वह श्रुतियों से अंतरिक्ष में सोमलोक को उठ जाते हैं और सोमलोक की विभूतियों का अनुभव करने के बाद पुनः इस लोक में आ जाते हैं ।'

सत्यकाम आश्चर्यचकित था । पिप्पलाद ने और स्पष्ट करते हुए कहा, 'जो साधक ओंकार पर अधिकाधिक चित्त लगाता है, उसे इस संसार के सुख योग के साथ मानसिक शांति भी मिल जाती है, अर्थात नाम जप और मानसिक जप दोनों का स्वरूप इस ध्यान में साधक कर पाता है ।'

पिप्पलाद ने सत्यकाम से कहा, 'हे वत्स ! मैं अब तुम्हे त्रिमात्र ओंकार की उपासना और उसके महत्त्व के बारे में बताता हूं, जो साधक त्रिमात्र ओम का समग्र रूप से ध्यान करे और उससे परमपुरुष का ध्यान करे वह तेज से सूर्य लोक से संपन्न हो जाता है । ऐसे व्यक्ति का जीवन सूर्य के समान भास्वर हो उठता है । जिस प्रकार सांप केंचुली से मुक्त हो जाता है वैसे ही वह भी सभी पापों से मुक्त हो जाता है और सामवेद के सहारे ब्रह्मलोक को चला जाता है, इस शरीर से परब्रह्म परमात्मा को देख पाता है । ओंकार की ये तीनों मात्राएं मरण धर्मा हैं, मरण धर्मा इसलिए हैं कि जब साधक इन मात्राओं की ठीक से हृदय से उपासना करता है, तो संसार के मायाजाल से मुक्ति पा लेता है । इनके सम्यक प्रयोग से ज्ञान स्वरूप आत्मा इधर-उधर नहीं भटकता । इस संसार में ओंकार से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है, दूसरी कोई अन्य विद्या नहीं है । इसकी साधना ही सच्ची शांति, संतोष और अनंत सुख दे पाती है । 'इस अवस्था में पहुंचकर मनुष्य नाम जप की उस अवस्था को प्राप्त करता है जहां वेद, पुराण सभी के ऊपर पहुंचकर अमृतधाम को पहुंच जाता है । यही गीता का भक्तियोग है ।'

'त्रिमात्र ओंकार जप का अभिप्राय मैंने तुम्हें स्पष्ट किया है, वह यही है । आजीवन ओंकार की उपासना, जीवनभर ओंकार की या प्रणव साधना में लगे रहनेवाले व्यक्ति को इस भौतिक संसार में तो सुख-शांति प्राप्त होती है । साथ ही मानसिक शांति और तेजस्विता भी प्राप्त होती है । हे वत्स मेरा आशीर्वाद यही है कि तुम ओंकार साधना के सच्चे अधिकारी बनो और मानव-जीवन के लिए दुर्लभ इस विद्या का ज्ञान दूसरों को भी प्रदान करो ।'

ओंकार की महिमा सुनकर सत्यकाम भी मानो पूर्णकाम हो उठा था, वह समृद्ध भाव से गुरु चरणों में प्रणाम कर अपनी कुटिया की ओर चल पड़ा और गुरु से प्राप्त ज्ञान द्वारा ओंकार महिमा को अपने अन्य साथियों को बताया ।

(ओंकार में तीन मात्राएं हैं अ-उ-म एक मात्रा ओंकार की उपासना का अर्थ है—एक-तिहाई भाग का ध्यान, द्विमात्र का अर्थ है—बहुत कुछ ध्यान, त्रिमात्र का अर्थ है जीवनभर ओंकार का ध्यान और उपासना । एक मात्रा की उपासना करनेवाला पृथिवी लोक, द्विमात्रा की उपासना करनेवाला सोमलोक, त्रिमात्रा की उपासना करनेवाला सूर्य लोक में पहुंचता है ।)

('प्रश्नोपनिषद् से')

—प्राचार्या,
एम.के.पी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून

सावित्रम्मा ने बेटे और बेटी की एक ही दिन, एक मुहूर्त निश्चित कर शादियां करायीं । शानदार तरीके से शादियां संपन्न हुईं । चारों तरफ के गांववालों ने उन शादियों की खूब तारीफ की । उस इलाके में अब तक किसी ने इस तरह धूमधाम से शादियां नहीं करायी थीं ।

"वाह... किसी परदेश में जाकर, लज्जा-शरम छोड़कर, किसी को भी इज्जत बेचकर और पैसा कमाकर, बच्चों के बूढ़े हो जाने पर, काफी अरसे के बाद ये शादियां करायी हैं । ये भी कोई शादियां थीं ?" ऐसी भी कुछ महिलाएं थीं, जिन्होंने फब्तियां कसीं ।

"पेटभर खाना खिलाया, लड्डू आदि अन्य व्यंजन जो बनाये गये, वे सब सावित्रम्मा ने सबको बांटे हैं । गांव के कामगार लोगों को बिना भूले सबको खाना खिलाया इस देवी ने । आस-पास के किसी गांव के किसी बड़े किसान ने शादी-ब्याह के वक्त क्या कभी ऐसा बढ़िया खाना खिलाया ? सवेरे से शाम तक घर के सामने बिठाकर आखिरी वक्त सब खतम होने

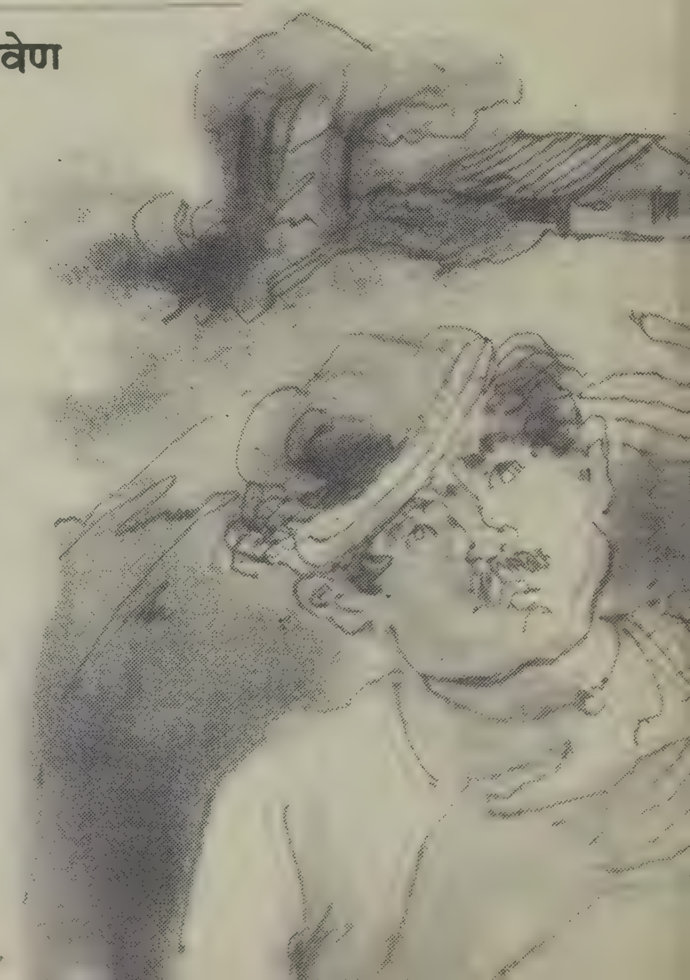
तेलुगु कहानी

कुवैत-सावित्रम्मा

● **चक्रवेण**

'मैं क्या कहूं बाबूजी । ताकतवर और बात बनाने में चतुर लोगों का जमाना है, उन्हीं की बात चलती है । आप सब लोग उन्हीं लोगों के पक्ष में बोलने के लिए आये हैं । मेरी बात भी सुन-समझकर न्याय करने थोड़े आये हैं ?''

सावित्रम्मा रोते हुए ही बोल रही थी ।



पर बरतनों में बचा-कुचा, जला-भुना चावल और रसम आदि हम पर छिड़कते, जैसे खैरात बांट रहे हैं । क्या सावित्रम्मा के समान हमें बढ़िया खाना और मिठाई किसी ने खिलाया ?" हरिजन-बस्ती की औरतें बैठकर सावित्रम्मा की तारीफ में चर्चा कर रही हैं ।

सब सावित्रम्मा को 'कुवैत-सावित्रम्मा' कहते हैं । 'कुवैत' खानदान के नाम के रूप में चल पड़ने का कारण उस इलाके में सबसे पहले पैसा कमाने के वास्ते उसका कुवैत जाना है । तब से वह कुवैत-सावित्रम्मा के नाम से पुकारी जाने लगी ।

'अगर मेरा पति ही जीवित होता, इस तरह शानदार तरीके से संपन्न बेटे और बेटी की शादियों को देखकर न जाने कितना खुश हुआ होता... ! मैं भी क्या पगली हूं ? अगर वह जीवित होता, तो मैं कुवैत क्यों जाती ? सुख हो या दुःख, मैं भी यहीं पड़ी रहती, जैसे सभी रहते हैं ।' पति को याद कर सावित्रम्मा दुःखी होने लगी ।

परिवार को अब एक ठिकाने पर ला पायी । उसने तसल्ली से सांस ली कि उसका बोझ उतर गया ।

मूल लेखक का परिचय

आंध्र प्रदेश के अकाल पीड़ित इलाके रायलसीमा की गरीब ग्रामीण जनता के जीवन संघर्ष का जीता-जागता चित्र अपनी कहानियों में प्रस्तुत करने के लिए प्रसिद्ध चक्रवेणु का जन्म १९६० में हुआ था । अल्प आयु में १९९३ में उनकी मृत्यु हो गयी । उनकी केवल छह कहानियां प्रकाशित हैं और इन छहों कहानियों ने आधुनिक तेलुगु कहानी साहित्य में तहलका मचाया है । उनमें से एक कहानी का हिंदी अनुवाद 'कुवैत-सावित्रम्मा' यहां प्रस्तुत है ।



अब तो सब उससे बड़ी इज्जत से बात करते हैं । हर एक उससे मदद मांगते हैं, अपने बच्चों के लिए 'वीसा' के बंदोबस्त के वास्ते कुछ लोग, और उधार में रुपये मांगते हुए कुछ ।

" सावित्रम्मा ! हमारे ऊपर भी दया दृष्टि रखो । हम उऋण नहीं रहेंगे । हमारा भी उद्धार करो, तुझे पुण्य मिलेगा ।" कई आकर उससे रोज विनती करते हैं ।

'लेकिन इन्हीं लोगों ने पहले मुझे तुच्छ समझा था ।' यह सोचते हुए सावित्रम्मा को पिछले दिनों में बहुत पहले अपने जीवन में घटित एक अविस्मरणीय घटना याद आयी ।

उस दिन काफी रात हो चुकी थी । सब लोग खाना-वाना खा चुके थे । वह सोने की तैयारी कर रही थी कि इतने में किसी ने दरवाजे पर आकर बुलाया, तो सावित्रम्मा ने बाहर आकर देखा ।

"सावित्रम्मा ! पेद्दब्बा के यहां पंचायत बैठी है । तुम्हारे लोगों ने ही तुम पर पंचायत बिठायी है । इसलिए तुम को जल्दी बुलाने के लिए कहा तो मैं आया ।" गांव के धोबी वेंकटम्मा ने आकर कहा ।

"मेरे पर पंचायत... क्यों, क्या मैंने किसी का गला घोंटा... या किसी का घर लूटा... ? अच्छा यह बता कि वहां कौन-कौन आये हुए हैं ?" सावित्रम्मा ने पूछा ।

"सब तुम्हारे ही रिश्तेदार हैं... पेद्दब्बि का रामय्या है । तुम्हारा देवर चिन्नब्बा है । साहूकार नागय्या को भी बुला रखा है और तुम्हारे खानदान की सभी औरतें हैं । धोबी वेंकटय्या ने सभी के नाम याद करके बताया ।

सावित्रम्मा जान गयी कि पंचायत अपने पर क्यों बिठायी गयी । ठीक है, जाऊंगी, जो होगा सो होगा । उसने तय कर लिया कि जाना जरूरी है ।

पेद्दब्बा का घर, माने वही घर जहां उसका पति पैदा होकर बड़ा हो गया था । उसके पति के दादा का नाम पेद्दब्बा था । उसके पति के पिता का भी वही नाम था । पेद्दब्बा (बड़ा आसामी) नाम के मुताबिक उस गांव में उसका बड़े किसान का परिवार था, गांव में कोई कार्यक्रम चलाना हो, किसी नये व्यक्ति को गांव में पनाह देना हो, पंचायत बिठाना हो, पेद्दब्बा के परिवार के सदस्यों की पहल से ही होता है । इसलिए इस परिवार के नाम से ही उस गांव का नाम पड़ गया —पेद्दूरु ।

पति के दादा पेद्दब्बा के जमाने में उस खानदान के पास जो धन-दौलत थी, सो ससुर के जमाने तक आते-आते उसका ह्रास हो गया । फिर भी उसके लड़के राजय्या और बहू सावित्रम्मा दोनों ने कभी उसके आदेश का उल्लंघन नहीं किया ।

जब पिता ने कहा कि वह व्यापार करेगा, तो लड़के राजय्या ने कोई प्रतिवाद किये बिना कहा कि 'आप जो उचित समझते हैं सो कीजिए ।' पिता व्यापार के काम-काज में व्यस्त रहे तो लड़का राजय्या लगन से खेतीबाड़ी करता रहा । उन लोगों ने सोचा कि दोनों के कारोबार में चार-पांच वर्षों में लिए गये उधार सब चुकता कर सकेंगे । लेकिन बात उलटी हो गयी । पिता की अचानक मृत्यु हो जाने से सारे कर्जदार पैसे के लिए राजय्या को परेशान करने लगे । विवश होकर राजय्या ने जमीन-जायदाद बेचकर पिताजी ने जो कर्ज लिया था, उसे चुकाया ।

उस गांव में अपने सगे-संबंधियों के बीच सिर नीचा करके जीने से बचने के लिए मकान भी अपने किसी रिश्तेदार को बेचकर पास के गांव दिगवपल्ली में एक छोटा-सा मकान खरीदकर वहां अपने बाल-बच्चों के साथ रहने लगा। पिताजी की मृत्यु के एक साल बीतने से पहले ही बेचारा राजय्या दिल का दौरा पड़ने से अचानक मर गया। ये सारी घटनाएं सावित्रम्मा के सामने बुरे सपने के समान घट गयीं। पति को खोकर बेचारी सावित्रम्मा अनाथ हो गयी। दोनों बच्चों की परवरिश करना, उन्हें दो जून खाना खिलाना भी उसके लिए दूभर हो गया।

पेद्दब्बा के घर के सामने लगे पलंग पर एक तरफ सावित्रम्मा का जीजा रामय्या और दूसरी तरफ साहूकार नागय्या बैठे हुए हैं। उनके सामने गली के बिजली के खंभे के नीचे बिछे हुए पत्थरों पर सावित्रम्मा का देवर चिन्नब्बा और उसके साथ गांव के कुछ और लोग बैठे हैं।

सावित्रम्मा के वहां आते ही सब लोग शांत हो गये। सावित्रम्मा आते ही सीधे वहां चली गयी, जहां अपने खानदान की औरतें बैठी हुई हैं। सावित्रम्मा के वहां बैठने पर दूसरी औरतें कुछ दूर सरक गयीं। सावित्रम्मा अकेली वहां इस तरह दिखायी दे रही थी, कि मानो कोई अपराधी अदालत के कठघरे में हो।

साहूकार नागय्या ने चशमे के अंदर से सावित्रम्मा को ऊपर से नीचे तक देखकर कहा, "अरे, चिन्नब्बा, देख, आयी है तुम्हारी भाभी..।"

नागय्या की बात समाप्त होने से पहले ही चिन्नब्बा ने उसकी बात काटते हुए कहा, "मामा दुबारा यह मत कहो, यह मेरी भाभी नहीं है। जिस दिन मेरा बड़ा भाई मर गया, उसी दिन से



इसके साथ मेरा रिश्ता खतम हो गया।"

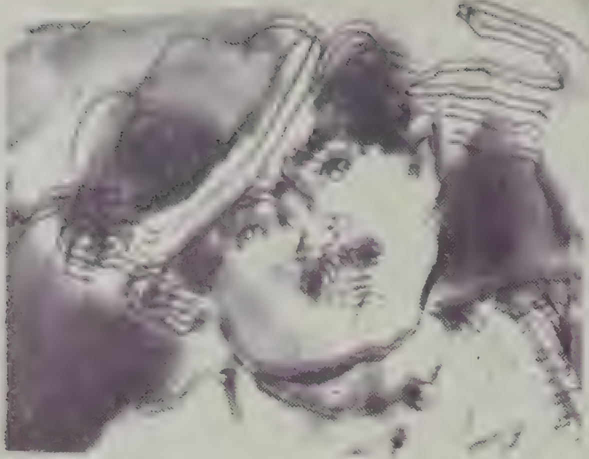
"हां, हां, सही बात तो है। उसका भाई जीवित रहता, तो मैं उसकी भाभी होती। भाई मर गया, इसीलिए उसके मरने के एक महीने के पहले ही जिसने मुझे डरा-धमकाकर मेरी इज्जत लूटी हो, उसके साथ मेरा भाभी का रिश्ता होगा भी कैसे ?" सावित्रम्मा मन-ही-मन बड़बड़ाने लगी।

"ठीक है, तुम उसे भाभी मानो या न मानो, दुनिया तो यही कहेगी न ?... जाने दो, अब तो वह आ गयी... तुमने कहा न कि तुझे कुछ पूछना है, पूछो।" नागय्या ने पूछताछ प्रारंभ की।

"मुझसे क्या कहलवाना चाहते हो मामा। वह जो काम कर रही है, उससे हम गांववालों के बीच सिर उठाकर चल नहीं पा रहे हैं। गांव में हर एक इसी का नाम लेकर, हमें और हमारे खानदान को बदनाम कर रहे हैं। यह सब लोग जानते हैं।" चिन्नब्बा आवेश में चीख पड़ा।

"अरे चिन्नब्बा, चीखने-चिल्लाने से जाती है हमारी ही इज्जत ! लज्जा शरम, मान-अभिमान नाम की कोई चीज उसमें हो, तब तो न !" सावित्रम्मा के जीजा ने ताना मारा।

"क्यों रे, चिन्नब्बा। बता दो। उसके बारे में जो बताना हो सो बता दो, आज फैसला हो जाना चाहिए, इस मामले का", रामय्या ने जोर



देकर कहा ।

"मुझे ही बताना है क्या ? तुम खुद बता दो न ?" चित्रब्बा ने जवाब दिया ।

"अपने बड़े भाई, बड़े बुजुर्ग के मुंह से क्यों कहलवाना चाहते हो वे गंदी बातें । तुम ही कह डालो", पहले से बनायी योजना के मुताबिक नागय्या ने कहा ।

"हां, योजना के मुताबिक आज जल्दी फैसला हो ही जाना है, नहीं तो पंचायत का मकसद उलट जाएगा," यह समझकर चित्रब्बा ने बताना शुरू किया ।

"मामा, गांव में इसने न जाने किस-किस से व्यभिचार किया ? हमने कई बार इसे डांटा-फटकारा, मारा-पीटा, फिर भी यह बाज न आयी । इसने हमारी इज्जत मिट्टी में मिला दी । अब कोई वहां, कहीं कुवैत जाकर आया है न ? कहती है कि वह अपनी मां के गांव का रहनेवाला है, नाम रहिमान । उससे अब रंगरेलियां कर रही है । हमारे खानदान की इज्जत को तबाह करने यह हमारे घर ब्याही है ।" चित्रब्बा ने आवेश में सारी बातें उगल दीं ।

"क्यों री, चित्रब्बा ने जो कहा सो सही है ।" नागय्या ने सावित्रम्मा से तहकीकात की ।

"उससे क्या जवाब-तलब करते हैं ? अगर वह गांव में रहेगी, तो हमारे बाल-बच्चों की शादियां नहीं होंगी । सब उसकी तरफ अंगुली उठाएंगे । गांव में या तो वह रहे, या हम । वह रहेगी, तो हमें गांव छोड़कर जाना होगा । बस, आज इसका फैसला हो जाना है ।" रामय्या ने भाई के स्वर में स्वर मिलाते हुए कहा ।

सावित्रम्मा की आंखों से एकटक आंसू बह रहे थे । वह मौन रोती लोगों के बीच बैठी रही ।

"क्यों री ? हमारी बातें सुन रही हो न ? गूंगी बन बैठने से कैसा ? तुम्हें जो कहना है, कह दो जल्दी", नागय्या ने डांटकर कहा ।

"मैं क्या कहूं बाबूजी । ताकतवर और बात बनाने में चतुर लोगों का जमाना है, उन्हीं की बात चलती है । आप सब लोग उन्हीं लोगों के पक्ष में बोलने के लिए आये हैं । मेरी बात भी सुन-समझकर न्याय करने थोड़े आये हैं ?" सावित्रम्मा रोते हुए ही बोल रही थी ।

"ये ऐसे आरोप लगा रहे हैं कि मैंने ही दुनिया में अकेली ऐसा गलत काम किया और खानदान की इज्जत मिट्टी में मिला दी । इतने दिन इन लोगों ने कभी मेरी कोई मदद की ? मेरा कोई हाथ बंटाया ? मेरे घरवाले के मरने के बाद क्या इनमें से किसी ने यह सोचा कि बेचारी बाल-बच्चेवाली है, एक जून खाने के लिए सेरभर धान या एक रुपया इसे दिया जाए ? पूछिए इनसे । अब कह रहे हैं कि 'लाज-शरम बेचकर जी रही हूं ।' ऐसा काम महज इसलिए मैं कर रही हूं, ताकि अपने बच्चों का पालन कर सकूं । न कि जिस्मानी हवस को पूरा करने या मजा लूटने । चाकरी कर या कुली का काम कर, मैं और मेरे बच्चे कुछ खा रहे हों, या फाके में ही गुजारा कर रहे हों, अपने घर में ही किसी-न-किसी तरह मैं अपना जीवन काट रही

हूं, तब इन्हें क्यों परेशानी हो रही है ?"

"अब उस घर से मुझे भगाना चाहते हैं। ठीक है। ऐसा ही करने दीजिए। मैं और मेरे बच्चे गांव छोड़कर चले जाएंगे। उन्हीं को मेरा भी जीवन जीकर यहां राज करने दें।" सावित्रम्मा जल्दी-जल्दी सारी बातें उगलकर, पीछे मुड़े बिना अपने घर की तरफ दौड़ पड़ी।

उसने मां से सारी बातें कह दीं। अगले दिन तड़के ही पैसिंजर गाड़ी में बच्चों को साथ लिए मां के साथ अपने पीहर चली आयी।

पीहर के अपने सगे-संबंधियों की मदद से रहिमान साहब की मेहरबानी से वह उसके साथ कुवैत चली गयी। खूब पैसा कमाकर, इतने दिनों के बाद, संपन्न व्यक्ति बन पति के गांव में पुनः प्रवेश करना और खोयी प्रतिष्ठा को दुबारा हासिल करना, यह सब सोचते हुए सावित्रम्मा को बड़ा विचित्र लगने लगा।

देवर चित्रब्बा और उसकी पत्नी रामलक्ष्मम्मा ने आकर पुकारा तो विचारों में खोयी सावित्रम्मा उठकर बैठ गयी।

पहले भी अलगौजा से पहले, जब सब लोग इकट्ठे रहते थे, तब भी रामलक्ष्मम्मा सावित्रम्मा से कोई मन-मुटाव रखती नहीं थी। लेकिन देवर चित्रब्बा ने जो पाबंदियां लगायी थीं, उनकी वजह से वह उससे कटी-कटी-सी रहती थी। यह बात सावित्रम्मा शुरू से जानती थी, इसलिए वह रामलक्ष्मम्मा के प्रति प्रेमभाव रखती थी।

"चलो दीदी, खाना खाने" रामलक्ष्मम्मा ने दीदी से विनती की।

"रहने दो रामलक्ष्मम्मा, मैंने खाना बना रखा है" सावित्रम्मा ने जवाब दिया।

तब से रामलक्ष्मम्मा ही बात कर रही है, चित्रब्बा मुंह खोल नहीं पाया। बीते दिनों उसने सावित्रम्मा के प्रति जो बरताव किया था, उसे याद कर वह सिर झुकाकर खड़ा रह गया। लेकिन वह भी उससे कुछ कहे बिना, चुप्पी साधे बैठ गयी।

"सुना है कि इसी सप्ताह कुवैत जा रही हो, क्या यह सच है दीदी ?"

"हां, बहन, शादियों की वजह से मैं रुक गयी, नहीं तो अब तक वहां पहुंच गयी होती।" सावित्रम्मा ने निर्लिप्त भाव से कहा।

थोड़ी देर सब मौन रहे। अपने काम की याद दिलाते हुए चित्रब्बा ने पत्नी को संकेत किया कि वह निजी बात करे।

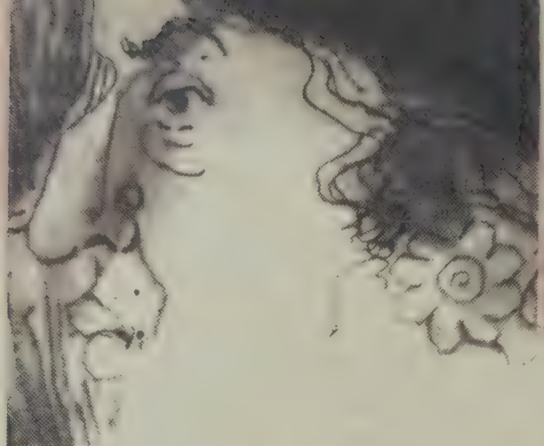
"दीदी, तुम्हारे देवर भी कुवैत आना चाहते हैं।" रामलक्ष्मम्मा ने संकोच करते हुए पति की इच्छा जाहिर की।

सावित्रम्मा समझ गयी कि वे यह जानने आये हैं कि उसके पास 'वीसा' हो तो उन्हें दें।

"अब की बार मैं 'वीसा' लायी नहीं, रामलक्ष्मम्मा। शादी के चक्कर में पड़ जल्दी में आयी। रहिमान मामा अगर लाया हो तो पता कर बताऊंगी।" सावित्रम्मा ने खुलासा किया।

"रहिमान भाई से मैंने पूछा था, भाभी। उसने कहा कि मरदों के लिए 'वीसा' नहीं लाया है, औरतों के लिए उसके पास वीसा है।" आखिर चित्रब्बा ने भाभी से बात की। लेकिन सावित्रम्मा उसकी बातों का कोई जवाब दिये बिना चुप रह गयी।

रहिमान साहेब तथा सावित्रम्मा दोनों को घर में बंद कर आग लगाने की धमकी देनेवाले चित्रब्बा के मुंह से 'रहिमान भाई' शब्द सुन



सावित्रम्मा को अचरज हुआ ।

"मरदों के वीसा लाया नहीं है, इसलिए तुम्हारा देवर मुझे भिजवाना चाहता है दीदी, तुम आने के लिए कहोगी तो मैं आ जाऊंगी दीदी ।" रामलक्ष्मम्मा ने विनम्रता से कहा ।

"मेरा क्या है, रहिमान मामा आने के लिए कहता है तो वैसे ही आओ... लेकिन वहां बड़ी मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं । उन्हें बरदाश्त कर सकने की ताकत है, तो आ सकती हो । आने के बाद यदि वहां के काम देखकर घबरा जाओगी, तो तुम्हारा नुकसान होगा... इसलिए अच्छी तरह सोच-समझ लो ।" सावित्रम्मा ने सारी बातें जोर से कहीं ताकि देवर भी सुन सके ।

"मैं खेत पर हो आता हूं ।" चिन्नब्बा पत्नी से कहकर वहां से चला गया ।

सावित्रम्मा और रामलक्ष्मम्मा दोनों थोड़ी देर मौन रहीं । बाद में सावित्रम्मा ने कहना शुरू किया, "मैं बंबई जाते ही वहां ज्यादा दिन न रुककर, कुवैत चली जाऊंगी । रामलक्ष्मम्मा, तुम को मैं अपने साथ नहीं ले जाऊंगी । बंबई में डॉक्टर लोग तुम्हारी जांच करेंगे, तुम्हारा पासपोर्ट बनेगा, वीसा की जांच होगी । इन सारे कामों के पूरा होते-होते कम से कम दो-तीन महीने तो लग जाएंगे ।"

"रहिमान मामा ने भी मेरे घरवाले से यही कहा दीदी ।"

"अच्छा, बंबई तक तुम्हारे साथ अपने घरवाले को भी साथ लाने को कहा या तुम को अकेली ही आने के लिए ?"

"चिन्नब्बा, बंबई तक तुम्हें इसके साथ आने की क्या जरूरत है ? फिजूल खर्च के सिवा । मैं तुम्हारी बीवी के साथ रहकर उसे सही-सलामत ले जाऊंगा, ऐसा रहिमान मामा ने बताया दीदी ।

"लेकिन रामलक्ष्मम्मा, तुमसे मुझे कुछ कहना है । नहीं तो बाद में तुम कहोगी कि देखो, दीदी भी कैसी है कि उसने इस संबंध में एक भी बात नहीं बतायी । ...बंबई पहुंचने पर कम-से-कम तुमको वहां दो-तीन महीना रहना पड़ सकता है । यह मत समझना कि इन दो-तीन महीनों में एजेंट लोग जो तुम्हें कुवैत ले जाएंगे तुम्हें बा-इज्जत रखेंगे । वहां वे उन मरदों के पास तुम्हें भेजेंगे जिनसे उनको काम निकालना है । बस यह सच्ची बात है, गांठ बांध लो । तुम्हें मंजूर हो या न हो, जैसा वे कहेंगे वैसा किये बिना तुम कुवैत जा नहीं सकतीं । चूंकि मुझे तुम पर रहम आ रहा है, इसलिए मैं यह सब बता रही हूं । औरतों का कुवैत जाना, समझ लो कोई आसान काम नहीं । इसलिए मैं कहती हूं कि अच्छी तरह सोच लो और समझ लो ।" सावित्रम्मा ने एजेंटों और दलालों का राज खोलकर रख दिया ।

सावित्रम्मा की सारी बातें सुनकर रामलक्ष्मम्मा जोर से रो पड़ी ।

"मेरा घरवाला यह सब जानता है दीदी । यह सब जानकर भी वह मुझे भेज रहा है । वे लोग जो भी कहें उसे करने को मुझसे कह रहा

है। जब मैंने कहा कि वैसा काम मैं नहीं करूंगी और मैं नहीं जाऊंगी, तो मुझे मार रहा है। अब मुझे लग रहा है कि यहां रहकर इसकी मारपीट से मरने के बजाय वहीं जाकर जैसा भी हो जीना बेहतर है।'' रामलक्ष्मम्मा ने रोते हुए ही अपनी बात बता दी।

''और कोई तरीका न पाकर बच्चों को भूखे पेट सुलाने की इच्छा न रखते हुए और उनके पेट भरने के लिए जब मैं ऐसा काम करने के लिए विवश हो गयी थी, तब तुम्हारे पति ने पंचायत बिठाकर मुझे गांव से भगा दिया। अब वही तुम्हारा पति यह सब जानते हुए भी तुम्हें व्यभिचार करने के लिए विवश कर रहा है। तुमने पूछा नहीं कि अब खानदान की इज्जत की बातें कहां गयीं ?'' सावित्रम्मा ने मन की भड़ास निकाल दी।

''इन लोगों के बारे में सब कुछ आप जानती हैं। अब मैं क्या कहूं तुमसे दीदी।'' रामलक्ष्मम्मा ने कहा।

''यही रवैया है। जहां ज्यादा रुपये मिलते हैं वहां तुम्हारे पति-जैसे मरद लोग अपना ईमान बेचते ही हैं। साथ ही अपनी पत्नी को भी बेच देते हैं।'' सावित्रम्मा ने गुस्से से कहा।

सावित्रम्मा से सारी बातें जानकर रामलक्ष्मम्मा सोचते हुए अपने घर चली गयी।

* * *

उस दिन शाम को बंबई जा रही जनता एक्सप्रेस के समय पर 'कोडूरु' रेलवे स्टेशन लोगों से खचाखच भर गया। सावित्रम्मा और रामलक्ष्मम्मा को गाड़ी में चढ़ाकर उनको विदाई देने के लिए पेद्दूरु की भारी जनता चलकर वहां इकट्ठी हो गयी।

रेल के स्टेशन में आते ही सावित्रम्मा एक डिब्बे में चढ़कर अपनी रिजर्वड् सीट पर बैठ गयी। बेटी, बेटा, दामाद और बहू और रिश्तेदार सब उसे विदा कहने स्टेशन पर आये हैं।

रिश्तेदार रामलक्ष्मम्मा को पकड़कर रो रहे हैं। चित्रब्बा भी बड़ा दुखी हो रहा है कि पत्नी दूर देश जा रही है। कुछ समझदार लोग समझा-बुझा रहे थे। इतने में रेल चलने लगी।

राम लक्ष्मम्मा फफक-फफककर रो रही है। डिब्बे के सारे यात्री उसकी तरफ सहानुभूति से देख रहे हैं। अपने गांव और अपने लोगों को छोड़ना रामलक्ष्मम्मा सहन नहीं कर पा रही है। इसलिए वह बहुत दुःखी हो रही है।

सावित्रम्मा निश्चल बैठी रही। न उसे कोई संभ्रम लग रहा है और न कोई विशेष दुःख। यह सब उसके लिए पुरानी चीज हो गयी है। आंखों के आंसू आंखों में ही रुक गये। दिल को जब भारीपन महसूस हुआ तब वह सीट से पीठ सटाकर बैठ गयी।

जीवन में भुगती तकलीफों का अनुभव और उन तकलीफों से जो सीख उसने सीखी है, इन सबकी वजह से, बेटा, बेटी, दामाद, बहू और सारे रिश्तेदारों के आंखों से दूर होते देखकर भी उसकी आंखों में से आंसू न निकल रहे हैं।

मानो, मानव जीवन, जीवन की लीलाएं और उन लीलाओं के रहस्यों को वह पढ रही हो. आंखें मूंदकर निर्लिप्त भाव से हंसते हुए विचारमग्न हो गयी।

(अनुवाद : डॉ. विजयराघव रेड्डी)

"...उन दिनों कुइलिन से खुनभिङ जाना आसान नहीं था । रेलगाड़ी तो थी ही नहीं, सड़कों की हालत भी बहुत खस्ता थी । वे जगह-जगह टूटी पड़ी थीं । मैं बसों में चढ़ते-उतरते और कभी पैदल चलते हुए, पूरे चालीस दिनों में खुनभिङ पहुंचा । प्रवेश-परीक्षा हुई । मैं उत्तीर्ण हो गया । मुझे हिंदी पढ़ने के लिए दाखिला मिल गया ।"

चीन के पहले हिंदी-विद्यार्थी प्रोफेसर याङ रुइ लिन

● प्रोफेसर ओमप्रकाश सिंहल

तेरह अक्तूबर, १९९२ को चीन के लिए प्रस्थान करते समय मेरे मन में यह जानने की प्रबल इच्छा थी कि इस देश में हिंदी-अध्ययन का श्रीगणेश करनेवाले प्रारंभिक विद्यार्थी कौन-कौन थे । उनके नाम क्या थे ? उन्होंने हिंदी क्यों पढ़ी ? हिंदी पढ़ने के बाद उन्होंने क्या-क्या काम किये ? लेकिन चीन आने के बाद यह अनुभव हुआ कि यहां कोई भी सूचना इकट्ठी करना आसान काम नहीं है । लगभग दस महीने तक इधर-उधर सिर मारता रहा, लेकिन हाथ कुछ न लगा । सात अगस्त, १९९३ को हिंदी के पहले चीनी शिक्षक प्रोफेसर इन से मुलाकात हुई । बातचीत के दौरान यह पता चला कि चीन में हिंदी की पढ़ाई सन १९४२ में ख्रुनभिङ में प्रारंभ हुई थी । पहले बैच में पढ़नेवालों में एक विद्यार्थी प्रोफेसर याङ रुइ लिन थे । वह सामाजिक विज्ञान अकादमी में काम करते थे और अब सेवानिवृत्त हो गये हैं । मैंने सोचा कि चलो काम बन गया । यह यह मेरा भ्रम था । दिन-पर-दिन बीतने लगे और सारी कोशिशों के बावजूद प्रोफेसर याङ से मुलाकात नहीं हो सकी ।

पहली मुलाकात

बुधवार, २६ जनवरी, १९९४ की शाम को भारतीय दूतावास की ओर से ग्रेटवॉल शेरेटन होटल में भारत के चौवालीसवें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में चायपान का आयोजन था । मैं चीन के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान प्रोफेसर ऊ पास हुई से बात कर रहा था कि प्रोफेसर इन मेरे पास आये और बोले— "चलिए, आपकी मुलाकात प्रोफेसर याङ रुइ लिन से करवा दूं ।" मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही । पिछले

पंद्रह महीनों से मैं उनसे मिलने के लिए कितना व्यग्र था, यह सिर्फ मैं ही जानता था। प्रोफेसर इन ने जब मेरा उनसे परिचय कराया, तब उन्होंने हिंदी में कहा— "मैं हिंदी नहीं जानता। कभी हिंदी पढ़ी थी, पर अब बिलकुल भूल गया हूं।"

मेरा उत्तर था— "आप तो एकदम शुद्ध हिंदी बोल रहे हैं। फिर भला मैं यह कैसे मान लूं कि आपको हिंदी नहीं आती।" उस दिन इससे अधिक बात न हो सकी। पर मुझे उनके घर का पता जरूर मिल गया।

शुक्रवार, २८ जनवरी, १९९४ को भारतीय दूतावास के द्वितीय सचिव (संस्कृति एवं सूचना) श्री वर्मा ने हिंदी-प्रेमी चीनियों को अपने घर पर प्रीतिभोज के लिए आमंत्रित किया था। इस अवसर पर वर्माजी मुझे भी बुलाना नहीं भूले थे। प्रोफेसर याङ रुइ लिन से यहां पर एक बार फिर भेंट हुई। मैंने उनसे कहा कि 'एक दिन आपके साथ लंबी बातचीत का इरादा है।'

उनका उत्तर था— "वसंत-पर्व के बाद किसी भी दिन आराम से बैठा जा सकता है।"

इस बार वसंत-पर्व दस फरवरी को था। मुझे लगा कि यह तो काफी लंबा अंतराल हो जाएगा। वसंत-पर्व चीनियों का सबसे बड़ा त्यौहार है। चीनी लोग लगभग एक सप्ताह पूर्व ही इसकी तैयारी में व्यस्त हो जाते हैं। त्यौहार के बाद भी वे पूरे पंद्रह दिन तक व्यस्त रहते हैं। पर कुछ कह भी नहीं सकता था।

चालीस दिनों की यात्रा : हिंदी पढ़ने के लिए

वर्माजी द्वारा दिये गये प्रीतिभोज के बाद कई



दिन बीत गये। मन में उमड़-घुमड़ चलती रही। मुझसे रहा न गया। सात फरवरी को फोन घुमाया और प्रोफेसर याङ रुइ लिन से बातचीत शुरू हो गयी। उस दिन वह बहुत अच्छे मूड में थे। बोले— "आप जो कुछ पूछेंगे वह जरूर बताऊंगा। लेकिन ७३ वर्ष का हो गया हूं। अब पहले-जैसी स्मरणशक्ति नहीं रही। इसलिए आपके किसी प्रश्न का उत्तर यदि न दे सकूं, तो बुरा मत मानिएगा।" उसके बाद लगभग एक घंटे तक बातचीत होती रही। भारतीय जनता की जानकारी के लिए प्रस्तुत है इस बातचीत का पूरा ब्यौरा :

—"आपके मन में हिंदी पढ़ने की रुचि कैसे उत्पन्न हुई ?"

—"सन १९४२ की बात है। मैं उन दिनों कुइलिन में था। एक दिन मैंने यह समाचार पढ़ा कि अपने देश को आजाद कराने के लिए जी-जान से जुटे दो भारतीय नेताओं— महात्मा गांधी तथा पं. जवाहरलाल नेहरू को ब्रिटिश

साम्राज्यवादियों ने गिरफ्तार कर लिया है । उन दिनों चीनी जनता भी अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही थी । देशभर में जापान-आक्रमण विरोधी युद्ध चल रहा था । देश के भीतर चल रहे इस मुक्ति संघर्ष ने चीनी लोगों के मन में दूसरे देशों में चल रहे इसी प्रकार के संघर्ष को जानने की उत्कट इच्छा उत्पन्न कर दी थी । मेरे मन में तो यह इच्छा कुछ ज्यादा ही थी । ऐसी मनःस्थिति में ही मैंने एक दिन एक विज्ञापन देखा जिसमें खुनभिङ के राष्ट्रीय पूर्वी भाषा संस्थान में हिंदी पढ़ने के इच्छुक विद्यार्थियों से आवेदन-पत्र मांगे गये थे । मैंने सोचा कि अगर हिंदी पढ़ लूं, तो मुझे भारत जाने का मौका मिल जाएगा । मैं वहां जाकर भारतीयों के मुक्ति संग्राम को अपनी आंखों से देख सकूंगा । बस, यह सोचकर मैंने दाखिले के लिए अर्जी दे दी । पर उन दिनों कुइलिन से खुनभिङ जाना आसान नहीं था । रेलगाड़ी तो थी ही नहीं, सड़कों की हालत भी बहुत खस्ता थी । वे जगह-जगह टूटी पड़ी थीं । मैं बसों में चढ़ते-उतरते और कभी पैदल चलते हुए, पूरे चालीस दिनों में खुनभिङ पहुंचा । प्रवेश-परीक्षा हुई । मैं उत्तीर्ण हो गया । मुझे हिंदी पढ़ने के लिए दाखिला मिल गया ।''

—''आपकी कक्षा में कितने विद्यार्थी थे ? वे आजकल क्या कर रहे हैं ?''

—''हिंदी पढ़ने के लिए केवल दस विद्यार्थियों को दाखिल किया गया था । मुझे नहीं मालूम कि अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद किन-किन कामों में लग गये । हां, अपने एक सहपाठी के बारे में जरूर जानता हूं । वह थे प्रोफेसर जी.ख.ऊ. । वे पेइचिंङ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में प्रोफेसर बने । कई वर्ष पूर्व उन्होंने इस संसार से विदा ले ली ।''

—''आपके हिंदी अध्यापक कौन थे ?''

—''आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जब हमने दाखिला लिया तब राष्ट्रीय पूर्वी भाषा संस्थान में हिंदी पढ़ाने के लिए कोई अध्यापक नहीं था । मुझे बड़ी निराशा हुई । लेकिन संस्थान के अधिकारी पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की घोषणा के समय से ही इस दिशा में प्रयत्नशील थे । इसलिए हमें बहुत अधिक समय अध्यापक के लिए प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी । बहुत जल्दी ही तिब्बत के एक लामा हमें हिंदी पढ़ाने के लिए आये । उनका नाम 'खाङ' था । वह बहुत अच्छी हिंदी जानते थे । पहले वर्ष में उन्होंने ही हमें हिंदी पढ़ायी ।''

—''और दूसरे वर्ष में ?''

—''जब हम दूसरे वर्ष में आये, तब तक शांति निकेतन की सहायता से एक भारतीय अध्यापक को हिंदी पढ़ाने के लिए बुला लिया गया था । उनका नाम श्री कृष्णचंद्र सिंह था ।''

—''आपने कुल कितने वर्ष हिंदी पढ़ी ?''

—''हिंदी-पाठ्यक्रम कुल दो वर्ष का था । अतएव मैंने कुल दो वर्ष हिंदी पढ़ी ।''

—''हिंदी पढ़ने के बाद आपने क्या किया ?''

—''हिंदी की पढ़ाई पूरी होते ही मेरी नियुक्ति उसी संस्थान में सहायक अध्यापक के रूप में हो गयी । सालभर तक काम करने के बाद मुझे शांति निकेतन के चीन भवन के माध्यम से भारत जाने का निमंत्रण मिला । यह बात सन १९४५ के आखिरी महीने की है ।''

—''तो क्या आप भारत गये ?''

—''जी हां, मैं आपको बता ही चुका हूं कि हिंदी पढ़कर भारत जाना मेरा पूर्व निर्धारित

लक्ष्य था। इस संदर्भ में आपको एक महत्त्वपूर्ण बात बता दूं। भारत में बिरलाजी की सहायता प्राप्त एक संस्था थी— 'आर्य धर्म सेवा संघ'। भारत पहुंचने पर मुझे यह पता चला कि इस संस्था ने मुझे छात्रवृत्ति दे दी है। मैंने यह सूचना चीन सरकार के पास भेज दी। सूचना भेजने का लाभ यह हुआ कि चीन सरकार ने मुझे भारत में रहकर अध्ययन करने की अनुमति दे दी।"

—"शांति निकेतन में आप कितने वर्ष रहे ? वहां आपने किन-किन विषयों का अध्ययन किया ?"

—"शांति निकेतन में मैं कुल दस महीने रहा। वहां रहते हुए मैंने हिंदी, संस्कृत और अंगरेजी भाषाओं तथा भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया।"

—"शांति निकेतन में पढ़ाई पूरी करने के बाद क्या आप चीन वापस लौट आये ?"

—"शांति निकेतन में अध्ययन करने के बाद मैं बनारस गया। वहां रहकर कई महीने तक हिंदी पढ़ी। फिर, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग में दाखिला लेकर एम.ए. का विद्यार्थी बना। सन १९४९ में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और उसके बाद पी.एच-डी. में दाखिला लिया। इस बीच हमारा देश आजाद हो गया। मुक्ति के बाद चीन और भारत के राजनयिक संबंध स्थापित हुए। मेरी नियुक्ति भारत स्थित चीनी दूतावास में हो गयी। कुछ समय तक वहां काम करने के बाद मैं चीन लौट आया।"

—"चीन लौटकर आपने क्या काम किया ?"

—"चीन लौटने पर पहले तो मैंने विदेश मंत्रालय में काम किया। फिर अनुसंधान संस्थान में रहा। भारतीय अर्थशास्त्र और राजनीति पर लेख लिखता रहा। सेवानिवृत्ति से पूर्व दस वर्ष तक एशिया-प्रशांत अध्ययन संस्थान के दक्षिण एशियाई सांस्कृतिक केंद्र में काम किया। 'दक्षिण एशियाई अध्ययन' पत्रिका का संपादन किया।"

—"क्या चीन लौटने के बाद भी आपने भारत की यात्रा की ?"

—"जी हां, चीन लौटने के बाद मैं दो बार भारत गया। एक बार सन १९७९ में और दूसरी बार सन १९८० में। दोनों बार कुछ जरूरी बैठकों में भाग लेने गया था।"

—"आपने भारत के कौन-कौन से शहर या प्रांत देखे ?"

—"भारत-प्रवास के पहले दौर में कलकत्ता, पटना, आगरा, दिल्ली, उड़ीसा, औरंगाबाद, अजंता, एलौरा, बंबई और जयपुर गया था। दूसरी और तीसरी बार की यात्रा में पटना, नालंदा, गया और हैदराबाद।"

टेलीफोन पर बात करते हुए घंटेभर से भी ज्यादा हो गया था। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और 'चाय चियन' अर्थात फिर मिलेंगे कहकर टेलीफोन का चोंगा रख दिया।

भारत में पता :
डॉ. ओमप्रकाश सिंहल
—द्वारा डॉ. उषा सिंहल
१५ सुपर एम.टी.एच. (टीचर्स फ्लैट्स)
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र-१३२११९

कामः स्वतां पश्यति।
(अभिज्ञानशाकुन्तलम् २/२)
काम सर्वत्र अपनत्व (आत्मीयता) ही देखता है।

सर्वाधिक निमंत्रण हरदौल जू को मिलते हैं

• अवध श्रीवास्तव

समृद्धि और वैभव का शानदार इतिहास, ओरछा के साथ जुड़ा है । ओरछा में राम राजा का मंदिर है तो, देवर-भाभी के मां-पुत्र—जैसे रिश्ते पर शक करनेवाले हरदौल जू का 'बैठका' भी यहां है ।

हरदौल जू को यहां किसी भी देवता से अधिक धार्मिक मान्यता प्राप्त है, उन पर शक किया सगे बड़े भाई ने कि अपनी भाभी से उनके रिश्ते अनुचित हैं । हरदौल जू महल से लगे फूलबाग में अकेले रहते थे । भाई ने पत्नी से कहा, ''यदि तुम्हारे संबंध देवर से नहीं हैं, तो भोजन कराते समय हरदौल को खीर में जहर मिलाकर दे देना, तभी मैं तुम पर विश्वास कर सकता हूं ।'' पतिव्रता रानी ने हरदौल को खीर के कटोरे में जहर मिलाकर परस दिया, जानते हुए हरदौल जू उस जहर को पी गये और मर गये ।

सर्वप्रथम न्यौता हरदौल जू को

हरदौल जू की इसी चारित्रिक दृढ़ता के कारण करीब एक हजार किलोमीटर के क्षेत्र में उन्हें भगवान मानकर पूजा जाता है । दतिया, सागर, बांदा, ललितपुर, चंदेरी अर्थात समूचे बुंदेलखंड के आराध्य हैं हरदौल जू । पूरे बुंदेलखंड में कोई समारोह, विवाह हरदौल जू की प्रशस्ति में गाये जानेवाले गीतों के बिना अपूर्ण माना जाता है । प्रत्येक विवाह में हरदौल जू को ही सर्वप्रथम न्यौता भेजा जाता है । प्रत्येक विवाह का निमंत्रण-पत्र पहले हरदौल जू के चबूतरे पर रखा जाना आवश्यक है । हरदौल के 'बैठका' में जहां उनके बैठने का तख्त रखा



प्रत्येक विवाह में हरदौल जू को ही सर्वप्रथम न्यौता भेजा जाता है । प्रत्येक विवाह का निमंत्रण-पत्र पहले हरदौल जू के चबूतरे पर रखा जाना आवश्यक है । हरदौल के 'बैठका' में जहां उनके बैठने का तख्त रखा है, सैकड़ों निमंत्रण-पत्रों का ढेर लगा है । इन वैवाहिक निमंत्रण-पत्रिकाओं पर हल्दी व चावल चिपका रहता है ।

है, सैकड़ों निमंत्रण-पत्रों का ढेर लगा है । इन वैवाहिक निमंत्रण पत्रिकाओं पर हल्दी व चावल चिपका रहता है । निमंत्रण पत्रिकाओं के साथ सवा रुपये भी चढ़ाये जाने का रिवाज है, ढेर-से एक रुपये के व चवन्नी के सिक्के हरदौल के बैठका में पड़े हुए हैं । बुंदेलखंड के अधिकांश परिवारों में विवाह संपन्न होते समय हरदौल जू के 'बैठका' के सामने सत्यनारायण की कथा कराने का संकल्प लिया जाता है, प्रतिदिन फूलबाग में अर्थात हरदौल के बैठका के सामने कम-से-कम बीस स्थानों पर सत्यनारायण की कथाएं होती हैं ।

महत्त्वपूर्ण एवं पवित्र तीर्थ

कुल मिलाकर बुंदेलखंड के भोले व धर्मप्रिय निवासियों के लिए हरदौल का बैठका, हरिद्वार, प्रयाग, बद्रीनाथ से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण व पवित्र तीर्थ है ।

हरदौल जू का बैठका ओरछा के भव्य महल से जुड़े हुए एक खूबसूरत फूलबाग में स्थित है । फूलबाग का सौंदर्य हरदौल के प्रकृति प्रेम को दर्शाता है । बैठका की जगह में एक खूबसूरत छत्री बनी है, एक पलंग रखा है, जहां—कहा जाता है हरदौल शाम के समय टहलते थे, विश्राम करते थे । उनकी बैठक के पास कसरत करने के मुद्गर व अन्य हथियार भी रखे हैं । मंदिरों में मूर्तियों पर लगाने के लिए पत्थर के एक बड़े कटोरे में चंदन घोला जाता था । विशाल चंदन-कटोरा भी फूलबाग में स्थित है ।

इस समूचे पुरातत्वीय स्थल का एक नकारात्मक बिंदु यह है कि पुरातत्वीय महत्त्व के इन शानदार भवनों में शासकीय कार्यालय तथा अधिकारियों के निवास स्थल बना दिये गये हैं । नायब तहसीलदार एवं थानेदार ओरछा के इन भव्य स्मारकों में बैठते हैं, सोते हैं, परिवार के साथ रहते हैं, आम पर्यटक दूर से नाम पट्टिका ही देख पाता है । 'फलां सिंह न्यायिक मजिस्ट्रेट' कहते हैं आज भी हरदौल के बगीचे में रातों में आवाज आती है "मैं निर्दोष हूं, मैं निर्दोष हूं ।"

लेकिन देश के किसी भी ऐतिहासिक व पुरातत्वीय स्थल से कहीं अधिक समृद्ध है ओरछा का दस किलोमीटर का क्षेत्र जहां सैकड़ों मंदिर, महल, पवित्र वैत्रवती नदी के किनारे बसे हैं ।

देश के किसी भी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति से कई गुना अधिक विवाह आमंत्रण हरदौल जू को प्राप्त होते हैं, विश्वास न हो तो जाकर देखिए ।

—दया भवन, किरी मोहल्ला
विदिशा (म. प्र.) ४६४००१

महाभारत में एक वचन है —सर्वसुखमीप्सितम्' यानी सब सुख की इच्छा करते हैं । मनुष्य क्या सारे पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े सुख चाहते हैं । शायद प्राणी मात्र की यही जीवात्मक वृत्ति है । हां, कुछ आध्यात्मिक पुरुष अवश्य ऐसे हुए हैं, जिन्होंने बचाने के लिए भूखा भी रहकर कष्ट सहते हैं उसको उसी काया-क्लेश एव भूखे रहने में ही सुख मिलता है । इसी प्रकार जो शरीर को कष्ट ही नहीं पहुंचाते बल्कि आत्महत्या द्वारा शरीर का ही अंत कर देते हैं, उन्हें भी जीवन से अधिक मृत्यु में अधिक सुख मिलता है । संक्षेप

हम कैसे सुखी हों ?

● प्रो. रामजी सिंह

दुःख का स्वप्न किया है । श्रीमद्भागवत में माता कुंती ने भगवान से दुःख मांगा है । कबीर ने तो—

सुख के माथे सिल पड़े नाम हृदय से जाप
बलिहारी वा दुःख की पलपल नाम रटाय

यह कहकर दुःख की आराधना की । गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर ने भी शायद इसी आध्यात्मिक भाव से कहा है—

आरो वेदना आरो वेदना
दाओ प्रभु मोरे आरू चेतना

सुख में मनुष्य शायद भगवान को भूल जाता है या फिर वह अहंकार, पापकर्म की ओर प्रवृत्त होता है । दुःख में हम बरबस भगवान को याद करते हैं और वह हमारा वास्तविक अभीष्ट है ।

चार्वाक ने सुख की भौतिक व्याख्या करते हुए यह सिद्ध किया है कि जो यति-योगी काया-क्लेश सहते हैं या जो कृपण व्यक्ति पैसे में चाहे आध्यात्मिक या भौतिक दृष्टि से विचार करें, हम सुख चाहते हैं ।

फिर प्रश्न है कि वह मिलता क्यों नहीं ? कहीं सुख मृग-तृष्णा तो नहीं कि सदा अप्राप्त रहता है ? मेरी समझ में ऐसी बात नहीं है । फिर प्रश्न आता है कि सुख प्राप्ति के उपाय क्या हैं ?

सुकरात एक अलमस्त फकीर था जो हमेशा ही खुश रहता था । यहां तक कि जब उसे जहर पीने को दिया गया, तो भी जबकि उसके शिष्य दुःख से कातर होकर फूट-फूटकर रोने लगे, तो भी सुकरात प्रसन्न होकर उन्हें समझा ही रहा था । मीरा भी तो हंसकर ही विषपान कर रही थी—

विष का प्याला राणाजी ने भेज्या
पी गयी मीरा हांसी

गौतम बुद्ध की प्रतिज्ञा

किसी व्यक्ति ने सुकरात से पूछा कि तुम्हारी

इस सदाबहार खुशी का राज क्या है ? सुकरात का उत्तर था—"हम कितनी चीजों के बिना रह सकते हैं ?" असल में सुकरात के पास न आलीशान महल थे, न कोई संपत्ति, न वह किसी शासन-प्रशासन का प्रमुख था, देखने में भी शायद अपने समय का एक बहुत कुरूप व्यक्ति था। फिर भी वह प्रसन्न रहता था। शायद हमने धन-धान्य आदि ही सुख का मापदंड मान लिया है। इसी का निराकरण करते हुए यमराज द्वारा दिये गये संपूर्ण भौतिक प्रलोभनों को नचिकेता विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर केवल मृत्यु के रहस्य का ज्ञान देने की ही प्रार्थना करते हुए कहता है—न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो।

संपत्ति से ही सुख नहीं मिलता। एक तो उसकी कोई सीमा ही नहीं। जितनी मिल जाए, उसके बाद भी तृष्णा बनी रहती है—तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा :। यदि कंचन, कामिनी और कीर्ति से ही सुख मिल जाता तो गौतम बुद्ध या महावीर के पास इनमें क्या नहीं थे। गौतम को कपिलवस्तु का राज्य, यशोधरा-जैसी रूपवती, गुणवती पत्नी, राहुल-जैसा फूल-सा सुंदर पुत्र एवं महाराज शुद्धोदन की अर्जित अपार कीर्ति, फिर भी यशोधरा को सोये हुए छोड़कर रात में महल से निकल गये और हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की—"जब तक दुःख का कारण एवं निदान नहीं पा लूंगा, कपिलवस्तु में प्रवेश नहीं करूंगा।"

हम बुद्ध, महावीर, नचिकेता आदि नहीं भी बनें, लेकिन सुकरात की बात को याद रखें कि हम जीने के लिए अपनी जरूरतों को कम-से-कम कितना कर सकते हैं ? इसको हम सादा जीवन जीना, उपभोग, परिभोग, परिमाण भी कह सकते हैं। जीवन जितना सरल हो सके, जितनी कम चीजों के हम गुलाम हो सकें, उसमें आनंद है। आइंस्टीन एक ही साबुन से अपना शरीर साफ करता था, दाढ़ी बनाने में भी उसी का उपयोग करता था और रुमाल आदि छोटी-छोटी चीजें भी उसी से धो लेता था। किसी ने उससे जब पूछा, तो आइंस्टीन ने कहा—"ज्यादा चीजें रखने में परेशानियां बढ़ती हैं और काम तो इससे भी हो जाता है।"

सुख प्राप्ति का संभवतः एक दूसरा भी उपाय है कि हम सुख और दुःख में संतुलित रहना सीखें। अकसर हम सुख में इतराने लग जाते हैं एवं ज़रा-सा भी दुःख होते ही कातर हो

जीवन को अधिकाधिक सुखमय बनाने को हमारे यहां एक व्यावहारिक जीवन-विधान दिया गया है, जिसे हम चतुःपुरुषार्थ के नाम से जानते हैं। यहां न अर्थ की उपेक्षा की गयी है न काम की। वास्तव में मानव-जीवन एकांगी नहीं रह सकता। आहार, निद्रा, भय एवं मैथुन आदि उसकी नैसर्गिक वृत्तियां हैं। हां, उनका विवेकयुक्त परिसीमन होना चाहिए।

जाते हैं । वस्तुतः हमें समझना चाहिए कि सुख-दुःख तो भाई हैं । दिन-रात की भांति सुख-दुःख का चक्र चलता ही रहता है ।

यह सांझ उषा की लाली आलिंगन विरह मिलन का
चिर हास-अश्रुमय आनन रे इस मानव-जीवन का

फलासक्तिविहीन कर्म

इसलिए हम जब तक एवं जितनी दूर तक सुख-दुःख की स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं से उठेंगे, उतनी दूर तक ही हम आनंदित रहेंगे । इसे ही भगवान कृष्ण ने 'स्थितप्रज्ञता' कहा है—**'सुखेषु अनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगत स्पृहः'** हम मानते हैं कि हम पूर्ण स्थितप्रज्ञ नहीं हो सकते, हालांकि उसकी प्राप्ति के लिए ही ज्ञान, भक्ति, निष्काम कर्म एवं योग के चतुर्विध साधन बताये गये हैं । नित्य और अनित्य का ज्ञान हो जाने पर हम बहुत दूर तक स्थितप्रज्ञता प्राप्त कर सकते हैं । लेकिन यदि **'ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका'** मान लें, तो सबके लिए सरल-सुलभ भक्ति का मार्ग तो है ही । बस पूर्ण समर्पण चाहिए, फिर तो सब-कुछ मिल जाता है ।

सुखी मीन ज्यों नीर अगाधा ।
जिमि हरि शरण न एकहु बाधा

गीता में भी भगवान ने अंत में कहा है—**सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरण व्रज** ज्ञान एवं भक्ति का भी मार्ग नहीं रुचे, तो निष्काम कर्म में तो कोई बाधा नहीं । जनक से लेकर गांधी तक इसी अनासक्ति-योग के उदाहरण हैं । अपना कर्त्तव्य करते जाएं, फल जब अपने हाथ में नहीं, तो उसकी चिंता क्यों ?

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

फलासक्ति ही विषय-चिंतन है जिससे संग, काम, क्रोध, मोह, स्मृतिनाश, बुद्धिनाश एवं सर्वनाश का चक्र चलता है । अतः सीधा रास्ता है—"हम कर्त्तव्य करते जाएं । परिणाम तो कर्त्ता, करण, पुरुषार्थ, देव के अधीन है फिर अपना सिर क्यों फोड़ना ? जो हमारे हाथ में नहीं है उसके लिए परेशानी क्यों ? हमारे हाथ में है हमारा कर्त्तव्य । उसे हम संपूर्ण निष्ठा से करें । वस्तुतः मनुष्य फलासक्त होकर ही दुःख पाता है । ईशावास्योपनिषद में भी गीता की भांति कर्म का त्याग नहीं, फल की आसक्ति के त्याग के लिए कहा गया है—

कुर्व्वनेवेह कर्माणि जिजीविषेत शतं समाः
एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरः
करते हुए भी कर्म इस संसार में, शत वर्ष का जीवन हमारा इष्ट हो
तुझ देहधारी के लिए पथ एक यह, अन्यत्र इससे दूसरा पथ है नहीं ।
होता नहीं है लिप्त मानव कर्म से, उससे चिटकती मात्र फल की भावना ।

ध्यान एवं योग का मार्ग

ज्ञान, भक्ति एवं कर्म के अलावा भी ध्यान एवं योग का मार्ग बताया गया है । इसमें भी मानव चित्त की भूमिका से ऊपर उठकर अक्षोभवृत्ति की साधना करते हैं । इसके हजारों प्रकार हैं । अपने यहां आष्टांगिक योग, विपश्यना, प्रेक्षाध्यान, नादबिंदु, ध्यान, भावातीत ध्यान आदि हैं, लेकिन दुनिया के प्रत्येक धर्म में ध्यान की अपनी-अपनी पद्धतियां हैं, लेकिन सबका लक्ष्य एक ही है कि हम मन और चित्त की भूमिका से किस प्रकार उठ सकते हैं । इस प्रक्रिया का चरम बिंदु है समाधि । जो उदात्त आध्यात्मिक वृत्ति के महात्मा हैं, उन्हें राजयोग के इस द्रविड़-प्राणायाम की जरूरत

सुख में मनुष्य शायद भगवान को भूल जाता है या फिर वह अहंकार, पापकर्म की ओर प्रवृत्त होता है । दुःख में हम बरबस भगवान को याद करते हैं और वह हमारा वास्तविक अभीष्ट है ।

नहीं । कबीर ने तो कहा ही है—**साधो सहज समाधि भली**

रामकृष्ण देव को भगवान का शब्द सुनते ही समाधि लग जाती थी । आज के इस तनावयुक्त जीवन में स्थितप्रज्ञता या अक्षोभवृत्ति की साधना अधिक जरूरी है, क्योंकि आज तो सर्वत्र तनाव ही तनाव है । परिवार, पाठशाला, राजनीति, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक जगत तनावों से परिपूर्ण है । इसी में जीना है, तो हमें तनाव से ऊपर रहने के लिए सुख-दुःख से कम-से-कम प्रभावित होने का अभ्यास करना ही होगा । वरना फिर उच्च एवं निम्न रक्तचाप, मानसिक, असंतुलन, विक्षिप्तता, हृदय रोग बढ़ेंगे, इसके लिए कम-से-कम चार बातें तो होनी ही चाहिए :—

१. अपना कर्त्तव्य कर देना चाहिए एवं फल की हरगिज चिंता नहीं करनी चाहिए ।

२. जैसी भी स्थिति आये उसे साहस एवं आनंदपूर्वक स्वीकार करना चाहिए—**जेहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए ।**

३. तत्काल प्रतिक्रिया को यथासंभव हो रोकना ही चाहिए तथा प्रतिक्रिया को कम-से-कम करना सीखना चाहिए ।

४. मितभाषी, मितभोगी, मित अभिलाषी बनने का प्रयास करना चाहिए ।

मानसिक शांति आवश्यक

संक्षेप में सुख प्राप्ति के लिए मानसिक शांति आवश्यक है । गीता के द्वितीय अध्याय में भगवान ने कहा ही है—'**अशान्तस्य कुतः सुखं** ? जहां शांति नहीं, वहां सुख कहां ? चित्त की शांति के लिए ही स्थितप्रज्ञता का दर्शन बताया गया है । यह संसार एवं जीवन द्वंद्वात्मक है, सुख-दुःख, निंदा स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, जन्म-मृत्यु, संयोग-वियोग आदि-आदि । यानी सृष्टि ही द्वंद्वात्मक है । जहां प्रपंच हैं वहां शांति कहां ? इसलिए द्वंद्वातीत होने का प्रयास ही सुख की साधना का मार्ग है । गीता में कहा गया है—**सुख दुःखे समाकृत्वा लाभालाभो जयाजयोः । ततोयुद्धाय युजस्व नैन पार्थ वापुस्यसि** । महाराज जनक के विषय में कहा जाता था—**मिथिलायां समृद्धायां न में त्राद्धते कश्चन् । मिथिलायां प्रदीप्रायां न में दहयति कश्चन् ॥** भगवान राम को भी शस्त्राभिषेक से भी कोई हर्षातिरेक नहीं और वनवास के समय भी मुख किंचित म्लान नहीं हुआ । **प्रसन्नतां गताभिषेकतस्तस्था न मम्ले वनवासदुखतः** सुख प्राप्ति का एक और भी उपाय ढूंढ़ते समय सच्चे सुख एवं झूठे सुख में विवेक करना हम भूल जाते हैं । प्रेय एवं श्रेय में अंतर होता है । यही तो यमराज ने नचिकेता की परीक्षा लेकर बताया था । प्रेय सांसारिक सुख को कहते हैं, जो क्षणिक होता है और उसकी तृप्ति ही नहीं हो पाती । भोग से भोग शांत नहीं होता बल्कि बढ़ता है । वैभव और विश्वास, संपत्ति और ऐश्वर्य की सीमा नहीं ।

अंगं गलितंपलितं मुंडं दशन विहीनं जातुं तुरूण्डम् ।

करवृत कम्पित शोभितदंड, तदपि न मुंचति आशा पिंडम् ॥

देहात्म दर्शन

भगवान बुद्ध ने भी धम्मपद के प्रवचन में स्पष्ट रूप से 'पिय वग्गो एवं सियवग्गो' दो अध्यायों में प्रेय और श्रेय का अंतर बताया । यदि यह परमार्थ दृष्टि जग जाए, तो हम सच्चे सुख की ओर प्रवृत्त होंगे उसके लिए अनेक उपाय हैं, लेकिन सत-साहित्य एवं सच्चे वैरागी महात्माओं एवं सद् गृहस्थों का सत्संग आवश्यक है । अन्य भी उपाय हो सकते हैं—प्रेय वस्तुतः देहात्म साधन है, जिसमें कुछ ऐसा आत्म विरोध है कि वह अपनी उद्देश्य-सिद्धि नहीं कर सकता है । बल्कि यह तो अपने को प्रत्येक चरण पर ही निरस्त और बाधित करता है । भोजन, काम या सत्ता को अन्वेषण-क्रिया के साथ पर्यवसित होने में है बल्कि कभी-कभी तो इनकी अतिशय तुष्टि से वितृष्णा भी उत्पन्न होती है । हां पाशव-स्तर पर इनसे निवृत्ति का बोध उत्पन्न नहीं होता है । देहात्म-साधना की बाधाएं अन्य व्यक्तियों के साथ संघर्ष, षड्यंत्र, कलह आदि को जन्म देते हैं । इसलिए देहात्म-साधन लोक-कल्याण की दृष्टि से एक अत्यंत अनुपयुक्त दर्शन है ।

नैतिक जीवन-आचरण अपेक्षित

इसलिए सुख प्राप्ति के लिए नैतिक जीवन-आचरण भी अपेक्षित है । इसके विपरीत लोग कह सकते हैं कि अनैतिक-से-अनैतिक व्यक्ति सांसारिक रूप से समृद्ध एवं सफल देखा जाता है और नीतिमान व्यक्तियों को काफी यातनाएं भोगनी पड़ती हैं । सत्य की प्रतिष्ठा करनेवाले हरिशचंद्र और सुकरात, अहिंसा के मूर्तिमान प्रभु ईसा-मसीह, मंसूर और गांधी आदि को क्या-क्या दुःख नहीं सहने पड़े । लेकिन फिर बात है कि कर्त्तव्य-भाव या धर्म-भाव से जो दुःख सहना होता है, उसमें एक अजब आत्म-संतोष एवं आत्म-सुख होता है । तात्कालिक दृष्टि से भले ही उनके जीवन दुःखमय दीखते हों, किंतु अंततोगत्वा विश्व-दृष्टि में उन्हीं की विजय होती है । प्रहलाद, ध्रुव, हरिश्चंद्र, राम, पांडव आदि सफल एवं विजय-मान्य होते हैं । इतिहास साक्षी है कि जो जातियां अनीतिमान थीं उनका नाभो-निशां मिट गया । टायनबी ने ऐसी सभ्यताओं के विनाश का इतिहास दिया है । इसलिए सुख का साधन अनैतिक जीवन-शैली नहीं हो सकती है । कार्यों का हमारे मन एवं चित्त पर दबाव पड़ता रहता है एवं बाहर से चाहे जो हो, भीतर-ही-भीतर वह दुःखी भी रहता है । इसका कारण है कि मानव स्वभाव से दुष्ट नहीं है । शांति, सौमनस्य एवं प्रेम आदि उसके सहज गुण हैं, कलह एवं संघर्ष आदि के कारण होते हैं । इसलिए जब अपनी प्रकृति के विरुद्ध वह कार्य करता है या करने को बाध्य होता है तो वह अंतर से दुःखी अनुभव करता है । संघर्ष में सुख होता ही है ।

जीवन को अधिकाधिक सुखमय बनाने के लिए हमारे यहां एक व्यावहारिक जीवन-विधान दिया गया है, जिसे हम चतुःपुरुषार्थ के नाम से जानते हैं । यहां न अर्थ की उपेक्षा की गयी है न काम की । वास्तव में मानव-जीवन एकांगी नहीं रह सकता । आहार, निद्रा, भय एवं मैथुन आदि उसकी नैसर्गिक वृत्तियां हैं । हां, उनका विवेकयुक्त परिसीमन होना चाहिए ।

—कुलपति जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनू-३४१३०६ (राजस्थान)



मकान खाली करवाना

वी.आर. जैन : हमने मकान डाक विभाग को लगभग ग्यारह वर्ष पहले किराये पर दिया था। किराया अनुबंध मात्र पांच वर्ष का लिखा गया था। काफी कोशिश करने के बाद भी विभाग हमारा मकान खाली नहीं कर रहा। डाक विभाग के सभी उच्चाधिकारियों को भी कई बार लिखा, मगर विभाग न तो भवन खाली करता है और न किराया बढ़ाता है, जबकि इस समय इस मकान का किराया ढाई-तीन हजार रुपये प्रतिमाह के आसपास है, जबकि विभाग हमें सिर्फ ५०० रु. ही देता है। इसके लिए हमने राष्ट्रपतिजी तक को लिखा था, मगर वहां से भी हमें कोई जवाब नहीं मिला। कृपया, बताएं कि ऐसे रजिस्ट्रीशुदा अनुबंध का क्या औचित्य है, जिसका पालन ही न किया जाए। यह तो भारत सरकार अथवा डाक विभाग द्वारा मकान-मालिकों के साथ खुलेआम धोखा है।

मकान खाली कराने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग किराया नियंत्रण अधिनियम बने हुए हैं। उन अधिनियमों के द्वारा मकान-मालिक के मकान खाली कराने के अधिकार पर अंकुश लगाया गया है या यह कहिए कि किरायेदारों को संरक्षण दिया गया है। लेकिन इन अधिनियमों में उन कारणों का भी उल्लेख है, जिनके आधार पर मकान खाली कराया जा सकता है। इन नियमों का लाभ साधारण जनता व सरकार समान रूप से उठाता है। पांच वर्ष का अनुबंधित समय समाप्त होने के बाद भी इन अधिनियमों के कारण मकान खाली कराने के अधिकार सीमित कर दिये गये हैं। आपको मकान किराये पर देते समय इन कानूनों की जानकारी रही होगी। इसलिए यह कहना कि मकान खाली न करके सरकार कोई धोखा या विश्वासघात कर रही है, ठीक नहीं है। आपका यह कहना कि सरकार को अपने नागरिकों से कियें वायदे निभाने चाहिए, ठीक लग सकता है, परंतु कानून की वर्तमान स्थिति भी तो आपके पक्ष में होनी चाहिए।

आपने अपने पत्र में उस शहर का नाम नहीं लिखा, जहां पर मकान है। इसलिए यह बता पाना संभव नहीं कि उस क्षेत्र में कौन-सा किराया नियंत्रण अधिनियम लागू होता है।

जमानत देकर फंसा

मोहन गुप्त, ग्वालियर : मैंने अपन एक परिचित को सितंबर, ८८ में तीन हजार रुपये का एक राष्ट्रीयकृत बैंक से लोन दिलवाया था, जिसकी जमानत मैंने स्वयं दी थी। परिचित ने लोन की एक भी किश्त नहीं चुकायी, लिहाजा लोन और ब्याज की रकम जून ९३ में ८५०० रुपये हो गयी। अतः बैंक ने मेरे कमीशन में से चार सौ रुपये प्रतिमाह काटना शुरू कर दिया। अभी लगभग ढाई हजार रुपये कटना शेष है। कृपया बताएं कि मैं उस परिचित से अपनी रकम कैसे वसूल कर सकता हूं।

यह ठीक है कि मूलतः लोन व ब्याज देने

का उत्तरदायित्व कर्ज लेनेवाले का है और जमानत देनेवाला व्यक्ति यह रुपया उसके कर्ज की अदायगी के लिए ही दे रहा है । इसलिए आपको अब तक दी गयी रकम उक्त परिचित से प्राप्त करने का अधिकार है । यह रकम प्राप्त करने के लिए आप न्यायालय में दावा कर सकते हैं तथा न्यायालय से आपके द्वारा भुगतान की गयी रकम के साथ उस पर वापस किये जाने तक के समय का ब्याज व न्यायालय में किया गया व्यय, दिलवाने की भी प्रार्थना कर सकते हैं ।

खुद ही घर छोड़ गयीं

विश्वकर्मा, दुर्ग : मेरा विवाह वाराणसी में जनवरी, ९२ को हुआ । विवाह पूर्व वधू-पक्ष वाले जिस सभ्यता व शालीनता से पेश आते थे, विवाह के उपरांत उतने ही रूखेपन से पेश आते हैं । दरअसल, वे अपनी लड़की को अपने ही घर पर रखना चाहते थे । इसके अलावा और भी कई बातें अपनी ही मनमानी से करना चाहते हैं । उनके रवैये से ऐसा लगा, जैसे सिर्फ दिखावे के लिए ही उन्होंने लड़की की शादी की है । अतः अपनी लड़की को वापस ले जाने के लिए उन्होंने खूब हंगामा किया । हमने उनकी लड़की को उसके पिता व भाई के साथ भेज दिया । जाने के बाद उन लोगों ने वाराणसी कोर्ट में हम पर दहेज के लिए प्रताड़ित करने का झूठा मुकदमा दायर कर दिया है व भरण-पोषण का भी मुकदमा दायर किया है । क्या स्वेच्छा से पति का घर छोड़कर जानेवाली पत्नी को भरण-पोषण पाने का अधिकार है ?

विवाह के बाद कन्या पक्ष का व्यवहार बदलना दुर्भाग्यपूर्ण है । लड़की के घरवाले लड़की को विवाह के बाद भी अपने घर रखना चाहते हैं, परंतु केवल उनकी इच्छा से तो निर्णय होना नहीं है । लड़की की स्वयं की क्या इच्छा है, वह अधिक महत्त्वपूर्ण है । पता करें कि

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

आपकी पत्नी अपने पिता के पक्ष में है या आपका साथ देना चाहती है ।

किसी भी व्यक्ति को नियमानुसार मुकदमा प्रारंभ करने का अधिकार है, परंतु निर्णय तो न्यायालय ने साक्ष्य के आधार पर करना है । आपकी पत्नी अपना पक्ष प्रस्तुत करेगी, आप भी अपना पक्ष प्रस्तुत करने को स्वतंत्र हैं । यदि आप यह मानते हैं कि आपकी पत्नी आपकी इच्छा के विरुद्ध अपने मां-बाप के पास रह रही है, तो आप दांपत्य संबंधों की पुनर्स्थापना के लिए कार्यवाही कर सकते हैं । उससे यदि आप अपनी पत्नी को वापस लाने में सफल हो जाएं, तो आपकी समस्याओं का समाधान हो जाएगा ।

शर्मा : अनुसूचित जाति ?

योगेन्द्र शर्मा, पटना : राष्ट्रपति महोदय के अध्यादेश १९७६ के अनुच्छेद के तहत लोहार जाति को अनुसूचित जन-जाति का दरजा दिया गया है । उच्च न्यायालय, पटना तथा उच्चतम न्यायालय, नयी दिल्ली ने भी इसी मामले में फैसला देते हुए लोहार जाति को 'अनुसूचित जन-जाति' माना है । इसके बावजूद बिहार सरकार ने अभी तक अधिसूचना जारी नहीं की । जिसके कारण संबंधित पदाधिकारी जाति प्रमाण-पत्र निर्गत नहीं कर पा रहे हैं । अतः मैं यह जानना चाहता हूं कि केंद्रीय सेवाओं में कार्यपालन दंडाधिकारी द्वारा निर्गत शपथ-पत्र को जाति प्रमाण-पत्र के बदले में देने पर परीक्षा में बैठने की अनुमति तो मिल जाती है, तो क्या आयोग नियुक्ति के समय इस शपथ-पत्र को

मान्यता देगी ?

आप अपने नाम के साथ शर्मा लिख रहे हैं, इसे आप अनुसूचित जन-जाति का मनवाना चाहते हैं। स्थिति स्पष्ट नहीं हो पाती। समस्या जो आपने लिखी है, वह उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय के निर्णय से संबंधित है। न्यायालय का निर्णय किस संदर्भ में है, तथा क्या है— यह तो निर्णय देखकर ही कहा जा सकता है। भारत के संविधान के अनुसार उच्चतम न्यायालय का निर्णय, देश का कानून माना जाता है। कोई भी सरकार उसकी अवमानना नहीं करती। यदि बिहार सरकार, उच्चतम न्यायालय के किसी आदेश का पालन नहीं कर रही, तो न्यायालय में आदेश को मान्यता देने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

नियुक्ति के लिए शपथपत्र नहीं, जाति प्रमाण-पत्र चाहिए और सरकार को न्यायालय द्वारा प्रतिपादित कानून के अंतर्गत कार्यवाही करनी चाहिए।

किराया नहीं देती

गोपालसिंह यादव, साबरमती : मेरे मकान में ढाई साल से एक औरत किराये पर रहती है। उसने एक साल किराया दिया, फिर बंद कर दिया। अठारह-बीस महीने का किराया चढ़ गया, तो मैंने कोर्ट में किराया वसूली और मकान बेदखली का दावा किया। मैंने उसे कभी किराये की कोई रसीद नहीं दी है। मेरे वकील ने उसे जो नोटिस दिया था, वह उसे मिल गया है। फिर भी उसने कोर्ट में भी किराया जमा नहीं कराया। क्या उसका सामान फेंककर जबरन मकान खाली कराना ठीक रहेगा या कोर्ट के फैसले का इंतजार करना ?

आपने मकान किराये पर दिया, इस तथ्य को आपने अपने वकील द्वारा भेजे नोटिस में स्वीकार किया है। इसके बाद आपने शेष किराया प्राप्त करने तथा मकान खाली करवाने के लिए दावा किया। इसमें भी आपने मकान किराये पर दिये जाने का तथ्य स्वीकार किया होगा। यह तथ्य स्वीकार किये बिना किराया प्राप्त करने का दावा करना संभव नहीं था। जबरदस्ती किरायेदार का सामान निकाल फेंकने की कार्यवाही उचित नहीं है। आपने न्यायालय में अपना दावा प्रस्तुत कर रखा है। न्यायालय के निर्णय की प्रतीक्षा करें। आपको न्यायालय से शीघ्र निर्णय करवाने के प्रयास करने चाहिए।

कब्जा भाइयों का

दीपक साहू, हरिद्वार : मेरे पिताजी तीन भाई हैं। तीस-पैंतीस साल से एक मकान तीनों भाइयों के नाम से है, जिसमें तीनों भाई रहते हैं। दो भाइयों ने अपने हिस्से से कहीं अधिक भाग पर कब्जा कर रखा है, जबकि मेरे पिताजी के पास ऊपरी मंजिल का थोड़ा-सा हिस्सा है। उन दोनों भाइयों का कहना है कि जो जहां रहता है, वही उसका हिस्सा है। क्या हम अपना हिस्सा अलग करवा सकते हैं ?

मकान तीनों भाइयों का है। इसका अब तक बंटवारा नहीं हुआ है। मकान का प्रयोग करने के आधार पर कोई भी भाई किसी भाग विशेष का स्वामी नहीं माना जा सकता। आपके पिताजी का यह अधिकार है कि वह मकान का बंटवारा करने की मांग करें। आपस में निर्णय न होने की स्थिति में आपके पिताजी न्यायालय द्वारा बंटवारा करवा सकते हैं। न्यायालय मकान के तीन समान भाग करके प्रत्येक को एक भाग दिला सकता है। न्यायालय में आपको यह प्रार्थना भी करनी चाहिए कि आपके भाग का कब्जा भी आपको दिलवाया जाए।

व्यंग्य

चूहा ब्रांड 'प्याज': ताकत का राज

• प्रेम दीवान

आजकल काम की तलाश थी । यानी आजकल मैं बेकार था । यूं मैं शिक्षित था, मेहनती था, मगर किस काम का ? आज जमाना है अंगरेजी का और मैंने एम.ए. पास किया था हिंदी विषय को लेकर । किसे फुरसत है आजकल कि हिंदी की कविता, कहानी, दोहे, अलंकार, नाटक आदि के पचड़े में पड़े । यदि अंगरेजी में भी एम.ए. किया होता तो किसी फर्म में कोरेस्पांडेंस असिस्टेंट की नौकरी ही मिल गयी होती । मगर इतनी अकल थी कहां...

फिर भी मैं रिक्त स्थानों के लिए प्रार्थना-पत्र भेजता । यह दीगर बात है कि अपनी शान बरकरार रखी थी । यानी प्रार्थना-पत्र केवल एक्ज़ीक्यूटिव पोस्ट के लिए ही भेजता था । सेल्ज़-एक्ज़ीक्यूटिव, पर्सनल आफीसर, डायरेक्टर, मैनेजर... ऐसी कोई भी पोस्ट होती तो मेरा साइक्लोस्टाइल करवाया प्रार्थना-पत्र चला जाता । यह जानते हुए भी कि जमाना बेदर्द है । मेरी दाल नहीं गलनेवाली वहां ।

मगर हमारी तो संस्कृति ही ऐसी है । हम अपनी काबलियत से अधिक भगवान पर भरोसा करते हैं । कुंडली और हस्तरेखा में यदि लिखा है तो जिंदगीभर प्रतीक्षा कर सकते हैं । बहुत निराश हों तो मंदिर में जाकर मूर्ति के सामने नाक रगड़ते हैं, भगवान को प्रसाद का लालच देते हैं । तो भाई, मैं भी यह सब करता रहता था । तब कैसे न मेरे दिन फिरते ? आखिर, एक दिन मुझे भी एक इंटरव्यू लैटर आ ही गया ।

यह एक एडवरटाइजिंग कंपनी थी । मेरी उम्मीद बंधी । आजकल विज्ञापन हिंदी में भी बनते हैं । टी.वी. के लिए, रेडियो के लिए, समाचार-पत्रों के लिए । मुझे यहां काम मिल सकता था । और बात भी यही थी । मैं जब अगले दिन वह इंटरव्यू-लैटर लेकर उस कंपनी के आफिस में पहुंचा तो सुसज्जित स्वागत-कक्ष में बैठी सुंदरी ने मुझे एक वातानुकूलित कमरे में भेज दिया । वहां एक दढ़ियल ने मुझसे सीधी बात ही इस दिशा में की । पूछा, "आपके घर में टी.वी. है ?"

"जी हां, है..." मैंने उत्तर दिया ।

"कलर या ब्लैक-एंड-व्हाइट ?"

"कलर ।"

"आप टी.वी. में कौन-कौन-से प्रोग्राम देखते हैं ?"

मैंने वे सभी सीरियल गिनवाये, जिनकी आजकल चर्चा थी ।

"तो आप विज्ञापन भी अवश्य देखते होंगे ?"

"हां... ।"

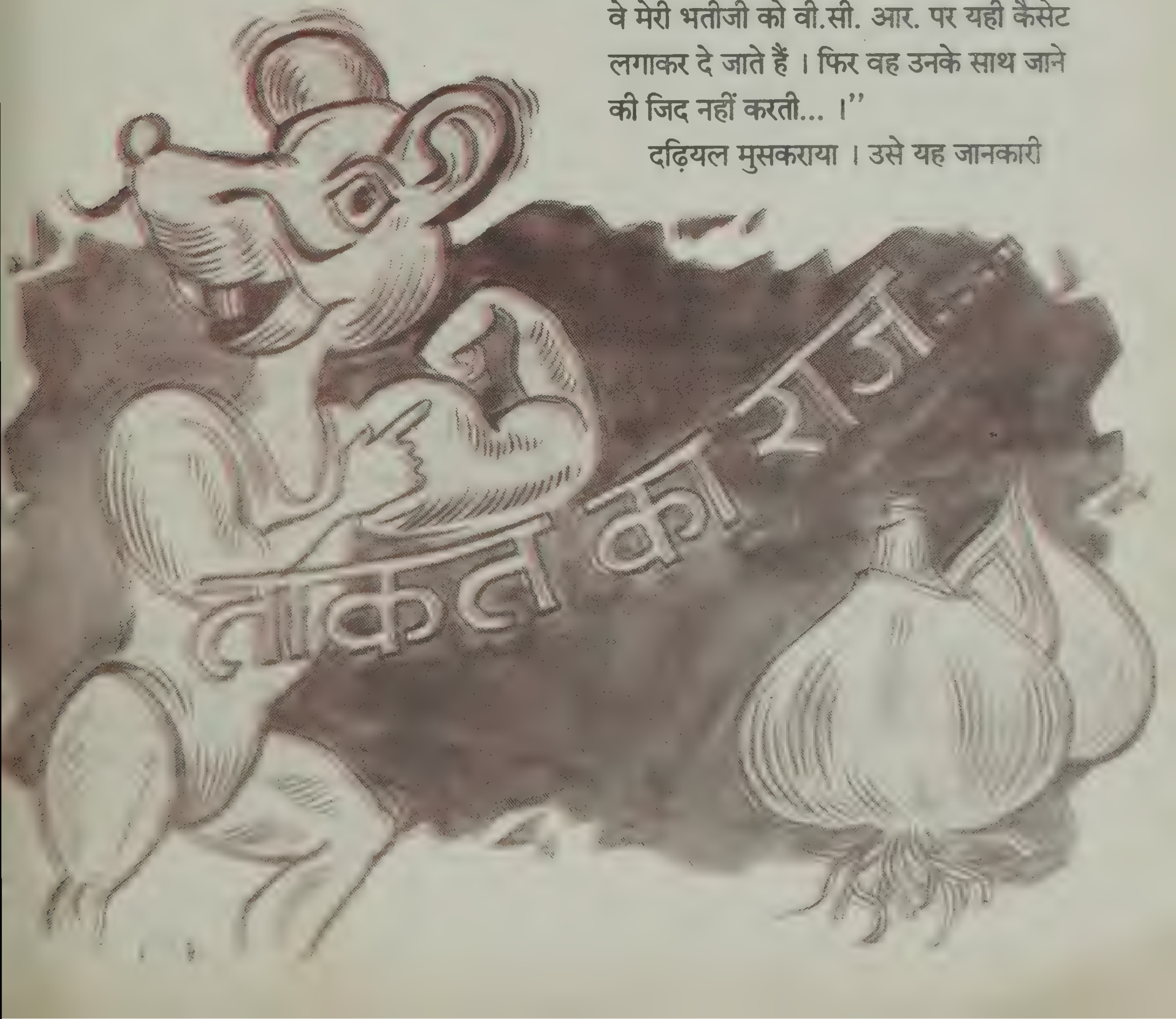
"आप इन विज्ञापनों से कितना प्रभावित होते हैं ? क्या आप ये प्रॉडक्ट खरीदते हैं ?"

मैंने सोचकर उत्तर दिया, "प्रभावित बहुत होते हैं । बाजार जब खरीदारी करने जाते हैं तो प्रॉडक्ट से परिचित होने के कारण इसे खरीदने में एक प्रकार की प्रसन्नता होती है..."

"आपके घर में और कौन-कौन विज्ञापनों से प्रभावित होते हैं ?... यानी वे यह प्रभाव किस तरह व्यक्त करते हैं ?"

"मेरी भतीजी जो नौ वर्ष की है, उस पर तो इन विज्ञापनों ने कमाल का असर किया हुआ है । वह टी.वी. प्रोग्रामों से अधिक ये विज्ञापन देखना पसंद करती है । यहां तक कि भाई साहब ने वी.सी.आर. पर केवल विज्ञापनों का एक कैसेट तैयार किया हुआ है । उन्हें जब भाभी के साथ अकेले बाजार जाना होता है, तो वे मेरी भतीजी को वी.सी. आर. पर यही कैसेट लगाकर दे जाते हैं । फिर वह उनके साथ जाने की जिद नहीं करती... ।"

दढ़ियल मुसकराया । उसे यह जानकारी



> **लोग जब चावल और आटे को भी 'ब्रांड इमेज' के बल पर बेचने का जतन कर सकते हैं, तो प्याज को क्यों नहीं ?**

खासी दिलचस्प लगी । उसने फिर पूछा, "आपने हिंदी में एम.ए. किया है, क्या आपको कहानी-नाटक आदि लिखने का शौक रहा है ?"

लीजिए, मैंने मन में सोचा । हिंदी का विद्वान और लिखने में रुचि न रखे ! कहानी, नाटक, कविता यही तो ओढ़ना-बिछौना था, जिसके कारण हिंदी में एम.ए. किया और इसके अलावा कुछ और कर ही न सका । कुछ कहानियां हिंदी की स्थानीय पत्रिकाओं में भी छपी थीं । तीन नाटक लिखे थे, मंचित नहीं हुए, तो क्या हुआ ? कविताओं की तो एक डायरी थी । मगर मैंने यह सब बताना उचित नहीं समझा । केवल उन्हें छपी हुई कहानियां दिखाने का निर्णय किया, जिन्हें मैं साथ लेता आया था ।

कहानियां दस-बारह थीं । प्रायः हास्य-व्यंग्य की । फाइल दढ़ियल के सामने रखी । दढ़ियल ने कहानियां देखीं । कुछ पढ़ीं । वह कुछ प्रभावित दिखा । फिर एकाएक एक प्रश्न किया, "क्या आप हमारे लिए हिंदी में विज्ञापन लिख सकेंगे ? एकदम दिलचस्प, जो आपकी भतीजी को भी पसंद आये !"

मुझे लगा कि दढ़ियल ने मुझ पर फूलों की वर्षा की थी । मुझे सीधा राज दरबार में ले गया था और वहां खाली पड़े राजसिंहासन पर ला बिठाया था । मैं जो कल तक अपने-आप को बेकार, बेकरार और बेजार पा रहा था, एकाएक जी उठा था । अपने-आप को योग्य महसूस करने लगा था । मैंने पूरे आत्म-विश्वास के साथ हामी भरी कि 'मैं यह काम बखूबी कर सकता हूं ।'

दढ़ियल को मेरी बात पर विश्वास हो गया । उसने मुझे उसी समय एक प्रोजेक्ट हवाले कर दिया । एक प्याज बेचनेवाली कंपनी के लिए, उनके 'चूहा' ब्रांड प्याज को लोकप्रसिद्ध करने हेतु टी.वी. में प्रसारण के लिए एक विज्ञापन लिखना था । साथ ही विज्ञापन का स्क्रिप्ट अगले रोज, इसी समय उन दढ़ियल महोदय को पेश करने का आदेश मिला ।

□ □ □

मैं जब उस आफिस से निकलकर बाहर सड़क तक आया, तो पहले-पहल मुझे यह काम बहुत आसान लगा । लेकिन, ज्यों-ज्यों इस विषय पर विचार करता गया, तो मस्तिष्क घूमने लगा और लगा कि यह सौदा तो सौ प्याज और सौ जूते खाने-जैसा था । आखिर, लोग 'चूहा' ब्रांड प्याज ही क्यों खायें ? गली में, चिल्ला-चिल्लाकर रेहड़ी पर जो प्याज बेचने आते हैं, उनके प्याजों में क्या बुराई है ? मगर... यही तो नुक्ता था । आज के विज्ञापनों की यही तो विशेषता थी । वे आप में ऐसी हवा भर देते हैं कि आप उड़ते हुए जाएं और विज्ञापनवाला माल खरीदकर ले आयें । आप यदि ढीठ बनकर न भी जाएं, तो बच्चे परेशान कर देते हैं । वे एक पल नहीं रुक सकते । फिर जाना ही पड़ता है ।

मैंने घर पहुंचकर टी.वी. खोला और दोपहर के प्रोग्राम में कुछ विज्ञापनों के नमूने देखने लगा। फिर रात को देखे। प्रोग्राम चाहे कितना आकर्षक हो, टाइटल और 'थीम सांग' गाकर उसे शुरू भी कर दिया जाता था, मगर, फिर भी, इसके बाद जो विज्ञापन दिखाये जाते थे, वे सीरियल या अन्य प्रोग्राम के आकर्षण को ऐसी पटखनी देते कि वह चारों खाने चित ही गिरा दिखायी देता।

तो ऐसा चाहिए था विज्ञापन। लोग 'चूहा' ब्रांड प्याज को ही ढूंढ़े, प्याज को नहीं। आजकल विज्ञापनों ने जिस प्रकार हमारे मस्तिष्क का घेराव कर रखा है, इसमें यही तो होता है। यदि खरीद की जानेवाली वस्तु की 'ब्रांड इमेज' है, तो पसंद है, वरना नहीं। लोग जब चावल और आटे को भी 'ब्रांड इमेज' के बल पर बेचने का जतन कर सकते हैं, तो प्याज को क्यों नहीं ?

मैं सोचने लगा। खरीदते समय 'ब्रांड इमेज' क्या असर करती है ? भरोसा ! ठीक वही वस्तु पाने की गारंटी, जिस तरह की विज्ञापन ने हमारे मस्तिष्क में भर दी ! परंतु नहीं, बहुत से विज्ञापन केवल नाम उछालते हैं,गुण नहीं। अर्थात, नाम से जान-पहचान। मतलब यह कि विज्ञापन ग्राहक की जेब से एक मोटी, अतिरिक्त रकम निकालने में कारगर सिद्ध होते हैं। वरना आप ही बताइए, क्या खादी-ग्रामोद्योग द्वारा उपलब्ध कराये गये साबुन, साड़ियां, कुरते-पायजामे, अचार और दंतमंजन बुरे हैं? मैं तो कहूंगा कि यदि आप ब्रांड का बुखार ठंडा करें, तो यह माल कहीं अधिक सस्ता और कहीं अधिक बढ़िया है।

मगर... क्षमा कीजिए, मैं तो उलटा **सोचने** लगा था। मुझे तो ब्रांड-वाद की प्रशंसा करनी चाहिए। इसके गुण गाने चाहिए। इसी के कारण तो मेरी रोजी-रोटी, भविष्य, शादी-ब्याह, बच्चे और बच्चों के लालन-पालन का मसला हल होने जा रहा था। और मैं इसी के खिलाफ सोच रहा था ! नहीं, मैं फिर से ब्रांड-वाद के हक में सोचने लगा। 'चूहा' ब्रांड प्याज का विज्ञापन कैसे होना चाहिए, इसकी कल्पना में डूब गया।

मगर रात तक कोई बात समझ में आयी नहीं। मैं टी.वी. देख रहा था और कुढ़ रहा था कि दूसरे लोग जाने कैसे इतने अच्छे विज्ञापन लिख लेते हैं। मुझे क्यों नहीं कोई आइडिया सूझता। तब अचानक मेरी भतीजी, जिसका नाम पिंकी था, आ टपकी। मुझे मेरी दुनिया से खदेड़ती हुई बोली, "चाचा, एक कहानी सुनो। बड़ी मजेदार कहानी है।"

मुझे गुस्सा आया। मैं जिंदगी-मौत से लड़ रहा था और इसे अपनी कहानी की पड़ी थी। टाला। "नहीं पिंकी। मैं एक जरूरी काम कर रहा हूं ..."

"टी.वी. ही तो देख रहे हो," वह बिगड़ती हुई बोली। मानो कुछ याद दिलाया हो।

अब मैं उसे कैसे समझाता कि मेरे लिए टी.वी. देखना एक काम था, जबकि वह इतवार के दिन जब टी.वी. के सामने जमी रहती, तो मैं उसे डांटता था। मौके की नजाकत समझकर मैं मान गया। उठकर टी.वी. बंद किया और पिंकी के पास आकर बोला, "अच्छा तो सुनाओ कहानी..."

पिंकी कहानी सुनाने लगी। "एक चूहा

था..."

चूहा... मेरे कान खड़े हो गये। मेरा सारा ध्यान वहीं केंद्रित हो गया। पिंकी आगे बोली, "वह न, एक बार जंगल में चूहा घूम रहा था। इतने में वहां एक शेर आ निकला। चूहा शेर के पैर के नीचे आ गया। शेर ने चूहे को पकड़ लिया। खूब कसकर। फिर चूहेरामजी तड़पे। वह शेर के सामने गिड़गिड़ाने लगा। बोला, 'शेर भैया, शेर भैया मुझे छोड़ दो। मैं भी किसी दिन तुम्हारे काम आऊंगा। मेरी जान बख्श दो...।' शेर ने चूहे को देखा। उसे जाने कैसे चूहे पर रहम आ गया। उसने चूहे को छोड़ दिया..."

कहानी मैंने यहीं तक ही सुनी कि एकाएक एक आइडिया बिजली की तरह मेरे मस्तिष्क में कौंध गया। आइडिया ही तो चाहिए था मुझे। आइडिया ही तो मेरे काम की आत्मा थी...। मैंने यह कहानी पहले भी सुनी हुई थी। इसलिए विज्ञापन का ढांचा एकाएक मेरे मस्तिष्क में आ गया था। रात को मैंने विज्ञापन की स्क्रिप्ट लिख डाली।

अगले दिन मैं दढियल के सामने बैठा था। वह मन-ही-मन स्क्रिप्ट पढ़ रहा था। मेरा दिल पिंजरे में फंसे चूहे की भांति ऊपर-नीचे चक्कर काट रहा था। अचानक दढ़ियल मुसकराया। फिर मेरी ओर देखकर बोला, आइडिया अच्छा है।

जब एक शिकारी शेर को अपने जाल में फांस लेता है, और वही चूहा वहां आ पहुंचता है, तो पीछे से एक आवाज आएगी... "चूहे ने मित्र की मदद की। वह जाल कुतरने में जुट गया। जाल बड़ा था। मगर चूहा भी बलवान था। जानते हैं चूहे की ताकत का राज क्या है? 'चूहा' ब्रांड प्याज। ताजा, साफ-सुथरे और वैज्ञानिक ढंग से स्टोर किये हुए... चूहा ब्रांड प्याज..."

— ४/३६, राजेंद्र नगर,
नयी दिल्ली-११००६०

एक चित्र : दो पहलू

श्मशान में अर्थी आयी तो बहुत धूम-धाम से सुसज्जित, चांदी और सोने से मढ़ी हुई। साथी जोर-जोर से विलाप कर रहे थे। चंदन और कपूर की सुरभि चारों ओर फैल गयी। दूसरे ही क्षण वह चमचमाती अर्थी अग्नि की लपटों में भस्म हो गयी।

* * *

दूसरी अर्थी आयी। चिथड़ों में लिपटी हुई। साथियों की भीड़-भाड़ भी नहीं थी। रोने और चिल्लाने की आवाजें भी नहीं थी। क्षणभर में उठती हुई लपटों में सब कुछ भस्म हो गया।

* * *

दोनों स्थानों पर बस एक मिट्टी का ढेर था।

—डॉ. इंदिरा कुलश्रेष्ठ 'नूपुर'

क्या कहने हिमालयी आर्किड्स के

• डॉ. आर. एस. सिलारा

उद्यानिकी का शौक यूं भी एक रचनात्मक शौक माना जाता है । बहुमंजिली इमारतों के छोटे-छोटे सेट हों या ठाठदार कोठियां, उद्यानिकी के शौक से कई प्रकार के कलात्मक पौधों को गमलों तथा क्यारियों में कुछ मेहनत उठाकर आसानी से उगाया जा सकता है ।

परंतु सामान्य पुष्पीय पौधों की अपेक्षा, कुछ विशेष वर्ग के पौधों, जैसे-कैक्टस, आर्किड्स, मनीप्लांट वर्ग के पौधे आदि को अपने बागवानी शौक के लिए उगाते समय कुछ विशेष प्रबंध करने पड़ते हैं, तथा अतिरिक्त देखभाल करनी पड़ती है । इस विशेष देखभाल का कारण इन वर्गों के पौधों का स्वभाव होता है । फिर आर्किड समूह के पौधे तो अपने प्राकृतिक आवास (हैबीटेट) के प्रति अति संवेदनशील होते हैं । थोड़ी-सी वातावरणीय दशाओं में परिवर्तन या प्रबंध ठीक न होने से आपकी सारी मेहनत पर पानी फिर सकता है ।

भौगोलिक वितरण तथा स्वभाव

इससे पहले कि हम हिमालयी (पश्चिमोत्तर हिमालय) आर्किड्स की कुछ किस्मों की जानकारी प्राप्त करें, आइए थोड़ा इस वर्ग के पौधों के भौगोलिक वितरण तथा स्वभाव पर दृष्टि डालें । वनस्पति वर्गीकरण के अनुसार आर्किड्स, एक बीज पत्री कुल आर्किडेसी में रखे गये हैं । नवीनतम शोध के अनुसार विश्व में इस कुल के पौधों के वंश (जींस) तथा जाति (स्पेसीज) की संख्या क्रमशः ८०० एवं ३५,००० के लगभग आंकी गयी है । जहां तक भारत में इनके वितरण का प्रश्न है, यह मुख्यतः पूर्वी हिमालय (दार्जीलिंग/सिक्किम, १५००-३००० मी.) तथा पश्चिमोत्तर हिमालय (गढ़वाल/ कुमाऊं/कश्मीर, १०००-३५०० मी.) की घाटियों एवं पहाड़ी ढलानों पर पाये जाते हैं । पूर्वी तथा पश्चिमोत्तर हिमालय में इनके वंश तथा जाति के सदस्यों की संख्या क्रमशः १२५ : ८००० एवं ५५ : १२५ है । कुछ जातियां अवश्य ही महाराष्ट्र व दक्षिण भारत में भी मिलती हैं ।

उपयुक्त प्राकृतिक आवासीय व वातावरणीय दशाओं (अत्यधिक आर्द्रता-वर्षा तथा मध्यम ताप) के अनुसार भारत में आर्किड्स मुख्यतः पूर्वी भारत के हिमालयी क्षेत्र में अधिकता से



पाये जाते हैं । इसी कारण शुष्क तथा गरम दशाओं में इन्हें उगाना काफी मुश्किलें उत्पन्न करता है । इस तथ्य को ही ध्यान में रखकर भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण विभाग द्वारा पूर्वोत्तर हिमालय में लीयोंड वानस्पतिक उद्यान में आर्किड संग्रहालय 'आर्किडेरियम' का विकास किया गया है । इस संग्रहालय में आधुनिक वैज्ञानिक विधियों द्वारा लगभग २००० स्थलीय व अधिपादप आर्किड्स को सफलतापूर्वक उगाया जा रहा है । इनमें सिंबिडियम, डेंड्रोबियम, सीलोगाइन, वांडा आदि की संकर (हाइब्रिड) किस्में भी संग्रहालय की शोभा बढ़ा रही हैं।

जहां तक आर्किड्स के स्वभाव का प्रश्न है, यह मुख्यतः बहुवर्षीय स्थलीय व अधिपादप तथा अंशतः मृतोपजीवी पौधों के रूप में उगता है । स्थलीय प्रजातियों की अपेक्षा अधिपादप आर्किड्स की संख्या पूर्वोत्तर हिमालय में अधिक पायी गयी है । स्थलीय आर्किड्स की अपेक्षा अधिपादप आर्किड उगाना अधिक सरल होता है, क्योंकि ये सामान्यतः पेड़ों के तनों, डालों व चट्टानों पर आसानी से उगता है । आर्किड के पौधे में तीन प्रकार की अपस्थानिक जड़ें होती हैं । पहली, जिन्हें क्लिंगिंग रूट्स कहा जाता है, आधार पर भली प्रकार से चिपक जाती हैं । दूसरी, एबजारबिंग रूट्स कहलाती हैं, जो पौधे के आधार के आस-पास जमा ह्यूमस से भोज्य पदार्थ अवशोषित करती हैं । तीसरी, एरियल रूट्स होती हैं, जो कि हवा में लटकती रहती हैं तथा वायु से नमी सोखती हैं ।

उद्यान में लगाने की विधि

अतः अपने बरामदे, बालकनी व उद्यान में रस्सी व तार के सहारे लटकते डब्बों, गमलों अथवा किसी पेड़ की मोटी छायादार शाखों पर अधिपादप जैसे वांडा, सीलोगाइन, कैलेंथी, इरिया, बल्बोफिलम्, डैंड्रोबियम, लिपेरिस आदि को उचित छाया व आर्द्र वातावरण में उगाया जा सकता है । पश्चिमोत्तर हिमालय (गढ़वाल व कुमाऊं) में यह प्रजातियां अधिकतर पायी जाती हैं । इसमें यह ध्यान रखना पड़ता है कि पौधे की जड़ों के साथ-सा कुछ अधिपादप मास तथा ह्यूमस भी उखाड़क जिस प्राकृतिक स्थिति में आर्किड का पौधा हो वैसे ही कृत्रिम स्थिति में लगा दें । तथा ४-६ दिन पानी के छिड़काव से नमी बढ़ा दें । कुछ दिन बाद नये वातावरण में पौधा स्वयं समायोजित हो जाता है । आर्द्रता को ध्यान में रखते हुए वर्षाकाल में ही इन्हें स्थानांतरित कर उचित होता है । चूंकि अधिकतर अधिपादप आर्किड मार्च-जून के बीच खिलते हैं । अतः इस समय इन्हें अपने प्राकृतिक आवास से हटाना ठीक नहीं होता है ।

इसके अतिरिक्त सेटाइरम, मैलेक्सिस, हेबेनेरिया, हरमीनियम, स्पाइरेंथस, गुडिरा, औरकिस, एपिपेक्टिस आदि स्थलीय, बल्ब (टयूबर) युक्त प्रजातियां पश्चिमोत्तर हिमालय (४००-२५०० मी.) में पायी जाती हैं । जो वर्षाकाल में कई दिनों तक खिलती दिखायी देती हैं । इन्हें उगाने के लिए हयूमस युक्त मिट्टी (गमलों या डिब्बों में) ही ठीक रहती हैं । टयूबर तथा पुष्पीय तना बहुत नाजुक तरीके से जुड़ा होता है । अतः इन्हें प्राकृतिक आवास से निकालते समय पूर्ण सावधानी रखनी पड़ती है ताकि टयूबर मुख्य तने से अलग न हो । यहां



स्थलीय भूमिगत बल्बयुक्त
सेटाइरियम नेपालेंस (सालंग मिश्री)



कृत्रिम आवास में सफेद पुष्प



यह ध्यान देनेवाली बात है कि छायादार स्थान का तात्पर्य यह नहीं कि उस स्थान तक सूर्य का प्रकाश पहुंचे ही नहीं, अपितु उस स्थान पर सीधे तीव्र प्रकाश नहीं होना चाहिए। पर्वतीय क्षेत्रों में आर्किडस उगाना अधिक सुविधाजनक होता है। लेकिन अभी इस ओर उद्यानिकी के शौकीन लोगों का ध्यान नहीं जा पाया है।

—प्रवक्ता, जीव विज्ञान
इंटर कॉलेज
द्वाराहाट, अल्मोड़ा

तने की ओट से झांकता अधिपादप
[illegible]



नदी के तट पर स्थित चट्टानें
शांति की खोज में पर्यटक

चट्टानों के बीच बहती नदी





वशिष्ठ गंगा — सूखती जलधारा



प्रदूषण झेलती वशिष्ठ गंगा की धारा

पहचाना ? नहीं ?

पहचानोगे भी कैसे ? तुमने, हां-हां तुम मानवों ने, सब कुछ तो बदल दिया है ।

मैं, आज खुद अपने आप को पहचान नहीं पाता हूं ।

याद करो ! कुछ याद आया ?

ने न सुनी । नतीजा ? मेरे रूप पर ग्रहण लगता गया ।

लगता है अब तुम शायद कुछ याद कर पा रहे हो ?

ऊंची-ऊंची पहाड़ियां । लंबी-लंबी वृक्षों की कतारें । चिड़ियों की चहचहाहट । झरने का

बिलखती तपोस्थली

मेरी मुक्ति का मार्ग मत ढूंढ़ो !

● नूतन पांडेय

नहीं न ?

मैं वशिष्ठाश्रम हूं । मुनि वशिष्ठ का वही पुराना आश्रम । आज मेरी आवाज भी क्षीण हो चुकी है । मैं चीखती रही पर मेरी आवाज किसी

स्वर । मंदिर का शांत वातावरण । मानव मन को शांत करने वाला, प्रकृति का वह बहुमूल्य उपहार । इसलिए तो मुनि वशिष्ठ ने मुझे ही अपने तप के लिए स्थान स्वरूप चुना और राजा

गुवाहाटी शहर के एक किनारे पर अवस्थित मैं पावन, प्रशांत, रमणीक तपोस्थली, जो वशिष्ठाश्रम के नाम से जानी जाती रही हूं । मान्य है कि महर्षि वशिष्ठ ने राजा निमि द्वारा शापग्रस्त होने के बाद सुदूर (असम के) इस घने वन में शांति और स्वच्छता पाकर तपस्या हेतु मेरी स्थापना की थी ।



निमि के श्राप से मुक्ति पायी ।

हां ! लगता है अब कुछ याद आ रहा है ? वशिष्ठाश्रम, गुवाहाटी के पवित्र एवं दर्शनीय स्थलों में एक । वही तो हूं मैं ।

कितनी दुखी हूं आज मैं ।

गुवाहाटी शहर के एक किनारे पर अवस्थित मैं पावन, प्रशांत, रमणीक तपोस्थली, जो वशिष्ठाश्रम के नाम से जानी जाती रही हूं । मान्य है कि महर्षि वशिष्ठ ने राजा निमि द्वारा शापग्रस्त होने के बाद सुदूर (असम के) इस घने वन में शांति और स्वच्छता पाकर तपस्या हेतु मेरी स्थापना की थी । या यों कहें कि मुझे अपने तप के लिए उपयुक्त जानकर चुना था । उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर यहीं पर भगवान विष्णु ने उन्हें दर्शन देकर शाप से मुक्त किया था ।

मेरी इस पवित्र-भूमि पर मुनि के तप के प्रभाव से गंगा-संध्या, ललिता और कांता—तीनों धाराओं के रूप में प्रवाहित हुईं, जिससे इस धारा को वशिष्ठ गंगा कहा गया ।

वशिष्ठ गंगा नाम से प्रचलित यह जल-प्रपात मेरे आकर्षण का केंद्र है । भले ही वह कोई श्रद्धालु-भक्त हों या पर्यटक, सभी मुझे देखने आते हैं । माना जाता है कि इसकी निर्मल धारा का जल मानव के सर्वस्व कल्मषों को धो डालता है । ऐसी अवधारणा है कि इस त्रिधारा के संगम में जो भी व्यक्ति स्नान, संध्या, तर्पण करेगा, उसे भव-बाधाओं से मुक्ति प्राप्त होगी ।

फलतः दूर-दूर के तीर्थ यात्री एवं भक्तगण इस धारा से पाप-मुक्ति प्राप्त करने आते हैं, विशेषकर नवरात्र, मकर संक्रांति आदि के अवसरों पर यहां श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ती है ।

इसके अतिरिक्त असम की राजधानी गुवाहाटी के जिन स्थानों को पर्यटकों के लिए नामांकित किया गया, उनमें कामख्या-मंदिर के बाद दूसरा स्थान मेरा ही था, और आज भी है । वशिष्ठ मुनि की यह पावन स्थली मैं और मेरे आसपास का प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों के लिए भी आकर्षण के केंद्र हैं । जाड़े की धूप और

गरमी की शाम में इस स्थान की पवित्रता और सौंदर्य मन को शीतलता प्रदान करता है । घंटों बैठने के बाद भी किसी को ऊब नहीं होती । मुनि की तपस्या ने मुझे कितना पावन बना दिया है इसे आज भी अनुभव किया जा सकता है । हालांकि, आज चारों ओर प्रदूषण ही प्रदूषण है । जिससे मेरी पवित्रता एवं शीतलता भी प्रभावित हुई है ।

आज ट्रकों, बसों, रिक्शों, मोटर-साइकिलों आदि—जैसे वाहनों को भी शायद पाप से मुक्ति की जरूरत आन पड़ी है । फलतः उन्हें बाकायदा इस वशिष्ठ गंगा के जल में स्नान कराने लोग लाते हैं । इस छोटे-से जल-प्रवाह में लोग कपड़े धोने और कूड़ा-करकट फेंकने से भी नहीं चूकते । बेझिझक और बिना रोक-टोक दूषित करनेवाली ये क्रियाएं चल रही हैं और पर्यटन विभाग चादर ताने सो रहा है, जबकि उसने मेरा जिम्मा उठाया था । असम में राष्ट्रपति शासन के दौरान मेरे बिगड़े रूप पर तरस खाया गया और उसे महत्व दिया गया । मेरी जर्जरता पर प्रशासन की कृपा दृष्टि पड़ी, फलस्वरूप थोड़ी-बहुत लीपा-पोती का अभियान चलाया गया । फेसियल किया गया, टच-रिटच की क्रियाएं संपन्न हुईं । उससे मेरे चेहरे पर थोड़ा-सा निखार आया । परंतु प्रशासन पुनः राज्य के विभिन्न मुद्दों को लेकर व्यस्त हो गया और मैं एक बार फिर उपेक्षित हो गयी हूं । मैं, जो असम की ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत की ऐतिहासिक धरोहर हूं, अपनी किस्मत पर रो रही हूं ।

जाड़े की खिलती धूप का आनंद उठाती पिकनिक पार्टियां, आनंद में मग्न यह भूल जाती हैं कि जो स्थान उन्हें सुख-शांति प्रदान करता है, उसी को वे बुरी तरह आहत कर रहे हैं । चारों ओर इधर-उधर बिखरे अधजली लकड़ियों के टुकड़े, जूठी पत्तलें और प्लेटें मुझे हर वक्त मुंह चिढ़ाती हैं । फ्रूटी और कोल्ड ड्रिंक्स के डब्बे, टाफियों और मिठाइयों के छिलके-डिब्बे, केले-संतरों के छिलके, और तो और सड़े हुए सेबों को काट-काटकर झरने के जल में फेंक देना आम बात हो गयी है ।

झरने का पानी अवरुद्ध होने लगा है और इन्हें रोकने की गुस्ताखी कचड़ों के ढेर कर रहे हैं । उनका अनधिकार प्रवेश 'असम में बंगलादेशियों के प्रवेश' की तरह मेरी गृहस्थी में लगातार जारी है ।

अरे ! कोई तो इन अत्याचारों को रोको ताकि मैं पुनः इन तनावों से बाहर आकर लोगों को अपने पवित्र, श्वेत आंचल की छांव प्रदान कर सकूं ।

वशिष्ठ मुनि की आत्मा भी मेरी दुर्दशा पर कलप रही होगी । मेरे चाहनेवालो, तुम बेशक मुझे पूजो, मुझे प्यार करो और मुझमें अपनी मुक्ति के मार्ग ढूंढ़ो । परंतु अपने वाहनों, कपड़ों और शरीर की गंदगियों के लिए मेरी सहभागी धारा के जल में मुक्ति का मार्ग मत ढूंढ़ो ! रहम खाओ मुझ पर, दया करो ।

प्रकृति ने मुझे जो पवित्रता, आकर्षण या सौंदर्य दिया है, उस पर कृपा करो और मुझे शांति दो, जिससे मैं भी तुम्हें शांति देती रह सकूं ।

—द्वारा सुनंद पांडेय, प्रोजेक्ट मैनेजर
मार्केटिंग प्रोजेक्ट
इंडियन आयल कारपोरेशन,
(असम आयल डिवीजन)
डिग्बोई-७८६१७१

रूसी कहानी

धरती पर आठ अरब लोग...

● गै. आल्तोव

शहर से दूर पहाड़ी पर स्थित एक बिजली केंद्र । दो सौ मीटर ऊंचा एक विशाल संयंत्र । संयंत्र में बैटरियां, जिनमें प्रयोग के लिए बिजली संग्रहीत है । पिछले सतरह वर्षों से सारा देश इन बैटरियों के लिए बिजली जुटा रहा है ।

एक व्यक्ति सड़क पर टहलता हुआ संयंत्र को देखे जा रहा है और सोच रहा है कि सतरह वर्ष पूर्व यहां पर कुछ भी नहीं था । उस समय लोग ऐसा मानते थे कि जिस विशेष प्रयोग के लिए बिजली की जितनी आवश्यकता है, उसे संग्रह करने में साठ वर्ष लगेंगे । किंतु सतरह वर्ष में ही साठ वर्ष का काम लगभग पूरा हो चुका है । मैंने तो अपना समस्त जीवन ही संयंत्र को समर्पित कर दिया । सतरह वर्षों में मैंने जितना कठिन परिश्रम किया है, वैसा कोई दूसरा नहीं कर सकता । मैं प्रतिदिन अठारह घंटे काम करता रहा और वह भी त्यौहार व रविवार की छुट्टी मनाये बिना ।

वह जानता था कि लोग उसे महान वैज्ञानिक मानते हैं । वह स्वयं भी इस पर विश्वास करता था । उसने बीस वर्ष पूर्व विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश किया था । उसने ही सबसे पहले कहा था, 'प्रकाश की गति से भी अधिक तीव्र गति होती है ।' उसका संयंत्र भी इसे ही प्रमाणित करता था । पिछली रात उसने एक और जटिल समस्या का समाधान किया था और अब उसे मात्र आठ माह का इंतजार करना है, जबकि वह प्रमाणित कर देगा कि उसकी सोच सही है ।

वह यकायक घबराहट महसूस करने लगा, यह सोचकर कि जब कुछ पूर्ण हो जाएगा तब उसका क्या होगा, वह क्या करेगा ?

उसी समय उसने अपनी ओर आती हुई एक महिला को देखा । उसने सोचा कि वह वैज्ञानिक परामर्शदात्री परिषद की सचिव होगी ।

वे दोनों जब समीप आये तो महिला ने उसका अभिवादन किया और उसने तेजी से पूछा, 'क्या आप वैज्ञानिक परामर्शदात्री परिषद की सचिव हैं ?'

'हां, क्या तुम मुझे नहीं पहचानते ?'

वह चुप रहा फिर धीरे से कहा, 'हमने बहुत वर्षों से एक-दूसरे को नहीं देखा न !'

'हां, उन्नीस वर्षों से, लगभग उन्नीस वर्षों से ।'

'हम यहीं पर मिले थे, याद है न ?'—उसने कहा ।

'हां,' वह मुसकरायी । फिर दोनों देर तक चुप रहे । अंत में उस महिला ने कहा, 'मैं आपके पास एक काम से आयी हूं । भूगर्भयान



के साथ एक दुर्घटना घट गयी है । यह यान पृथ्वी में छत्तीस किलोमीटर की गहराई तक उतरा था कि तभी दुर्घटना घट गयी । उसमें तीन आदमी हैं । उनके पास ऑक्सीजन बहुत कम । अतः उनकी प्राणरक्षा के लिए मात्र एक ही उपाय बच रहा है ।'

सचिव की बात सुनकर वह हंस पड़ा फिर बोला, 'मैं वह उपाय जानता हूं । उस उपाय के लिए विराट विद्युत-शक्ति की आवश्यकता है । मुझे याद आ रहा है कि वे जब यहां आठ वर्ष पूर्व प्रयोग कर रहे थे, तब प्रयोगों में बहुत अधिक बिजली खर्च हो रही थी, तो मैंने आपत्ति की थी, जिस पर उन्होंने प्रयोग बंद कर दिये थे और सारी बिजली संयंत्र को दे दी थी । बिजली के अभाव में आप इन लोगों की प्राण रक्षा नहीं कर सकतीं । आपके पास बिजली नहीं है ।'

'बिजली है,' उसने कहा, ''तुम्हारे केंद्र क बैटरियों में बहुत बिजली है ।'

'यह आदेश है ?' उसने पूछा ।

'नहीं,' सचिव ने उत्तर दिया, 'वैज्ञानिक परामर्शदात्री परिषद के सभी सदस्यों ने यह निश्चय किया है कि आपकी बैटरियों की बिज का इस्तेमाल किया जाए, पर तभी जबकि आपकी सहमति हो ।'

'मतलब कि परिषद के निश्चय का पाल करना मेरी मरजी पर निर्भर करता है ।'

'हां ।'

'मेरी सहमति नहीं है । यदि मैं बिजली दूंगा, तो यह ठीक है कि हम तीन लोगों की जान बचा लेंगे, किंतु फिर मेरे प्रयोग का क होगा ? मैं तो अपने प्रयोग को आगे जारी

रख सकूंगा न । मेरी बैटरियों की बिजली मेरे इस तर्क को प्रमाणित सिद्ध करने के लिए है कि प्रकाश की गति से भी तीव्र गति होती है, जिसके आधार पर दूरस्थ ग्रहों की यात्रा संभव हो सकेगी । केवल इतना ही नहीं मेरे प्रयोगों का लक्ष्य अंतरिक्ष यान के लिए नया इंजन बनाना भी है और यह नया इंजन बहुतेरे अंतरिक्ष यात्रियों के प्राणों की रक्षा कर सकेगा । मैं अपने बारे में नहीं, लोगों के बारे में ही सोच रहा हूं । अभी यदि हम तीन लोगों की प्राणरक्षा करते हैं, तो हम अपने लक्ष्य को पाने में सतरह वर्ष पिछड़ जाएंगे, जिसका अर्थ होगा कि भविष्य में हम बहुतेरे लोगों के प्राण गंवाएंगे । आप मेरी बात समझ रही हैं न ?'

सचिव ने धैर्यपूर्वक कहा, 'हां, मैं सब कुछ समझ रही हूं और तुम्हें इतना बदला हुआ पाकर आतंकित भी हूं । नये इंजन के बारे में केवल तुम ही नहीं सोच रहे, दूसरे वैज्ञानिक और इंजन-विशेषज्ञ भी इस दिशा में काम कर रहे हैं । किंतु दूरस्थ ग्रहों के लिए उड़ान तो अभी दूर की बात है । मैं मानती हूं कि तुम्हारा प्रयोग वैज्ञानिक दृष्टि से निस्संदेह महत्त्वपूर्ण है, पर मानव-जीवन की रक्षा तुम्हारे प्रयोगों से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है । मत भूलो कि विज्ञान का अस्तित्व ही मनुष्य के लिए है ।'

'मैं भी मनुष्यों के लिए ही काम कर रहा हूं । मैं सतरह वर्षों से इस केंद्र में ही बैठा हुआ हूं । यदि मैंने इसके लिए रात-दिन काम न किया होता, तो यह संयंत्र साठ वर्षों में भी पूरा न हुआ होता । मैंने पांच-छह लोगों के बराबर काम किया है । यह सही है कि और लोग भी मेरी सहायता कर रहे थे । आपको एक बात तो माननी पड़ेगी कि एक प्रतिभाशाली संगीतकार जितना अच्छा गा सकता है, हजारों अच्छे संगीतज्ञ भी मिलकर वैसा गा नहीं सकते । पहले मेरे यार-दोस्त थे, पर मुझे कभी समय नहीं मिला । मैं मित्रों से कभी दस मिनट भी बातें नहीं कर सका । फलतः मैं अपने मित्रों को गंवा बैठा । आप इन तीन लोगों के प्राण बचाना चाहती हैं । परंतु सोचिए, यदि मैं बिजली दे देता हूं तो मैं क्या करूंगा ? मैं अगले सतरह वर्ष और प्रतीक्षा नहीं कर सकता ।... ...इसीलिए उनकी प्राणरक्षा के लिए बिजली नहीं दे सकता ।'

सचिव ने उत्तर नहीं दिया । वह बर्फ की ओर देख और उन लोगों के बारे में सोच रही थी, जिनके प्राण धरती के नीचे ऑक्सीजन के अभाव के कारण संकट में थे ।

'अच्छा तो मैं चलती हूं । तुम्हारा निश्चय वैज्ञानिक परामर्शदात्री परिषद को बताये देती हूं, किंतु मैं तुमसे यह अवश्य कहूंगी कि तुम बिलकुल बदल गये हो । अब तुम आदमी नहीं रह गये, और मुझे डर है कि तुम कुछ समय में वैज्ञानिक भी रह पाओगे कि नहीं । सारा देश मानता है कि तुम्हारा जीवन एक साहसिक अभियान है, पर हम नहीं जान पाये थे कि तुम्हारा जीवन बहुत पहले से ही साहसिक अभियान नहीं रह गया । तुमने लोगों के लिए काम करना छोड़ दिया है, तुम मात्र अपने बारे में सोचने लगे हो । सचमुच, क्या तुम अब तक अकेले ही काम कर रहे थे ? गत सतरह वर्षों से देशभर के लोग तुम्हारी बैटरियों के लिए बिजली जुटाते रहे हैं । तुम्हारी बैटरियों को अधिकाधिक बिजली जुटाने के लिए वे बहुतेरे

अच्छे काम स्थगित करते रहे हैं । उन सबने मिलकर तुम से कहीं अधिक तुम्हारी बैटरियों को बिजली दी है । क्या तुम जानते हो कि कितने लोगों ने तुम्हारे संयंत्र के लिए अपनी जानें न्यौछावर की हैं ?'

'मेरे यहां तो सतरह वर्षों में कोई भी दुर्घटना नहीं घटी है ।'

'ठीक है कि तुम्हारे केंद्र में एक भी दुर्घटना नहीं घटी क्योंकि, तुम्हारे लिए तो तुम्हारे केंद्र की चाहरदीवारी के बाहर किसी भी चीज का कोई अस्तित्व ही नहीं है । एक वर्ष पहले मेरे बेटे की ही मृत्यु हुई, जबकि वह और उसके साथी तुम्हारे लिए आणविक केंद्र तैयार करने की जल्दबाजी में थे ।

'मुझे क्षमा करें, मैंने तो सुना था कि चार आदमी मर गये थे ।'...

'तुम्हें क्षमा दी जाए ? वे सब लोग तुम्हारे लिए ही काम कर रहे थे ? तुम जो प्रयोग कर रहे हो, क्या यह केवल तुम्हारे लिए ही जरूरी है ? ये तीन लोग अभी तक भूगर्भयान में इसलिए बैठे हैं कि जो बिजली तुमने उनसे आठ वर्ष पूर्व ली थी, वह उनके प्रयोग के लिए भी जरूरी थी । खैर, अब हमें तुम्हारी बैटरियों की बिजली की जरूरत नहीं है । हम तुम्हारी बिजली के बिना भी उन तीनों की प्राण रक्षा करेंगे । हमने सभी कारखानों को बंद कर दिया है और सभी हवाई उड़ानों को रोक दिया है, सभी शहरों में बिजली बंद करा दी है । सब कुछ ठहर गया है । यहां तक कि लोग अपनी निजी बैटरियों से भी हमें बिजली दे रहे हैं । इस पर भी तुम देख रहे हो कि हमने तुम्हारे केंद्र की बिजली बंद नहीं की है ।'

'आपको देर हो रही है,' उसने रूखाई से कहा ।

'नहीं । हम उन्हें बचा लेंगे, तुम्हारी बैटरियों के बिना भी । बहुत से लोग हैं और वे सब मिलकर उनकी प्राण रक्षा के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे । धरती पर आठ अरब लोग हैं । नहीं, मैं भूल कर गयी । एक कम आठ अरब लोग । तुम तो मनुष्य कहलाने का अधिकार खो बैठे हो ।'

सचिव लौट गयी । वह बैंच पर बैठा सोचता ही रह गया । वह सोचने लगा उन अंधेरे शहरों के बारे में, उन यानों के बारे में, जो आकाश में उड़ नहीं रहे हैं और उन आदमियों के बारे में जो भूगर्भयान में फंसे पड़े हैं । वे तीन आदमी कौन हैं ? तीन आदमी । मात्र एक संख्या ।

वह उठा और केंद्र के अंदर चल दिया । केंद्र पर ड्यूटी पर तैनात इंजीनियर से उसने कहा, 'कृपया, वैज्ञानिक पदामर्शदात्री परिषद की सचिव से भी संपर्क कीजिए । अभी उनकी गाड़ी रास्ते में ही होगी । उनसे कहें कि सभी अपवादों को छोड़कर धरती पर आठ अरब लोग हैं । आप समझे न ?'

'जी हां,' इंजीनियर ने शांत भाव से कहा । 'वैज्ञानिक परामर्शदात्री परिषद की सचिव को यह संवाद अवश्य ही भेजना ही है कि धरती पर आठ अरब लोग हैं । बिना किसी अपवाद के ।'

अनुवाद : सत्यदेव प्रसाद
—हिंदी विभागाध्यक्ष,
डिब्रू कॉलेज, डिब्रूगढ़-७८६००५

'सर्वधर्म समभाव' तथा 'धर्म-निरपेक्षता' (सेक्युलरिज़्म) पदों को समानार्थक समझा जाता है । यह एक अत्यंत भ्रामक तथा अयुक्तियुक्त धारणा है ।

'धर्म-निरपेक्षता' पद अंगरेजी के सेक्युलरिज़्म का हिंदी रूपांतर है । यह एक नकारात्मक संज्ञा है । भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक तथा संवैधानिक संदर्भों में यह आयातित पद अत्यधिक असंगत, अप्रासंगिक तथा अनुचित है । यही कारण है कि 'सेक्युलरिज़्म' पद भारतीय राजनेताओं और बुद्धिजीवियों में समान रूप से विवादास्पद है ।

'धर्म-निरपेक्षता' की धारणा भारत की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक परंपराओं तथा वर्तमान सामाजिक प्रक्रियाओं, राष्ट्रीय आकांक्षाओं और

भारतीय संविधान

हमारी मूलभूत संवैधानिक मूल्य-व्यवस्थाओं के संदर्भ में एक सर्वथा अनुपयुक्त तथा अप्रासंगिक विचारधारा है । इस कथन की प्रामाणिकता के लिए 'सेक्युलरिज़्म' के स्वरूप, उद्भव और विकास का सर्वेक्षण अपेक्षित है ।

सेक्युलरिज़्म की परिभाषाएं

सर्वप्रथम हम 'सेक्युलरिज़्म' पद के स्वरूप का प्रतिपादन करते हैं । पाश्चात्य-विचारकों द्वारा दी गयी इस वाद की प्रसिद्ध परिभाषाएं इस प्रकार हैं ।

'न्यू ऑक्सफोर्ड' शब्द-कोश के अनुसार इस मतवाद के लक्षण इस प्रकार हैं :

"Concerned with the affairs of the world, wordly; not sacred, not monastic or ecclesiatical, temporal, profame, lay, sceptical or religious truth or opposed to religious education"[1]

'चैंबर्स' शब्द-कोश के अनुसार 'सेक्युलरिज़्म वह विचार है, जिसके अनुसार राज्य, नैतिक मूल्य, शिक्षा आदि का धर्म से कोई सरोकार नहीं है । ये सब स्वायत्त व्यवस्थाएं हैं । इनकी स्वतंत्र सत्ता है ।'

'शार्टर ऑक्सफोर्ड' शब्द-कोश के अनुसार 'सेक्युलरिज़्म का अर्थ है कि— नैतिकता के सिद्धांत एकांततः वर्तमान जीवन में मानव-हित पर आधृत होने चाहिए । परमात्मा अथवा भावी जीवन की धारणाओं से सर्वथा असंपृक्त हों ।— राष्ट्रीय शिक्षा विशुद्ध रूप से सेक्युलर हो ।'

विशुद्ध भौतिकवादी मतवाद

इन लक्षणों से यह स्पष्ट होता है कि 'सेक्युलरिज़्म' एक भौतिकवादी धारणा है । और इस पद का धर्म से कोई संबंध नहीं है । वस्तुतः 'सेक्युलरिज़्म' अथवा इसके हिंदी रूपांतर 'धर्म-निरपेक्षता' का धार्मिक समानता, सार्वभौमिक सद्भावना, धार्मिक सहिष्णुता अथवा सर्वधर्म समभाव से किसी प्रकार का कोई सरोकार नहीं है । यह तथ्य पाश्चात्य शब्द-कोशों में दी गयी 'सेक्युलरिज़्म' की परिभाषाओं से पुष्ट होता है और इस पद का

वस्तुतः सेक्युलरिज़्म के अनुसार धर्म और राज्य का अधिकार क्षेत्र एक-दूसरे से सर्वथा असंबद्ध और नितांत अलग है । इस प्रकार धर्म-निरपेक्षता एक नकारात्मक संज्ञा है, जिसके अनुसार राज्य और धर्म दो पृथक स्वायत्त संस्थाएं हैं ।

हिंदी रूपांतर 'धर्म-निरपेक्षता' -'धर्म-सापेक्षता' का विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द है और इस वाद की धर्म से असंबद्धता का सूचक है

अस्तु अपने स्वरूप के संदर्भ में 'सेक्युलरिज़्म' भौतिकवाद पर आधृत सर्वथा एक धर्म-विरोधी तथा विशुद्ध भौतिकवादी मतवाद है ।

वस्तुतः पश्चिम में 'सेक्युलरिज़्म' का उद्भव चर्च और राज्य के परस्पर विरोध के कारण हुआ । इस पद का सर्वप्रथम प्रयोग हॉलीओक कर्त्तव्यों को सर्वाधिक महत्त्व दिया । उनका यह मत है कि विज्ञान, परमात्मा की प्रार्थना के बिना मनुष्य को रोग, निर्धनता, निरक्षरता तथा प्राकृतिक आपदाओं से बचा सकता है । इन दोनों विचारकों का सेक्युलरिज़्म का सिद्धांत धर्म के विरुद्ध राज्य के संघर्ष को सशक्त करना था । इससे यह जाहिर होता है कि पाश्चात्य-चिंतन में सेक्युलरिज़्म का मुख्य प्रयोजन राज्य से धर्म के प्रभाव का उन्मूलन था ।

धर्म-निरपेक्ष नहीं है !

● डॉ. दर्शन सेठी

(सन १८१७-१९०६ ई.) ने १९वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में किया था । पश्चिम में पुनरुत्थान तथा औद्योगिक क्रांति के काल में इस शब्द का आविर्भाव हुआ था ।

चार्ल्स ब्रेडलॉग ने इस शब्द की व्याख्या करते हुए पूर्णतः एक भौतिकवादी तथा नास्तिक दृष्टिकोण कहा और सभी प्रकार की आध्यात्मिक परम-सत्ता-आत्मा-परमात्मा आदि को इस मतवाद से असंबद्ध माना । और नैतिकता को धर्म से पृथक एक स्वायत्त मूल्य-व्यवस्था कहा तथा मनुष्य के भौतिक

धर्मनिरपेक्षता एक नकारात्मक संज्ञा

वस्तुतः सेक्युलरिज़्म के अनुसार धर्म और राज्य का अधिकार क्षेत्र एक-दूसरे से सर्वथा असंबद्ध और नितांत अलग है । इस प्रकार धर्म-निरपेक्षता एक नकारात्मक संज्ञा है, जिसके अनुसार राज्य और धर्म दो पृथक स्वायत्त संस्थाएं हैं ।

भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक तथा संवैधानिक संदर्भों में धर्म-निरपेक्षता (सेक्युलरिज़्म) की यह भौतिकवादी धारणा सर्वथा अनुपयुक्त, असंगत और अप्रासंगिक है ।

अपने ऐतिहासिक तथा धर्म-विरोधी संदर्भों में सेक्युलरिज़्म एक भौतिकवादी तथा अध्यात्मवाद और धर्म के प्रति उदासीन विचारधारा है । वस्तुतः इस विचार का धर्म अथवा अध्यात्म से कतई कोई सरोकार नहीं है । सिद्धांततः सेक्युलरिज़्म एक अनात्मवादी मतवाद है । जो मूलसत्ता (फंडामेंटल फोर्स) को अनात्म अथवा भूत-तत्व (मैटर) मानता है । जो चिंतक सेक्युलरिज़्म को प्राचीन हिंदू-परंपरा अथवा भारतीय आध्यात्मवाद से जोड़ने का दुस्साहस करते हैं, वे कदाचित इस वाद के स्वरूप, उद्‌भव तथा विकास के इतिहास की अनदेखी करते हैं । अतः धार्मिक अथवा आध्यात्मिक वादों के आधार पर सेक्युलरिज़्म का विवेचन-विश्लेषण एक प्रकार का पूर्वाग्रह अथवा हठवाद है । इस प्रसंग में यह तथ्य गौरतबल है कि हिंदू धर्म अथवा अन्य किसी धर्म में सेक्युलरिज़्म की धारणा का अभाव, एक अपरिहार्य आधार है । मूलतः सेक्युलरिज़्म एक भौतिकवादी बौद्धिक विचार-सूत्र है, जो प्रमुख भारतीय जीवन-पद्धति की प्रशस्त परंपरा में अपवाद-मात्र है । जो कभी भी भारतीय अथवा हिंदू-जीवन-पद्धति का प्रमुख आधार नहीं माना गया । भारतीय इतिहास तथा हमारी सांस्कृतिक विरासत इसकी साक्षी है ।

सेक्युलरिज़्म तथा सर्व धर्म समभाव, परस्पर विरोधी

पाश्चात्य सेक्युलरिज़्म और गांधीजी का 'सर्व धर्म समभाव' का सिद्धांत दो सर्वथा भिन्न ही नहीं बल्कि विलोम विचार-धाराएं हैं । परस्पर विरोधी मान्यताएं हैं । एक का आधार भूत-तत्व अथवा भौतिकवाद है और दूसरा आत्म-तत्व पर आधृत अध्यात्मवादी दृष्टिकोण है ।

गांधीजी ने सेक्युलरिज़्म और सर्व धर्म समभाव को कहीं भी समान विचारधारा स्वीकार नहीं किया और न ही 'सेक्युलरिज़्म' तथा 'सर्व धर्म समभाव' को एक-दूसरे का समानार्थक अथवा पर्याय माना है ।

अतः 'सर्व धर्म समभाव' के विचार सूत्र के लिए 'भारतीय सेक्युलरिज़्म' की संज्ञा का प्रयोग भी अनुचित है । जिस प्रकार भारतीय रसायन-शास्त्र, भारतीय विज्ञान तथा भारतीय भौतिक शास्त्र संज्ञाएं निरर्थक हैं, उसी प्रकार 'भारतीय सेक्युलरिज़्म'— अभिधान भी सर्वथा असंगत एवं अयुक्तियुक्त है ।

'सर्व धर्म समभाव' और 'सेक्युलरिज़्म'— ये दोनों वाद एक-दूसरे से पृथक ही नहीं वरन् 'परमसत्ता' के प्रति अपनी मूल दृष्टि की भिन्नता के कारण परस्पर विरोधी भी हैं । गांधीजी इस तथ्य से पूर्णरूपेण परिचित थे । किंतु दुर्भाग्यवश अनेक विचारकों, बुद्धिजीवियों तथा राजनेताओं द्वारा इस तथ्य की घोर अवहेलना हुई है ।

आदर्श और आचरण की प्रतिकूलता

पं. जवाहरलाल नेहरू जो भारत में सेक्युलरिज़्म के अलमबरदार माने जाते हैं, वह भी भारतीय संदर्भों में 'सेक्युलरिज़्म' पद की सीमाओं के प्रति सचेत थे । मगर इसका कोई विकल्प उन्हें नहीं सूझा । अतएव उन्हें विवशतापूर्वक इस पद का ही प्रयोग करना पड़ा । नेहरूजी की यह विवशता उनके इन शब्दों में सुस्पष्ट है—

पाश्चात्य सेक्युलरिज़्म और गांधीजी का 'सर्व धर्म समभाव' का सिद्धांत दो सर्वथा भिन्न ही नहीं बल्कि विलोम विचार-धाराएं हैं । परस्पर विरोधी मान्यताएं हैं । एक का आधार भूत-तत्व अथवा भौतिकवाद है और दूसरा आत्म-तत्व पर आधृत अध्यात्मवादी दृष्टिकोण है ।

"The word 'secular' is not a happy one. And yet for want of a better word we have used it."[1]

1. Jawahar Lal Nehru's speeches (Publication Division of the Information and Broadcasting Ministry.) Vol. 1, P. 60.

यही कारण है कि गत ४७ वर्षों से हम तथाकथित 'सेक्युलरिज़्म' के गंतव्य तक नहीं पहुंच पाये । क्योंकि भारतीय संविधान, शिक्षा, विधि, समाज तथा राजनीति— इन सभी क्षेत्रों में हमारी कथनी और करनी, असूल और अमल अथवा आदर्श और आचरण सर्वथा एक-दूसरे के पूर्णरूपेण प्रतिकूल रहे हैं । और यही कारण है कि इन ४७ वर्षों में एकता और अखंडता की अपेक्षा भारतीय सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन में विघटन तथा बिखराव का आविर्भाव अधिक हुआ है । इस वस्तुस्थिति ने हमारी संपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था को प्रायः दूषित तथा खोखला सिद्ध कर दिया है ।

निस्संदेह गांधीजी की 'सर्व धर्म समभाव' की धारणा ही धर्म-विरोधी, भौतिकवादी तथा नकारात्मक 'सेक्युलरिज़्म' की अपेक्षा भारतीय परिवेश में अधिक अनुकूल एवं उपादेय है । भारत विविध धर्मों, भाषाओं, सभ्यताओं तथा जातियों का देश है । और अनेकता में एकता का अन्वेषण भारतीय संस्कृति का प्राण-तत्व रहा है । अतः हमें यह साहसपूर्वक स्वीकार करना होगा कि गांधीजी का 'सर्व धर्म समभाव' पाश्चात्य पद 'सेक्युलरिज़्म' का भारतीय रूपांतर अथवा संस्करण नहीं है । 'सर्व धर्म समभाव' तो भारतीय संस्कृति की प्रशस्त पुनीत परंपरा है । इसका मूल-स्रोत श्रौत-ग्रंथों के ये प्रख्यात सूत्र हैं :—

'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति'— (ऋ. १/१६४/४६)
(अर्थात एक ब्रह्म को ही मनीषीजन अनेक नामों से पुकारते हैं)

'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'— (छान्दो. ३/१३/१)
(अर्थात यह सारा दृश्यमान जगत् ब्रह्म ही है)

'अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।'
('नीतिशतक'— भर्तृहरि ।)
(अर्थात— यह अपना है, यह पराया है) — इस प्रकार के विचार छोटे दिलवालों के होते हैं । उदार-चरित्रवाले लोगों की दृष्टि में तो संपूर्ण पृथ्वी ही एक परिवार है)

अनेकता में एकता और सार्वभौम सद्भाव की यह सत्यान्वेषी सकारात्मक संचेतना ही 'सर्व धर्म समभाव' के विचार-सूत्र का मूल-स्रोत है ।

सर्व संप्रदाय समभाव अधिक तर्कसंगत

अस्तु भारतीय संदर्भों में 'सेक्युलरिज़्म' अथवा 'धर्म-निरपेक्षता' के योरोपीय तथा

मार्क्सवादी मतवाद; सिद्धांत तथा व्यवहार दोनों दृष्टियों से नितांत अव्यावहारिक और अप्रासंगिक हैं ।

आदर्श और आचरण की दृष्टि से भारतीय परिवेश में 'सर्व धर्म समभाव' पद का प्रयोग ही प्रासंगिक प्रतीत होता है । किंतु इस पद की सीमाएं भी सुस्पष्ट हैं । भारतीय-दर्शन में 'धर्म' पद की अपनी एक गरिमा है । वस्तुतः 'धर्म' भारतीय संदर्भों में एक सार्वभौम तथा सनातन सत्य है । जो 'रिलीजन', पंथ, मत अथवा संप्रदाय का समानार्थक नहीं है । अतः 'सर्व धर्म समभाव' पद में प्रयुक्त 'धर्म' शब्द का प्रयोग भारतीय परंपरागत अर्थ में सिद्धांततः अशुद्ध और असंगत है । किंतु व्यवहार में 'धर्म' शब्द का आज अर्थापकर्ष हुआ है और इसका प्रयोग रिलीजन, मजहब, पंथ, अथवा संप्रदाय के अर्थों में ही किया जाता है । फिर भी मेरा यह विनम्र मत है कि भारतीय संदर्भों में 'सर्व धर्म समभाव' पद के स्थान पर 'सर्व पंथ समभाव' अथवा 'सर्व संप्रदाय समभाव' पदों का प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक तर्कसंगत, समुचित तथा समीचीन होगा ।

इस प्रसंग में यह भी विचारणीय है कि 'संप्रदाय' शब्द की परिधि 'पंथ' शब्द से अपेक्षाकृत अधिक व्यापक है । 'पंथ' पद मात्र किसी आध्यात्मिक मतवाद का ही बोधक होता है जबकि 'संप्रदाय' शब्द की सीमा संसार के सभी वर्णों, वर्गों, वादों, पंथों, भाषाओं, प्रदेशों तथा देशों तक परिव्याप्त है ।

अस्तु गांधीजी के 'सर्व धर्म समभाव' का सही विकल्प 'सर्व संप्रदाय समभाव' है । इस पद का प्रयोग भारतीय दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भों में अपेक्षाकृत अधिक सार्थक, संगत, सटीक तथा सम्यक होगा ।

—'आकाशदीप', १५८-वैशाली,
दिल्ली-११००३४

एक बार गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पास एक प्रेमी युगल गया । प्रेमी युगल ने गुरुदेव को अभिवादन किया । गुरुदेव उनकी सर्द आहों, अश्रुनिपात, बेकरारी, इंतजारी आदि प्रेम लक्षणों से उनकी मनोदशा समझ गये, पूछने लगे, "क्या बात है ?"

प्रेमी युगल ने कहा, "गुरुदेव, हम प्रेम में पड़ गये हैं ।" गुरुदेव ने एक गहरा निश्वास छोड़ा और गंभीरता से बोले, "इसी का मुझे दुख है । मैं चाहता हूं कि तुम-जैसे स्त्री-पुरुष प्रेम में पड़ने के बजाय प्रेम में 'चढ़ो' । जो व्यक्ति को गिराता है, वह सच्चा प्रेम नहीं है । सच्चा प्रेम प्रेरणात्मक और ऊंचा चढ़ानेवाला होता है ।"

— आलोक प्रभाकर

लघु कथा

पूजा

● सीतेश आलोक

रात के दस बज चुके थे। पुजारीजी मंदिर में ताला लगवा ही रहे थे कि दो लोग तेज कदमों से उधर आते दिखायी दिये। पुजारीजी ने उन्हें पहचानते हुए कहा, "अरे, आज आप लोगों ने इतनी देर कर दी... कहां रह गये थे ?"

"रास्ते में एक साइकिलवाले ने टक्कर मार दी। वह अंधेरे में तेजी से चला जा रहा था... एक ईंट से टकराकर लड़खड़ाया तो संभल ही नहीं पाया।" एक ने कहा।

"बहुत चोट तो नहीं आयी ?" पुजारीजी ने संवेदना व्यक्त करते हुए पूछा।

"मेरे दोनों घुटने छिल गये... भैया की कोहनी से काफी खून बह गया।" दूसरे ने उत्तर दिया।

"डॉक्टर के यहां गये, दवा लगवायी... इसी सब में देर हो गयी।" पहले ने सफाई देते हुए कहा।

"मारा नहीं उस दुष्ट को ! तुम लोग तो दो थे।" पुजारीजी के स्वर में कुछ आवेश था।

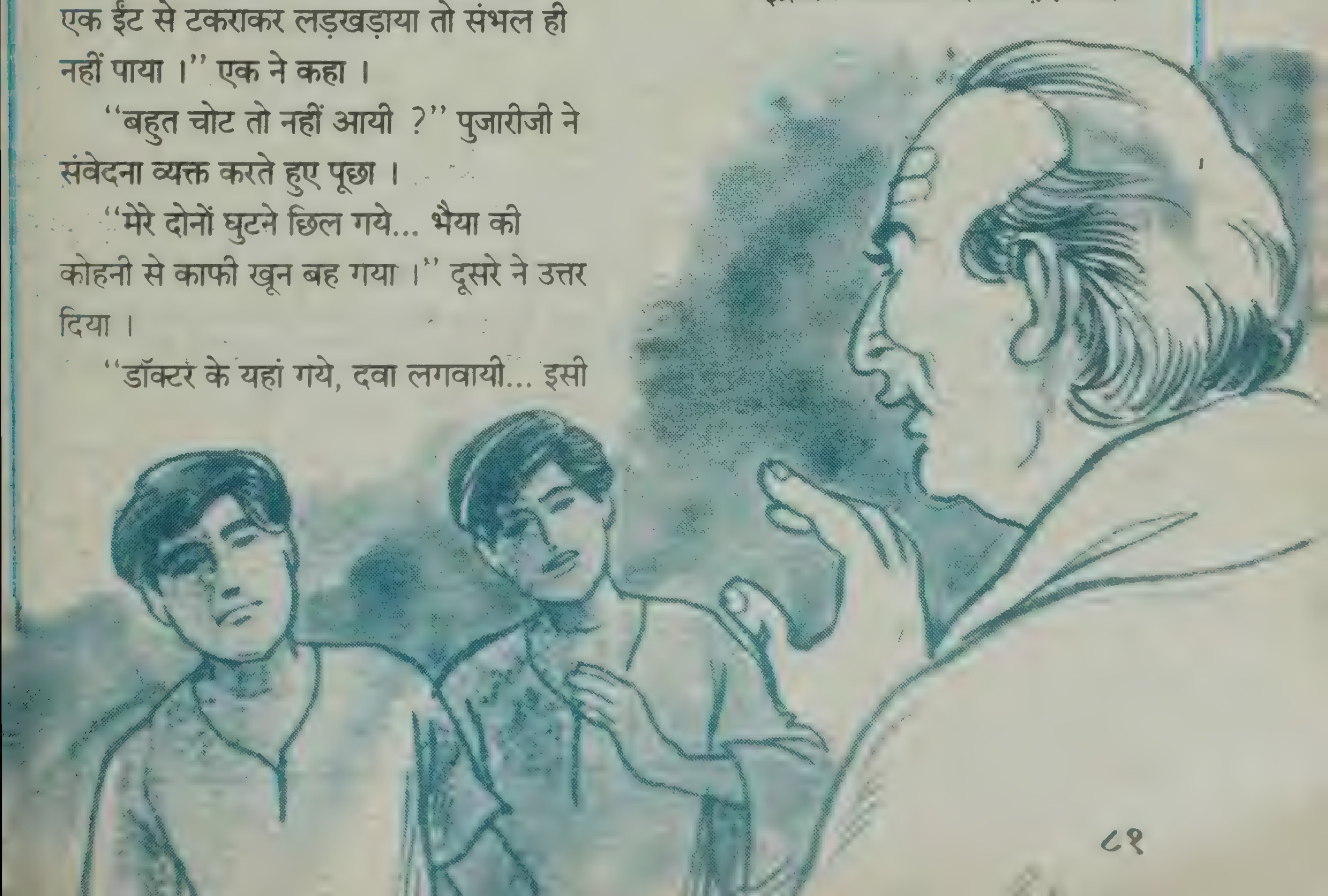
"अरे नहीं, वह बेचारा तो बहुत शरमिंदा था। बार-बार माफी मांग रहा था।"

"तो तुमने उसे माफ कर दिया ?" उन्होंने जिज्ञासा प्रकट की।

"तो और क्या करते... ?"

"करते ये कि फिर मंदिर न आते।" पुजारीजी का स्वर बदल गया था। उनके चेहरे पर मुसकराहट और आंखों में चमक उभर आयी थी। "बड़ा अच्छा किया तुमने। क्षमा तो स्वयं ही एक पूजा है... फिर तुम्हें मंदिर आने की क्या आवश्यकता थी !"

— बी-२ आवास परिसर
इंद्रप्रस्थ कॉलेज दिल्ली-११००५४



कृतज्ञता और कृतघ्नता के संबंध में युधिष्ठिर का स्त्री-पुरुष संसर्ग संबंधी प्रश्न भीष्म पितामह ने सुना । युधिष्ठिर का प्रश्न था कि 'स्त्री-पुरुष प्रसंग में संसर्ग-सुख किसे अधिक होता है ?' कृपा कर मेरे संदेह का समाधान करें ।

शर शैय्या पर पड़े पितामह ने शंका के समाधान हेतु भंगास्वन व इंद्र की कथा कह सुनायी कि "सुना है कि पूर्व काल में एक प्रसिद्ध राजर्षि भंगास्वन हुए । उनकी कामना पुत्र-प्राप्ति की थी । उसने अग्निष्ठतु यज्ञ किया । ने राजर्षि के साथ एक चाल चली । घने जंगल में शिकार करते समय राजर्षि एक बार अपने अनुचरों से बिछुड़ गये । भटकते-भटकते उन्हें एक जलाशय मिला । जलाशय में उन्होंने अपने घोड़े को नहलाया, पानी पिलाया, घोड़े को एक पेड़ से बांधा और वे सरोवर में स्वयं नहाने उतरे । लेकिन यह क्या ? नहाते ही वह मर्द से औरत बन गये ।

अपने-आप को नारी रूप में देख राजर्षि को बहुत आत्मग्लानि हुई और आश्चर्य भी हुआ । मन में व्याकुल हुए कि वह अब स्त्री वेष में

एक पौराणिक आख्यान

मैं नारी ही रहना चाहती हूं

● रमेश चंद्र पंत

यज्ञ में आमतौर पर इंद्र की प्रभुता रही है क्योंकि वही यज्ञों के अधिष्ठाता देवता होते थे । लेकिन अग्निष्ठतु यज्ञ में इंद्र का प्रभुत्व नहीं रहता था । अग्निष्ठतु पुत्रेष्ठि यज्ञ-जैसा होता है । इस यज्ञ से राजर्षि को कई पुत्र प्राप्त हुए ।

इस यज्ञ से इंद्र को तो स्वाभाविक तौर से वैर था ही । देवराज इंद्र की गुप्तचर सेवा में पुरुषों के अलावा रंभा, उर्वशी और मेनका सरीखी श्रेष्ठ अपसराएं रहती ही थीं । अतः इंद्र ने इन्हें राजर्षि को खिजाने तथा उसकी कमजोरियों की खोज में लगा दिया । लेकिन इंद्र गुप्तचर राजर्षि की कोई कमजोरी नहीं खोज पाये । हारकर इंद्र किस तरह अपने राजमहल में जाएंगे ? कैसे घुड़सवारी करेंगे ? पुत्रेष्ठि यज्ञ से प्राप्त पुत्रों के सामने कैसा महसूस करेंगे ? अन्य कोई विकल्प न देख अंततः नारी रूप में ही वह अपने घोड़े पर सवार हो अपनी राजधानी में पहुंचे । राजकुमारों, रानियों, अमात्य-सचिव एवं मंत्री, पुरोहितों सहित सभी पार्षदों ने उनके इस यौन-परिवर्तन पर आश्चर्य व्यक्त किया ।

राजर्षि ने भरे राजदरबार में आपबीती कह सुनायी । अपनी बात कह चुकने के बाद राजर्षि ने अपने पुत्रों को राज्य सौंपा और स्वयं वन की ओर प्रस्थान कर गये ।

वन में नारी रूपी राजर्षि एक तापस के आश्रम में रहने लगे । तापस का उस नारी से स्वाभाविक रूप से रति हो गयी । उन दोनों के संसर्ग से पुत्र उत्पन्न हुए । अब वह नारीरूपी राजर्षि दो किस्म के बेटों की मां थी, एक तो वे पुत्र जो पुरुष रूप में उसके द्वारा उसकी रानियों से उत्पन्न हुए थे, दूसरे वे, जो उससे स्त्री के रूप में तापस के संसर्ग से पैदा हुए ।

कालांतर में नारी रूपी राजर्षि अपने नये पुत्रों को साथ लेकर अपनी राजधानी में लौटे और अपने पुरुष रूप में उत्पन्न पुत्रों से कहा, 'तुम भांगस्वन पुरुष-राजर्षि के यशस्वी पुत्र हो, तुम्हारे सहयोग के लिए मैं नारी-रूपिणी भंगास्वन के पुत्रों को तुम्हें सौंपने आयी हूं । ये तुम्हारे पितृज भाई है, इसलिए इनका सहयोग लो ।'

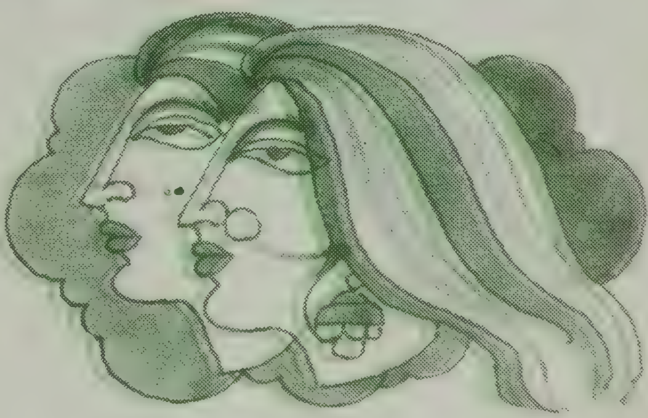
नारी भंगास्वन के पुत्रों में परस्पर मित्रता-बंधुता हो गयी, जिसे देखकर इंद्र ने फिर चाल चलकर उनमें पारस्परिक मतभेद पैदा कर दिया । फलतः दोनों प्रकार के सभी पुत्र परस्पर लड़-भिड़कर कट मरे ।

अब तो नारी रूपी राजर्षि के शोक का पारावार न रहा । वह रो रही थी । विक्षिप्त-सी थी । इंद्र ने तब भी उसका पीछा नहीं छोड़ा । इंद्र ने उससे पूछा, "भद्रे तुम्हारा दुख क्या है ? क्यों रो रही हो ?" इस पर नारी रूपी राजर्षि ने अपनी सारी कहानी कह सुनायी । तब इंद्र ने अपने रूप में प्रकट हो कहा कि तुमने राजर्षि के रूप में अग्निष्ठतु यज्ञ करके मेरे हक को मारा था । इसलिए मैंने ही तुमसे अपने वैर का बदला लिया है और तुम्हें पुत्रहीन बनाया है ।

"हे देवराज, अग्निष्ठतु यज्ञ के कारण आपकी जो अवमानना मुझसे अनजाने में हुई, उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थिनी हूं ।"

क्षमा-याचना से प्रसन्न हो देवराज ने कहा, "मैं प्रसन्न हुआ, अब आप बताइए, अपने कौन-से बेटों को आप जिंदा करना पसंद करेंगीं । राजा के रूप में रानियों से आपके द्वारा पैदा हुए बेटों को या उन बेटों को जिन्हें आपने तापस से जना है ।"

उसने दोनों हाथ जोड़कर नम्रतापूर्वक इंद्र की अभ्यर्थना की और कहा कि, "मेरे उन बेटों को जीवित कर दीजिए, जो मैंने स्त्री रूप में जने हैं ।"



यह सुनकर वह अत्यंत विस्मित हुए, पूछा, "ऐसा क्यों ?"

"देवेंद्र ! पिता की अपेक्षा मां को अपने पुत्र ज्यादा प्यारे होते हैं" क्योंकि, स्त्री-पुरुष संसर्ग में स्त्री ज्यादा सुखी होती है, इसलिए मुझे अपने नारी रूप में जने पुत्रों से अधिक स्नेह है । और मैं अब नारी रूप में ही रहना चाहती हूं । अगर आप मुझे फिर पुरुष बनाने आये हैं, तो नम्रतापूर्वक यही प्रार्थना करती हूं, "आप जाइए, जो कुछ हुआ ठीक ही हुआ अब आप अपना काम कीजिए ।"

— सी-१२१९, इंदिरा नगर,
लखनऊ-२२६०१६

सतपुड़ा-मैकल और विंध्य पर्वत श्रृंखला के संधि-स्थल पर सुरम्य नीलवादियों में बसा अमरकंटक एक अनुपम पर्यटन स्थल है । हमारा देश शीतकालीन पर्यटन-स्थलों से भरा है, लेकिन अमरकंटक ग्रीष्मकालीन पर्यटन स्थलों में से एक है । इसे प्रकृति और पौराणिकता ने वैविध्य संपदा की धरोहर बख्शी है । चारों ओर हरियाली, दूध धारा और कपिलधारा का झरना-जैसा दृश्य, सोन नदी की कलकल करती धारा, नर्मदा कुंड की पवित्रता और जहां पहाड़ों की हरी-भरी ऊंचाईयां हैं, तो दूसरी ओर खाई का प्रकृति प्रदत्त मनोरम दृश्य मन की गहराईयों को छू जाता है । अमरत्व बोध के इस अलौकिक धाम की यात्रा सचमुच उसके नाम के साथ जुड़े 'कंटक' शब्द को

पिछले दिनों कॉलेज के छात्र अमरकंटक जाने का प्रस्ताव मेरे पास लाये । ऐसी पतित पावन जगह को कौन जाना नहीं चाहेगा ? मेरे जाने की स्वीकृति मिलते ही छात्र-छात्राओं की संख्या इतनी बढ़ गयी कि एक बस में समाना मुश्किल हो गया । विद्यार्थियों के उत्साह को देखते हुए एक और जीप की व्यवस्था करके छात्र-छात्राओं का यह दल अमरकंटक के लिए रवाना हुआ । सांप-जैसी घाटियों को पार करते हुए प्रातःकालीन वेला में हम अमरकंटक पहुंचे । केंवची के ढाबा की चाय और कबीर चौराहा का मनोरम दृश्य हमारे मन में अमिट पहचान बनाने में सफल रहा । स्वामी श्री रामकृष्ण परमहंस के आश्रम में दैनिक कर्म से निबटकर हमने नर्मदा कुंड में स्नान किये । मां

अमरकंटक

दो निकलीं : एक कुंवारी रह गयी !

● प्रो. अश्विनी केशरवानी

सार्थक करती है । हम जहां दुनिया के छोटी हो जाने का जिक्र करते नहीं थकते, वहीं अमरकंटक की यात्रा आज भी अनुभवों में तकलीफों के शूल चुभो जाती है । लेकिन एक बार सब कुछ सहकर पहुंच जाने के बाद यहां की अलभ्य सुषमा और पौराणिक आभा सब कुछ बिसार देने को बाध्य करती है ।

नर्मदा के दर्शन करके हम प्रकृति के इस अलौकिक धाम का भ्रमण करने निकल पड़े ।

अमरकंटक, मध्यप्रदेश के शहडोल जिलांतर्गत दक्षिण-पश्चिम में लगभग ८० कि.मी. की दूरी पर स्थित है । अनूपपुर रेलवे जंक्शन से ६० कि.मी., पेंड्रारोड रेलवे स्टेशन से ४५ कि.मी. और बिलासपुर जिला मुख्यालय से



अमरकंटक के मंदिर का प्रवेश द्वार

मात्र ११५ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां रुकने के लिए अनेक छोटे-बड़े धर्मशाला, स्वामी श्री रामकृष्ण परमहंस का आश्रम, बरफानी बाबा का आश्रम, बाबा कल्याणदास सेवा आश्रम, जैन धर्मावलंबियों का सर्वोदय तीर्थ एवं अग्निपीठ, लोक निर्माण विभाग का विश्राम गृह, साडा का गेस्ट हाउस और टूरिस्ट कॉटेज आदि बने हुए हैं। यहां घूमने के लिए तांगा, जीप और आटो रिक्शा मिलता है और खाने के लिए छोटे-बड़े होटल हैं लेकिन १५ कि.मी. की दूरी पर स्थित केंवची के ढाबा में खाने की अच्छी व्यवस्था रहती है। जंगल के बीच खाने का अपना अलग आनंद होता है।

अमरकंटक, शोण और नर्मदा नदी का उद्गम स्थल है जो २०°४०' उत्तरी अक्षांश और ८०°४५' पूर्वी देशांश के बीच स्थित है। नर्मदा नदी १३१२ कि.मी. चलकर गुजरात में २१°४३' उत्तरी अक्षांश और ७२°५७' पूर्वी देशांश के बीच स्थित खंभात की खाड़ी के निकट गिरती है। यह नदी १०७७ कि.मी. मध्यप्रदेश के शहडोल, मंडला, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, खंडवा और खरगोन जिले में बहती है। इसके बाद ७४ कि.मी. तक महाराष्ट्र को स्पर्श करती हुई बहती है और जिसमें ३४ कि.मी. तक मध्यप्रदेश के साथ तथा ४० कि.मी. गुजरात के साथ महाराष्ट्र की सीमाएं बनाती हैं। खंभात की खाड़ी में गिरने के पहले लगभग १६१ कि.मी. गुजरात में बहती है। इस प्रकार इसके प्रवाह-पथ में मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात राज्य पड़ता है। नर्मदा का कुल जल संग्रहण क्षेत्र ९८७९९ वर्ग कि.मी. है, जिसमें ८०.०२ प्रतिशत मध्यप्रदेश में, ३.३१ प्रतिशत महाराष्ट्र में और ८.६७ प्रतिशत क्षेत्र गुजरात में है। नदी के कछार में १६० लाख एकड़ भूमि खेती के लायक है, जिसमें १४४ लाख एकड़ अकेले मध्यप्रदेश में है, शेष महाराष्ट्र और गुजरात में है।

विश्व की प्रमुख संस्कृतियां नदियों के किनारे विकसित हुईं, परंतु भारत का प्राचीन सांस्कृतिक इतिहास तो मुख्यतः गंगा, यमुना, सरस्वती और नर्मदा के तट का ही इतिहास है। सरस्वती नदी के तट पर वेदों की ऋचाएं रची गयीं, तो तमसा नदी के तट पर क्रौंच वध की घटना ने रामायण संस्कृति को जन्म दिया। न केवल आश्रम संस्कृति की सार्थकता एवं रमणीयता नदियों के किनारे पनपी, वरन नगर सभ्यता का वैभव भी इन्हीं के बल पर बढ़ा। यही कारण है कि नदी की हर लहर के साथ लोक-मानस का इतना गहरा तादात्म्य स्थापित हो गया कि जीवन के हर पग पर जल और नदी संस्कृति ने भारतीयता को परिभाषित कर दिया। छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े धार्मिक अनुष्ठान और यज्ञ आदि के अवसर पर घर बैठे सभी नदियों का स्मरण इसी भावना का तो संकेत है :—

''गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति
नर्मदे सिंधु कावेरि, जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरू।''

इस प्रकार मैकल सुत शोण और मैकल सुता नर्मदा का सामीप्य सिद्ध है। वैसे मैकल से प्रसूत सभी सरिताओं की निर्मल राशि 'मणिनि मोदक' कही गयी है तथापि शोण और नर्मदा का जल अत्यंत पवित्र माना गया है—मणि से निचोड़े गये नीर की तरह। ऐसे निर्मल और पवित्र जल प्रवाहों की उद्‌गम स्थली के वंशगुल्म के जल से स्नान आचमन यहां तक की स्पर्श मात्र से यदि अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलना बताया गया हो, तो उसमें स्नान अवश्य करना चाहिए। लेकिन यह विडंबना ही है कि अब अमरकंटक की अरण्य स्थली में प्रमुख रूप से नर्मदा और सोन नदी के उद्‌गम स्थल के आसपास एक भी बांस का पेड़ नहीं दिखता। अब तो धीरे-धीरे यहां के जंगलों से बांस के पेड़ों का स्थान यूकेलिप्टस लेता जा रहा है। यही नहीं यहां नर्मदा कुंड का पानी इतना प्रदूषित है कि नहाना तो दूर आचमन करने की इच्छा नहीं होती। इसके विपरीत सोन नदी के उद्‌गम का जल स्वच्छ और ग्रहण करने योग्य है। नर्मदा कुंड को मनुष्य की कृत्रिमता ने आधुनीकृत करके सीमित कर दिया है।

सोन्मुड़ा-सोन नदी का उद्‌गम-स्थल आज भी प्रकृति की रमणीयता और सहजता से अलंकृत है। यहां के वृक्षों पर बंदरों की उछलकूद और साधु-संतों की एकाग्रता यहां की पवित्रता का बोध कराती है। सूर्योदय का प्रातः स्मरणीय

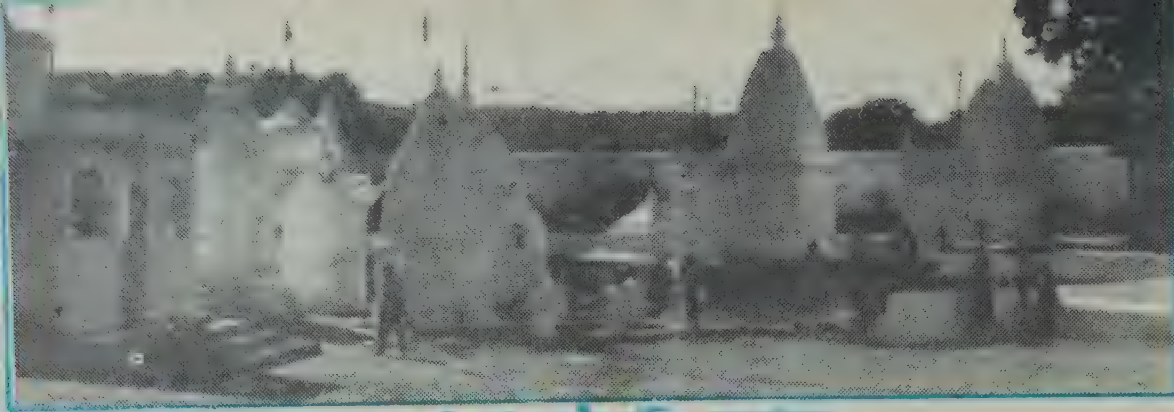
विश्व की प्रमुख संस्कृतियां नदियों के किनारे विकसित हुईं, परंतु भारत का प्राचीन सांस्कृतिक इतिहास तो मुख्यतः गंगा, यमुना, सरस्वती और नर्मदा के तट का ही इतिहास है। सरस्वती नदी के तट पर वेदों की ऋचाएं रची गयीं, तो तमसा नदी के तट पर क्रौंच-वध की घटना ने रामायण संस्कृति को जन्म दिया। न केवल आश्रम-संस्कृति की सार्थकता एवं रमणीयता नदियों के किनारे पनपी, वरन नगर सभ्यता का वैभव भी इन्हीं के बल पर बढ़ा।



दृश्य बड़ा मनोरम होता है ।

समुद्र से ३६०० फुट की ऊंचाई पर स्थित अमरकंटक प्राचीनकाल से ही ऋषि मुनियों की तप-स्थली, लक्ष्मीजी की निवास-स्थली और उमा-महेश्वर के विहार स्थल के रूप में प्रसिद्ध रहा है। यहां के पुजारीजी ने हमें बताया कि आज भी यहां शंकरजी के डमरू की आवाज सुनायी देती है । यही कारण है कि यहां झरनों के किनारे, पहाड़ों की गुफाओं में और आश्रमों में ऋषि-मुनि ध्यानस्थ होते हैं । स्वामी श्री रामकृष्ण परमहंस आश्रम के प्रभारी स्वामीजी ने बताया कि "अमरकंटक का वातावरण स्वस्थ है । साधना के लिए यह बहुत ही उपयुक्त स्थान है । यहां ब्रह्म के कण विद्यमान हैं, जो मन को शांति प्रदान करता है ।"

सूरज सिर के ऊपर तक चढ़ आया था और हमें नाश्ता नसीब नहीं हुआ था । या यूं कहें कि यहां की नैसर्गिक अलभ्य सुषमा के पान में ही इतना समय गुजर गया और हमें पता तक नहीं चला । बहरहाल, नाश्ता करके हमारा काफिला यहां के दर्शनीय स्थलों—माई का बगिया जो नर्मदा कुंड से मात्र ३ कि.मी. है, सोनूमुड़ा जो नर्मदा कुंड से २ कि.मी. है और जहां सोन नदी का उद्‌गम है, को देखने के बाद नर्मदा कुंड के पास स्थित प्राचीन मंदिर के खंडहरों को देखा । यहां पर ९वीं और ११-१२वीं शताब्दी में निर्मित अनेक मंदिर स्थित हैं । यहां पर केशवनारायण, पंचमहला, कर्णेश्वर और जालेश्वर महादेव का मंदिर स्थित है । इन मंदिरों के पास स्थित कुंड को नर्मदा नदी का वास्तविक कुंड कहा जाता है । बहुत कम लोगों को मालूम है कि यहां सोन और नर्मदा नदी के अलावा किसी अन्य नदी का उद्‌गम भी है । तीसरी नदी जोहिला है । नदियों के उद्‌गम के बारे में यहां एक जनश्रुति प्रचलित है, जिसके अनुसार ब्रह्मा की आंखों से दो अश्रु की बूंदें टपक पड़ीं । उसी से सोन और नर्मदा की उत्पत्ति हुई । राजा मैकल के यहां नर्मदा युवती के रूप में पैदा हुई । उसकी शादी के लिए उन्होंने घोषणा की कि जो कोई बकावली का फूल एक माह के अंदर ले आएगा उसी के साथ नर्मदा ब्याही जाएगी । राजकुमार शोणभद्र (सोन) के रूप,



नर्मदा कुंड और मंदिर अमरकंटक

रंग और गुणों पर राजकुमारी नर्मदा मुग्ध थी । राजकुमार शोणभद्र बकावली का फूल लाया तो अवश्य, मगर तब तक विलंब हो चुका था । फिर भी नर्मदा उसी के साथ ब्याह करने का निश्चय करके अपनी प्यारी सखी जोहिला को राजकुमार शोण का पता लगाने के लिए भेजती है । जोहिला भी अत्यंत सुंदर थी । शोणभद्र उसके अनिंद्य सौंदर्य पर मुग्ध हो जाता है । जोहिला के मन में भी कपट आ जाता है और राजकुमार शोण को वह अपना सर्वस्व निछावर कर देती है । जोहिला के आने में विलंब होते देख नर्मदा स्वयं वहां जाती है और वहां जोहिला और राजकुमार शोण के प्रेमालाप को देखकर गुस्से से पागल होकर कुंड में कूदकर प्राण त्याग देती है । कुंड में एक उफान आता है और उसमें से जल की धारा पश्चिम दिशा में बहने लगती है । राजकुमार शोण भी असफल प्रेमी की तरह अमरकंटक की पहाड़ी से कूदकर अपने प्राण त्याग देता है । जोहिला के भ्रमजाल ने नर्मदा और शोण को मिलने नहीं दिया । यहां के लोकगीतों में भी प्रचलित है :—

''माई नरबदा सोन बहादुर जोहिला ला लई जाइ बिहाय ।
गोड़े के पैरी उतार नरबदिया जोहिला ल लै पहिराय ।।''

अमरकंटक में हमने देखा कि नर्मदा कुंड से ६ कि.मी. की दूरी पर कपिलधारा में नर्मदा १५० फुट नीचे गिरकर प्रपात बनाती है । यहां से थोड़ी दूर पर नर्मदा दूध की धारा बनाकर १० फुट नीचे गिरती है । यहां उसी तर्ज पर सोन नदी ३०० फुट नीचे गिरती है । यहां के गर्भ में बाक्साइड दबा हुआ है, जिसे निकालकर भारत अल्यूमीनियम कंपनी (बाल्को) कोरबा भेजती है । यहां खान के ब्लास्टिंग से माहौल में कंपकंपी पैदा कर देती है । अब तक हमारा मन यहां के मनोरम दृश्यों को देखकर प्रफुल्लित हुआ जा रहा था । अचानक हमारी नजर घड़ी पर पड़ी । चार बजने को आया था और हमें बड़ी जोरों से भूख लगी थी । हम लोग जंगल के बीच केंवची के ढाबे में खाने का इंतजाम करने में लग गये । यहां खाना खाकर थोड़ी देर विश्राम करके हम एक यादगार स्मरण लिए वापसी के लिए रवाना हुए, तब हमारे मन में लोकगीत के ये बोल फूट रहे थे :—

''चलो रे भैया, चलिहैं नरबदा के तीर
परब के दिन आयो
दिन आयो रे अनमोल
परब के दिन आयो ।
गंगा नहायो, जमुना नहायो
अब देखि है मैया तोरी नीर
परब के दिन आयो रे भैया... ।''

—प्रकाश चाल, मिशन अस्पताल रोड, चांपा-४९५६७१ (म.प्र.)

हत्यारे का मस्तिष्क दान

● डॉ. नित्यानंद

सुप्रसिद्ध पत्रिका 'साइंस' में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार अनुसंधानकर्ताओं ने मस्तिष्क में उस पेचीदी कार्यप्रणाली का पता लगा लिया है, जो अन्य कार्यों के अलावा नैतिकता संबंधी धारणाओं का नियंत्रण करती है। यह प्रक्रिया मस्तिष्क के सामनेवाले हिस्से में होती है। यहीं पर मस्तिष्क पेचीदी सामाजिक परिस्थितियों को अपनी निजी न्याय-धारणा पर तौलता है, तर्क करता है और निर्णय लेता है।

व्यक्तित्व ही बदल गया

यह आश्चर्यजनक प्रतीत होगा कि व्यक्ति की यह नैतिक-आध्यात्मिक चेतना को अब साफ-साफ पहचाना जा सकता है और यही नहीं वह आसानी से क्षतिग्रस्त भी हो सकती है, उसी तरह जैसे चोट खाकर घुटना टूट जाए। हमारी नैतिकता का ताना-बाना एक झटके में टूट सकता है। दरअसल एक व्यक्ति के नैतिकता के एक झटके में टूट गये ताने-बाने से उपरोक्त तथ्य का पता लगा। वैज्ञानिक एंनटोनियो एवं हना देमासियो ने अपने तीन सहयोगियों की सहायता से एक सौ सत्तर वर्ष पुराने चकनाचूर कपाल का अध्ययन किया था। यह कपाल पिनेस गेज नामक एक व्यक्ति का था और उसकी मृत्यु के बाद उसके कपाल को अध्ययन के लिए सुरक्षित रखा गया था। गेज एक सज्जन प्रवृत्ति का व्यक्ति था, उदार, दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर। लेकिन एक दुर्घटना ने उसके समूचे व्यक्तित्व को ही बदल दिया।

स्वभाव बदल गया

१३ सितम्बर १८४८ को गेज बारूद के विस्फोट की तैयारी कर रहा था। वह रेल मार्ग का निर्माण करनेवाली एक कंपनी में तैनात था और एक पहाड़ी इलाके में रेल मार्ग बिछाने के लिए इस तरह के बारूदी विस्फोट की जरूरत पड़ी थी। सहसा २५ वर्षीय गेज से गलती से विस्फोट हो गया और लोहे की एक पतली सी छड़ उसकी बायीं आंख को घायल करती

हमारी नैतिकता का ताना-बाना एक झटके में टूट सकता है। दरअसल एक व्यक्ति के नैतिकता के एक झटके में टूट गये ताने-बाने से उपरोक्त तथ्य का पता लगा।

कपाल को भेदती हुई बाहर निकल गयी । लेकिन इस दुर्घटना के बाद भी गेज कुछ मिनटों तक अपने साथियों से बात करता रहा और फिर अचेत हो गया । कुछ दिनों की चिकित्सा के बाद वह स्वस्थ तो हो गया लेकिन उसका स्वभाव बिलकुल बदल गया था । जो गेज कभी मिथ्याभाषण नहीं करता था, अब बात-बात पर झूठ बोलने लगा । वह इतना असामान्य, इतना झगड़ालू हो गया कि किसी जगह टिककर नौकरी नहीं करता । गेज के चिकित्सक जॉन हारलो ने उसके बारे में अपनी रिपोर्ट में लिखा कि गेज की बौद्धिक क्षमता, अच्छे-बुरे के पहचान की उसकी बुद्धि और पाशविक वृत्तियों के बीच संतुलन नष्ट हो गया था । गेज अब पहलेवाला गेज नहीं रहा था ।

यह एक नाटकीय दुर्घटना ही प्रतीत होती है । लेकिन अब यह पता चलने पर कि नैतिक चेतना का भौतिक अस्तित्व भी है, उसे बदलने के लिए किसी लोहे की छड़ की आवश्यकता नहीं होगी । अब यह कार्य किसी जीवाणु, या जन्म के समय लगी चोट से भी हो सकता है । जीन संबंधी दोष भी नैतिकता के ताने-बाने को अस्त-व्यस्त कर सकता है । संभव है कि इतिहास के सबसे बदनाम व्यक्ति गेज की भांति अपने मस्तिष्क के बाह्यावरण (प्री फ्रंटल कोरटेक्स) में कोई न दिखायी देनेवाला घाव

मस्तिष्क की कार्यक्षमता का कैसे विस्तार करें

अपने मस्तिष्क की कार्यक्षमता के विस्तार के लिए एक औसत व्यक्ति को, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, क्या करना चाहिए ?
इस प्रश्न के उत्तर में अमरीका के एक मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र प्रमुख डॉ. एरनौल्ड शेबेल कहते हैं :

"इसके लिए आवश्यक है कि आप ऐसे कामों में सक्रिय रूप से जुटें जो आपके लिए बिलकुल अपरिचित हैं । ऐसा कोई भी कार्य करें जो बौद्धिक चुनौती लगता है । इससे आपके मस्तिष्क के स्नायुविक तंतुओं में विस्तार होगा । और इनमें वृद्धि से आपके मस्तिष्क की कंप्यूटर-जैसी कार्यक्षमता भी बढ़ेगी ।"

अतः ऐसा काम हाथ में लें, जिसके बारे में आप पहले से कुछ नहीं जानते । जैसे कंप्यूटर के कार्यक्रम बनानेवाला व्यक्ति शिल्प कार्य को अपना सकता है, और एक नर्तकी 'नेबीगेशन' को ।

मस्तिष्क संबंधी अनुसंधान में रत शोधकर्ताओं ने इसके लिए ये सुझाव भी दिये हैं ।

● **पहेलियां हल कीजिए :** आई ओवा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एंटोनियो देमासियो को पहेली बुझाना बिलकुल पसंद नहीं है लेकिन उसका कहना है कि पहेलियां हल करने का शौक आपके मस्तिष्क की कार्यक्षमता का विस्तार भी करता है ।

● **कोई वाद्य बजाना सीखिए :** वैज्ञानिक शेबेल के अनुसार जब आप वायलिन सीखना

छिपाये हों ।

इसका तात्पर्य यह नहीं कि व्यक्ति के अनुभवों का उसके चरित्र पर कोई असर नहीं पड़ता, या दोनों के बीच कोई संबंध नहीं । बचपन में हुआ दुर्व्यवहार और सभी तरह के अन्य अनुभव मस्तिष्क में अंकित रहते हैं । रुग्ण या विकृत मानसिकतावाले लेकिन ऊपर से सामान्य दिखायी देनेवाले लोगों के व्यवहार और ऐसे लोगों के बचपन के अनुभवों के मध्य किसी संबंध को अभी तक कोई खोज नहीं पाया है । तात्पर्य यह कि यह निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता कि बचपन के अनुभवों ने ही उन्हें निर्मम-निर्दय, असामान्य या विकृत मानसिकतावाला बना दिया ।

नैतिकतावाले क्षेत्र

जॉन हापकिंस मेडिकल स्कूल के डॉक्टर सोलोमन स्नीडर का कहना है कि यह नहीं कि ऐसे व्यक्तियों को उनके अभिभावकों ने अनुशासन में नहीं रखा होगा, या वे चर्च अथवा किसी पूजाघर में नहीं जाते होंगे । वे सही ढंग से सोच भी सकते हैं लेकिन उनमें नैतिक निर्णय करने की क्षमता नहीं होती । प्रतीत होता है कि मस्तिष्क में उनके नैतिकतावाले क्षेत्र में जैसे कोई छेद हो गया है ।

और, अब पिनेस गेज के मस्तिष्क के अध्ययन के बाद वैज्ञानिक यह पता लगा सकते

शुरू करते हैं, तब आपके मस्तिष्क को मांस-पेशियों पर नियंत्रण करने के लिए ढेर सारी समस्याओं से जूझना पड़ता है । पर इससे अंततः उसे लाभ ही होता है ।

● **बिगड़ी चीजों को ठीक करना सीखिए** : यदि आपके पास कार है या स्कूटर है या घर में कोई मशीन है तो उसे ठीक करना स्वयं सीखिए । इसमें भी आपको दिमाग लड़ाना पड़ेगा ।

● **कला सीखिए** : कोई कला सीखिए—जैसे चित्रकला, नृत्य कला आदि । और कुछ नहीं तो कविता या कहानी लिखना शुरू कीजिए ।



● **अच्छे प्रतिभासंपन्न लोगों से भेंट कीजिए** : अच्छे प्रतिभासंपन्न लोगों से मिलिए । उनसे बातें कीजिए । बहस कीजिए ।

वैज्ञानिक शेबेल के अनुसार : पूरे जीवनभर आप कुछ न कुछ सीख सकते हैं । इससे आपके मस्तिष्क की कार्यक्षमता का विस्तार होगा ।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने ढलती उम्र में चित्रकारी शुरू की थी और उन्होंने नयी शैली को जन्म दिया । अभिनेता पृथ्वीराज कपूर ने प्रौढ़ावस्था के बाद सितार सीखना शुरू किया था । प्रख्यात वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन वायलिन बजाया करते थे और सर विंस्टन चर्चिल ने चित्रकारी को अपनाया था । आप भी ऐसा क्यों नहीं कर सकते ?

है कि मस्तिष्क में आखिर नैतिकता को नियंत्रण करनेवाला क्षेत्र है कहां ? किस स्थल पर उसे खोजा जाए, अध्ययन किया जाए ।

वैज्ञानिकों के पास अध्ययन के लिए जॉन वायने गेसी नामक एक हत्यारे का मस्तिष्क मौजूद है । गेसी ने कई कत्ल किये थे और गत मई में उसे अमरीका के इलिओनिस नगर में फांसी पर चढ़ा दिया गया था । बाद में उसका मस्तिष्क अध्ययन-विश्लेषण के लिए शोधकर्ताओं को दान कर दिया गया ।

उचित-अनुचित की क्षमता

मान लीजिए यदि गेसी के मस्तिष्क में गेज के मस्तिष्क की भांति कोई दोष पाया जाता है तो फिर क्या उसे फांसी पर लटकाना उचित था ? क्या ऐसे व्यक्ति को फांसी देना उचित था, जिसमें उचित-अनुचित या नैतिक-अनैतिक के मध्य फर्क करने की क्षमता ही नहीं थी । अब विज्ञान मनुष्य के व्यक्तित्व के रहस्यों को अनावृत कर रहा है । अर्थात यह पता लगा रहा हैकि मस्तिष्क के किस क्षेत्र में हमारी नैतिकता, आध्यात्मिकता, उचित-अनुचित की धारणा नियंत्रित होती है ।

तो क्या इस समाज की यह जिम्मेदारी नहीं हो जाती कि किसी हत्यारे को फांसी देने की बजाय वह उसके मस्तिष्क की वैज्ञानिक जांच-परख कराये ।

यदि नैतिक निर्णयों की क्षमता ग्रस्त हो सकती है या क्षतिग्रस्त की जा सकती है तो क्या उसे सुधारा नहीं जा सकता ? यदि असामान्य प्रवृत्ति मस्तिष्क के किसी छिपे हिस्से में निहित है तो क्या औषध द्वारा उसे ठीक नहीं किया जा सकता ।

डॉ. स्नीडर का विश्वास है कि गलत-सलत निर्णय करने की प्रवृत्ति को दूर करने के लिए कोई अभ्यास, कोई व्यायाम भी खोजा जा सकता है, उसी तरह जैसे पक्षाघात पीड़ित व्यक्ति को ठीक करने के लिए व्यायाम और अभ्यासों की व्यवस्था है ।

इक्कीसवीं सदी का चिकित्सा विज्ञान शायद इन सब प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थ होगा । शायद विज्ञान नैतिक दोषों को दूर करने के लिए धर्म का भी कार्य करने लगे ।

मस्तिष्क की पूरी जानकारी देने वाली मशीन

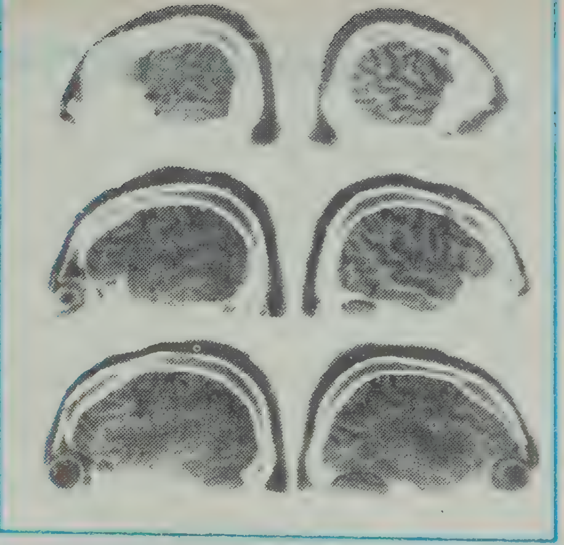
चिकित्सा विज्ञान अब इस बात का पता लगाने में सफल हो गया है कि जब हम कोई कार्य करते हैं तो मस्तिष्क का कौन-सा भाग सक्रिय होता है । यही नहीं, आज मस्तिष्क के इस विशेष हिस्से के चित्र भी खींचे जा सकते हैं । इस विधि से सिद्धांततः अब इस बात का भी पता लगाया जा सकता है कि मस्तिष्क के किस हिस्से में कोई विचार उद्‌भूत होता है । इसी तकनीक के सहारे चिकित्सक अब पक्षाघात अथवा मिरगी के दौरान क्षतिग्रस्त हुए

मस्तिष्क के खास हिस्से का भी पता लगा सकेंगे ।

यह तकनीक नयी भी है और बिलकुल नयी भी नहीं । इसे 'फंक्शनल मेगनेटिक रेसोनेंस इमेजिंग' कहा जाता है । अर्थात चुंबकीय शक्ति का उपयोग कर मस्तिष्क की छवि उतारना । आम भाषा में इसे 'एम आर आई' कहते हैं और इस तकनीक का अनेक देशों में व्यापक रूप से उपयोग भी किया जा रहा है । 'फंक्शनल एम.आर.आई.' मस्तिष्क की संरचना को उजागर करने के बजाय मस्तिष्क के विभिन्न अंगों की कार्य प्रणाली की छवि सामने रखता है ।

अमरीका के येन राज्य में स्थित एक प्रयोगशाला के निदेशक माइकेल स्मिथ का कहना है कि पहले इस तरह की सुविधा नहीं थी । इसी प्रयोगशाला में फंक्शनल एम.आर.आई. को विकसित किया जा रहा है ।

यों, सन १९८६ में ब्रिटेन में फंकशन एम आर आई का प्रयोग किया गया था पर इस क्षेत्र में प्रगति हुई अमरीका में । किसी भी एमआरआई में रोगी को एक शक्तिशाली चुंबक से बने सिलेंडर में लिटा दिया जाता है । सिलेंडर की चुंबकीय शक्ति रोगी के शरीर के जलीय अणुओं में विद्यमान उद्जन अणुओं को समानांतर पंक्ति में होने के लिए विवश करते हैं । फिर एक रेडियो तरंग चुंबकीय 'एक्सेस' के एक बाजू पर हलका-सा आघात करती है । जब यह तरंग रुक जाती है और 'एक्सेस' पुनः पंक्ति में वापस लौट जाते हैं, तब वे एक बेहद कमजोर लेकिन पकड़े जाने योग्य रेडियो तरंगें प्रेषित करते हैं । अणुओं को शिथिल होने में



कितना समय लगेगा यह आसपास मौजूद अणुओं की संख्या और उनसे उन अणु विशेषों के 'मेल-मिलाप' पर तय होता है और इसी से किसी कोशिका के घनत्व का भी पता चलता है । इसी समय के आधार पर कंप्यूटर मस्तिष्क के उस विशेष हिस्से की छवि तैयार करता है । ऐसी छवि में शरीर में बनने वाली गांठों आदि का स्पष्ट पता लग जाता है । फंक्शनल एम आर आई का कार्य दिमाग की संरचना को बताने का नहीं होता । उसका कार्य यह दिखाना है कि मस्तिष्क कैसे कार्य कर रहा है ।

उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति को अंगुलियों से आघात करने के लिए कहा जाए । तो मस्तिष्क के जिस हिस्से को इस निर्देश की पूर्ति करनी है वह स्नायुविक स्पदन के जरिए संकेत भेजेगा । इस कार्य के लिए ऊर्जा की जरूरत होगी, अतः मस्तिष्क के उस हिस्से में अधिक रक्त पहुंचेगा । रक्त में उपस्थित ओषजन उस हिस्से में चुंबकीय क्षेत्र को इस तरह परिवर्तित करेगी कि उद्जन अणु को शिथिल बनाकर भेजे जाने वाले रेडियो संकेत और घने हो जाएंगे । अणुओं के शिथिल होने में लगने

वाले समय को माप कर एम आर आई इस परिवर्तन की छवि बनाती है । अनुसंधान कर्ता इस छवि को मस्तिष्क की शेष छवि से पृथक कर मस्तिष्क के उस हिस्से में चलने वाले कार्य कलापों को जान लेते हैं । एक शक्तिशाली कंप्यूटर की सहायता से वे लगातार छवियां बना सकते हैं, किसी वीडियो फिल्म की भांति ।

यों, एम आर आई के अलावा पोजीट्रान एमिसन टोमोग्राफी (पी ई टी) द्वारा भी मस्तिष्क के सक्रिय क्षेत्र में होने वाले रक्त-प्रवाह का पता लगाया जा सकता है । पीईटी के द्वारा फंक्शनल एम आर आई की तुलना में अधिक शक्तिशाली संकेत प्राप्त किये जा सकते हैं और इस तरह मस्तिष्क की दुर्बल से दुर्बल गतिविधि का भी पता लगाया जा सकता है । पी ई टी के जरिये एक बार में ही समूचे मस्तिष्क को जांचा जा सकता है, पर एम आर आई की तुलना में उसमें कुछ कमियां भी हैं । जैसे पीईटी के लिए रेडियो सक्रिय तत्व जैसे ओषजन या फलूराइन के आइसोटोप को व्यक्ति के रक्त में प्रविष्ट करना पड़ता है । यह रेडियो सक्रिय तत्व पोजीट्रान नामक कण उत्सर्जित करता है जो मस्तिष्क के इलेक्ट्रान से जाकर टकराते हैं और गामा किरणें पैदा करते हैं । इन्हें ही स्केनर द्वारा जांचा जाता है, लेकिन किसी व्यक्ति को सीमित संख्या और सीमित अवधि में रेडियो सक्रिय तत्व दिये जा सकते हैं इससे अधिक देने पर स्वास्थ्य के लिए खतरा उत्पन्न हो जाता है । दूसरे, एम आर आई मशीनें पी ई टी की तुलना में सस्ती भी हैं ।

विसकांसिन मेडिकल कालेज के न्यूरो साइकोलॉजिस्ट स्टीफ़न राव का कहना है कि फंक्शनल एम आर आई की सहायता से सामान्य मनुष्य के मस्तिष्क के बारे में भी बहुत-सी नयी बातों की जानकारी प्राप्त की जा सकेंगी ।

फंक्शनल एम आर आई की सहायता से मिरगी के दौरों के शिकार लोगों की चिकित्सा में सहायता मिलेगी । मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले दोषों से संबंधित स्थलों का भी आसानी से पता लगाकर शल्य क्रिया की जा सकेगी ।

दांपत्य जीवन : कॉफी पीकर

रायलओक अमरीका के उपनगर डेटराइट स्थित विलियम बांमा हॉस्पीटल के डॉ. एनोशियास डियोकनो ने मिशीगन के ७४४ लोगों के बारे में जानकारियां एकत्रित कर जो अध्ययन किया है, उसके अनुसार अधिक आयु वर्ग के जो दंपत्ति कॉफी का सेवन करते हैं, वे कॉफी नहीं पीनेवालों की अपेक्षा यौन रूप से अधिक सक्रिय होते हैं ।

डॉ. डियोकनो के मतानुसार कॉफी पीने से सेंट्रल नर्वस सिस्टम (स्नायु तंत्र) में सक्रियता बढ़ जाती है और कुछ खास मांसपेशियां अनुकूल हो जाती हैं । कुछ लोग अपने यौन व्यवहार में 'उदार' भी होते देखे गये हैं ।

— प्रकाशचंद्र गंगराड़े

'मलाणा' कुल्लू घाटी का एक ऐसा दूरदराज का गांव है, जहां दुनिया का सबसे पहला गणतंत्र मौजूद है । भारतीय गणराज्य का एक अंग होते हुए भी मलाणा की अपनी एक अलग न्यायपालिका और कार्यपालिका है । भारत सरकार के कानून यहां नहीं चलते । इस गांव की अपनी अलग संसद है, जिसके दो सदन हैं— ज्येष्ठांग (ऊपरी सदन) और कनिष्ठांग (निचला सदन) ।

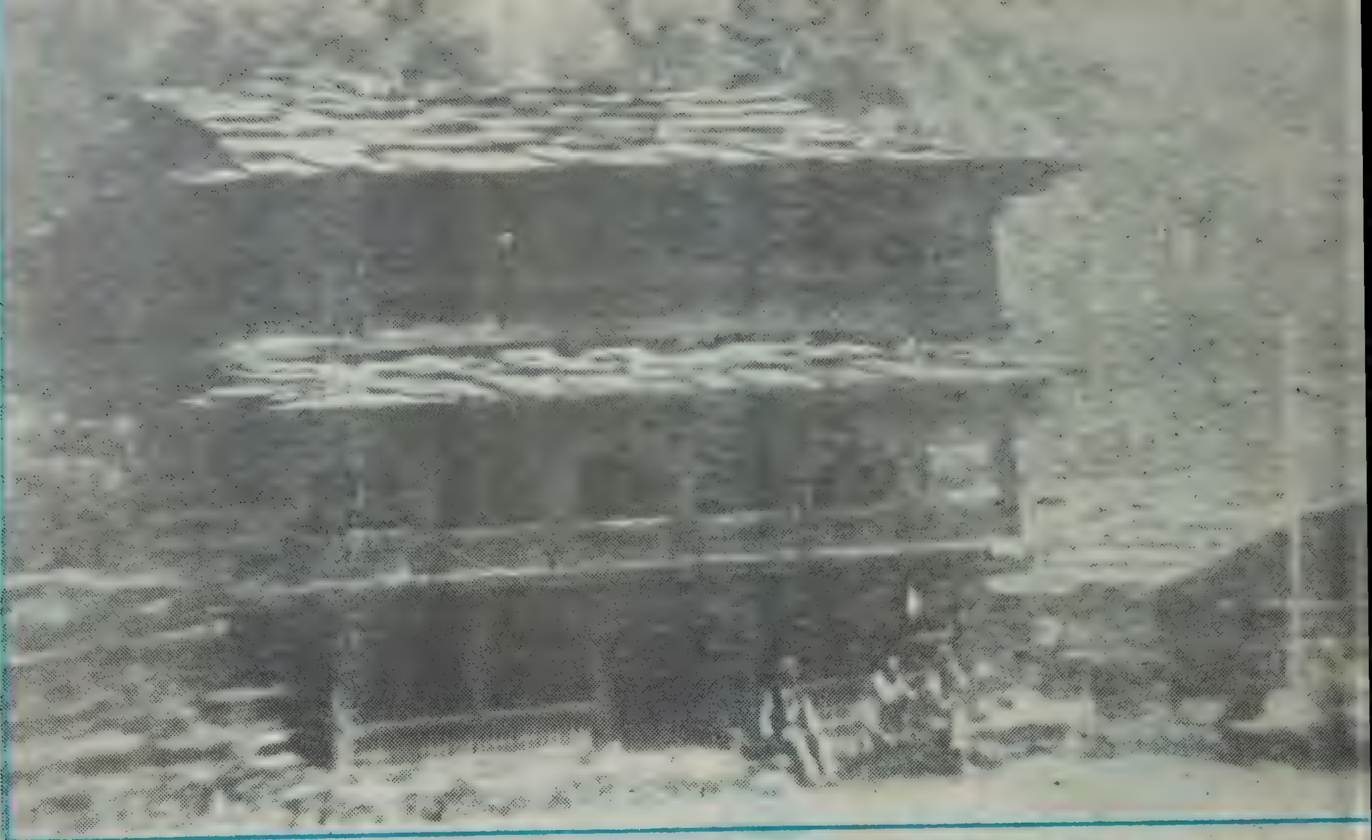
दुनिया का सबसे ऊंचा गांव

● गुरमीत बेदी



हिमाचल प्रदेश न केवल अपने प्राकृतिक सौंदर्य और देवालयों के लिए मशहूर है अपितु कई विचित्रताएं भी समेटे है । यहां कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां की अनूठी संस्कृति है, अनूठी परंपराएं हैं और अनूठे रीति-रिवाज हैं । यही नहीं, यहां अनेक ऐसे स्थल हैं जो कौतूहल, रोमांच, आश्चर्य से परिपूर्ण हैं । ऐसे स्थलों में हिमाचल के कुछ अनोखे गांव भी शामिल हैं जिन्होंने अपनी भौगोलिक स्थिति और अजीबोगरीब रीति-रिवाजों की वजह से देशव्यापी ख्याति अर्जित की है । किब्बर, लोसर, मलाणा, मिंघल, बड़ा भंगाल, कुकड़गुंदा ऐसे ही कुछ प्रमुख गांव हैं ।

समुद्र तल से चार हजार आठ सौ पचास मीटर की ऊंचाई पर स्थित किब्बर को दुनिया का सबसे ऊंचा गांव माना जाता है । शीत मरुस्थल के नाम से जानी जानेवाली दुर्गम जनजातीय स्पीति घाटी में स्थित यह गांव सड़क परिवहन से भी जुड़ा हुआ है और इसकी ऊंचाई कुंजम दर्रे के बराबर है । स्पीति उपमंडल के मुख्यालय काजा से इसकी दूरी करीब बीस किलोमीटर है । इसके उत्तर में लद्दाख और पूर्व में तिब्बत की सीमाएं हैं । अत्यधिक ऊंचाई पर



स्थित होने के कारण किब्बर गांव में पेड़-पौधे बहुत कम पाये जाते हैं । वैसे जौ यहां की मुख्य फसल है । किब्बर वासियों की आर्थिक स्थिति पशुधन पर निर्भर है यानि जिस परिवार के पास जितने अधिक पशु होंगे, वह उतना ही खुशहाल होगा । भेड़-बकरियों और घोड़ों के अलावा याक यहां का मुख्य पशु है । लोग इस पर सवारी करते हैं, बोझा ढोते हैं और इससे हल भी जोतते हैं । भारी बर्फबारी के कारण जब किब्बर वासियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना होता है, तब याक बर्फ में सबसे आगे रास्ता बनाता हुआ चलता है ।

नृत्य-संगीत के शौकीन

किब्बर के लोग नाच-गानों के बहुत शौकीन हैं । सरदियों में जब किब्बर का संपर्क शेष दुनिया से कट जाता है, तब यहां के निवासी नाच-गानों द्वारा ही माहौल को जीवंत रखते हैं । 'दक्कांग मेला यहां का प्रमुख उत्सव है और सभी उम्र के लोग इस उत्सव में शामिल होते हैं । यह एक ऐसा उत्सव है जो यहां के लोगों के दिलोदिमाग में नयी उमंग, उत्साह एवं स्फूर्ति भर देता है । इसके अलावा किब्बर से छह किलोमीटर दूर 'लादरचा' मैदान में मनाया जाने वाला प्रसिद्ध व्यापारिक मेला 'लादरचा' भी लोकनृत्यों के लिए मशहूर है । यह मेला भारत-चीन संबंधों का प्रतीक भी रहा है । सन १९६२ में चीन के आक्रमण के पश्चात यह मेला बंद हो गया था । जुलाई, १९८१ में उन्नीस साल बाद सरकार के प्रयत्नों से फिर इस मेले की शुरुआत हुई । इस मेले में आज भी चमूर्ति नस्ल के घोड़ों, लद्दाखी ऊन, काले चने, पशमीना, नमक एवं याक की खरीद-फरोख्त होती है ।

किब्बर गांव में 'की' नामक एक प्राचीन बौद्ध मठ है, जहां भगवान बुद्ध की कई प्राचीन प्रतिमाएं और बौद्ध इतिहास की कई दुर्लभ पुस्तकें उपलब्ध हैं । दलाई लामा की भी यहां बहुत मान्यता है । किब्बर में कभी जीवन की

आधारभूत सुविधाएं तक मुहैय्या नहीं थीं, लेकिन अब स्थिति बदल गयी है । सड़क मार्ग से तो किब्बर जुड़ा ही है, बिजली एवं संचार सुविधाएं तक यहां मुहैय्या हैं । इस गांव की आबादी साढ़े पांच सौ के करीब है ।

शादी की दिलचस्प प्रथा

लोसर गांव भी स्पीति घाटी में है और कुंजम दर्रे से इसकी दूरी करीब १९ किलोमीटर है । स्पीति नदी के दायीं ओर स्थित यह घाटी का पहला गांव है । तिब्बत की सीमाएं चूंकि साथ लगती हैं । अतः यहां बौद्ध धर्म का भी काफी प्रभाव है । पुजारी और लामाओं को यहां बड़े सम्मान से देखा जाता है । गांव के हर घर में वाद्य यंत्रों और 'कंजूय' व 'तंगयूर' पोथियों से सजा मंदिर होता है जिसमें हर रोज सुबह घर के पुरुष सदस्य द्वारा पूजा की जाती है । इस गांव में शादी की एक प्रथा बड़ी चिलचस्प है । लड़का जिस लड़की को चाहता है, उसके समक्ष अपने प्रेम का इजहार करने के लिए वह उसे कोई उपहार भिजवाता है । अगर लड़की इस उपहार को स्वीकार कर लेती है तो समझा जाता है कि वह रजामंद है । अब लड़का एकांत में लड़की से मिलता है और घर से भागने का समय व आश्रय लेने का स्थल निश्चित करता है । इस तरह निश्चित समय पर लड़का अपने साथियों सहित आता है और लड़की को अपने मित्रों की पीठ पर उठवाकर ले जाता है । इस घाटी में ऐसी मान्यता है कि लड़की को पीठ पर उठवाकर ले जाने से उसे प्रेतात्माएं नहीं चिपटतीं । पांडव विवाह प्रथा का अस्तित्व भी यहां है यानि सभी भाइयों की एक ही पत्नी होगी । बाल-विवाह प्रथा भी प्रचलित है ।

प्राचीनतम जनतंत्र प्रणाली

'मलाणा' कुल्लू घाटी का एक ऐसा दूरदराज का गांव है, जहां दुनिया का सबसे पहला गणतंत्र मौजूद है । चारों ओर से ऊंची-ऊंची पहाड़ियों से घिरा और मलाणा नदी के मुहाने पर बसा मलाणा गांव अपनी निराली बोली, अनूठे रीति-रिवाजों और परंपराओं के लिए भी विख्यात है । लेकिन यहां की जिस गौरवपूर्ण परंपरा ने गांव का नाम विश्व के मानचित्र पर ला खड़ा किया है, वह है यहां की सबसे प्राचीन जनतांत्रिक प्रणाली । भारतीय गणराज्य का एक अंग होते हुए भी मलाणा की अपनी एक अलग न्यायपालिका और कार्यपालिका है । भारत सरकार के कानून यहां नहीं चलते । इस गांव की अपनी अलग संसद है, जिसके दो सदन हैं— ज्येष्ठांग (ऊपरी सदन) और कनिष्ठांग

अत्यधिक ऊंचाई पर स्थित होने के कारण किब्बर गांव में पेड़-पौधे बहुत कम पाये जाते हैं । वैसे जौ यहां की मुख्य फसल है । किब्बर वासियों की आर्थिक स्थिति पशुधन पर निर्भर है यानि जिस परिवार के पास जितने अधिक पशु होंगे, वह उतना ही खुशहाल होगा ।



(निचला सदन) । ज्येष्ठांग में कुल ११ सदस्य होते हैं, जिनमें तीन सदस्य कारदार, गूर और पुजारी स्थायी सदस्य होते हैं । शेष आठ सदस्यों को गांववासी मतदान द्वारा चुनते हैं । इसी तरह कनिष्ठांग सदन में हर घर के एक सदस्य को प्रतिनिधित्व दिया जाता है । संसद भवन के रूप में यहां एक ऐतिहासिक चौपाल है जिसके ऊपर ज्येष्ठांग सदन के ११ सदस्य और नीचे कनिष्ठांग सदन के सदस्य बैठते हैं । अगर संसद किसी विवाह का निपटारा करने में विफल रहती है तो मामला 'जमलू' देवता के सुपुर्द कर दिया जाता है और इस मामले में देवता का निर्णय अंतिम व मान्य होता है ।

जमलू देवता द्वारा फैसला सुनाये जाने की प्रक्रिया भी बड़ी विचित्र है । इस प्रक्रिया के तहत दोनों पक्षों को एक-एक बकरा लाने को कहा जाता है । फिर दोनों बकरों की टांग चीरकर उसमें जहर भर दिया जाता है । जिसका बकरा पहले मर जाए, वही पक्ष दोषी माना जाता है और उसे सजा कबूल करनी पड़ती है । अगर कोई देवता के फैसले का अनादर करे तो उसे सजा भुगतनी पड़ती है ।

मलाणा गांव में कई अजीबोगरीब प्रथाएं प्रचलित हैं । मसलन गांव में चमड़े के साथ प्रवेश करना वर्जित है । ऐसा करनेवाले को जुरमाना किया जाता है । इसके अलावा अगर आप गलती से जमलू देवता के मंदिर में चले गये और वहां किसी मूर्ति को छू भर लिया तो आपको जुरमाना अदा करना होगा । यह जुरमाना राशि पांच सौ रुपये तक हो सकती है । बिना जुरमाना चुकाये आप गांव नहीं छोड़ सकते । मलाणावासियों की बोली भी बड़ी अजीबो-गरीब-सी है लेकिन सैलानियों और घुमक्कड़ों के यहां आते रहने की वजह से मलाणावासी टूटी-फूटी हिंदी का उच्चारण भी सीख गये हैं ।

बौद्ध संस्कृति का गढ़

कांगड़ा जिला में पालमपुर-बैजनाथ सड़क



पर पुत्र खड्ड के किनारे बसा टाशीजौंग तिब्बती शरणार्थियों के एक गांव का नाम है । तिब्बती भाषा में टाशीजौंग का अर्थ है— स्वर्गधाम या स्वर्गाश्रम । ग्रामीण परिवेश के साथ-साथ यहां का पूरा वातावरण धार्मिक रंग में रंगा है । यहां की ऊंची-नीची पगडंडियों पर चलते कतई ऐसा नहीं लगता कि हम हिमाचल के किसी गांव में घूम रहे हैं, बल्कि भ्रम होने लगता है मानो हम बौद्ध संस्कृति के प्रदेश में आ गये हैं । 'उं मणि पदमे हुम' मंत्र का जाप करते गेरूआ वस्त्रधारी लामाओं और इमारतों में दूर-दूर तक लहराती रंगीन पताकाओं को देखकर यह भ्रम भी पुख्ता हो उठता है कि कहीं हम इस धरती के किसी आध्यात्मिक स्थल पर तो नहीं पहुंच गये ।

टाशीजौंग को बसाने का श्रेय लामाओं के एक संप्रदाय के गुरु 'धुंजुनिया' को जाता है जो सर्वप्रथम १०-१२ अनुयायियों के साथ यहां पधारे और उन्होंने बौद्ध मंदिर का निर्माण करवाया । इस मंदिर का नाम रखा गया 'फुंसो छुछोरलिंग' । मंदिर में गुरु प्रथा है और सभी तिब्बती गुरु के हुक्म के पाबंद हैं । गुरु की आज्ञा के बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता । मंदिर के वर्तमान गुरु पंद्रह वर्ष के हैं और उनका नाम है खतुंल रिपौछे । इन दिनों इनकी शिक्षा-दीक्षा साठ वर्षीय गुरु अच्चु के संरक्षण में चल रही है । मंदिर में भगवान बुद्ध की पीतल निर्मित विशाल प्रतिमा है । टाशीजौंग में आठ-आठ, दस-दस वर्ष के बच्चे भी लामा बने हुए हैं और एक तरह से टाशीजौंग बौद्ध धर्म का गढ़ बन गया है ।

गूर : देवता का प्रवक्ता

बड़ा भंगाल जिला कांगड़ा का सबसे दुर्गम गांव है और भारी बर्फबारी के कारण साल में छह महीने इसका संपर्क शेष विश्व से कटा रहता है । ग्रामीण देवी-देवताओं की यहां बहुत मान्यता है और हर महत्त्वपूर्ण काम, यहां तक कि फसल की बिजाई भी देवता की अनुमति से होती है । ये देवता प्रतीकात्मक रूप से मंदिरों में विराजमान हैं और अपने चेलों, जिन्हें 'गूर' कहा जाता है, के माध्यम से जनता को आदेश सुनाते हैं । 'गूर' को देवता का प्रवक्ता माना जाता है यानि देवता गूर के माध्यम से बात करता है ।

गूर में देवता आने का भी एक निश्चित क्रम है । देवता यदि मंदिर में अवस्थित है तो उसके मुखौटे के सामने गूर को खड़ा किया जाएगा । लेकिन अगर देवता को पालकी में बिठाया गया है तो एक विशेष स्थान पर उस पालकी को रखकर गूर को उक्त देवता के सम्मुख पेश किया जाता है । गूर में देवागमन की प्रक्रिया भी बड़ी विचित्र है । गूर बना व्यक्ति देवता के सामने खड़ा-खड़ा एकाएक कांपने लगता है । धीरे-धीरे कंपकंपी तेज हो जाती है और वह बुदबुदाने लगता है । उसकी बुदबुदाहट फिर स्पष्ट हो जाती है और वह लोगों से प्रश्न करता है कि मुझे क्यों याद किया गया है ? इसी तरह वह गांववासियों के प्रश्नों का उत्तर देता है और किसी अपराध के दोषी को भी सजा सुनाता है ।

गांव के लोग बड़े धर्मभीरू व अंधविश्वासी हैं । प्रेत-आत्माओं और कई अलौकिक जीवात्माओं में इनका विश्वास है । जादू-टोटकों में भी ये लोग यकीन रखते हैं और अपने विरोधियों का अनर्थ करने के लिए इन्हीं टोटकों को आजमाया जाता है । बकरे की बलि देने का भी इन लोगों में काफी रिवाज है । यह बलि देवी-देवता को प्रसन्न करने के लिए दी जाती है ।

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्र पांगी घाटी में स्थित मिंघल गांव भी अजीबोगरीब परंपराओं के लिए मशहूर है । हिमशिखरों के आगोश में बसे इस गांव का सौंदर्य नयनाभिराम है । पर्यटकों के ठहरने के लिए यहां वन व लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह भी हैं । देवी मिंघल के नाम पर बसे इस गांव में मिंघल माता का लकड़ी से निर्मित मंदिर भी है । लकड़ी पर हुई नक्काशी देखते ही बनती है । मिंघल माता की इस गांव में मान्यता भी बहुत है । कहते हैं कि माता के आदेशानुसार यहां न तो कोई दो बैलों से खेती करता है और न ही चारपाई पर सोता है । माता के इस आदेश के पीछे कई किंवदंतियां प्रचलित हैं । इस गांव को कभी प्राकृतिक आपदा का सामना भी नहीं करना पड़ा । लोग इसे देवी मां का आर्शीवाद मानते हैं ।

प्रतिवर्ष बसता है गांव

कुकड़गुंदा जिला कांगड़ा के दुर्गम भंगाल इलाके का आखिरी गांव है और आकाश में उड़ने के रोमांचक खेलों के लिए मशहूर बिलिंग घाटी से इसकी दूरी १९ किलोमीटर है । इस गांव में १६ घर हैं और आबादी सौ के करीब है । इस गांव से जुड़ी सबसे दिलचस्प बात यह है कि यह गांव हर साल उजड़ता है और हर साल बसता है । यानि यहां के लोग सरदियां आते ही गांव से पलायन कर जाते हैं और गरमियों के दस्तक देते ही फिर लौट आते हैं ।

'अजयपाल' यहां के प्रमुख ग्रामीण देवता हैं । यहां किसी के जन्म और मौत पर लोग खेतों में काम नहीं करते । अगर कोई ऐसा करता है तो उसे जुरमाने के रूप में बकरे या भेड़ की बलि देवता को चढ़ानी पड़ती है । जन्म या मृत्यु की सूचना देने के लिए गांव का एक व्यक्ति पूरे गांव में आवाज लगाता है— 'जूठ'-'जूठ' । गांववासी इसका अर्थ समझ जाते हैं ।

—राणा निवास, बैजनाथ-१७६१२५
जिला कांगड़ा (हि.प्र.)

बुद्धि विलास

१. **विष्णु** के पूर्णावतार कोन-से माने जाते हैं ?

२. **क. भारत** में आनेवाले मुसलिम विद्वानों में पहला कौन था ? वह किसके साथ आया था ?

ख. उसका भारत के बारे में कौन-सा प्रसिद्ध ग्रंथ था ?

३. **क. उर्दू** के प्रसिद्ध शायर मिर्जा गालिब की हवेली के अवशेष कहां मौजूद हैं ?

ख. उनकी कब्र कहां स्थित है ?

४. **क. भारत** के किस क्रांतिकारी ने लंदन की अदालत में अपना नाम राम मोहम्मद सिंह आजाद बताया था ? इसका क्या तात्पर्य था ?

ख. उसने क्या किया था और उसका परिणाम क्या हुआ ?

५. **क. प्रधानमंत्री** श्री नेहरू के कार्यकाल में देश में कौन-सा आर्थिक घोटाला हुआ था, जिस पर संसद में हंगामा हुआ था ?

ख. वह कौन-सा वित्त मंत्री था जिसने इस संबंध में अपनी नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार कर इस्तीफा दे दिया था ?

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प । —संपादक

६. **क. भारत** में जून से सितंबर तक मानसून से औसतन कितनी वर्षा होती है ?

ख. कितनी वर्षा को सामान्य माना जाता है ?

७. **क. सन** २०२५ ई. तक दुनिया की आबादी कितनी होने का अनुमान है ?

ख. तब लोगों का मुख्य भोजन (खाद्यान्न) क्या होगा ?

८. **क. पश्चिमी** एशिया में किन दो देशों के बीच विगत जुलाई में एक ऐतिहासिक समझौता हुआ, जिसके फलस्वरूप पिछले ४२ सालों से उनके बीच कटुता और युद्ध की स्थिति समाप्त हुई ?

ख. यह समझौता कहां हुआ और क्यों ?

९. **किस** एथलीट ने १० हजार मीटर की दौड़ में नया विश्व-रेकॉर्ड कायम किया है और कब ?

१०. **इस** समय दुनिया में सबसे बड़ा झूला (जाइंट व्हील) कहां है और उसकी क्या विशेषता है ?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—



कहानी

गिद्ध

● डॉ. भगवतीशरण मिश्र

वे दो थे। उन्होंने अखबार में यह सब पढ़ा तो उनकी आंखों में एक चमक उतर आयी, ठीक वैसी ही—जैसी सामने शिकार को देखकर चीते की आंखों में उतर आती है।

वे प्रायः पहले व्यक्ति थे जो सड़क-किनारे के उस रेस्तरां में सुबह-सुबह पहुंचे थे। उस अनछुए अखबार से अभी एक ताजा गंध आ रही थी जो अंदर केतली पर उबलती चाय की मादक गंध से एकदम अलग थी। महाराष्ट्र के लातूर और ओस्मानाबाद जिलों में आये भूकंप की खबरों से अखबार भरा पड़ा था। सास्तूर और कल्लारी गांवों के मलवे के चित्र सभी पृष्ठों पर पसरे थे। मलवों की बगल में लाशें ही लाशें—आदमियों से लेकर माल-मवेशियों तक की।

उनकी रुचि लाशों में कम थी। उन्होंने मलवों के ढेरों को ध्यान से देखा। वे काफी ऊंचे लगते थे। चित्रों के माध्यम से ही खोजी कुत्तों की तरह वे-जैसे मलवों के अंदर तक सूं[ंघ] गये। उनकी आंखों की हिंस्र भावना कुछ औ[र] गहरी हुई।

दोनों ने चाय के अध-पिये प्यालों को किन[ारे] किया और रेस्तरां के बाहर आ गये। सुबह-सुबह वे चाय पीने इसीलिए यहां पहुंचत[े] थे कि आठ आने की चाय के साथ ढाई रुपये के अखबार का भी वे मुफ़्त में उपयोग कर पाते।

रेस्तरां के बाहर निकल उन्होंने आंखों ही आंखों में बातें की थीं और अपने-अपने घरों [की] ओर तेज कदमों से बढ़ गये थे।

करीब आधे घंटे में ही वे तैयार होकर प्राय[ः] एक ही साथ अपने शहर के उस छोटे स्टेशन पर पहुंचे थे। मुंबई जानेवाली गाड़ी के आने [में] कुछ देर थी। वे प्लेटफार्म के एक छोर पर पड़ी, पत्थर की एक खाली बेंच पर बैठ गये।

"साला भूकंप भी आया तो निपट देहात में। यहां से सैकड़ों किलोमीटर दूर" उनमें से एक ने धीरे-धीरे आरंभ किया, "वहां पहुंचते-पहुंचते ही दो दिन लग जाएंगे। तब तक लाशें सड़ रही होंगी जिनकी 'बू' से वहां चलना-फिरना मुश्किल हो जाएगा और मलवे

जब एक ने कलाई काटनेवाली घटना सुनायी तो दूसरे ने— जैसे तिरस्कारभरे स्वर में कहा— "एक कलाई काटकर बड़े तीसमार खां बनते हो, मुझे तो चार-चार कलाइयां काटनी पड़ीं। कीमती घड़ियों का मामला था और सब कहने को मुरदे थे, मगर चाकू चलते ही उनकी छटपटाहट से ऊपर की चट्टानें भी हिलने लगती थीं।"

भी बहुत कुछ खुद चुके होंगे ।"

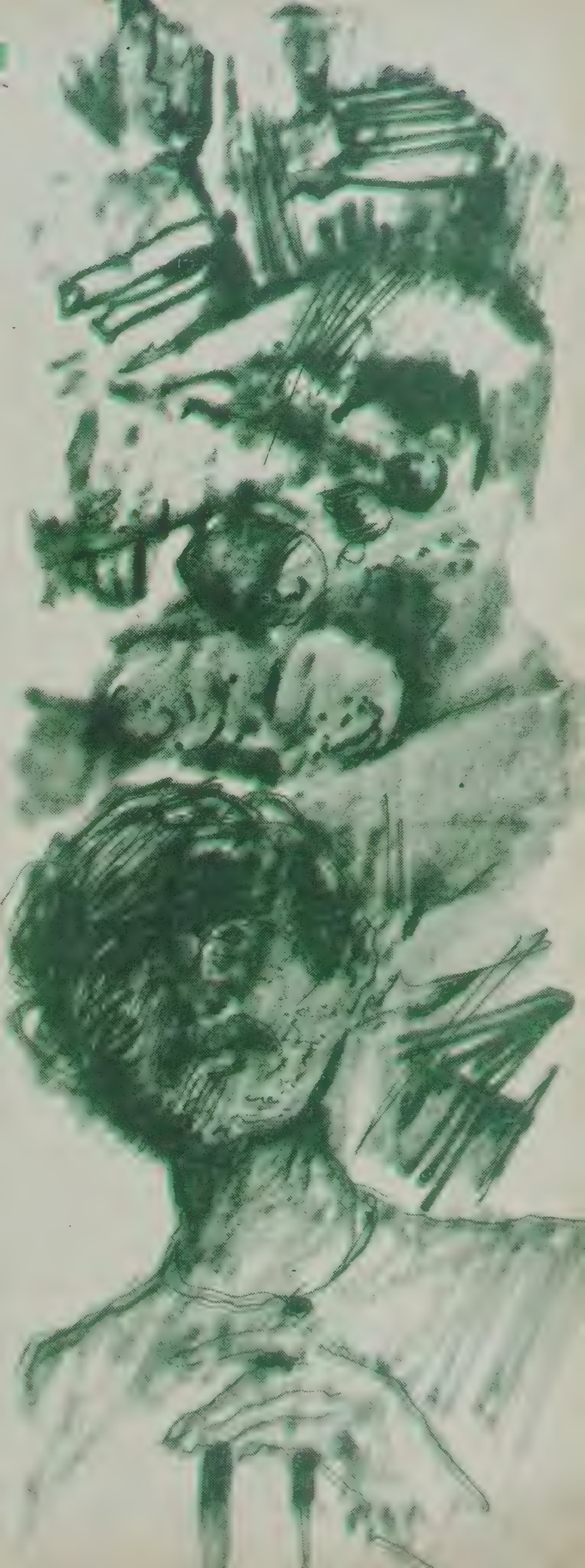
"सब्र करो" दूसरे ने— जैसे दिलासा देनी चाही, "मलवों की तादाद और ऊंचाई नहीं देखी, उन्हें साफ होने में सप्ताह ही नहीं, पूरा महीना लग जाएगा । पचीस हजार जानें गयी हैं तो बर्बादी क्या ऐसी-वैसी होगी ?"

फिर दोनों चुप हो गये थे । अपने-अपने पॉकिटों से निकालकर बीड़ी सुलगायी थी और हवा में धुंओं के छल्ले बनाते हुए वे 'सिग्नल' की ओर बेसब्री से देखने लगे थे । थोड़ी ही देर में वह हरा हो गया था । मुंबई की 'मेल' आ रही थी । यही एक गाड़ी थी जो इस स्टेशन पर भी रुकती थी । उन्होंने अपनी किस्मत को सराहा कि गाड़ी लेट थी वरना उन्हें चौबीस घंटे की प्रतीक्षा करनी पड़ती जो उनके लिए जान-लेवा से कम नहीं होती ।

वह दूसरी सुबह दादर में ही उतर गये थे । बी. टी. पर बिना टिकट, निकल भागना आसान नहीं था । उसके अलावा दादर से भी वे कालावाड़ी की गाड़ी पकड़ सकते थे । कालावाड़ी उतरकर ही वे लातूर पहुंचते ।

कालावाड़ी स्टेशन पर आदमियों की भीड़ देखकर वे आश्चर्यचकित हो गये । लगा कहीं किसी ने मधुमक्खियों का छत्ता छेद दिया हो और वे सब की सब स्टेशन पर ही धावा बोल पड़ी हों । लातूर जानेवाली छोटी लाइन के प्लेटफॉर्म की हालत तो और खस्ता थी । शरीर से शरीर छिले जा रहे थे । वे दोनों एक-दूसरे से थोड़ी दूरी बनाकर प्लेटफॉर्म के प्रायः बीच में ही खड़े थे ।

लातूर की गाड़ी शीघ्र ही लग गयी थी । पर उसमें चढ़ना उनके लिए भी कठिन हो रहा था ।



यात्रियों में अधिकांश वे थे जो अपने सगे-संबंधियों की खैरियत जानने निकले थे । यह बात ट्रेन में जल्द से जल्द सवार होने के लिए उनकी आपा-धापी से स्पष्ट थी । वे भूकंप में पिसे लोगों की तरह इस भीड़ में पिसकर भी डिब्बों में घुसने पर आमादा थे । बहुतों की आंखें भी छलछला आयी थीं । गाड़ी आने के पूर्व जो प्रायः संतुलित थे, अब पूरी तरह असंतुलित हो गये थे । अपने जीवित या मृत संबंधियों के पास जल्द से जल्द पहुंचना ही उनका एकमात्र लक्ष्य रह गया था ।

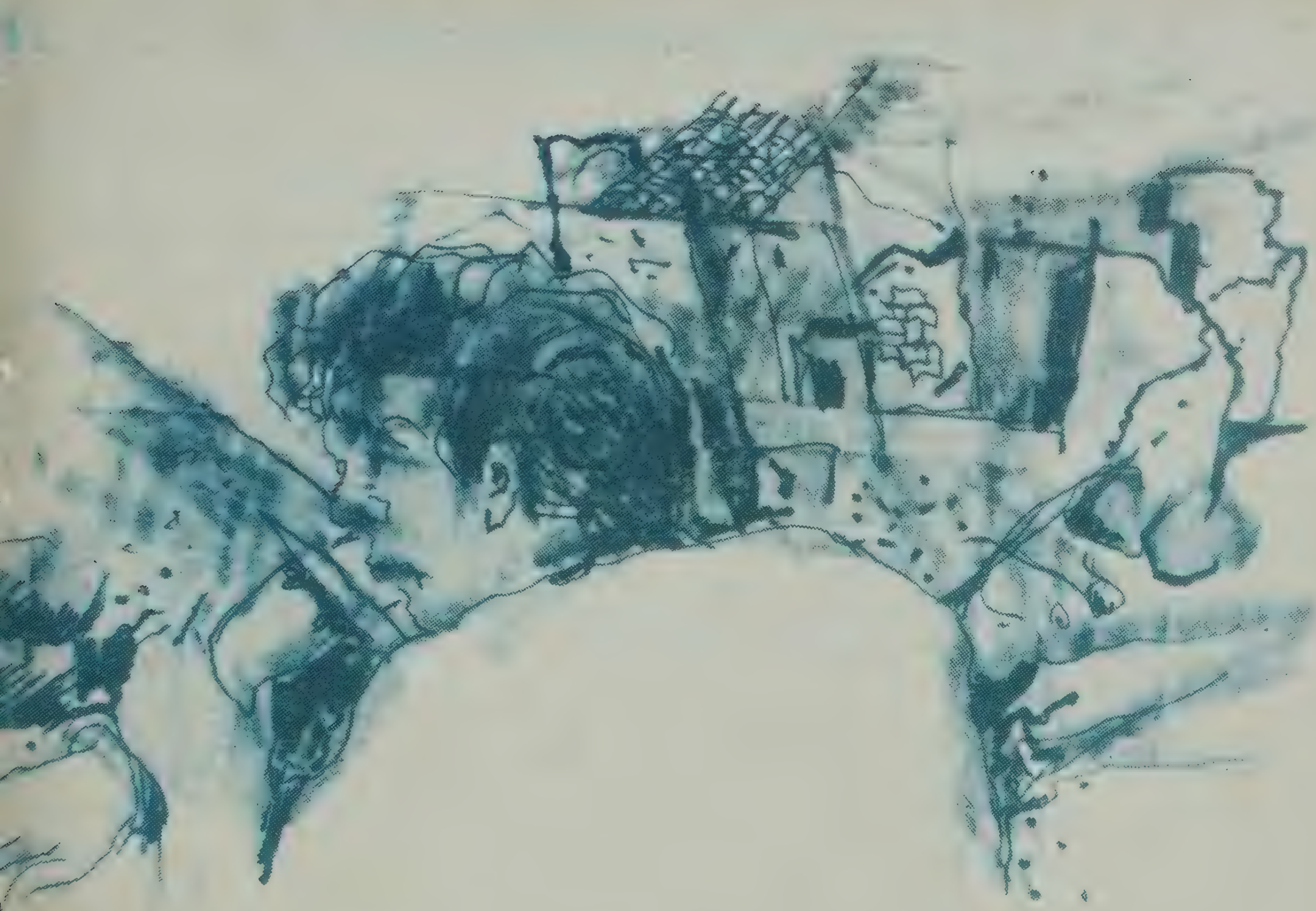
वे भीड़ के रेले के साथ लगकर किसी तरह एक डिब्बे में दाखिल हो सके । डिब्बा छोटा था और उतने सारे लोगों के लिए और छोटा पड़ गया था । शरीरों से निकलती पसीनों की दुर्गंध और हवा की कमी से प्रायः सभी की सांसें फूलने लगी थीं और उन्हें लगा वे लातूर पहुंचने के पहले ही वहीं न पहुंच जाएं जहां वहां के अधिकांश लोग पहुंच चुके हैं । थोड़ी ही देर में कुछ लोगों ने जाम हो गयी खिड़कियों और दरवाजों के शीशे तोड़ डाले, तब कहीं जाकर बाहर से साफ हवा का एक रेला आया और उनकी जान में जान आयी । फिर भी शरीरों का छिलना जारी था और गाड़ी के हर हिचकोले के साथ सभी यात्री गुत्थम-गुत्था हो जाते । इन दोनों को लग रहा था भूकंप के समय भी शायद ऐसा ही कुछ हुआ होगा, नहीं इससे भी भयानक, पर यह सब सोचने का उनके पास समय नहीं था, वे लातूर आने की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे थे ।

लातूर भी आया और वहां से प्रायः पचास किलोमीटर दूर वे उस स्थान पर भी एक बस में लद-फदकर पहुंच गये जहां का दृश्य देख उनकी सारी थकान जाती रही । दूर-दूर तक धराशायी घर, मलवों के ढेर और सड़ती लाशों की कतारें । मलवों की खुदाई जारी थी । सेना के जवान थे ये, कुछ असैनिक भी उनकी सहायता में लगे थे ।

वे अंदर ही अंदर प्रसन्न हो रहे थे । जहां तक नजरें जातीं वहां तक मलवों और लाशों के सिवा कुछ नहीं दिखायी पड़ता । राह की उनकी सारी थकान जाती रही । वे जितना सोच भी नहीं सके थे, उससे अधिक ही सामने फैला पड़ा था । अखबार कितना छापते ! उन्होंने पूछ-पाछकर पता कर लिया कि जो कुछ दिखायी पड़ता था, वह तो कुछ नहीं था । इक्कासी गांव इस भूकंप से प्रभावित हुए हैं और इनमें भी बाकी पचीस तो इस तरह ध्वस्त हुए हैं कि उनकी पहचान भी बाकी नहीं रही ।

''ह्वाट यू सी इज ओनली दी टिप ऑफ ऐन आइसवर्ग ।'' कंधे से कैमरा लटकाये किसी अखबार-नवीस से लगते व्यक्ति ने कहा पर अंगरेजी नहीं जानने के कारण वे इसका अर्थ नहीं समझ सके । उन्हें और कुछ जानने की आवश्यकता भी नहीं थी । जो कुछ वे देख रहे थे वही काफी से भी अधिक था । उनकी यात्रा सफल हो गयी थी और उन्हें लगा वे ऐसे भाग्यशाली व्यक्तियों में थे जो तांबे की खान की खोज में निकले हों और नियति ने उन्हें सोने की खान के पास खड़ा कर दिया हो ।

उन्होंने ध्यान से अपने चारों ओर देखा—अभी कुछ बिगड़ा नहीं था । मलवों की खुदाई का काम अवश्य लगा था पर वह कुछ व्यवस्थित रूप में नहीं हो पा रहा था । कुछ



स्वयंसेवी संस्थाएं अपने 'बैनरों' के साथ अवश्य आ धमकी थीं, असैनिक अधिकारी भी छुट-पुट रूप में थे । पर सब ले-देकर अभी एक घोर अव्यवस्था ही वहां फैली हुई थी । किसी भी ताल-मेल का स्पष्ट अभाव था । सब अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग बजाने में व्यस्त थे । भिन्न-भिन्न प्रकार के दर्शकों, तमाशागीरों के झुंड-के-झुंड भी चले आ रहे थे और इस मिली-जुली भीड़ में खोते जा रहे थे । उनमें से कुछ सीधे मलवों तक पहुंचते और आसपास पड़े किसी लोहे के टुकड़े, अथवा साथ ही लाये कुदालों और फावड़ों से मलवे के ढेरों पर टूट पड़ते । वे समझ गये, ये न तो इन मलवों के मालिक ही थे न उनके नीचे दबे-पिसे लोगों के दूर-दराज के रिश्तेदार ही । ये उन्हीं की तरह गिद्ध थे जो ऊंचे आसमान में उड़ते हुए भी नीचे की किसी लाश को साफ देख लेते हैं और बात की बात में अपने मजबूत डैनों पर तैरते वे उस पर छा जाते हैं और अपनी खूंख्वार-नोंकदार चोंचों से उन्हें बेदर्दी से नोंचने लगते हैं ।

समय गंवाने का नहीं था, उन्होंने सोचा, व्यवस्था कायम होने में दो-तीन दिनों का और समय लग सकता है, तब मलवे के असली मालिकों को प्रमाणपत्र भी दिया जा सकता है, टिड्डी-दल की तरह उमड़े आते तमाशागीरों पर रोक भी लगायी जा सकती है और तब जो मलवे की खुदाई में जुटेंगे वे या तो सैनिक होंगे या मलवों के मालिक ।

समय रहते ही उन्हें बहुत कुछ कर लेना था । नहीं तो यहां तक आने का कष्ट भी बेकार जाता ।

पर पहली समस्या भूख की थी । तीन दिनों से प्रायः अन्न का एक दाना भी उनके पेट में नहीं गया था ।

"भूखे भजन न हो ही गोपाला ।" अपने सूखे होंठों पर एक मुरझायी मुसकान लाते हुए उनमें से एक ने कहा ।

"तुम्हें इस शुभ अवसर पर भगवान किधर से याद आ गये ?" दूसरे ने मजाक के स्वर में कहा और थोड़ी दूर पर खड़े ट्रक की ओर इशारा किया जिसके आगे कपड़े के एक बड़े टुकड़े पर मराठी में कुछ लिखा हुआ था । उन्हें उसे पढ़ने में कुछ दिक्कत नहीं हुई । मुंबई में वे काफी रह चुके थे । यह किसी स्वयंसेवी संस्था का, खाने की सामग्रियों से भरा ट्रक था । उसके पीछे-पीछे पानी का एक टैंकर भी आ लगा ।

उनकी बांछें खिल गयीं । उन्होंने पहले अपने हुलिया को देखा । यात्रा के कारण कपड़े पूरी तरह गंदे और ट्रेन की रेल-पेल के कारण जगह-जगह से फट भी गये थे । शरीर पर जहां-तहां धूल और मैल की परत भी जम गयी थी । वे पूरी तरह भूकंप-पीड़ित लग रहे थे ।

ट्रक को देखते ही वहां न जाने किधर-किधर से नंगे-अधनंगे लोगों और अपंगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी । ये सच्चे भूकंपग्रस्त लोग थे बचे-खुचे, उन्होंने सोचा और वे एक झटके से उनमें जा मिले । कइयों को धक्का दे वे ट्रक के एकदम पास पहुंच गये और उससे उछाले जाते ब्रेडो, बिस्किट के पैकटों और फलों को दोनों हाथों से सहेजने लगे । पूरे दो दिन की खाद्य-सामग्री सहेज वे फिर अपाहिजों-अपंगों की भीड़ को धक्का देते हुए बाहर आ गये । पास के एक पेड़ के नीचे बैठकर उन्होंने उदर-पूर्ति की । पानी के टैंकर के पास अभी भीड़ पूरी तरह जम नहीं पायी थी । उन्होंने टैंकर की 'टोंटी' से मुंह लगा, जीभर पानी पिया और फिर जोर से डकार ली । वे अब तृप्त थे ।

उन्होंने गीले हाथों से अपने चेहरों को पोंछा और उसी पेड़ के पास आ गये । उन्हें आश्चर्य हुआ, इतने बड़े भूकंप के पश्चात इतने सारे पेड़ कैसे खड़े रह गये । उन्होंने नजर उठाकर देखा तो मलवों के बीच और उनसे दूर तक हरियाली का साम्राज्य ही छाया हुआ था । खेतों में फसलें हिलोरें ले रही थीं और सुबह के इस काल पूरब की ओर मुख किये खेत-खेतभर सूरजमुखी के फूल मस्ती में झूम रहे थे । लगता था हर खेत में कई-कई नन्हें सूरज उतर आये हैं । उनका मन थोड़ी देर के लिए इस प्राकृतिक सुषमा से अभिभूत हो आया और उनमें से एक बोला "ईश्वर भी कैसा निर्दय होता है ? इस सुंदर स्थान पर यह कहर नहीं वरपा करनी थी ।"

दूसरा अब अपने में लौटा । उसे अपना कर्त्तव्य याद आया और वह खेतों की ओर से नजर लौटाकर झल्ला पड़ा—"फिर तुमने इस मौके पर ईश्वर को घसीटा ? कितनी बार कहा होगा शुभ कार्यों में इस अशुभ नाम को नहीं लिया करो । चलो फूटो । अपने काम में लगें । दोनों को दो दिशाओं में जाकर अपने काम को अंजाम देना है । शाम के धुंधलके में फिर इसी पेड़ के नीचे इकट्ठे हो अपने किये का लेखा-जोखा करेंगे । शाम घिरने के बाद ही ।"

वे दोनों अपने-अपने काम में लग तो गये पर काम बहुत आसान नहीं था । मलवों के ढेर कहीं पर आठ-आठ फीट ऊंचे थे । लकड़ी-बांस और चट्टानों के—जैसे छोटे-मोटे

"सच्च बोलो । कैसा लगता है तुम्हें यह सब कर के ? मुझे तो लगता है कि हम उन गिद्धों से कुछ कम नहीं जो उधर लाशों को नोच रहे हैं । वे तो खैर मुरदों की, हमने तो जिंदों की ही... ।"

पहाड़ ही । किसी गलत ढेर पर पिल पड़े तो पूरा दिन बेकार गया । पर वे इतने अनाड़ी नहीं थे । मलवे को देखकर ही समझ लेते थे कि कौन किसी खाते-पीते घर अथवा छोटे-बड़े दुकान का है और कौन दाने-दाने के मुहताज किसी कंगाल का ।

उनके सामने एक और कठिनाई थी । उन्हें बोरे भरकर सामान तो ले नहीं जाना था—बरतन-भांडे सब कुछ । उन्हें केवल कीमती वस्तुओं पर हाथ साफ करने थे और ये कीमती सामान अकसर लोगों के शरीर पर होते—मरदों के पास कलाई-घड़ियां, अंगूठियां, सोने के चैन, पॉकिटों में पर्स और औरतों के शरीर पर आभूषण, सोने और चांदी के । कठिनाई यह थी कि कभी-कभी किसी मुरदे तक वे चट्टानों के ढेर साफ कर पहुंचते भी तो वह जिंदा निकल आता । जैसे ही वे उसकी घड़ी या अंगूठी को हाथ लगाते वह गिड़गिड़ा पड़ता—"पहले मेरी जान बचा लो फिर मैं कई घड़ियों और अंगूठियों का प्रबंध कर दूंगा । मुंबई में मेरे कई रिश्तेदारों की इनकी ही दुकान... ।"

वे मूर्ख नहीं थे । वे उसे बात पूरी नहीं करने देते और उसके कलेजे पर एक लात जमा उसकी इहलीला सदा के लिए समाप्त करते हुए बोलते—"साला जिंदा रहकर रिश्तेदारों से सोने की अंगूठियां दिलाएगा कि पुलिस में रपट लिखाएगा ।"

इन दोनों को इस तरह की कई समस्याओं से जूझना पड़ा । उनमें से एक बड़े मलवे को साफ करते-करते थक गया । निराश हो वहां से टकसने ही वाला था कि चट्टान के हटाते ही एक कलाई दिखायी पड़ी । वह निश्चित रूप से किसी महिला की थी । किसी नव-वधू की थी शायद । कलाई पर चढ़े सोने के कंगन में जगह-जगह कीमती पत्थर जड़े हुए थे । उसमें इतनी ताकत नहीं थी कि वह मलवे को और खोदे । खोदने पर कुछ और आभूषण मिल सकते थे । पर यह कंगन ही कुछ कम नहीं था । उसने उसको कलाई से बाहर करना चाहा पर चोट लगने से कलाई का आगे का भाग 'सूज' आया था । कंगन निकलने से रहा । इस खींचातानी में उसे यह भी ज्ञात हुआ कि वह औरत मरी नहीं थी । कलाई पर जोर लगाते ही हरकत होती । अब चट्टानों को हटाना भी खतरा ही मोल लेना था । उसने जेब में पड़े एक धारदार चाकू को निकाला और कलाई ही काट ली । खून का फव्वारा छूटा और मलवे के अंदर से भी एक भीषण चीत्कार बाहर आयी । कटी कलाई को वहीं फेंक, उसने कंगन को पॉकिट के हवाले किया ।

शाम घिरने पर जब दोनों उस पेड़ के नीचे जुटे तो उनके चेहरे उस अंधकार में भी चमक रहे थे । उनके हाथों में पड़े कैनवास के झोले

और उनके सभी पॉकेट पूरी तरह भरे हुए थे ।

जब एक ने कलाई काटनेवाली घटना सुनायी तो दूसरे ने— जैसे तिरस्कारभरे स्वर में कहा—"एक कलाई काटकर बड़े तीसमार खां बनते हो, मुझे तो चार-चार कलाइयां काटनी पड़ीं । कीमती घड़ियों का मामला था और सब कहने को मुरदे थे, मगर चाकू चलते ही उनकी छटपटाहट से ऊपर की चट्टानें भी हिलने लगती थीं ।"

"तब तुम्हें तो मुझसे कुछ अधिक ही मिला होगा ?" पहले ने मायूस होकर कहा ।

"यह कैसे कहूं ? तुमने तो कंगनों पर हाथ साफ किया है । खैर, मेरा भी भाग्य बुरा नहीं रहा । मैंने एक-दो मंगल-सूत्र भी बटोरे हैं । और तुम कलाई क्या काटोगे, मुझे तो एक का सिर ही काटना पड़ा, उसकी सोने की चेन निकालने के लिए । देखो यह मेरा कपड़ा, खून से लथपथ है ।"

"मेरी कमीज पर भी तो कलाई के खून के छींटे हैं ।" पहले ने कहा ।

"खतरा है । हम दोनों अपनी कमीजें निकालकर फेंक दें । तब पूरी तरह भूकंप-पीड़ित भी लगेंगे । कहीं, आगे चलकर पुलिस ने धर पकड़ की, तो कहेंगे अपने रिश्तेदारों की लाशों से सामान बटोरे ला रहे हैं ।" दूसरे ने कहा और पॉकेट के सामानों को झोले के अंदर कर अपनी कमीज उतार फेंकी ।

पहले ने भी वैसा ही किया और उसके मन में एक बात आयी और उसने उसे जीभ पर चढ़ा दिया—"सच बोलो । कैसा लगता है तुम्हें यह सब कर के ? मुझे तो लगता है कि हम उन गिद्धों से कुछ कम नहीं जो उधर लाशों को नोच रहे हैं । वे तो खैर मुरदों की, हमने तो जिंदों की ही... ।"

"तुम मूर्ख हो", दूसरा एक स्टार्ट हो रहे रिलिफ-ट्रक की ओर भागते हुए बोला और जब दोनों अंधकार का लाभ उठा उस ट्रक के पिछले भाग में चढ़कर तिरपोलीन के एक बड़े टुकड़े के नीचे छिप गये तो उसने बात धीरे-से पूरी की "हम गिद्ध ही सही, पर उनसे कुछ अधिक ही कर गुजरे हैं । अफसोस नहीं । वे तो अपने पेट भर ही मांस नोचते हैं, वह भी मुरदों से, हमने तो जिंदों को मुरदा बना जो कुछ नोचा-खसोटा है उससे हम लोगों का पूरा परिवार वर्षों मौज उड़ाएगा ।

पहले ने सुना और सोचा इसका कहना शायद ठीक ही है और अपने फूले हुए कैनवास-बैग को सिर के नीचे रख वह निश्चिंतता से पैर फैलाकर पसर गया ।

—४५/६०, ऑफीसर्स
फ्लैट, बेली रोड, पटना-१

* * *

विज्ञापन का प्रादुर्भाव संसार में तब हुआ जब लोग यह प्रतीक्षा करने लगे कि श्रीमती मलिक कब बताती हैं श्रीमती सिंह को कि वागले के अचार कितने अच्छे होते हैं ।



पत्नी : क्यों जी, मेरे ऊपर एक कहानी लिखिए न !

लेखक पति : अरे, बाप रे, मुझे भूत-प्रेतों की कहानी लिखनी नहीं आती !



संपादक : इस दुनिया में बहुत आलसी लोग हो गये हैं !

उपसंपादक : वह कैसे कह रहे हैं, सर !

संपादक : पहले पुरानी कहानी को नकल करके लिखकर भेजा करते थे, किंतु आजकल उसे फोटोस्टेट करवाकर भेज रहे हैं !









नींद में चलनेवाले लोग

• सुधीर भटनागर

बैडरूम में हलके नीले रंग का बल्ब जल रहा था । कमला और अशोक अपने बिस्तर पर बेखबर सो रहे थे । अचानक कमला की नींद खुली, कमरे में कुछ आवाज-सी सुनकर ! देखा उनके पति अशोक अगले दिन धोबी को धुलने के लिए दिये जानेवाले कपड़ों की गठरी कमर पर लटकाये हुए कहीं जाने की तैयारी में थे । रात के लगभग ढाई बज रहे थे । कमला एकटक अपने पति को देखती रही । उन्होंने बैडरूम का दरवाजा खोला और कपड़ों की भरी गठरी लटकाये हुए ही बरामदा पार करते हुए आंगन में आ गये । घर से बाहर जाने का दरवाजा खोलने की कोशिश करते हुए वे झुंझलाये-से दिख रहे थे । आखिर उन्होंने गठरी वहीं रख दी और दरवाजा खोलने की कोशिश करने लगे । दरवाजा न खुल पाने के कारण वे वापस आंगन पार कर बरामदे में होते हुए, अपने बैडरूम में आकर बिस्तर पर लेट गये । अगले २-३ क्षणों में ही कमरे में उनके खर्राटे गूंज रहे थे ।

कमला भी आकर उनके समीप लेट गयी । अगले दिन सवेरे ही घर में शोर मच गया । अशोक बाबू सबसे कहते फिर रहे थे कि अवश्य ही रात को घर में कोई चोर आया था । क्योंकि घर भर में सबसे पहले उठनेवाले अशोक बाबू ने घर के कपड़ों की गठरी घर के बाहर के दरवाजे के समीप पड़ी देखी । घर के सभी लोग जग गये थे और सोच रहे थे सच ही रात में कोई चोर घर में घुस आया था और किसी वजह से गठरी आंगन में ही छोड़कर भाग जाना पड़ा उसे । तभी अशोक बाबू की पत्नी कमला वहां आयी । सारा मामला उन्होंने देखा,



यदि कोई निद्राचारी व्यक्ति आपको नींद में चलते हुए दिखे तो उसे नींद से जगाएं नहीं । बल्कि उसे एक सम्मोहन के प्रभाव में आया हुआ व्यक्ति मानें । उसे यदि आदेश दिया जाएगा तो वह वैसा ही करने लगेगा । उसे अपने बिस्तर पर जाने को कहा जाएगा तो वह सम्मोहित-सा आपके आदेश का पालन करता हुआ अपने बिस्तर पर पहुंच जाएगा । यदि नींद में चलते हुए व्यक्ति को टोककर जगा दिया जाए तो उसे मानसिक आघात लगने की संभावना रहती है ।

सुना और मुसकराते हुए बोलीं—मेरे पति ही चोर हैं, वे रात को गठरी उठाकर ले जा रहे थे ।

"क्या ?" अशोक बाबू बुरी तरह से चौंक पड़े ।

"और क्या ? रात को दो बजे यह गठरी उठाकर कहां जा रहे थे ? दरवाजा नहीं खुला तो गठरी वहीं छोड़कर सो गये !" श्रीमती कमला हंसती हुई बोलीं ।

"क्यों मजाक कर रही हो कमला ।"

जनाब आपको नींद में चलने की आदत है इसीलिए बाहर का दरवाजा हम पक्की तरह बंद करके सोते हैं और मैंने रात को स्वयं अपनी आंखों से आपको गठरी उठाकर नींद में चलते देखा था ।"

हैरत में थे अशोक बाबू । उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि कैसे वे ऐसा कर सकते हैं । लेकिन इस समय रात में की गयी अपनी एक भी हरकत की याद उन्हें न थी ।

नींद में चलने की बीमारी या आदत अनेक लोगों को होती है । नींद में चलनेवाले लोगों के अनेक उदाहरण मिल सकते हैं । खाली इंगलैंड में ही लगभग ६ लाख ऐसे लोग मौजूद हैं जिन्हें नींद में चलने की आदत है । इन लोगों में भी बच्चों की संख्या अधिक है । बच्चों में भी लड़कों की नहीं बल्कि लड़कियों की संख्या अधिक है ।

नींद में उठकर चलने लगना या किसी काम में लग जाना बड़ा ही आश्चर्यजनक लगता है लेकिन मनोवैज्ञानिकों के अनुसार यह सब स्वप्न देखने—जैसा ही होता है ।

बड़े-बड़े काम किये नींद में

कुछ नींद में चलनेवाले लोग तो ऐसे हैं जिन्होंने नींद में ही बड़े-बड़े काम कर डाले हैं । अनेक आवश्यक पत्र लिख डाले हैं, उन्होंने । कुछ विद्वानों ने तो ऐसी खोजें कर डाली हैं जो वे जागते हुए नहीं कर पाते थे । कई कलाकारों ने ऐसी रचनाओं को जन्म दे दिया जो अमर हो गयीं । कई लोग तो नींद में चलते हुए ही घर के कामों में व्यस्त हो जाते हैं सवेरे उठने पर उन्हें यह पता ही नहीं होता कि ये काम उन्होंने ही किये हैं ।

एक समाज सेवी का फुटबाल मैच के दौरान कुछ गुंडों से सामना हो गया । उसी तनाव में डूबा वह व्यक्ति जब सो गया तो उसे स्वप्न में दीखा कि उसके हाथ में चाकू है और वह गुंडों पर वार किये जा रहा है । गुंडे उसका कुछ नहीं

बिगाड़ पा रहे हैं । जब उसकी नींद खुली तो सचमुच ही उसके हाथ में रसोई में काम आनेवाला छोटा चाकू था और उसने अपनी पत्नी को घायल कर दिया था । नींद में ही न जाने कब वह रसोई घर से चाकू उठा लाया और जो गुंडे उसे स्वप्न में दिखायी दिये थे और जिन पर वह आक्रमण कर रहा था, वह उसकी ही पत्नी थी ।

चिंता से निद्राचार

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार ऐसे 'केसों' को देखने के बाद यह प्रतीत होता है कि निद्राचारी व्यक्ति के मन में लगातार कोई न कोई समस्या चलती रहती है । उसी के परिणामस्वरूप सुप्तावस्था में उसका शरीर हरकत कर बैठता है ।

यदि उसकी समस्या को समझकर उसका निदान कर दिया जाए तो उसकी नींद में चलने की बीमारी दूर हो सकती है ।

सरदी, मौसम का प्रभाव नहीं

नींद में चलनेवाले पर सरदी, गरमी, बरसात का प्रभाव नहीं होता । वह किसी भी मौसम में किसी भी हालत में बाहर सड़क पर आ सकता है । हो सकता है वह नंगे पैर ही हो । सड़क पर कांच से या कांटों से उसके पैर लहूलुहान हो जाए तब भी उस पर असर नहीं होता । अकसर सोचा जाता है कि निद्राचारी व्यक्ति नींद में चलते हुए अपना या दूसरे का नुकसान नहीं कर सकते लेकिन उपर्लिखित सामाजिक कार्यकर्ता के अनुभव से ऐसा प्रतीत नहीं होता ।

मनोवैज्ञानिकों का भी यही मानना है कि, नींद में चलनेवाले लोग अनजाने ही अपने को या किसी अन्य को नुकसान पहुंचा सकते हैं । कोई व्यक्ति ऊपरी मंजिल से कूद सकते हैं या अन्य किसी प्रकार से स्वयं को घायल कर सकते हैं । नींद में ही चलते हुए वे बिजली के उपकरणों से करंट भी खा सकते हैं । लेकिन अनुभवों से यह भी पता चलता है कि अनेकों बार नींद में चलनेवाले व्यक्ति बड़ी ही चतुरता से बिजली की मशीनों पर काम करते देखे गये हैं ।

निद्राचार और ईर्ष्या

अकसर बच्चों में ईर्ष्यावश यह रोग पैदा होता है । यदि कोई निद्राचारी व्यक्ति आपको नींद में चलते हुए दिखे तो उसे नींद से जगाएं नहीं । बल्कि उसे एक सम्मोहन के प्रभाव में आया हुआ व्यक्ति मानें । उसे यदि आदेश दिया जाएगा तो वह वैसा ही करने लगेगा । उसे अपने बिस्तर पर जाने को कहा जाएगा तो वह सम्मोहित-सा आपके आदेश का पालन करता हुआ अपने बिस्तर पर पहुंच जाएगा । यदि नींद में चलते हुए व्यक्ति को टोककर जगा दिया जाए तो उसे मानसिक आघात लगने की संभावना रहती है । नींद में चलते हुए ही यदि किसी व्यक्ति को चोट लग जाती है तो उसे पीड़ा महसूस ही नहीं होती और वह आगे ही आगे बढ़ता जाता है ।

—पो. बॉ. २८१०
३०/८, राजेन्द्र नगर
नयी दिल्ली-११००६०

जिन्होंने जीवन में कभी सफलता नहीं पायी है, उनके लिए सफलता का मूल्यांकन मधुरतम होता है ।

— इमली डिकंस



कीचड़

सड़क के किनारे बैठा वह अपनी छोटी-सी बांस की टोकरी में लाल, पीली, हरी और न जाने कितनी रंग-बिरंगी बांसुरियां बेच रहा था । पास बैठा भोला शिशु अपने बापू से तरह-तरह के प्रश्न करता है । बापू बांसुरी ही क्यों बेचते हो, महंगे-महंगे कपड़े बेचो, मैं पहनकर अपने दोस्तों को दिखाऊंगा, बड़ा आदमी हो जाऊंगा । बांसुरी बजाता हूं तो गांव का कन्हैया-सा लगता हूं जो कि दूसरों के घरों से मक्खन और दही चुराकर खाता था । बापू, मैं अमीर होना चाहता हूं । तभी एक गाड़ी बहुत तेजी से पास पड़े कीचड़ से गुजर गयी । बच्चे का मुंह, फटे कपड़े, टोकरी और बांसुरियां सभी कीचड़ में सन गयीं । वह रोने लगा । बापू उसका मुंह साफ करने लगा । सामने खड़ा एक भिखारी बच्चे की बातें सुन रहा था । पास आकर अपने मैले गमछे से उसका मुंह पोंछकर बोला ऐसा अमीर मत बनना जो कृष्ण की बांसुरी पर भी कीचड़ उछाल दे ।



अजन्मा

वह इस कलियुग में पैदा नहीं हो सकी, उसकी मां की कोख को वैज्ञानिकों के आविष्कार ने स्क्रीन पर उतार लिया और उसकी होनेवाली मां ने उसे जीवन में आनेवाले समस्त बंधनों से मुक्त करा दिया । वह एक और कन्या का बोझ नहीं उठा सकती थी । वह अजन्मी भी क्या अभिमन्यु की तरह वह भी चक्रव्यूह से निकलना नहीं सीख पायी ? उसका श्वांस लेता नन्हे कोपल-सा मुलायम तन उस समय हजारों हाथ लिये मां के शरीर से बाहर आकर उसका गला दबा देना चाहता था । मां की ममतामयी छवि कहां खो गयी है ? मां के ममत्व की उसकी खोज असमय समाप्त हो गयी ।

—अर्चना शर्मा

कानून

सौतेली मां : अधिकार और भरण पोषण

● गीता गुप्ता

देश-विदेश के सभी हिस्सों के सभी वर्गों में वृद्धावस्था की दहलीज तक पहुंचने का क्रम हमेशा से रहा है और अनवरत चलता ही रहेगा । अकसर वृद्धों को अपनी ही निर्मित की गयी घर परिवार की चाहरदीवारी में गैरों की तरह असहनीय पीड़ाभरी जिंदगी जीने के लिए मजबूरी में अपनों से ही समझौता करना पड़ता है ।

जब मां सौतेली होती है तो उसके गुजारे (भरण-पोषण) की समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है तब यह प्रश्न उठता है कि क्या सौतेला पुत्र अपनी सौतेली मां को मासिक धनराशि गुजारे भत्ते के रूप में देने को बाध्य है और उसके अपनी सौतेली मां के संबंध में क्या कर्त्तव्य हैं ?

इस गुत्थी को हिंदू दत्तक एवं भरण-पोषण अधिनियम १९५६ के अंतर्गत सुलझाया गया है । यह अधिनियम भारतीय संसद द्वारा पास किया गया है, जिस पर २१ दिसम्बर १९५६ को राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त हुई । इस अधिनियम का विस्तार जम्मू और कश्मीर राज्य को छोड़कर संपूर्ण भारत पर समान रूप से है । जो कोई व्यक्ति धर्म से बौद्ध, जैन या सिख है और हिंदू धर्म के रूपों या विकासों में से किसी के नाते धर्म से हिंदू है हिंदू माना जाएगा और उस पर यह अधिनियम लागू होगा ।

हिंदू दत्तक एवं भरण-पोषण अधिनियम १९५६ में धारा १८-२८ तक में भरण-पोषण से संबंधित मामलों पर विचार किया गया है ।

यद्यपि वर्तमान विधि हिंदू दत्तक एवं भरण-पोषण अधिनियम १९५६ में माता-पिता की परिभाषा नहीं दी गयी है लेकिन फिर भी धारा २० की व्याख्या में निःसंतान सौतेली मां को इस परिभाषा के अंतर्गत सम्मिलित किया गया है । १९५६ के इस कानून के पास होने के पहले हिंदू विधि के अंतर्गत एक हिंदू व्यक्ति पर किसी तरह का व्यक्तिगत दायित्व अपनी सौतेली मां के भरण-पोषण का नहीं था । भरण-पोषण का हक संयुक्त परिवार के सिद्धांत से उत्पन्न होता है । लेकिन इस अधिनियम के पास हो जाने के बाद वर्तमान विधि में धारा २० में आवश्यक और महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया गया ।

उक्त अधिनियम की धारा २० के अंतर्गत

जब मां सौतेली होती है तो उसके गुजारे (भरण-पोषण) की समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है तब यह प्रश्न उठता है कि क्या सौतेला पुत्र अपनी सौतेली मां को मासिक धनराशि गुजारे भत्ते के रूप में देने को बाध्य है और उसके अपनी सौतेली मां के संबंध में क्या कर्त्तव्य हैं ?

एक हिंदू अपने जीवन-काल में अपने वृद्ध और दुर्बल माता-पिता के भरण-पोषण के लिए बाध्य है । इस धारा के स्पष्टीकरण के द्वारा यह स्पष्ट कर दिया गया है कि निःसंतान माता भी भरण-पोषण की अधिकारिणी है । वृद्ध और दुर्बल माता-पिता को अपने पुत्र से भरण-पोषण प्राप्त करने का अधिकार उसी समय तक है जब तक कि वे स्वयं अपना भरण-पोषण कर पाने में असमर्थ हैं या उनके पास खुद की संपत्ति नहीं है ।

माता-पिता का अपने पुत्र से भरण-पोषण प्राप्त करने का अधिकार उस समय समाप्त हो जाता है जहां उनके पास अपनी गुजर-बसर करने के लिए उनके पास पर्याप्त संपत्ति होती है ।

भरण-पोषण का दायित्व

कलकत्ता हाईकोर्ट ने १९८७ में पन्ना लाल हाजरा बनाम फूलमणी हाजरा (ए. आई. आर. ३६८) में निर्णीत किया कि सौतेला पुत्र अपनी सौतेली मां के भरण-पोषण के लिए उत्तरदायी है क्योंकि वह (मां) उसके पिता की विधवा होने के आधार पर आश्रित (डिपेंडैंटस) की सूची में आती है । सौतेले पुत्र का सौतेली मां के भरण-पोषण का दायित्व व्यक्तिगत नहीं है वरन् संपत्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त करने से संबंधित है । यानी यदि पुत्र ने अपने पिता से



कुछ संपत्ति उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त की है तो वह अपनी सौतेली मां को उस सीमा तक भरण-पोषण देने का उत्तरदायी होगा। लेकिन यह अधिकार भी तभी प्राप्त होगा जबकि उसने (विधवा ने) मृतक (पति) की संपत्ति में कोई उत्तराधिकार प्राप्त नहीं किया है।

पुत्रों का दायित्व

पूर्व विधि में केवल पुत्र को ही अपने दुर्बल और वृद्ध माता-पिता के भरण-पोषण की जिम्मेदारी सौंपी गयी थी। लेकिन अब वर्तमान हिंदू विधि के अंतर्गत पुत्री एवं पुत्र दोनों अपने वृद्ध माता-पिता के भरण-पोषण के लिए बाध्य हैं क्योंकि अब पुत्री को भी उत्तराधिकार का अधिकार दिया गया है। पूर्व हिंदू विधि में पुत्री के प्रति माता-पिता के भरण-पोषण की जिम्मेदारी नहीं थी। माता-पिता में निःसंतान सौतेली मां को भी सम्मिलित किया गया है।

इस अधिनियम की धारा २२ की उपधारा (१) (२) के आधार पर किसी हिंदू मृतक का उत्तराधिकारी जिसने मृतक की संपत्ति में उत्तराधिकार प्राप्त किया है, वह व्यक्ति मरनेवाले के आश्रितों को पोषित करने को बाध्य है। लेकिन इस आधार पर मृतक के आश्रितों को तभी पोषित किया जा सकता है जब उसके उत्तराधिकारियों ने उसकी संपत्ति प्राप्त की हो। पोषण का कर्त्तव्य अब किसी हिंदू की व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं रह गयी है।

संपत्ति और दत्तकपुत्र

आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट ने १९७० में पोकरुरावेग बनाम पीकर चिन्नाह के फैसले में कहा कि एक सौतेले पुत्र का विधिक दायित्व अपनी सौतेली मां को भरण-पोषण देने का तब तक नहीं है जब तक कि उसके पिता का हक संयुक्त परिवार की संपत्ति में उस सौतेले पुत्र के नाम नहीं आ जाता है अथवा उसने (पुत्र ने) ले नहीं लिया है। लेकिन गोद लिए पुत्र (एडोप्टिड सन) या वैध पुत्र का कर्त्तव्य अपनी मां को भरण-पोषण देने के संबंध में उन दोनों के आपस के संबंधों से उत्पन्न होता है चाहे वह (दत्तक पुत्र या वैध पुत्र) संयुक्त परिवार की संपत्ति में उत्तराधिकार प्राप्त करे या न करे।

जो कोई व्यक्ति मृतक की संपत्ति में उत्तराधिकार प्राप्त करेंगे और जिस हिस्से (अंश या भाग) में प्राप्त करेंगे उसी अनुपात (हिस्से) के अनुसार उसको (आश्रित को) पोषण का खर्च भी देना पड़ेगा धारा २ (३)।

पूर्व विधि के आधार पर जिन-जिन आश्रितों को मृतक व्यक्ति पोषण देने के लिए बाध्य था, उसकी (मृतक की) संपत्ति उत्तराधिकार में प्राप्त करनेवाले व्यक्ति उस संपत्ति से पोषण करने के लिए बाध्य थे वहां इस संबंध में नैतिक दायित्व विधिक दायित्व बन गया था।

अधिकार और धर्म परिवर्तन

इसी अधिनियम की धारा २४ के अंतर्गत स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि एक हिंदू व्यक्ति भरण-पोषण का दावा कर सकता है।

यदि कोई व्यक्ति जो हिंदू नहीं रह गया है और उसने हिंदू धर्म का परित्याग कर अन्य धर्म स्वीकार कर लिया हो तब वह भरण-पोषण प्राप्त करने के लिए कोर्ट केस नहीं कर सकता है। अर्थात उसका यह अधिकार धर्म परिवर्तन के साथ ही समाप्त हो जाता है।

—५४४ पापरा पीर जनरल गंज
मथुरा (उ. प्र.) २८१००१

पं. नाथूराम 'शंकर' शर्मा

न्याय के भिखारी ठौर ठौर भटकत हैं !

● सुरेन्द्र मोहन मिश्र

अलीगढ़ जनपद के उन्नीसवीं सदी ने हिंदी संसार को अनेक स्वनामधन्य लेखक प्रदान किये। गद्य के इन लेखकों ने हिंदी साहित्य के रिक्त भंडारों को अपनी मौलिक रचनाओं से पूरित किया। यह भी एक आश्चर्य है कि जिस नगर का नाम आज अलीगढ़ कहा जाता है उसका नाम कोल था। अलीगढ़ तो उस किले का नाम रहा है जो यहां से दो मील पूर्व की ओर स्थित है। सन १५२४ में दिल्ली के लोदी बादशाहों ने इस किले का निर्माण कराया। सन १७१७ में साबित खां ने पुनर्निर्माण कराके इस किले का नाम साबित गढ़ रखा। चालीस वर्ष तक साबित गढ़ कहाया जाकर, यह किला जब जाटों के अधिकार में आया तब इसका नाम रामगढ़ रखा गया। सन १७८५ में जब मरहटों का अधिकार यहां हुआ तब इसका नाम अलीगढ़ हो चुका था, इस किले पर सन १८५७ में विद्रोहियों का अधिकार रहा। अंगरेज सेनाओं ने पुनः इस किले पर अपना कब्जा कर लिया और कोल शहर का नाम अलीगढ़ रखा। तब से यह शहर अलीगढ़ कहलाता है। अलीगढ़ आज भी कागजों में कोल तहसील ही लिखी जाती है।

इसी अलीगढ़ जनपद में एक कस्बा हरदुआ गंज है जहां हमारे इस लेख के नायक पं. नाथूराम 'शंकर' शर्मा ने पं. रूपराम के गृह में सन १८५९ में जन्म लिया। माता की मृत्यु हो जाने के कारण इनकी दादी ने इनका पालन-पोषण किया।

असाधारण प्रतिभा

जन्म जात काव्य प्रतिभा के धनी शंकरजी ने केवल दो वर्ष में ही मिडिल की परीक्षा पास कर ली। कविता लेखन आरंभ हो ही चुका था। कोर्स में पढ़ाया जानेवाला भूगोल इन्होंने संपूर्ण पद्य में रचकर कंठस्थ कर रखा था। इन्हीं दिनों शंकरजी ने उर्दू और फारसी भी सीखनी आरंभ कर दी, और थोड़े ही दिनों में इन दोनों भाषाओं में भी काव्य रचने लगे। इसी छोटी आयु में शंकरजी ने दो स्वांग भी रचे थे। 'बहारे चमन' और 'हरिश्चंद्र' नाम के इनके दोनों स्वांग खेले गये और उस समय अत्यत लोकप्रिय हुए। तालिब नगर के नवाब लुत्फ अली खां ने एक बार इनके स्वांग पर प्रसन्न होकर इक्यावन रुपये

शंकर जी के काल में समस्यापूर्तियों का विशेष चलन था । वे अपने समय के सर्वश्रेष्ठ समस्यापूर्तिकार थे ।

और रेशमी दुपट्टे से इनका सम्मान किया । आज उनके ये दोनों स्वांग उपलब्ध नहीं होते ।

लोकप्रिय अप्रकाशित स्वांग

शंकरजी के एक मित्र के पुत्र श्री राम स्वरूप शास्त्री काव्य तीर्थ ने शंकरजी के निधनोपरांत उनके कुछ संस्मरण मासिक माधुरी में छपवाये थे । शास्त्रीजी ने शंकरजी के सांगों की चर्चा करते हुए लिखा था—

''उस समय के प्रेक्षक कहते हैं कि सारी जनता मंत्रमुग्ध, एकटक उस अभिनय को देख रही थी और जिस समय रोहिताश्व की मृत्यु के उपरांत श्मशान में शैव्या और हरिश्चंद्र की बातचीत हुई उस समय तो सारी जनता फूट-फूटकर रोने लगी । कहते हैं जिले में इतने अच्छे सांग का अभिनय आज तक नहीं हुआ यह सांग साहित्य की दृष्टि से भी उच्चकोटि का है । मैंने स्वयं इसके कितने ही स्थल पढ़े हैं । मैं और माननीय भाई हरिशंकरजी शर्मा आर्यमित्र संपादक ने जब इसके छपवाने का विचार किया तो श्री शंकरजी ने कहा कि यह हमारे बाल्यकाल की रचना है, हम इसे इस रूप में छपने देना नहीं चाहते इसका संशोधन कर दें तब छपवा लेना । दुःख है कि जिस समय उसका संशोधन प्रारंभ हुआ उसके थोड़े ही दिनों बाद कवि के ज्येष्ठ पुत्र श्रीयुत पं. उमाशंकरजी का स्वर्गवास हो गया । श्री पं. उमाशंकरजी ही बड़ी तत्परता से इसका संशोधन करा रहे थे । उनकी मृत्यु के बाद उसके संशोधन का नंबर फिर नहीं आया । शोक है, साहित्य की यह अपूर्व वस्तु छपने से रह गयी ।''

श्रृंगार के अनूठे छंद

बीस वर्ष की आयु में रचे गये शंकरजी के छंद अधिकांश श्रृंगारपरक थे पर कवि की प्रखर और अनूठी प्रतिभा का परिचय उनसे प्राप्त होता है । पावस और होली के दो छंद जो शंकरजी ने सन १८७९ में रचे थे, कवि की प्रतिभा का अच्छा परिचय देते हैं—

साजि के श्रृंगार, शंकरारि बस नारि, कर
आरती को थार ले तयार भई जान को ।
देखि अंधियारी, बरसत बहुवारी, नारी
पकड़े किवारी ठाड़ी सोचत बिथान को ।
मावस की रात कारी, पावस की घात भारी
ना बस की बात हारी कैसे मिलूं कान्ह को ।
बोली बदरान सों बुझे न बीजुरी की आग
बीजुरी न मारे बजमारे बदरान को ।

* * *

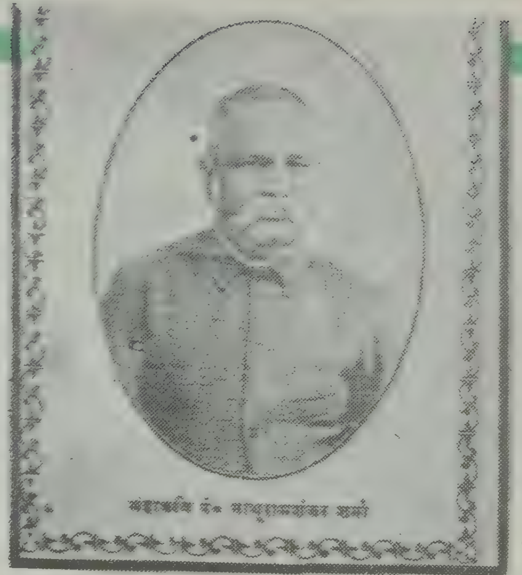
लाई वृषभानु की दुलारी उत ग्वालिन को
'शंकर' खिलाड़ी इस नंद की दुलारी है ।
रंगन सो गोरिन के गाल गुलेनार भये,
श्याम हरियालो भयो कौन कहै कारो है ।
लाल ने अबीर औ गुलाल लै रंगीली रंगी
राधिका की चादर पै चौगुनौ बगारो है ।
मीड़कर मंगल सुमंगल मिलाय मानो
चांदनी पै चंद चूर चूर कर डारौ है ।

शंकरजी के दोषमुक्त छंद

मात्र बीस वर्ष की वय में ऐसे श्रेष्ठ छंद लिखने की क्षमता शंकरजी—जैसा प्रतिभाशाली कवि ही कर सकता था । शंकरजी

में छंद रचने की क्षमता अभूतपूर्व थी । उनके समकालीन कवियों में ऐसे क्षमतावान कवि एक-दो ही रहे होंगे । हरिऔधजी का नाम यहां बड़े आदर से लिया जा सकता है । दिल्ली के प्रसिद्ध नाटककार श्री नारायण प्रसाद बेताब ने काव्य शास्त्र पर भी दो मौलिक ग्रंथों की रचना की । हिंदी कविता के तुकांतों पर एक कोष 'प्रासपुंज' नाम से बनाया । यह हिंदी का प्रथम तुकांत कोष था । इसमें छह हजार तुकों का संग्रह किया गया था । दूसरा ग्रंथ 'पद्य परीक्षा' था जिसमें हरिऔध, रामचरित उपाध्याय, श्रीधर पाठक, मैथलीशरण गुप्त, शंकर, महावीरप्रसाद द्विवेदी, मिश्र बंधु, ला. भगवानदीन दीन, त्रिशूल और पं. रूप नारायण पांडेय के छंद दोषों को लेकर आलोचना का एक नया मार्ग प्रशस्त किया था । यह ग्रंथ कविताकामिनी कांत महाकवि नाथूराम शंकर शर्मा को समर्पित किया गया था । समर्पण में कहा गया था—"पद्य परीक्षा में कड़वी सच्चाई है, उस कड़वाहट को शंकर के सिवा और कोई नहीं पचा सकता ।" बेताबजी ने इस ग्रंथ में हिंदी कविता के बड़े-बड़े महारथियों को धराशायी कर दिया । केवल शंकरजी की कविता ही उस समय दोषमुक्त समझी गयी । ला. भगवान दीन 'दीन' तो बेताबजी पर इतने नाराज हुए कि एक लेख इस पद्य परीक्षा ग्रंथ के विरोध में छपवाया जिसके उत्तर में 'दीनजी की दीनता' शीर्षक से एक लेख बेताबजी ने भी छपवाया ।

इक्कीस वर्ष की आयु में शंकरजी को नहर विभाग में नक्शा नवीस की नौकरी मिल गयी, इस नौकरी के संबंध में कानपुर का प्रवास शंकरजी को लाभकारी रहा । यहां उनकी भेंट



पं. प्रताप नारायण मिश्र से हुई ।

शंकरजी नहर विभाग में सब-ओवरसियर हो गये थे तभी अपने एक अधिकारी से स्वाभिमान टकरा जाने के कारण नौकरी से त्यागपत्र दे दिया । हरदुआ गंज आकर शंकरजी ने आयुर्वेद चिकित्सा आरंभ कर दी और आजीविका के लिए अंत तक इसी पवित्र कार्य में लगे रहे । निर्धनों को मुफ्त दवा बांटकर शंकरजी ने पर्याप्त यश कमाया । चिकित्सा कार्य से जो भी समय बचता उसे काव्य रचना में लगाया जाता था ।

सर्वश्रेष्ठ समस्यापूर्तिकार

शंकरजी के काल में समस्या पूर्तियों का ही विशेष चलन था । उन दिनों समस्यापूर्ति पर कई काव्य पत्रिकाएं निकलती थीं । शंकरजी अपने समय के सर्वश्रेष्ठ समस्यापूर्तिकार कवि थे । इनकी कविताएं सरस्वती में तो सम्मानपूर्वक छपती ही थीं 'रसिक मित्र', 'कवि व चित्रकार' और 'काव्य सुधाकर' में भी इन्हें नियमित छापा जाता था ।

इसी काल में सीतापुर जनपद के बिसवां कस्बे में "बिसवां कवि मैडल की स्थापना हुई । यह संस्था समस्याएं दिया करती थी । इस समय

सीतापुर जनपद कविता का एक बड़ा केन्द्र हो गया था। इसी जनपद का गंधोली कस्बा भी द्विजराज, द्विजगंवां, हर्ष, पुरंदर और सुकवि बृजराज—जैसे श्रेष्ठ कवियों की निवास स्थली था। माधुरी के संपादक पं. कृष्ण बिहारी मिश्र भी गंधोली का ही गौरव थे। बिसवां में भी इस समय पं. देवीदत्त त्रिपाठी 'दत्त', सुकवि विशाल, पं. भगवान दीन 'दीन', पं. मोहन लाल दीक्षित 'मोहन' और राधे नारायण वाजपेयी 'प्रजावैद्य' अच्छे कवि थे।

इसी बिसवां के कवि मंडल ने शंकरजी को 'कविराज' और 'भारत प्रज्ञेन्द्र' की उपाधियां दी थीं। शारदा पीठ के शंकराचार्यजी ने शंकरजी को 'कवि शिरोमणि' की उपाधि से विभूषित किया था। ज्वालापुर महाविद्यालय ने उनको 'कविता कामिनी-कांत' की उपाधि देकर अपने को धन्य किया।

इनकी कविताओं का एक संग्रह 'अनुराग रत्न' आगरा के आर्य भास्कर प्रेस ने छापा था। यह संग्रह विद्वानों के द्वारा अत्यंत प्रशंसित हुआ। शंकरजी पर आर्य समाज का बहुत प्रभाव था। उनकी आरंभिक रचनाओं पर राधा कृष्ण का श्रृंगार छाया हुआ था। ऐसी सारी कविताएं शंकरजी ने अपनी वृद्धावस्था में नष्ट कर दीं। श्री राम स्वरूप शास्त्री ने इन रचनाओं के संबंध में लिखा था—

उन्माद रोग से त्रस्त

''श्रृंगार रस विषयक जितनी भी कविता थी उसे वृद्धावस्था में श्री शंकरजी ने अपने ही हाथ से फूंक डाला। मैं उस समय छोटी श्रेणी का विद्यार्थी था, कविता का मर्म समझ नहीं सकता था। समझने योग्य होता तो उसमें से अधिकांश को अवश्य कंठस्थ कर लेता।'' बात यह हुई, एक बार श्री शंकरजी को उन्माद रोग हो गया था। उस अवस्था में बड़े यत्न से उनकी सेवा शुश्रूषा की गयी। अच्छे-अच्छे वैद्यों से उनकी चिकित्सा करायी गयी, तब कहीं जाकर उनका रोग गया। उस उन्माद की अवस्था में ही उन्होंने एक दिन श्रृंगाररस विषयक कविता की सारी कॉपियों को घर से बाहर ले जाकर एक खंहडर में यह कहकर फूंक दिया कि ''इस वृद्धावस्था में यह कविताएं लजानेवाली हैं।''

शंकरजी अपना सर्वश्रेष्ठ काव्य तो अपने हाथों ही नष्ट कर गये। आर्य समाज में आने से पूर्व शंकरजी की कविताएं रस से सराबोर होती थीं। उस रस में शुष्कता लाने का श्रेय आर्य समाज को दिया जा सकता है। श्रृंगार रस की एक समस्या पूर्ति का उदाहरण देखें—

उठी उमंग अंग में, रंगी अनंग रंग में
सनेह की तरंग में तरी निमग्न है गयी।
बिसार कामकाज को लुकाया लोकलाज को
सखीन के समाज को चुकाय द्वार पै गयी।
रह्यो न धीर बाल को लगाय लूराग जाल को
फंसाय नंदलाल को हंसाय संग लै गयी।
थकी सुधा निचोरि कै बहेरि भू मरोरि कै
चटाक चित्त चोरि कै, कपाट पट्ट दै गयी।

आर्यसमाज का प्रभाव

शंकरजी के मन में ज्यों ज्यों आर्य समाज समाता गया त्यों त्यों इस कविता कामिनी कांत की कोमलता कठोरता में परिवर्तित होती गयी, छंद के तो यह आचार्य थे ही। इन्होंने आर्य समाज में आने के बाद एक पुस्तक 'गर्भ रंडा रहस्य' लिखी। पुस्तक का नाम ही विषय की कठोरता को प्रकट कर रहा है। 'अनुराग रत्न' ने शंकरजी को काव्य क्षेत्र में प्रतिष्ठा दी पर इस

दूसरी पुस्तक की भरपूर निंदा की गयी, प्रयाग के मासिक 'चांद' ने नवम्बर १९२५ में इस पुस्तक की कटु आलोचना करते हुए लिखा था—

"इसमें शंकरजी ने विधवाओं के दुराचार की गाथा लिपिबद्ध की है और ऐसा करके उन्होंने विधवा विवाह के पक्ष में समर्थन किया हैं। उद्देश्य स्तुत्य है परंतु हमारी दृष्टि में जिस उच्छृंल भाव से शंकरजी ने अपने विषय को प्रतिपादित किया है वह अच्छा नहीं है पुस्तक का नाम भी वीभत्स है और उसकी कविता भी कहीं-कहीं पर अश्लीलता की सीमा में जा पहुंची है। सारी कविता 'सनातन धर्म' के देवी-देवताओं को गाली देने ही में समाप्त हो गयी है। कदाचित शंकरजी ने अपने मन में यह उद्भ्रांत कल्पना कर रखी है कि सनातन धर्म को और उसके अनुयायियों को अश्लील गाली देने से 'विधवा विवाह' का पक्ष समर्थन हो जाएगा।"

शंकरजी की कविता में उद्दंडता की मात्रा अत्यधिक हो गयी थीं और वह खलने लगी थी। शंकरजी, गांधीजी के परम भक्त थे। उनके कई छंदों में गांधीजी की प्रशंसा की गयी है—

नौकरों का शाही सभ्यता का गला काटती है
गांधी के संगाती अंखियों में खटकत हैं।
भारत को लूट कूटनीति की उजाड़ रही
न्याय के भिखारी ठौर ठौर भटकत हैं।
जेलों में स्वदेश भक्त हिंसाहीन सज्जनों को
पेट पाल पातकी पिशाच पटकत हैं।
कौन पै पुकारें अब 'शंकर' बचा ले हमें.
गोरे और गौरों के गुलाम अटकत हैं।

एक बार गांधीजी ने अपने भाषण में स्वामी दयानंद को अन्य धर्मों के प्रति असहिष्णु कह दिया था, इस पर शंकरजी ने कुपित होकर कई छंद आक्रोश भरे लिखे थे। इसी एक शब्द के पीछे कुछ आर्य समाजी भी गांधीजी से नाराज हो गये थे और आर्य समाज में दो दल भी इसी कारण से बनें। गांधीजी का साथ देनेवाला दल 'महात्मा दल' कहलाने लगा था।

शंकरजी एक बार आर्य समाज के प्रसिद्ध कवि कर्ण से नाराज हो गये। संभवतः यह झगड़ा 'चमर पुरा की चैनिया चमारी' कविता के दो छंदों को लेकर था।

२१ अगस्त १९३२ को महाकवि शंकर ने प्रातः चार बजे अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। छंदों का यह महारथी अपने बाद दो पुत्र और छह पौत्र-पौत्रियां छोड़ गया था। इनके पुत्र पं. हरिशंकर शर्मा की पत्रकारिता के क्षेत्र में भी विशेष सेवाएं रही हैं। इन्होंने 'आर्य मित्र' का तो आजीवन संपादन किया हीं, साथ ही 'प्रभाकर', 'आर्य संदेश', 'साधना', 'कर्मयोग', 'निराला', 'ज्ञान गंगा' और 'दैनिक दिग्विजय' पत्रों के संपादन भी किये। मुरादाबाद से छपने वाले 'भारतोदय' पत्र में पं. पद्मसिंह शर्मा के साथ कार्य किया और कलकत्ते के 'विशाल भारत' में भी सहायक संपादक रहे। इनकी एक दर्जन से अधिक हास्य-व्यंग्य की पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें 'मन की मौज', 'चिड़ियाघर', 'गड़बड़ गोष्ठी' और 'पिंजरा पोल' विद्वानों द्वारा प्रशंसित हुईं, शंकरजी की एक प्रपौत्री इन्द्रि 'इंदु' कवि-सम्मेलनों में बुलायी जाती हैं। हिंदी मंचों पर उनका कविता पाठ जनता द्वारा सराहा भी जाता है।

—ए ४/एफ-४ नवभारत अपार्टमैंट्स
पश्चिम विहार
नयी दिल्ली-११००६३



नेपाली संस्कृति के एक आराध्य देव : नाट्येश्वर

• रामशरण दर्नाल

नेपाल की सांस्कृतिक परंपरा में कोई भी नाच-गाना, वादन, नाटक या सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन से पूर्व सबसे पहले नाट्येश्वर की पूजा-आराधना की जाती हैं। किसी भी सांस्कृतिक कार्यक्रम की सफलता के लिए उनको मनाया जाता है। नाट्येश्वर को काठमांडू उपत्यका में नासःद्यो, नृत्येश्वर, नृत्यनाथ आदि नाम से भी पुकारा जाता है।

नाट्यशास्त्र के प्रणेता महर्षि भरत ने अपने नाट्यशास्त्र के मंगलाचरण में इनकी स्तुति इस प्रकार की है—

प्रणम्य शिरसा देवौ पितामह महेश्वरौ
नाट्यशास्त्रं प्रवक्ष्यामि ब्रम्हणा यदुदाहृतम्

—नाट्यशास्त्र, प्रथम अध्याय

सांगीतिक और सांस्कृतिक मूल स्रोत के देवता के रूप में नेपाली संगीतकला, नृत्यकला, नाट्यकला, चित्रकला और मूर्तिकलाओं में नाट्येश्वर व्यापक रूप में नेपाली जन-मानस पर छाये हुए हैं । उनके बिना किसी भी कला साधक को सफलता नहीं । हमारी धार्मिक भावना में 'सत्यम् शिवं, सुंदरम्' का महामंत्र अटल है । हमने मनसा, वाचा, कर्मणा से इसको अंगीकार किया है । जैसे देवाधिदेव महादेव सर्वत्र पूजित हैं वैसे ही नाट्येश्वर नेपाली संस्कृति के आराध्य देव हैं ।

शिव प्रदोष स्तोत्र में स्तोत्रकार ने कैलाशपति भगवान शंकर की इस प्रकार स्तुति की है—

कैलाश शैल भुवने त्रिजगज्जनित्री
गौरी निवेश्य कनका चित्तरत्न पीठे ।
नृत्यं विधातुममि वाञ्छति शूल पाणौं
देवाः प्रदोषसमयेः नुभजंति सर्वे ।

वाग्देवीधृत वल्लकी शतमुखो वेणुं दधत्पद्मज्-
स्तालोत्रिद्रकरो रमा भगवती ज्ञेय प्रयोगान्विता ।
विष्णुः सांद्रमृदङ्ग वादनपटुर्देवा : समंतातस्थिताः
सेवंते तमनु प्रदोष समये देवं मृडानी पतिम् ।

—शिव प्रदोष

इसी प्रकार शास्त्रकारों ने भी नाट्य सम्राट् शिव के विराटस्वरूप की वंदना की है —

आङ्गिकं भुवनं यस्य वाचिकं सर्व वाङ्मयः
आहार्य चंद्र तारादि ते नमः स्वातिकं शिवम्

नेपाल में प्राचीनकाल से ही यहां के सांस्कृतिक परिवार (खलः) में गायन, वादन या नर्तन की प्रारंभिक शिक्षा हासिल करने से पहले और किसी नाटक या ऐसे कार्यक्रम का आयोजन करने से पहले नाट्येश्वर की समक्ति पूजा-आराधना की जाती है । यहां के लोगों में परंपरा से एक प्रार्थना प्रचलित है—

हा—दे नृत्यनाथ हर हे नवरस रंगे
हा—दे नंदी भृंगि बेताल खेली ह्रियो संगे ।

नेवारी में लिखी गयी इस प्रार्थना का भाव है—'हे देव नृत्यनाथ, आप हर रंग में रंगे हुए हैं । नंदी-भृंगि, बेताल के साथ खेलते हैं ।'

नेवारी भाषा में नाट्येश्वर

काठमांडू के संस्कृतिविद् स्वर्गीय प्रेमबहादुर कंसाकार ने नाट्येश्वर के बहुत से गीतों का संग्रह किया है । प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों से नेवारी भाषा में ये संग्रहित हैं । अपने संग्रह—'नासः द्यो या म्ये' में उन्होंने छप्पन (५६) गीत संग्रह किये हैं । यहां पर उनका संग्रह किया हुआ नृत्यनाथ का गीत उदाहरण के लिए पेश करना चाहता हूं । राग प्रथमांजलि, ताल चौमा को गाने के प्रत्येक पद में दो-दो ताल का प्रयोग किया गया है ।

जैसे—नृत्यनाथ महे—(पलेमा-छह मात्रा की ताल) श्वर सुंदर (चो-चार मात्रा की ताल) केलेहन मिखा कंसे (अस्तरा-दस मात्रा की ताल) मुसुहुंन ह्निसे (जति-सात मात्रा की ताल) ।



गीत इस प्रकार है—

नृत्यनाथ महे-(पलेमा) श्वर सुंदर (चो)
केलेहन मिखा कंसे (अस्तरा) मुसुहुंन ह्निसे
(जति) ।

इस प्रकार नेपाली मौलिक तालों में गाने की प्रक्रिया को नेवारी में ग्वारा (प्रबंध) कहते हैं । ग्वारा विविध राग और ताल में गाया जाता है । भगवान ग्वारा (भगवान बुद्ध का चरित्र) नेपाल में बहुत प्रसद्धि हैं । बुद्ध जयंती, श्वयंभू का मेला आदि के अवसर पर यह ग्वारा गाया जाता है ।

काठमांडू उपत्यका के तीनों शहरों में अनेक भजन-गृह हैं । इन भजन-गृहों में सबसे पहले नाट्येश्वर के ही भजन गाये जाते हैं । नेपाल के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों (ठयासफू) में भी नाट्येश्वर पर लिखे गये बहुत से गीत और भजन पाये जाते हैं । इस प्रकार विलुप्त होती हमारी संस्कृति और परंपरा को जागृत करने के लिए सांगीतिक अनुसंधान वांछनीय है ।

नेपाल में नाट्येश्वर के मौलिक रूप का आभास होता है । यहां नाट्येश्वर मौलिक संस्कृति बन चुके हैं । अतः विश्व संस्कृति में नेपाली नाट्य परंपरा की एक अलग अस्मिता और अस्तित्व रहा है ।

हैमा देव की स्तुति

किसी पूजा-आराधना या किसी सफल आयोजन के लिए— जैसे सबसे पहले विघ्नांतक गणपति या गणेश की अग्र पूजा आवश्यक है वैसे ही विघ्न-बाधा पार करने के लिए नाट्येश्वर से भी पहले एक विघ्न के देवता को खुश रखना पड़ता है । विघ्न डालनेवाले इस देवता का नाम है—हैमाः द्यो (हेमा देव) । इनको पहले ही न मनाने पर स्वर बेसुरा हो जाता है, ताल बेताल हो जाता है और नाच के पद-चालन में भूल होने लगती है । कलाकारों को अनायास बीमार पड़ने का भय रहता है । इस प्रकार किसी न किसी तरह की विघ्न-बाधा से बचने के लिए हैमा देव को तांत्रिक विधि से बलि चढ़ाकर प्रसन्न किया जाता है । इसके बाद कार्यक्रम निर्विघ्न सफल होने का विश्वास किया जाता है । इसीलिए नाट्येश्वर की पूजा से भी पहले हैमा देव की पूजा की परंपरा बनी हुई है ।

प्रतीक रूप में पूजा

नेपाल में नाट्येश्वर की पूजा प्रतीक रूप में की जाती है । इनके मंदिरों में लंबे त्रिकोण आकार के तीन छेद होते हैं । इनमें से बीचवाला छेद बड़ा होता है । यह नाट्येश्वर का प्रतीक होता है । दायें बायें छोटे-छोटे छेद होते हैं । इनमें नंदी और भृंगि रहते हैं । कुछ ही फुट नजदीक हैमा देव का छेद भी रहता है । इसका प्रकार थोड़ा अलग होता है ।

काठमांडू उपत्यका के तीनों शहरों के टोल (मोहल्ला) में नाट्येश्वर का मंदिर है । इसके आगे प्राचीन रंगमंच के प्रतीक डबली (रंगभूमि) चौकोर आकार में हैं । यहां पर हर वर्ष गाययात्रा और इंद्रयात्रा के अवसर पर विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम और नाटक आदि प्रदर्शित किये जाते हैं । नेपाल के प्राचीन राज

प्रासादों (काठमांडु, ललितपुर और भक्तपुर) के आगे भी ऐसी ही कलात्मक डबलियां स्थापित हैं । हनुमान ढोका राजप्रासाद के भीतर एक मूल चौक है जिसे नासलः चौक कहा जाता है । यहां नाट्येश्वर के मंदिर होने के कारण इस चौक को नासलः चौक कहा गया है ।

काष्ठमंडप : काठमांडू

काष्ठमंडप जिसके आधार पर राजधानी का नाम काठमांडू हुआ, इसके आगे मल्ल राजा प्रताप मल्ल ने एक राजप्रासाद बनाया । यहां पर उन्होंने नाट्येश्वर की जीवंत और कलात्मक प्रस्तर मूर्ति स्थापित की है । दापः खल, भजन खल आदि परंपरागत संगीत के प्रशिक्षार्थी और गुरुजन अपनी संगीत शिक्षा पूरी करके यहां आकर पूजा-आराधना के साथ नाट्येश्वर की अभ्यर्थना करते हैं । यहां की परंपरा के अनुसार हर सांगीतिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम की आयोजना पर नाट्येश्वर की पूजा की जाती है । कार्यक्रम की सफलता की कामना की जाती है ।

नेपाल में नाट्येश्वर के बारे में अनेक किंवदंतियां प्रचलित हैं । काठमांडू के लोग नाट्येश्वर को काठमांडू से उत्तर नुवाकोट जिले के कविलासपुर, जिसको नर्जकविलास भी कहते हैं, से आये हुए महादेव कहते हैं । यहां के कलाकार कम-से-कम वर्ष में एक बार कविलासपुर जाकर नाट्येश्वर के दर्शन करते हैं । अपने संगीत-साधनों या बाजों-गाजों सहित वहां पहुंचकर रातभर दीप जलाकर नाट्येश्वर के भजन कीर्तन करते हैं ।

नाट्येश्वर की कलात्मक अभिव्यक्ति

प्रतीक रूप में रहे नाट्येश्वर मल्लकाल से धीरे-धीरे आकार लेने लगे । नेपाली कलाकार



और मूर्ति कलाकारों ने नाट्येश्वर को सजीवता और कलात्मकता प्रदान करनी चाही । अब मिट्टी (टेराकोटा), काष्ठ धातु और प्रस्तर में नाट्येश्वर की मूर्तियां कुंदने लगीं । यहां नाट्येश्वर की बड़ी मूर्तियां नहीं मिलतीं, परंतु छोटी मूर्तियों में ही नेपाली कलाकारों ने मूर्त्त रूप दिया । ऐसी सुंदर और कलात्मक नाट्येश्वर की मूर्तियां खुले संग्रहालय के रूप में राजधानी में जहां-तहां देखी जा सकती हैं । विशेषकर नेपाल के राजप्रासादों के सुनधाराओं (सोने की प्रणाली) में कलात्मक प्रस्तर मूर्तियां देखने को मिलती हैं । काठमांडू के मोहनचौक, ललितपुर के सुंदरी चौक, भक्तपुर के सदाशिव चौक में ऐसे कलात्मक नाट्येश्वर देखे जा सकते हैं ।

काठमांडू में नाट्येश्वर के कई मंदिर हैं । इन मंदिरों के द्वार पर ही उनके प्रियगण विभिन्न वाद्ययंत्र बजाते हुए, नृत्य करते हुए दिखायी देते हैं । द्वार के ऊपर के तोरण में नाट्येश्वर, बीच में नंदी, भृंगि सहित रहते हैं । दोनों मूर्तियों को मृदंग और त्रिपुष्कर (कताः) बजाते हुए कुंदा जाता हैं । मंदिर के टुंडाल में भी नृत्य और वादन में मस्त देवी-देवता कुंदे जाते हैं ।

भिन्न और मौलिक शैली

मंदिर के तोरण और टुंडाल काठ के बनते हैं । धातु की मूर्तियों में यहां के कलाकारों में

इनके भी बयां जुदा-जुदा

चलते रहना ही मुझे बाएसे राहत है रजा
थक के बैठूं तो मेरे जख्मे सफर जलते हैं

—सलीम रजा

आस्मानों से फरिश्ते जो उतारे जाएं
वह भी इस दौर में सच बोलें तो मारे जाएं

—उम्मीद फाज़ली

हमें तो अहले सियासत ने यह बताया है
किसी का तीर किसी के कमान में रखना

—महबूब जफर

अपनी आंखों से उतर आओ तो मुझमें आकर
मेरी आंखों से जरा अपना सरापा देखना

—जामन हसन

अब इब्तिदाए इश्क का आलम कहां हफीज
कश्ती मेरी डुबोकर वह दरिया उतर गया ।

—हफीज जलंधरी

कुछ इसलिए अदालतों में पैरवी न की
इल्ज़ाम ही कुछ ऐसे लगे थे कि हारते

—हसन नासर

जो गया लौटकर नहीं आया
जाने क्या आस्मां में रखा था

—नादर

जो गुजरते हैं दाग पर सदमे
आप बंदानवाज क्या जानें

—दाग

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

नटराज से अलग शैली की नाट्येश्वर की मूर्तियां बनायी हैं । नटराज की जहां चार भुजाएं (हाथ) होती थीं वहां नेपाली कलाकारों ने अष्टभुजा से लेकर अठारह भुजाओं (हाथों) तक की मूर्ति बनायी है । तांत्रिक पद्धति का अनुसरण कर ऐसी मूर्तियां नेपाली कलाकारों ने निर्माण की हैं अपस्मार की जगह बेताल ने ली है ।

दायें-बायें नंदी-भृंगि और कभी-कभी नृत्य गणपति और नृत्य कुमार भी कुंदे गये हैं । किसी मूर्ति में नाट्येश्वर को नंदी (सांड़) के ऊपर नृत्यरत भी दिखाया गया है । ऐसी प्रस्तर मूर्तियां नेपाल में अधिक देखने को मिलती हैं ।

मूर्तिकला के अलावा चित्रकला, परंपरागत चित्र (पांभा), भीतिचित्र, पट-चित्र, ग्रंथ-चित्र आदि में भी नाट्येश्वर को किसी न किसी प्रकार चित्रित किया गया है ।

सांस्कृतिक स्रोत के देवता

इस प्रकार सांगीतिक और सांस्कृतिक मूल स्रोत के देवता के रूप में नेपाली संगीतकला, नृत्यकला, नाट्यकला, चित्रकला और मूर्तिकलाओं में नाट्येश्वर व्यापक रूप में नेपाली जन-मानस पर छाये हुए हैं । उनके बिना किसी भी कलासाधक को सफलता नहीं । हमारी धार्मिक भावना में 'सत्यम् शिवं, सुंदरम्' का महामंत्र अटल है । हमने मनसा, वाचा, कर्मणा से इसको अंगीकार किया है । जैसे देवाधिदेव महादेव सर्वत्र पूजित हैं वैसे ही नाट्येश्वर नेपाली संस्कृति के आराध्य देव हैं ।

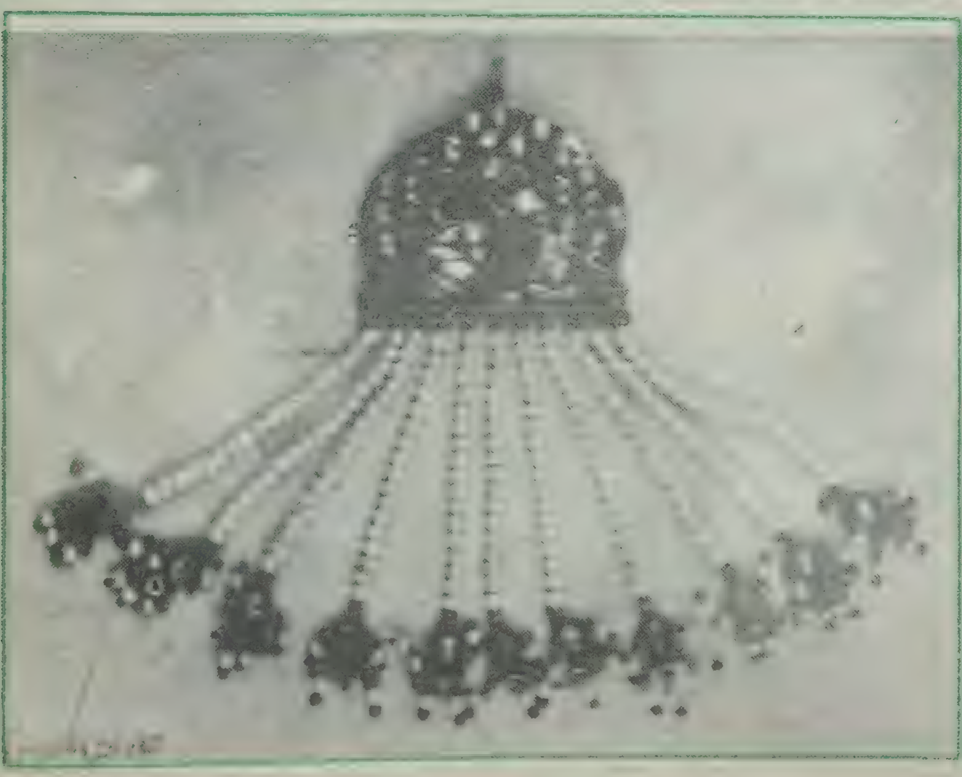
—६-३-१२७ कालधारा
काठमांडू : नेपाल

रोग मुक्ति के लिए आभूषण

● कमलेश कुमार शर्मा

भारत में प्राचीन काल से ही आभूषण सर्वाधिक आकर्षण व सौंदर्य की वस्तु रहे हैं । आभूषणों का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितनी भारतीय सभ्यता । प्रारंभ से ही आभूषणों को महत्त्वपूर्ण माना जाता था व पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रूप से रखा जाता था । आभूषणों का प्रयोग केवल सौंदर्य के लिए ही नहीं, बल्कि अन्य प्रयोजनों के लिए भी किया जाता था ।

भारतीय साहित्य में आभूषणों के अनेक वर्णन मिलते हैं । शतपथ ब्राह्मण में सोने की उत्पत्ति आग से बतायी गयी है, इसलिए इसका रंग अग्नि-जैसा सुनहरा है । ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर इसका वर्णन है । तीसरी शताब्दी ई. पू. में लिखे कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सोने व चांदी से निर्मित आभूषणों व राज्य द्वारा स्वर्णकारों के लिए बनाये गये नियमों का विस्तृत रूप से उल्लेख किया गया है । इसके अनुसार सोने व चांदी के आभूषणों के निर्माण का प्रभारी स्वर्णाध्यक्ष होता था । राजकीय कार्यशाला में



रत्नों से जड़ित मोती का झूमर । (मुगल प्रारंभिक १८ वीं शताब्दी)

केवल अधिकृत व्यक्ति ही जा सकते थे । आभूषणों को बनाने की विभिन्न तकनीकों, सोने की खानों व इसे शुद्ध करने के तरीकों की जानकारी विस्तृत रूप से अर्थशास्त्र में दी गयी है ।

भारत के दो महाकाव्यों रामायण व महाभारत में आभूषणों के संबंध में अनेक विवरण मिलते हैं । राजा जनक द्वारा अपनी पुत्री सीता को विवाह के समय सिर का आभूषण-चूड़ामणि भेंटस्वरूप दिया गया था । यह बहुमूल्य रत्नों से जड़ित था । चूड़ामणि बालों के जूड़े में ऊपर लगाया जाता था । जब रावण ने सीता का हरण किया था, तो सीता ने अपने आभूषण जमीन पर फैंके, जिन्हें जटायु ने पहचाना था । रामायण व महाभारत में राजाओं, रानियों व राजकुमारों द्वारा विभिन्न आभूषणों का विवरण मिलता है ।

संस्कृत साहित्य में आभूषण

संस्कृत साहित्य में आभूषणों का अनेक स्थानों पर वर्णन है । संस्कृत नाटक मृच्छकटिकम् के एक दृश्य में स्वर्णकारों की दूकानों की गली का वर्णन है, जिसमें सिद्धहस्त शिल्पी बहुमूल्य रत्नों का निरीक्षण कर रहे हैं । अमरकोश में सोने के लिए स्वर्ण शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ है—अच्छा रंग ।

पांचवीं शताब्दी के कालिदास ने केवल आभूषणों व रत्नों का ही विस्तृत रूप से विवरण नहीं किया है, बल्कि इन्हें कैसे पहना जाता था, इसकी भी विस्तृत जानकारी दी है ।

भारतीय गृहसूत्रों में सौंदर्य के अलावा विभिन्न संस्कारों के लिए आभूषणों के प्रयोग का वर्णन मिलता है । इन संस्कारों यथा—नामकरण, विद्यारंभ, उपनयन, गुरुकुल से शिक्षा, विवाह व अंत में मृत्यु में आभूषणों का पहनना महत्त्वपूर्ण बताया है । बच्चे के कानों में छेद करना व सोने के कर्णाभूषण पहनने का अर्थ उसका संसार में प्रवेश करना है । उपनयन संस्कार में सोने का धागा या यज्ञोपवीत बायें से दायें छाती में पहना जाता था । विवाह के समय कुछ विशेष आभूषण बनाये जाते थे । मृत्यु के समय सोने या चांदी का टुकड़ा तुलसी के पत्ते में लपेटकर मृतक के मुंह में डाला जाता था ताकि उसके द्वारा किये गये पाप दूर हों व मृत्योपरांत शुद्धता बनी रहे ।

रोग निवारण के लिए

आभूषणों का प्रयोग विभिन्न प्रकार के रोगों को दूर करने के लिए भी किया जाता था । चेचक की बीमारी से बचने के लिए गले में पेंडेंट पहनाया जाता था जिसमें शीतला देवी की आकृति बनी रहती थी । शरीर के विभिन्न भागों में विशेष आभूषण इसी प्रयोजन के लिए पहने जाते थे ।

सोना व चांदी शुद्ध धातु होने के कारण इनका धार्मिक अनुष्ठानों के लिए प्रयोग किया जाता था । दक्षिण भारत में मंदिरों में

आभूषणों का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितनी भारतीय सभ्यता । आभूषण सौंदर्य वृद्धि ही नहीं करते, वे रोग निवारक भी हैं ।



बहुमूल्य रत्नों से जड़ित गले का हार ।



नाक में पहनी जानेवाली नथ, (उत्तरी भारत २०वीं शताब्दी)

देवी-देवताओं के लिए विशिष्ट आभूषण बनाये जाते थे जिन्हें मंदिर-आभूषण कहा जाता है । इन आभूषणों का प्रयोग केवल धार्मिक कार्यों के लिए ही किया जाता था । गौरी-शंकर हार जो शिव-पार्वती के मिलन का प्रतीक है, सामान्यतः चेट्टियार जाति द्वारा पहना जाता है । देवी-देवताओं को पहनाये जानेवाले आभूषण साधारण आभूषणों से अधिक अलंकृत होते थे । तिरुपति में देवताओं को अलंकृत भारी मुकुट के अलावा बहुमूल्य रत्नों से जड़ित आभूषण पहनाये जाते हैं । दक्षिण में देवदासियों द्वारा गले में लटकन पहने जाते हैं , जिनमें सूर्य, चंद्र, नाग, लिंग आदि की आकृतियां होती हैं ।

हिंदू धर्म में स्त्री का मुख्य धन आभूषण ही माना गया है । स्त्री को विवाह के समय अपने माता-पिता के घर से जो आभूषण मिलते हैं, उनमें उसके पति के घर का कोई अधिकार नहीं होता है । विपदा या आपत्ति के समय स्त्री को इस धन से सहायता मिलती है और वह अपने को सुरक्षित समझती है ।

आभूषण कला का प्रारंभ

भारत में आभूषण कला का प्रारंभ आज से पांच हजार वर्ष पूर्व सिंधु घाटी सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता से माना जाता है । पाकिस्तान व भारत में इस सभ्यता के उत्खननों के फलस्वरूप अनेक स्थल मिले हैं, जहां बड़ी संख्या में आभूषण मिले हैं । इस सभ्यता के शिल्पकार अन्य कलाओं के साथ-साथ आभूषण कला में भी अत्यंत कुशल थे । इस सभ्यता के पाकिस्तान में स्थित प्रमुख स्थलों—हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो के साथ-साथ भारत में—राजस्थान में कालीबंगा; गुजरात में लोथल, धौलाबीरा; हरियाणा में बनवाली; पंजाब में रोपड़, आदि प्रमुख स्थल हैं ।

सिंधु घाटी सभ्यता के शिल्पकार सोना, चांदी, कांस्य, सीपी, अल्प मूल्य पत्थर, हाथीदांत और पकी हुई मिट्टी से विभिन्न प्रकार के आभूषण बनाते थे । सोने के आभूषण साधारण होते थे । इनमें किसी प्रकार के रत्न नहीं जड़े जाते थे । आभूषणों के लिए कार्नेलियन, सेलखड़ी, अगेट, कपिशमणि,

लेपिस लजुलि और फीरोजा—जैसे अल्प मूल्य रत्नों का प्रयोग किया जाता था । इस सभ्यता के अनेक स्थलों से प्राप्त आभूषणों में गले के हार, हाथों में पहने जानेवाले कंगन, कमर में पहने जानेवाली मेखला, बाजू के लिए बाजूबंद, सिर के लिए जडाऊ पिन, पेंडेंट आदि सम्मिलित हैं । इन आभूषणों को देखकर उस युग के शिल्पकारों की उच्च शिल्पकला का पता चलता है ।

आभूषण-कला का विकास

मोहनजोदड़ो से प्राप्त प्रसिद्ध नर्तकी की कांस्य प्रतिमा में बहुत ही सुंदर ढंग से आभूषणों को दिखाया गया है । नर्तकी के बाजू को पूर्णतः चूड़ियों से भरा हुआ दर्शाया गया है । सिर के आभूषण भी मोहक हैं ।

सिंधु घाटी सभ्यता के पश्चात तक्षशिला से प्रथम शताब्दी ई. के आभूषण मिलते हैं । यहां से प्राप्त आभूषणों में कर्णाभूषण, कंगन, मेखला, हार, लटकन, झुमकी आदि शुद्ध सोने से निर्मित हैं । आभूषणों को बनाने के लिए यहां के शिल्पकारों ने जालीदार नक्काशी, ग्रेन्यूलेशन आदि तकनीकों का प्रयोग किया है । इन आभूषणों पर यूनानी, रोमन, फारसी तथा भारतीय शैलियों की छाप स्पष्ट रूप से झलकती है ॥

प्रथम शताब्दी ई. से लेकर १६वीं शताब्दी तक के आभूषण उपलब्ध नहीं हैं । इसका मुख्य कारण इन १५०० वर्षों में भारत पर विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा किये गये अनेक आक्रमण हैं । इनमें से अधिकांश आक्रमण केवल लूटमार के उद्देश्य से ही किये गये थे ।

इन लगभग १५०० वर्षों की आभूषण-कला के विकास के लिए हमें इस युग की मूर्तिकला, चित्रकला, सिक्कों, कांस्य प्रतिमाओं, मृण्मूर्तियों, आदि में प्रदर्शित आभूषणों का सहारा लेना पड़ता है । भरहुत, सांची, उड़ीसा, दक्षिण चालुक्य वंश की प्रस्तर की मूर्तियों को आभूषणों से अलंकृत किया गया है । इन मूर्तियों को देखने से हमें उस युग की उत्कृष्ट शिल्पकला व डिजाइनों का पता चलता है । भरहुत व सांची के द्वारों में कल्पवृक्ष की शाखाओं से बहुमूल्य रत्नों को बड़े ही आकर्षक ढंग से दर्शाया गया है ।

गुप्त युग की प्रस्तर मूर्तियों, पकी हुई मिट्टी की बनी हुई मूर्तियों व सिक्कों से इस युग के आभूषणों की तकनीक का पता चलता है । मूर्तियों, सिक्कों में प्रदर्शित आभूषणों को देखने से पता चलता है कि रिपाउज स्टाइल से आभूषणों को बनाया जाता था ।

पांडुलिपियों, चित्रों व मूर्तियों से हमें मुगलकाल तक आभूषण-कला के विकास का पता चलता है ।

चालुक्य युग के राष्ट्रीय संग्रहालय में प्रदर्शित मोहिनी की प्रस्तर मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है । इस मूर्ति को सिर से लेकर पांव तक आभूषणों से पूर्णतः अलंकृत किया गया है ।

राजाओं व आभिजात्य वर्ग के लोगों द्वारा आभूषणों को पहनना शान का प्रतीक माना जाता था । सिर पर मुकुट, राजदंड, छत्र, शरीर के विभिन्न भागों में आभूषण तथा सिंहासन सोने के होते थे, जिन्हें बहुमूल्य हीरों व जवाहरातों से सुसज्जित किया जाता था ।

आभूषणों का प्रयोग राजाओं द्वारा उपहार

देने के लिए भी किया जाता था । राजा के राज्यारोहण, युद्ध में विजयी होने, आदि के उपलक्ष्य में आभूषण उपहारस्वरूप बांटे जाते थे ।

मुगलकाल में

मुगल काल में आभूषण-कला का अत्यधिक विकास हुआ । इस वंश के शासकों ने इस कला को राजकीय आश्रय प्रदान किया । इसी के फलस्वरूप मुगलकाल से आभूषण-कला के इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात होता है । इस काल में सोने व चांदी के आभूषणों का अधिक से अधिक प्रचलन हुआ । इस युग के हमें काफी मात्रा में आभूषण मिलते हैं ।

मुगलकाल में आभूषणों को अधिक सुंदर बनाने के लिए नयी-नयी तकनीकों का आविष्कार हुआ । इसमें मीनाकारी व बहुमूल्य रत्नों की जड़ाई कुंदन कार्य द्वारा प्रमुख है । मीनाकारी का प्रयोग सोने व चांदी दोनों धातुओं के आभूषणों के लिए किया गया । इसका प्रयोग मुगलकाल से लेकर आज तक निरंतर होता आ रहा है, इसकी प्रक्रिया में कोई विशेष अंतर नहीं आया है ।

मीनाकारी के तीन प्रमुख केंद्र थे—जयपुर, बनारस तथा हैदराबाद । जयपुर, लाल व हरे रंग की मीनाकारी के लिए; बनारस, गुलाबी रंग की मीनाकारी के लिए व हैदराबाद, हरे रंग की मीनाकारी के लिए प्रसिद्ध था । आज भी इन प्रसिद्ध स्थानों के साथ-साथ अन्य स्थानों में आभूषणों पर मीनाकारी की जाती है ।

मीनाकारी की प्रक्रिया

जयपुर के आभूषणों की मीनाकारी के डिजाइनों में मुगल स्थापत्य कला का प्रभाव स्पष्ट दिखायी पड़ता है ।



नर्तकी की कांस्य की प्रतिमा, मोहनजोदड़ो

मीनाकारी की प्रक्रिया में सर्वप्रथम चित्रकार आभूषण का डिजाइन बनाता है । सुनार डिजाइन के बाद उसके अनुरूप आभूषण बनाता है । छटेरा इसमें घेराई करता है । इसके पश्चात मीनाकार इसमें मीनाकारी करता है, जो विभिन्न रंगों की होती है ।

कुंदन कार्य

मुगल-काल में आभूषणों को अधिक सुंदर बनाने के लिए नयी तकनीक कुंदन कार्य का प्रारंभ हुआ । इस तकनीक द्वारा आभूषणों में अल्पमूल्य व बहुमूल्य रत्नों को जड़ा जाता था । कुंदन कार्य प्रक्रिया द्वारा इस युग के शिल्पकारों ने आभूषणों को रत्नों से जड़ा । इस प्रक्रिया द्वारा सोने की पत्ती को रत्न और सोने के बनाये हुए फ्रेम के बीच की जगह में लगाया जाता था ताकि रत्न ठीक से जमा रहे । प्रायः कुंदन कार्य में बहुमूल्य रत्नों को आभूषण के सामनेवाले हिस्से में जड़ा जाता था तथा पिछले हिस्से पर खूबसूरत मीनाकारी की जाती थी । आज भी

गुजरात व राजस्थान कुंदन कार्य के लिए प्रसिद्ध हैं।

राजकीय संस्कारों में आभूषण

मुगल वंश के शासकों द्वारा सोने के आभूषणों का प्रयोग विभिन्न राजकीय संस्कारों के लिए किया जाता था। इनमें प्रमुख था—तुलादान। इस प्रथा का प्रारंभ सम्राट अकबर द्वारा किया गया था। वर्ष में दो बार सूर्यग्रहण व चंद्रग्रहण के समय तुलादान किया जाता था। सूर्यग्रहण संस्कार के समय अकबर को बारह बार तोला गया। एक बार सोने से व ग्यारह बार अन्य वस्तुओं से। जहांगीर व शाहजहां के समय तक भी तुलादान की प्रथा चलती रही।

मुगलकाल में नवरत्न हार का अधिक से अधिक प्रयोग किया गया। इस हार में नौ रत्न जड़े होते हैं :—मुक्ता, हीरा, विद्रुम, मरकत, माणिक्य, नीलम, पीतमणि, वेदूर्य तथा गोमेद। ये नवरत्न नौ ग्रहों का प्रतिनिधित्व भी करते हैं।

मुगलकाल में मुकुट का विशेष महत्त्व था। मुगलकाल के चित्रों में शासकों को सिर पर पगड़ी या मुकुट पहने हुए दिखाया गया है। पगड़ी के ऊपर से आभूषणों का प्रयोग किया जाता था। पगड़ी के लिए मुगलकाल में एक नया आभूषण सरपेच बनाया गया जिसका बहुत महत्त्व था। यह राजकीय सत्ता का प्रतीक होता था। मुगलकाल के चित्रों में शासकों द्वारा सिर पर पगड़ी में सरपेच पहने हुए दिखाया गया है। वार्नियर ने बादशाह औरंगजेब द्वारा पहने गये सरपेच का वर्णन किया है जो सोने का बना हुआ था व इसमें बहुमूल्य हीरे व जवाहरात जड़े हुए थे। टोपाज इसमें सूर्य की तरह चमकता था।

आभूषणों की वीथी

राजधानी में जनपथ स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा हाल ही में आभूषणों की एक स्थायी वीथी स्थापित की गयी है। इसका उद्घाटन २६ अप्रैल, १९९४ को प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिंह राव द्वारा किया गया। भारतीय संग्रहालय के इतिहास में पहली बार स्वतंत्र रूप से आभूषणों की वीथी आम जनता के प्रदर्शन के लिए खोली गयी है। इस वीथी में सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर बीसवीं शताब्दी तक के प्राप्त आभूषणों को आधुनिकतम साधनों का प्रयोग करके प्रदर्शित किया गया है। इस वीथी में आभूषणों के साथ-साथ इससे संबंधित वस्तुओं यथा बहुमूल्य व अल्पमूल्य रत्नों से जड़ित डिब्बियां, कलम, विषमुद्रिका, चूनादानी, सिंहासन आदि भी प्रदर्शनार्थ रखी गयी हैं। प्रदर्शित आभूषणों में विशेष उल्लेखनीय है—मोहनजोदड़ो से प्राप्त मेखला, सिर की पिन, तक्षशिला से मछली की आकृति की मेखला, गुप्त युग की सोने की मुद्राएं, १८वीं शताब्दी का मुगलकाल का बहुमूल्य रत्नों से जड़ित व मीनाकारी युक्त बहुमूल्य रत्नों से जड़ित सरपेच, हाथफूल , नौ रत्नों से जड़ित नवरत्न हार, दक्षिण भारत का चंपाकली हार, नागचोटी, १८वीं शताब्दी की रूबी से जड़ित राम-सीता की प्रतिमा, रुद्राक्षमाला, १८वीं शताब्दी का श्रीनाथ हार तथा राजस्थान का दशावतारी हार आदि हैं।

—११०/२ गौतम नगर,
(सरताज पब्लिक स्कूल के पास)
नयी दिल्ली-११००४९

सौंदर्य को द्विगुणित करते हैं
आभूषण



पारदर्शी : तिमिर दत्ता



पारदर्शी : दिलीप बनरजी





विरले हैं ऐसे समुद्र तट संसार में

शांत समुद्र, झूमते वृक्ष और एकांत शिविर समुद्र

चित्र : ब्रह्मदेव

यह पूरब का रोम है !

• प्रहलाद



सोलहवीं सदी में आनेवाले पुर्तगाली यात्री गोवा को पूरब का रोम कहते थे, परंतु गोवा के पुराने भवन, राजसी गिरजाघर और भव्य मंदिर तथा वहां का वातावरण और सबसे बढ़कर वहां के लोग— ये सब मिलाकर रोम के वैभव को कहीं पीछे छोड़ देते हैं ।

भारतीय गणतंत्र ने गोवा को ११ मई, १९८७ को एक अलग राज्य की पदवी देकर वहां की जनता को गौरवान्वित किया । गोवा २५ नवंबर १५१० में पुर्तगालियों के शासन के अधीन हुआ था और ४५० वर्ष पश्चात १९६१ में स्वतंत्र हुआ ।

अगर किसी हिप्पी अथवा स्वचछंद विचारोंवाले स्त्री-पुरुष से पूछें कि स्वर्ग क्या है और संसार में कहां पर है तो इन दोनों प्रश्नों का उत्तर गोवा ही होगा, गोवा का सौ किलोमीटर से अधिक लंबा समुद्री किनारा इस पूरे प्रदेश को स्वर्ग समान बनाने में सहायक है, इस किनारे पर दुनिया के सुंदरतम 'बीच' से भी सुंदर कई स्थान हैं, दुनियाभर के पर्यटक इसे सबसे श्रेष्ठ मानते हैं, संसारभर के अधिकांश समुद्र तटों पर जो थोड़ा-बहुत स्थान रमणीय होता है, वहां भीड़ इतनी अधिक होती है, कि पांव धरने को भी स्थान नहीं मिलता, जो अन्य रमणीय समुद्र तट हैं, वहां वर्ष में अधिकांश समय तक या तो बादल छाये रहते हैं या मूसलाधार वर्षा होती रहती है । गोवा के इस लंबे समुद्र तट पर प्रातः सूरज उगने से लेकर शाम को सूर्यास्त तक जो मजा लिया जा सकता है, वह हॉलैंड, कनाडा, ब्रिटेन, अमरीका तथा अन्य किसी देश में संभव नहीं है ।

पूरे साल लगभग— एक-सा मौसम होने के कारण गोवा में पर्यटकों की भीड़ हर समय लगी रहती है । गरमी के दिनों में मौसम कुछ

गरम तो हो जाता है, परंतु फिर भी सुहावना ही रहता है । रात के समय चांदनी समुद्र तट की लहरों पर जब अठखेलियां करती रहती है, तो उसके किनारे रेत पर बैठकर गिटार अथवा सितार बजाते हुए, रातभर गाने और नाचने का अनुभव इस रेतों पर जागकर ही लिया जा सकता है ।

संस्कृतियों का संगम

प्रकृति की खूबसूरती के साथ-साथ संस्कृतियों का संगम तथा वहां के लोगों का उन्मुक्त व्यवहार तथा वातावरण इन सबके कारण गोवा सैलानियों के लिए स्वर्ग से बढ़कर आनंद देता है ।

यहां से कलंगुट बीच, सनजना बीच, बागाटोर बीच और बागा बीच, ये सारे पणजी से दस और बीस किलोमीटर के दायरे में हैं । गोवा के ३७०० वर्ग मीटर क्षेत्रफल में बसे यहां के दस लाख निवासी अपने आप में एक छोटा-सा खूबसूरत संसार बनाते हैं, जिनके पास अपना जीवंत इतिहास आज भी सुरक्षित है ।

यहां के मंदिर आज भी पुराने वैभव की याद दिलाते हैं । पुर्तगाली जो यहां इतना अरसा रहे, उन्हें भव्य गिरजाघर बनाने का शौक था । इन गिरजाघरों में संसार में प्रसिद्ध बोम जीसस वैषली का गिरजाघर भी है, जो सोलहवीं सदी में बना था । उसका निर्माण १५९४ में आरंभ हुआ था । यहां संत फ्रांसिस जेवियर के अवशेष आज भी एक ताबूत में सुरक्षित हैं, जिनके दर्शनार्थ लाखों ईसाई संसारभर से हर वर्ष यहां आते हैं । इसके अतिरिक्त वे कैथेड्रल हैं, जो अपनी वास्तुकला के कारण आज भी महानतम गिरजों में गिने जाते हैं । इसमें संसारभर के गिरजाघरों से बड़ी घंटियां लगी हुई हैं । संत फ्रांसिस असिसी का एक गिरजाघर है, जो अपनी भव्यता के कारण प्रसिद्ध है । गिरजाघरों की तो यहां भरमार है और सबके सब आज भी इसी प्रकार सुरक्षित रखे गये हैं, मानो अभी बने हों ।

इन गिरजाघरों के कारण पूरा गोवा क्रिसमस तथा नये वर्ष के समय यूं सजा-धजा रहता है, मानों नयी नवेली दुल्हन हो । इन्हीं दिनों होटलों की भरमार होते हुए भी किसी होटल या उसके लॉन में नाचनेवालों की इतनी भीड़ रहती है कि पांव रखने को स्थान नहीं मिलता । शेष जनता

पूरे साल लगभग एक-सा मौसम होने के कारण गोवा में पर्यटकों की भीड़ हर समय लगी रहती है । गरमी के दिनों में मौसम कुछ गरम तो हो जाता है, परंतु फिर भी सुहावना ही रहता है, रात के समय चांदनी समुद्र तट की लहरों पर जब अठखेलियां करती है, तो उसके किनारे रेत पर बैठकर गिटार अथवा सितार बजाते हुए रात भर गाने और नाचने का अनुभव इन रेतों पर जागकर ही लिया जा सकता है ।



सड़कों पर अपने निजी बाजों-गाजों के साथ नाचती हुई टोलियां बनाकर निकल पड़ती है। यहां के ये आठ-दस दिन हर यात्री के लिए याद रखने लायक होते हैं।

यहां के पर्यटकों में हिप्पियों का काफी बोलबाला रहता है। उन्होंने गोवा के पूरे जीवन को तीन शब्दों में ढाल दिया है। खा-पी-गा, यानी खाने-पीने और गाने में वह अपने पूरे जीवन की सार्थकता पा लेते हैं। इन पर्यटकों के अनुसार मियामी और मोंटिकार्लो दो समुद्रतट ऐसे हैं, जो संसार में गोवा के समुद्रतट से कुछ मेल खाते हैं, परंतु मियामी की भीड़ ऐसे पर्यटकों को अपनी मनमानी नहीं करने देती और मोंटेकार्लो का समुद्रतट तो केवल अरबपतियों के लिए सुरक्षित हो गया है। सो, वहां जाने की हिम्मत आम पर्यटक नहीं जुटा पाता।

गोवा के इतिहास पक्ष को लें, तो इसका उल्लेख मोर्य साम्राज्य यानी तीसरी शताब्दी से आरंभ होता है। बाद में कोल्हापुर के वंशजों ने यहां राज किया और ५८० में चालुक्यों ने यहां की बागडोर संभाली। ७५० के बाद सिलार, कारदब और कल्याणी के चालुक्यों का शासन रहा। उसके पश्चात मुसलिम शासक आये, जिन्हें विजयनगर के राजा ने १३७० में भगाकर इसे अपने राज्य में मिला लिया। एक शताब्दी के अंदर इसका विकास हुआ और यहां के बंदरगाह फले-फूले, विजयनगर के राजा अपनी सेना के लिए अरबी घोड़े यहीं से मंगाया करते थे।

अधिक मात्रा में कच्चा लोहा

१४६९ तक उनका शासन रहा। उसके बाद बहानी के सुल्तान तथा बीजापुर के आदिलशाह ने सत्ता संभाली। विजयनगर के राजा तथा आदिलशाह ने यहां अपने काल में भव्य इमारतें और मंदिर बनवाये। १५१० में पुर्तगालियों ने गोवा के बंदरगाहों का महत्त्व समझा और इन्हें अपना मुख्य अड्डा बनाया।

यहां मछली का उद्योग बड़े पैमाने पर होता है, परंतु कच्चा लोहा भी इतनी अधिक मात्रा में होता है कि उसका अधिकांश हिस्सा जहाजों में भरकर जापान भेजा जाता है। इसके अतिरिक्त यहां की शराब जो काजू और फेनी से बनती है,



संसार भर में प्रसिद्ध है । बीयर यहां इतनी सस्ती है कि यहां आकर सैलानी पानी के स्थान पर बीयर ही पीना पसंद करते हैं । यहां के लोग बहुत ही संतुष्ट एवं मौज-मस्ती की प्रकृतिवाले हैं । उनको देखकर यह नहीं लगता कि संसार में कहीं चिंता के कुछ कारण भी हो सकते हैं ।

यहां के समुद्र तटों की रंगीन तरलता और असीम शांति का अनुभव हर सैलानी करता है । पहले भारतीय पर्यटक समुद्र तट पर बैठे अथवा लेटे नग्न-अर्धनग्न जोड़ों को देखकर अश्लील हरकतें किया करते थे, परंतु अब ऐसी घटनाएं बहुत कम होती हैं । इसका एक कारण तो यह भी है कि गोवा के मूलवासी ऐसे लोगों को हिकारत की दृष्टि से देखते हैं, और फिर ऐसे मनचलों के लिए कड़े कानून भी बन गये हैं । दूसरा कारण यह भी है कि अब भारतीय पर्यटक भी वैसे नहीं रहे क्योंकि, वे भी अब सब प्रकार की सभ्यताओं के आदी होते जा रहे हैं । सो, अब भारतीय पर्यटक भी रेत पर लेटने का आनंद लेने लगे हैं ।

सूर्यास्त का सौंदर्य

अंत में यहां के सूर्यास्त का जिक्र करना भी आवश्यक है, क्योंकि यहां के सूर्यास्त-जैसी सुंदरता संसार में अन्य कम ही देखने को मिलेगी । दिनभर के थके-मांदे पर्यटक सायं होते-होते समुद्रतटों पर एकत्रित हो जाते हैं और तैरते हुए समुद्र में काफी दूर तक निकल जाते हैं, मानो दूर जाने पर वह अस्त होते हुए सूर्य को अपने हाथों में पकड़ लेंगे । तैरते-तैरते ही समुद्र की उन्मुक्त लहरों पर सूर्य की स्वर्णलाली धीरे-धीरे कम होती जाती है और साथ ही ऐसी चुप्पी छा जाती है, मानो तट का सारा कोलाहल सूर्य के साथ ही अस्त हो गया हो, कुछ क्षण बाद ही वह कोलाहल दुगुने-तिगुने स्वर में सितार, गिटार अथवा तबलों की धमक के साथ बज उठता है और रातभर का खाना-पीना और गाना आरंभ हो जाता है ।

—२३/२ मोहनी रोड
देहरादून

शाठ्यं नाम अर्थनिर्वर्तको बुद्धिविशेषः ।
(धूर्तविप्संवाद पृ. २४)

शठता बुद्धि का वह हीन गुण है, जिसके द्वारा मनुष्य अपना स्वार्थ सिद्ध करता है ।

कहानी

नारी— तेरे और दो रूप

• कन्हैया लाल गांधी

निर्मला के पिता कृष्णस्वामी कुछ ही दिनों में सरकारी सेवा से निवृत्त होनेवाले थे। अवकाश-ग्रहण करने से पहले वह बेटी के हाथ पीले कर देना चाहते थे, परंतु अभी आषाढ़ मास चल रहा था और इसमें शादी-विवाह, गृह-प्रवेश, यज्ञोपवीत आदि सभी प्रकार के शुभकार्य, ब्राह्मणों के अनुसार वर्जित थे, इसलिए निर्मला का विवाह अगले माह के लिए तय हुआ था।

विवाह का शुभ-मुहूर्त श्रावण मास के प्रथम रविवार को दिन के दो बजकर इकतीस मिनट का निकला था। कृष्णस्वामी का संबंध समाज के उस मध्यवर्ग से था, जो अपनी जाति के रीति-रिवाजों और सामाजिक बंधनों से जकड़ा हुआ है। मुहूर्त वेला का कट्टरता से पालन न करने के दुष्परिणाम की एक घटना उनकी बिरादरी में कुछ ही सप्ताह पूर्व हुई थी, जिसे याद कर कृष्णस्वामी के रोंगटे खड़े हो जाते थे। तीन मास पूर्व उनकी रिश्तेदारी में एक लड़की की बारात मुहूर्त का समय बीत जाने के थोड़ा उपरांत पहुंची, तो लड़कीवालों ने बारात को वापस लौटा दिया था। आंध्र प्रदेश के तटवर्तीय-भाग और तमिलनाडु में ऐसा कदम उठाना कोई नयी बात नहीं है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, कृष्णस्वामी ने विवाह के सभी प्रबंध अपनी देख-रेख में ही पक्के कर लिए थे। परिवार के सबसे वयोवृद्ध व्यक्ति के हाथ में घड़ी दे दी थी, जिससे कि मुहूर्त के अनुसार हर कार्य हो सके।

शादी की रस्म घर के निकट एक मैदान में हो रही थी। वहां एक बहुत बड़ा शामियाना तना हुआ था। उसके नीचे कोई एक हजार के लगभग मेहमान बैठे होंगे। बारात को पहुंचे कोई पंद्रह-बीस मिनट हो चुके थे। वर-वधु और उनके नजदीकी रिश्तेदार एक विशेष मंडप में बैठे थे। ज्यों-ज्यों मुहूर्त की घड़ी निकट आ रही थी, सभी की नजर उस बुजुर्गवार की ओर थी।

जब उन वयोवृद्ध सज्जन की घड़ी में दो बजकर तीस मिनट हुए तो उन्होंने मुहूर्त-वेला का संकेत दिया। संकेत मिलते ही ब्राह्मणों ने शंख बजाया, बैंडवालों ने अवसर के उपयुक्त धुन बजायी और मंडप में बैठे सभी लोगों ने ब्राह्मणों के संग वेद-मंत्रों का उच्चारण किया। ठीक दो बजकर इकतीस मिनट पर बुजुर्गवार से



दूसरी बार संकेत मिलने पर 'गोड़-रस्म' संपन्न कर दी गयी। पहले वर ने वधु के सिर पर और बाद में वधु ने वर के सिर पर गुड़ और जीरे के मिश्रण का लेप रखा। फिर वर ने वधु को मंगल-सूत्र पहनाया। मंडप में बैठे रिश्तेदारों तथा शामियाने में बैठे मेहमानों ने युगल के निकट जाकर वर और वधु के सिरों पर आशीर्वाद-रूप में थोड़े-थोड़े चावल छिड़के। इसके बाद मेहमान भोजन के लिए चले गये, और वर-वधु तथा निकटवर्ती रिश्तेदार फेरों के लिए अग्निहोत्र की ओर घूमे। सूर्यास्त से पूर्व सभी कार्य पूरे हो गये और विदाई की तैयारी होने लगी। निर्मला कृष्णस्वामी की एकमात्र बेटी और एकमात्र संतान थी। कहते हैं कि संतान के रूप में माता-पिता पुनः जन्म लेते हैं— आकृति, भावनाओं और आकांक्षाओं इत्यादि सभी दृष्टियों से। इसी कारण अपनी संतानों में उनकी जान बसी रहती है। स्वाभाविक है कि ऐसा अवसर माता-पिता के लिए बड़ा संवेदनशील होता है। कृष्णस्वामी और उनकी पत्नी ने पुत्री को अनेक उपहार देकर विदा किया। कृष्णस्वामी द्वारा किये गये विवाह-प्रबंधों और आवभगत से बाराती बहुत प्रसन्न थे।

× × ×

तीन-चार माह बीत गये। दोनों परिवार,

निर्मला और उसका पति शेखर सभी प्रसन्न थे। निर्मला सात माह के बाद मां बननेवाली थी। अतः वह गर्भावस्था पर बहुत प्रसन्न थी। ठीक इसी समय शेखर के मन में शैतान जाग उठा। घरेलू नौकरानी परमेसरी को उसने अपने प्रेम-जाल में फंसा लिया। समय के साथ जब यह प्रेम-जाल फैलने लगा, तो निर्मला को कुछ शक तो हुआ, परंतु उसने इसे अपने मन का भ्रम समझा और उसकी उपेक्षा कर दी। परमेसरी जाति की बंजारिन थी। गरीबी में पली बंजारिन होते हुए भी वह सुगठित और सुंदर तो थी ही साथ ही अविवाहित भी। शेखर को अब परमेसरी के मुकाबले में निर्मला सांवली और असुंदर लगने लगी। अंजाम यह हुआ कि शेखर और निर्मला के बीच का फासला बढ़ने लगा और शेखर और परमेसरी के बीच दूरी कम होने लगी। शेखर तो निर्मला से मुक्ति पाने की भी सोचने लगा। उसे यह भी मालूम था कि बच्चा हो जाने के उपरांत उससे मुक्ति पाना कठिन हो जाएगा। इसलिए एक दिन एकांत में अवसर पाकर उसने निर्मला के पेट पर घूंसे बरसा डाले। निर्मम मुक्कों की मार से अंततः गर्भपात हो गया। गर्भपात के कारण वह शारीरिक एवं मानसिक, दोनों स्तरों पर टूट गयी। सास-ससुर बूढ़े थे, पति को उसकी परवाह नहीं थी। इसलिए दुबली-पतली निर्मला सूखकर कांटा हो गयी।

निर्मला के मां-बाप को बेटी के गर्भपात के अतिरिक्त अन्य किसी बात का पता नहीं था। कृष्णस्वामी निर्मला को उसकी ससुराल से लिवा लाये और घर के समीप ही अपने परिचित एक अच्छे नर्सिंग होम में दाखिल करा उपचार कराने लगे। उपचार से गर्भपात के कारण उपजी समस्याओं का निदान तो हो गया, परंतु निर्मला को बुखार रहने लगा। कुछ समय बाद खांसी के आसार भी सामने आने लगे। डॉक्टरों ने एक्स-रे किया। पता चला कि निर्मला क्षय-रोग की शिकार हो चुकी है। क्षय-रोग की बात सुनते ही कृष्णस्वामी और उनकी पत्नी की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। परंतु इस अंधेरे में एक रजत-रेखा ने उन्हें संतोष दिया कि रोग अभी आरंभिक अवस्था में ही था, फिर भी आठ-नौ माह तक नियमित रूप से इलाज चलना जरूरी था। डॉक्टरों ने जब निर्मला की बीमारी के कारणों की तह में जाने की कोशिश की तो उन्हें मालूम था कि कृष्णस्वामी का परिवार खाता-पीता परिवार है। अभाव किसी बात का है नहीं, घर भी साफ-सुथरा और खुला है। यह रोग वंशागत भी नहीं था क्योंकि, कृष्णस्वामी और उनकी पत्नी की दो-तीन पीढ़ी तक तो उनकी जानकारी में कोई भी इस रोग से पीड़ित नहीं हुआ था। अतः डॉक्टर इस नतीजे पर पहुंचे कि गर्भपात से उत्पन्न कमजोरी के कारण क्षय-रोग का संक्रमण उसे लग गया है।

× × ×

नर्सिंग होम में निर्मला एक मैडिकल सोशल-वर्कर रमणी के संपर्क में आयी। संयोग से रमणी और निर्मला एक ही कॉलेज की विद्यार्थी निकलीं। दोनों समवयस्क थीं। बस दो-चार मुलाकातों में दोनों एक-दूसरे से खुल गयीं। अंततः निर्मला ने रमणी को अपनी समस्त व्यथा कथा कह डाली। निर्मला के

निर्मला की मां तो एक घायल शेरनी की भांति थी । शेखर के दुर्व्यवहार के कारण ही कृष्णस्वामी की मृत्यु हुई । उसी की वजह से निर्मला को तपेदिक हुई । और उसे इतनी परेशानियां उठानी पड़ीं । जब शेखर क्षयरोग से ग्रसित है, तो ऐसी स्थिति में निर्मला को उसके पास भेजना निर्मला को पुनः मृत्यु के मुंह में भेजना था ।

माता-पिता तो निर्मला के गर्भपात को एक आकस्मिक घटना समझे हुए थे । लेकिन जब उन्हें शेखर के निर्मला के साथ दुर्व्यवहार और विश्वासघात का पता चला तो कृष्णस्वामी अंदर ही अंदर टूट गये । वह अपने-आप को इस स्थिति से उबार नहीं सके । और दिल के दौरे से चल बसे । निर्मला की मां का दुख दुगना हो गया । आर्थिक संकट भी पैदा हो गया, परंतु उसने निर्मला के उपचार में कतई कमी नहीं आने दी ।

× × ×

समाज-सेविका के नाते जब रमणी ने शेखर और उसके माता-पिता से संपर्क स्थापित किया तो पाया कि निर्मला ने अपने पति के बारे में जो कुछ बताया था, वह बिलकुल सही था । रमणी द्वारा हर कोशिश किये जाने के बावजूद शेखर निर्मला को घर पर लाने के लिए राजी नहीं हुआ, फिर अब तो शेखर के पास उसके क्षय-रोग का बहाना था । ऐसी स्थिति में रमणी ने परमेसरी से मिलना उचित समझा । शेखर की बातों से उसे ज्ञात हो चुका था कि बात बहुत आगे बढ़ चुकी है और शेखर और परमेसरी के भावी-स्वप्नों को तोड़ना आसान नहीं होगा । फिर भी रमणी ने परमेसरी से संपर्क किया । एक-दो बार वह उसके साथ बंजारों के जीवन के बारे में बातें करती हुई उसके घर तक भी गयी । परमेसरी के माता-पिता दिनभर काम पर बाहर रहते थे, इसलिए उसे रमणी का घर आना और बैठकर बातें करना अच्छा लगता था । जब रमणी ने परमेसरी का विश्वास जीत लिया, तो एक दिन मौका पाकर उसने उससे पूछ लिया, "परमेसरी, शेखर साहब तुम्हें कितना चाहते हैं ?"

परमेसरी के लिए शेखर-जैसे खुशहाल व्यक्ति का प्यार जीत लेना एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी । कुछ खुशी के अतिरेक में और कुछ अपनी मानसिक अपरिपक्वता के कारण परमेसरी ने शेखर के साथ अपने संबंधों की प[illegible] कथा उगल दी । और यहां तक बता दिया कि पौष माह बीतते ही वे दोनों आर्य समाज में शादी कर लेंगे ।

"यह तो बड़ी खुशी की बात है, परंतु क्या तुम्हें मालूम है कि हिंदू-मैरिज-एक्ट के अनुसा[illegible] पहली पत्नी के रहते और उससे तलाक लिये बिना, दूसरा विवाह करना कानूनी जुर्म है ।"

"यह नियम तो सरकारी-कर्मचारियों पर लागू होता है । शेखर का तो अपना बिजनेस [illegible] है ।"

"परमेसरी, इस धोखे में न रहना । एक बहन के नाते मैं तुम्हें गलत बात नहीं बताऊंगी । हिंदू-मैरिज-एक्ट सभी हिंदुओं पर, स्त्रियों और पुरुषों दोनों पर समान रूप से लागू होता है ।"

"शेखर कहते हैं कि वह निर्मला को टी.बी. के आधार पर तलाक दे देंगे ।"

"शायद, तुम्हें मालूम नहीं है, लेकिन शेखर को यह बात जरूर पता होगी कि निर्मला का रोग ला-इलाज नहीं है, इसका इलाज हो सकता है । तलाक तभी मिलता है, जबकि बीमारी ला-इलाज हो ।"

यह सुनकर परमेसरी स्तब्ध रह गयी । उसके चेहरे का रंग उड़ गया । मानो अपने-से बातें करते हुए वह बोली, "तो शेखर ने यह बात मुझसे क्यों छिपायी ।"

रमणी ने आगे कहा, "मुझे डर है कि शेखर तुम्हारे साथ खिलवाड़ कर तुमसे वैसे ही किनारा कर लेगा, जैसे कि वह निर्मला से कर चुका है । औरत से इस प्रकार की खिलवाड़ करना मर्दों के लिए कोई नयी बात नहीं है । तुम चाहो तो किसी जानकार से पता करा लो कि पहली पत्नी के रहते दूसरी शादी करने के जुर्म में शेखर और तुम्हें सात-सात साल तक की सजा हो सकती है ।"

परमेसरी ने सहमे हुए स्वर में कहा, "तो दीदी, अब तुम मुझे इस जाल से छुटकारे का कोई रास्ता बताओ ।"

"तुमने एक बार मुझे बताया था कि विजयवाड़ा में तुम्हारे मामा रहते हैं । तुम चार-छह माह के लिए विजयवाड़ा चली जाओ । वहां बच्चों का एक 'होम' है । मेरे चाचा उस 'होम' के अधीक्षक हैं । मैं तुम्हें वहां नौकरी दिला सकती हूं ।"

परमेसरी को जैसे तिनके का सहारा मिल गया हो, उसने फौरन ही रमणी की सलाह मान ली और दूसरे रोज ही विजयवाड़ा चली गयी ।

× × ×

जब एक सप्ताह तक परमेसरी काम पर नहीं आयी और उसका कोई अता-पता न मिला, तो शेखर परमेसरी को पाने का स्वप्न धीरे-धीरे भूलने लगा । इस बीच रमणी शेखर के साथ वार्ताओं का क्रम पुनः चलाने में कामयाब हो गयी । शेखर निर्मला को घर लाने पर राजी हो गया और उसे घर ले भी आया । रमणी का उनके यहां आना-जाना जारी रहा ।

शायद, शनि ग्रह की अनिष्टकर स्थिति अर्थात साढ़े-साती अभी तक निर्मला के साथ साये की भांति चिपकी हुई थी । निर्मला असह्य पेट-दर्द के साथ फिर रुग्ण-शय्या पर पड़ गयी और दो सप्ताह के बाद फिर उसी पुराने नर्सिंग-होम में पहुंच गयी । डॉक्टरों का कहना था कि गर्भपात के दौरान उसकी अंतड़ियां जुड़ गयी हैं और इसके लिए शल्य-चिकित्सा के अतिरिक्त कोई चारा नहीं । निर्मला की मां रोग से लाचार बेटी की तकलीफ के सामने अपनी आर्थिक लाचारियां भूल गयी । निर्मला का ऑपरेशन हुआ । ऑपरेशन ठीक हो गया और निर्मला को तेजी से स्वास्थ्य-लाभ होने लगा । अब की बीमारी में शेखर निर्मला के पास नियमित रूप से आता रहा । फिर शेखर का आना अचानक बंद हो गया । रमणी को चिंता

हुई । वह शेखर के घर गयी तो देखा कि शेखर बुखार में बिस्तर पर पड़ा है और खांसी आदि के वही लक्षण उसमें भी दिखायी दे रहे हैं, जो कुछ समय पूर्व निर्मला में दिखायी दिये थे । जांच से पता चला कि वह भी तपेदिक की गिरफ़्त में आ गया है । जब डॉक्टरों ने शेखर की 'केस हिस्ट्री' लिखी तो मालूम पड़ा कि उसके पिता और उसके दादा भी इस रोग को भुगत चुके हैं । अब तो निर्मला के रोग का भी असली-पता मिल गया ।

अब शेखर की ओर से निर्मला को अपने पास बुलाने के लिए संदेशा पर संदेशा आने लगे । इन बुलावों पर फैसला करने से पूर्व निर्मला ने अपनी मां और रमणी से परामर्श लेना उचित समझा ।

निर्मला की मां तो एक घायल शेरनी की भांति थी । शेखर के दुर्व्यवहार के कारण ही कृष्णस्वामी की मृत्यु हुई । उसी की वजह से निर्मला को तपेदिक हुई । और उसे इतनी परेशानियां उठानी पड़ीं । जब शेखर क्षयरोग से ग्रसित है । तो ऐसी स्थिति में निर्मला को उसके पास भेजना निर्मला को पुनः मृत्यु के मुंह में भेजना था ।

रमणी की नजर में निर्मला और शेखर दोनों समाज के बराबर के अंग थे । उसने मां-बेटी से साफ-साफ कह दिया, ''कानून की दृष्टि से निर्मला शेखर की पत्नी है और वह दांपत्य-जीवन के अधिकारों के तहत निर्मला की वापसी की मांग कर सकता है, फिर शेखर का रोग असाध्य नहीं है । डॉक्टरों का भी कहना है कि यदि निर्मला नियमित रूप से दवाई लेती रहे, तो शेखर के साथ रहने में उसके स्वास्थ्य को कोई खतरा नहीं है ।''

कानून और डॉक्टरी पक्ष की बात सुनकर निर्मला की मां बोली, ''निर्मला पढ़ी-लिखी और बुद्धिमान है । पूरी स्थिति को वह हम से बेहतर समझ सकती है । इसलिए जैसा वह उचित समझे, वही करे । निर्मला ने अपने मौन को तोड़ते हुए कहा, ''मां, जब मैं स्वस्थ थी, तब भी मैं तुम्हें प्रिय थी और जब मैं क्षय रोग से ग्रस्त हो गयी, तो भी आपने मुझे गले लगाये रखा, तो क्या शेखर के प्रति तुम मुझसे इसी प्रकार के उच्च आचरण की अपेक्षा नहीं करोगी ?''

''एक अच्छे पति को तो हर नारी अपनाती है, परंतु देवी तो वही नारी है, जो पति में त्रुटियां होने पर भी उससे रिश्ता तोड़ने की बात न सोचे ।''

''क्या केवल नारी को ही देवी होने का प्रमाण-पत्र देना अनिवार्य है ? क्या पुरुषों के लिए भी कोई नियमावली होती है या नहीं ?'' मां ने कहा ।

मां-बेटी दोनों एक-दूसरे की ओर देख रही थी और दोनों मौन थीं ।

— राजभवन,
हैदराबाद (आ.प्र.)

प्राज्ञश्चैको बहुभिर्जोषमास्ते ।
प्राज्ञ एको बलवान् दुर्बलोऽपि ॥
(महाभारत, शांति पर्व २११/४२)

ज्ञानी बहुतों के साथ रहकर भी मौन रहता है, ज्ञानी अकेला दुर्बल होने पर भी बलवान है ।

दर्द दिल को दरिया बनाता है

● विजय अग्रवाल

करीब चौहत्तर साल पुरानी बात है, जब हिंदी साहित्य की कविता के इतिहास में एक नये वाद का जन्म हुआ था। इसका नामकरण किया गया—छायावाद। दुर्भाग्यवश मैं उससे बहुत प्रभावित रहा। इस प्रभाव का कारण न तो मैं स्वयं था, और न ही छायावादी कविताएं। बल्कि इसके कारणों की तलाश करने पर मुझे इसका कारण मेरी 'बालि उमरिया' में नजर आयी। जब आपकी मूंछें निकल रही हों, तब प्यार-व्यार की बातें कुछ ज्यादा ही पसंद आती हैं। यदि प्रेमिका हो तो संयोग श्रृंगार भाता है, और न हो तो वियोग श्रृंगार। इन दोनों की पर्याप्त गुंजाइश इन कविताओं में थी, और किसी भी दिलवाले या दिलवाली के साथ इन दोनों में से कोई भी एक-न-एक तो होता ही है। चूंकि हम भी दिलवाले थे, इसलिए हमारे साथ भी ऐसा हो गया, और संस्कृत का नीति संबंधी एक भी श्लोक याद न कर पाने की क्षमता रखनेवाले इस पुट्ठे को जयशंकर प्रसाद की 'आंसू' ज्यों-की-त्यों याद हो गयी, इतनी कि खुद जयशंकर प्रसाद को क्या याद रही होगी। बात यहीं खतम नहीं हुई, बल्कि दूर तलक गयी और हमने 'आंसू' के पैटर्न पर कुछ छंद रच डाले, और उन्हें किसी अनाम एवं अदृश्य प्रेमिका को समर्पित कर स्वयं में जयशंकर प्रसाद बनने की प्रबल संभावनाओं के दर्शन करने लगे।

उस जमाने में कुछ छायावादी कहानियां और बाद में कुछ छायावादी उपन्यास भी आये, और हमने बिना सोचे-विचारे उनको पढ़ डाला। 'गुनाहों का देवता' पढ़कर कई बार गुनाह करने का मन हुआ, लेकिन हिम्मत नहीं जुटा पाये। 'पुरस्कार' कहानी पढ़कर हमें लगा कि काश! कोई हमारे साथ भी मरने को तैयार होता, लेकिन जब हम खुद ही मरने से डरते थे, तो हमारे साथ मरने का दुस्साहस भला कौन बेवकूफ कर सकती थी। वैसे 'उसने कहा था' कहानी पढ़कर हमने पहली बार फैसला किया कि हम फौज में जाएंगे। लेकिन बाद में यह सोचकर फैसला बदल दिया कि "आखिर वहां जाकर मरेंगे किसके लिए", क्योंकि हमने बचपन में लहनासिंह की तरह किसी से यह पूछा ही नहीं था कि "क्या तेरी कुड़माई हो गयी।" वैसे सच तो यह था कि पूछते भी

वैसे 'उसने कहा था' कहानी पढ़कर हमने पहली बार फैसला किया कि हम फौज में जाएंगे । लेकिन बाद में यह सोचकर फैसला बदल दिया कि 'आखिर वहां जाकर मरेंगे किसके लिए', क्योंकि हमने बचपन में लहनासिंह की तरह किसी से यह पूछा ही नहीं था कि ''क्या तेरी कुड़माई हो गयी ।'' वैसे सच तो यह था कि पूछते भी कैसे, और किससे, क्योंकि जिस जंगली अंचल में हमने अवतार धारण किया था, वहां गर्भ में ही बच्चों के रिश्ते तय कर दिये जाते थे, बशर्ते कि एक के लड़का हो, और दूसरे के लड़की ।

कैसे, और किससे, क्योंकि जिस जंगली अंचल में हमने अवतार धारण किया था, वहां गर्भ में ही बच्चों के रिश्ते तय कर दिये जाते थे, बशर्ते कि एक के लड़का हो, और दूसरे के लड़की । संयोग से हम इसके शिकार होने से बच गये थे, क्योंकि वहां आसपास कोसों तक हमारी अपनी जाति का कोई युगल निवास नहीं करता था ।

लेकिन जनाब, उस जमाने के फिल्मी गीतों का भी क्या कहना ? ऐसे-ऐसे सीधे-सादे, किंतु असरदार गीत हुआ करते थे कि आज के 'धक-धक करता है', जैसे गीत उनके सामने पानी भरते नजर आते हैं । देहात में अकेले होने के कारण अकसर हम 'दो हंसों का जोड़ा बिछुड़ गयो रे, जुलम भयो रामा, गजब भयो रे', तथा 'कौन परदेशी मेरा दिल ले गया, मीठी-मीठी अंखियों में आंसू दे गया' गीत गाया या गुनगुनाया करते थे । एक बार हमारी दादीजी ने हमें इनका रियाज करते हुए सुन लिया । इन गीतों में उन्हें अश्लीलता की दुर्गंध मिली । बस फिर क्या था । हमारी ऐसी सुराई हुई कि आज तक सुर हमारे गले से लाख कोशिशों के बावजूद नहीं निकलते ।

किंतु मन था कि मानता ही नहीं था । गले में एक गीत मरा नहीं कि बीज-दैत्य की तरह दो गीत जन्म ले लेते थे । चूंकि मैं भी थोड़ा बड़ा हो गया था, और नाक के नीचे काली धारी उभरने लगी थी, इसलिए कुछ साहित्यिक किस्म के गीतों को समझने की कुब्बत आ गयी थी । अब मैं 'चंदन-सा बदन, चंचल चितवन, धीरे-से तेरा ये मुसकाना', तथा 'बदन पर सितारे लपेटे हुए'—जैसे गीतों के लिए अपने गले को तैयार करने लगा था । इस बारे में मैं शत-प्रतिशत आश्वस्त था कि ये उपमाएं केवल शहर की लड़कियों पर सही उतरेंगी । फलस्वरूप मैं जब कभी शहर जाता, और जाने-अनजाने में जब कोई लड़की या लड़कीनुमा औरत मेरे बगल से गुजरती, तो मैं वातावरण में चंदन की सुगंध की अपेक्षा करने लगता । और उसके स्थान पर पसीने की बू पाकर भयानक तौर पर निराश हो जाता । रात को जब तारों से झिलमिलाते आकाश को देखता, तो लगता कि देश की सारी सुंदरियां

इन्हीं के टुकड़ों को लपेटकर धरा पर अवतरित हुई हैं । बरसात के दिनों में मुझे साहिर लुधियानवी का लिखा हुआ वह गीत बहुत ही याद आता था कि 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वह बरसात की रात ।' इस गीत के याद आते ही मुझे जगह-जगह पानी में भीगी हुई नवयौवनाएं सिकुड़ी-सिमटी-सी खड़ी दिखायी देने लगतीं, जिनकी साड़ी देह से चिपक गयी है, और लटें मुंह के सामने लटक गयी हैं, जिनमें से टप-टप करके पानी टपक रहा है । ऐसे समय में लगता कि काश ! हम स्वयं पानी की बूंद बनकर उन लटों से टपककर उसके गालों पर बह रहे होते । लेकिन चूंकि पिछले जन्म में पुण्य कुछ ज्यादा ही कर लिये थे, इसलिए मनुष्य योनि मिली ।

ठंड के दिनों में यदि हमें पसीना-पसीना करना हो, अथवा गरमी के दिनों में कंपकंपी चढ़ानी हो, तो उसका सबसे सरल और बिना किसी प्रकार के खर्च का उपाय यह है कि हमें किसी नायिका को छूने को कह दिया जाए । एक बार की बात है । होली के दिन थे । हम पहुंच गये अपनी क्लास मेट के यहां अबीर लगाने । हम चुटकियों में ढेर सारा अबीर भरकर उसे अपनी तथाकथित (?) के साफ-सुथरे माथे पर इस प्रकार चिपकाने का प्रयास करने लगे, ताकि हमारी अंगुलियां बिना माथे को छुए सही-सलामत रहें । लेकिन कंमबख्त सूखे हुए अबीर ने माथे पर ठहरने से इनकार कर दिया । नतीजन मेरी अंगुलियों ने जैसे ही उनके माथे का स्पर्श किया कि सारे शरीर में आठ सौ अस्सी वोल्ट का झटका दौड़ गया ।

इसी से मिलती-जुलती एक अन्य हास्यास्पद छायावादी घटना यूं घटी कि हम अपनी एक ऐसी ही क्लास फैलो के यहां शाम की चाय पर बिना बुलाये जा धमके । यह फैलो तो मेरे क्लास की थी, लेकिन फ्रैंड बगलवाले क्लास के एक लड़के की थी । फिर भी एक ही कमरे में बैठकर, एक ही टीचर के द्वारा एक समय में एक ही विषय पढ़ने के कारण हम अपना भी पूरा-पूरा अधिकार जमाये रखना चाहते थे । खैर । तो चाय आयी । उस जमाने में आज—जैसे मग्गों का प्रचलन नहीं था, बल्कि कप-प्लेट वाली प्यालियां होती थीं । संयोग कुछ यूं हुआ कि हमारी तथाकथित (?) ने अपने सुंदर-सुंदर कोमल हाथों में चाय से भरी हुई प्यालियां थामकर हमारी ओर बढ़ा दिया । हमने अपनी प्लेट में विराजमान उस कप को उठाना चाहा । उन्होंने कहा कि "प्लेट भी लें ।" अब हमने अपनी सांसों को प्राणायाम की मुद्रा में साधकर पूरी सतर्कता से प्याली पकड़नी चाही । लेकिन भगवान जाने कैसे हुआ कि प्याली के तल को थामने की प्रक्रिया में हम उनकी अंगुली भी थाम बैठे । बस फिर क्या था । काफी समय तक वे कप-प्याले हमारी हथेलियों पर कत्थक करते हुए जल-तरंग का संगीत पैदा करते रहे । अंत में जब वह तथाकथित अपनी हथेली में लौंग और इलायची लेकर आयी, तो पहले हमने यह सुनिश्चित करना चाहा कि कहीं कोई लौंग या इलायची अटेंशन की मुद्रा में खड़ी तो नहीं है । लेकिन जब पाया कि जेल के दरवाजे पर तैनात भारतीय पुलिस की तरह प्रत्येक लौंग-इलायची सुस्त होकर लेटे की मुद्रा में हैं, तो हमने यह

कहकर अपनी जान बचायी कि "चाय बहुत अच्छी बनी थी । मैं लौंग-इलायची खाकर उसका जायका खराब नहीं करना चाहता ।" हालांकि वह घटना वहीं, उसी वक्त खतम हो गयी, लेकिन हमारे मन में आज तलक यह भ्रम बरकरार है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि वह अपनी हथेली को तश्तरी के रूप में इसलिए प्रस्तुत कर रही थी, ताकि वह फिर से हमारी अंगुलियों का स्पर्श सुख पा सके । और यदि ऐसा हो गया, तो हो सकता है कि यह भी हुआ होता कि मामला और आगे बढ़ा होता, और बढ़ते-बढ़ते कहीं भी पहुंच गया होता । लेकिन हमारे छायावाद ने उसकी भ्रूण हत्या कर दी । वैसे एक प्रकार से यह अच्छा ही हुआ, अन्यथा यदि कहीं इस संबंध ने विकसित होकर पति-पत्नी का रूप धारण कर लिया होता, तो मैं आज उससे जुड़ी उन मधुर स्मृतियों को भूलकर उन क्षणों को कोस रहा होता ।

एक और बात उन्हीं बेवकूफी के दिनों की है, जब हम सब अपना दिल तश्तरी में लिए हुए 'चना-चूर गरम' वाले की तरह कुछ न कुछ गाते हुए घूमते रहते हैं, भले ही कोई सुने या न सुने ।

परीक्षा शुरू होने ही वाली थी । मैं दिनभर की पढ़ाई करके शाम को साइकिल पर सवार हो सवा रुपये का इलायची दाना लेकर मंदिर की ओर जा रहा था कि क्या देखता हूं कि एक देवी और एक देवता सड़क के किनारे खड़े नीम के दरख्त के नीचे प्रेम की ध्यानावस्था में तल्लीन हैं । यह देखकर मेरी ईर्ष्या के सर्प ने फन उठाया, और फुफकारते हुए सोचा "काश हम भी ऐसी योग निद्रा प्राप्त कर पाते ।" खैर... हम मंदिर गये, और भगवान से परीक्षा में अपने सफल-असफल होने के बारे में कुछ भी नहीं मांग सके, क्योंकि उस समय हमें जिसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी, उसे भगवान से मांगने में हमें शरम आ रही थी । हम उस रातभर नहीं पढ़ सके । अगले दिन हिंदी-साहित्य का पेपर था । हमने छांट-छांट कर प्रश्न हल किये जैसे—सूर की गोपियों का विरह, महादेवी वर्मा की वेदना, जयशंकर प्रसाद की सौंदर्यचेतना, तथा 'साकेत' में उर्मिला का दर्द । एक प्रश्न नहीं बन रहा था । अतः उसके लिए हमने 'पंत का प्रकृति चित्रण' प्रश्न चुना । पंत को मैंने पढ़ा नहीं था, क्योंकि मुझे उनकी कविताएं अच्छी नहीं लगती थीं । लेकिन पंत अच्छे लगते थे । मैं उनके व्यक्तित्व से इसलिए बहुत अधिक प्रभावित था, क्योंकि वे लड़कियों—जैसे दिखते थे और अनेक लड़कियां और शादीशुदा औरतें उन्हें देखने की कोशिशें करती रहती थीं । मैंने पंत के प्रश्न को हल करने की एक तरकीब निकाली । किया यह कि मैंने पिछली शामवाली लड़की पर नीम के वृक्ष का आरोपण किया, और उस लड़की के सौंदर्य के साम्य पर पंत की प्रकृति का सौंदर्य लिख मारा । आपको शायद यकीन नहीं होगा, लेकिन बात सोलहों आने सच है कि मुझे उस पेपर में जितने नंबर मिले, उतने उन पेपरों में भी नहीं मिले, जिनके उत्तर मेरे रटे हुए थे । उस दिन से मेरी यह धारणा बन गयी कि परीक्षा का संबंध पढ़ने से नहीं बल्कि अनुभूति से है । इसलिए मैंने हिंदी साहित्य में एम. ए. करने का फैसला किया । ताकि कॉलेज का लेकचरर बनकर कुंवारी कन्याओं को उनके सौंदर्य का आभास करा सकूं । योजनानुसार एम. ए.

किया । कॉलेज की नौकरी भी मिली । लेकिन एम. ए. करने और नौकरी मिलने के बीच समय का अंतराल इतना अधिक रहा कि मेरे घरवालों को यह चिंता सताने लगी कि कहीं लड़के के विवाह की उम्र ही न गुजर जाए । फलस्वरूप नौकरी मिलने से पहले ही मेरे घरवालों ने मेरे लिए घरवाली लाना उचित समझा । मेरे श्वसुर एक समझदार नेता थे । अतः उन्होंने अपने दामाद के निठल्ले बैठे रहने को एक 'उभरती हुई प्रतिभा का हनन' तथा 'युवा-शक्ति का अपव्यय' समझते हुए लड़कों के एक कॉलेज की नौकरी की व्यवस्था करा दी । मेरे दोनों सपने टूट गये—छायावादी ढंग से शादी करने का, तथा लड़कियों को उनके सौंदर्य का बोध कराने का ।

मरता क्या न करता । मैंने भी अपने श्वसुर को अपना आदर्श मानकर आवश्यकतानुसार दल बदलने की ठानी, और जयशंकर प्रसाद के खेमे को त्यागकर प्रेमचंद के खेमे में शामिल हो गया । इस दलबदल के सैद्धांतिक आधार थे—मेरे परम पूज्य श्वसुरजी, तथा इसकी आंतरिक प्रेरणा थी—मेरी धर्मपत्नी । मेरे श्वसुरजी का सिद्धांत था—'जीवन में सफलता ही सब कुछ होती है । वह चाहे जैसे भी मिले ।' और मेरी पत्नी देखने में ही 'कलगी बाजरे की' थी, इसलिए मुझे अज्ञेयजी की तरह सफाई देने की कभी जरूरत ही नहीं पड़ी । मेरी पत्नी के दर्प से दमदमाते चेहरे तथा पुरुषोचित कंठध्वनि ने मुझे अपने सुखमय, द्वंद्वरहित तथा शांत जीवन के लिए प्रगतिशील हो जाने की प्रेरणा दी । मुक्तिबोध मेरे आदर्श कवि हो गये तथा 'अंधेरे में' कविता मेरी भगवद्‌गीता हो गयी ।

एक लंबे अंतराल के बाद मुझे वह नीम के पेड़ के नीचेवाली लड़की मिली, जिसका नाम नीलम था । मैंने उससे उस लड़के का हालचाल यह सोचकर पूछा कि वह निश्चित ही नीलम का पति होगा, क्योंकि मैंने उन दोनों को जिस समाधिस्थ अवस्था में देखा था, उसके बाद तो इन दोनों प्रेमी-प्रेमिकाओं का पति-पत्नी हो जाना ही श्रेयस्कर था । लेकिन उसने जो बात बतायी, वह सुनकर मेरे तो होश उड़ गये । उसने बताया कि चूंकि उस लड़के के माता-पिता तैयार नहीं थे, इसलिए उसने कुएं में छलांग लगाकर अपनी जान दे दी । मैंने उससे जानना चाहा कि उसके माता-पिता तैयार क्यों नहीं थे, जबकि उसके माता और पिता ने स्वयं आपस में प्रेम एवं अंतरजातीय विवाह किया था । उसने एक लंबी सांस लेते हुए बताया—

"मेरे पिता सामान्य थे, जो उनके लड़के को विशेष कुछ नहीं दे पाते ।"

इतना कहकर नीलम अचानक चुप होकर कहीं खो गयी । उसकी आंखें डबडबा आयीं और शरीर पर रोमांच के छोटे-छोटे दाने उभर आये । उसकी यह अवस्था देखकर मैं भावुक हो उठा । मेरा मन किया कि मैं उसके आंसू पोंछ दूं । लेकिन मैं हमेशा की तरह सोचता रह गया, क्योंकि इससे पहले ही उसकी पांच साल की बेटी ने अपनी मम्मी को रोता हुआ देखकर अपनी नन्हीं-नन्हीं हथेलियां उसके गालों पर फेर दी थीं । और मैं सोचने लगा कि दहेज की बेदी पर यह एक छायावाद कुरबान हो गया ।

—टाइप ५/२४-ए, राष्ट्रपति एस्टेट,
नयी दिल्ली-११०००४

वैद्य की सलाह

देवीदत्त, थाना भवन

प्रश्न : उम्र साठ साल । भूख कम लगती है, पेट में हर समय वायु मालूम पड़ती है । कभी शौच तीन चार बार जाना पड़ता है । कभी एक बार । कमजोरी मालूम पड़ती है । सस्ती दवा लिखें ।

उत्तर : ''लवणभास्कर चूर्ण'' एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । ''चित्रकादि वटी'' एक-एक वटी भोजन बाद पानी से लें । हल्का सुपाच्य भोजन लें ।

आर. बी. पाठक, बड़ौदा

प्रश्न : मां की उम्र ४७ साल । लगभग ७ वर्ष पहले से 'हिस्टीरिया' के दौरे पड़ने लगे । शरीर कमजोर हो गया व मोटापा बढ़ गया । अंगरेजी दवा दे रहे हैं, दो चार माह में दौरा नहीं आया, किन्तु सिर में बहुत भयंकर दर्द होता है, कई बार बात करते-करते चुप हो जाती है । सारा परिवार परेशान है ।

उत्तर : ''वातकुलान्तकरस'' पांच ग्राम

''प्रवालपिष्टी'' पांच ग्राम

साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह शाम शहद से । ''सारस्वतारिष्ट'' दो चम्मच अश्वगन्धारिष्ट'' दो चम्मच भोजन बाद पीयें । ''ब्रह्मरसायन'' एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

प्रोमिला, कपूरथला

प्रश्न : उम्र ४५ साल । छाती में बराबर दर्द बना रहता है । शुरू में डाक्टरों ने निमोनिया बताया था । हर प्रकार की जांच करा चुकी हूं । सभी कुछ ठीक है । अनेक प्रकार की दवा ली है । कोई फायदा नहीं । छह माह से बहुत परेशान हूं । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : ''सितोपलादिचूर्ण'' साठ ग्राम

''श्रृंगभस्म'' तीस ग्राम

''मुक्ताशुक्ति भस्म'' दस ग्राम

''गिलोय सत्व'' दस ग्राम

सभी दवाओं की साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम पानी से लें । ''महायोगराज गुग्गल'' एक-एक वटी दोपहर रात दूध से लें ।

रेखा, धमासा

प्रश्न : कमर, पीठ, पिंडलियों में दर्द हमेशा रहता है । अब ऐड़ी में भी होने लगा है, सुबह उठने पर पैर जमीन पर रखना मुश्किल होता है ।

उत्तर : ''महायोगराज'' एक-एक वटी सुबह शाम दूध से लें ।

चंद्रप्रकाश, आसनसोल

प्रश्न : बिटिया दस वर्ष की है । पेट में बाईं ओर दर्द कभी भी हो जाता है । अनेक इलाज किये विशेष लाभ नहीं । जांच में भी कुछ नहीं आ रहा है । दर्द के समय बच्ची भयंकर रूप से परेशान हो जाती है । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : ''शूल वज्रणी वटी'' पांच ग्राम

''स्वर्णसूतशेखर रस'' तीन ग्राम

''शंखभस्म'' पांच ग्राम

''पुनर्नवामण्डूर'' दस ग्राम

सभी औषधियों की नब्बे मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-दोपहर-रात थोड़ी सौंफ उबालकर उसको छानकर हल्के गरम पानी से दें । ''कांकायन वटी'' एक-एक वटी भोजन बाद दें । दही-चावल देर से पचनेवाली वस्तुएं, तली वस्तुओं का परहेज कर तीन माह औषधि सेवन करायें ।

मोहन वर्मा, उज्जैन

प्रश्न : उम्र सत्ताइस वर्ष । छाती में दर्द, पसलियों में हर समय तनाव, पुराना जुकाम, बार-बार पेशाब

आता है । धातु दौर्बल्यता ।

उत्तर : "लवंगादिचूर्ण" साठ ग्राम
"श्रृंगभस्म" बीस ग्राम
"मुक्ताशुक्ति भस्म" दस ग्राम
साठ मात्रा बनायें । "एक-एक मात्रा सुबह-शाम पानी से लें । "च्यवनप्राश अवलेह" एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

कल्पना, भावनगर

प्रश्न : उम्र तीस साल । शरीर में काले-काले दाग अनेक स्थान पर हो गये हैं । आंखों के नीचे कालापन हो रहा है । अभी अविवाहित हूं । मानसिक तनाव में जी रही हूं ।

उत्तर : परिस्थितियों से समझौता कर स्वास्थ्य का ध्यान करें । समयानुसार सभी ठीक हो जाएगा । "केशोरगुग्गल" एक-एक वटी सुबह शाम पानी से लें ।

"आरोग्यवर्धनी वटी" एक-एक वटी भोजन बाद पानी से लें । "ब्रह्मरसायन" एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

शिवजी प्रसाद, मुंगेर

प्रश्न : उम्र ३१ वर्ष । पांच वर्ष से पेट में काफी गैस बनती है । दो वर्ष पूर्व पीलिया हुआ था । हल्का-सा जिगर में दर्द रहता है । काफी परेशान हूं ।

उत्तर : "वूचर्नवामण्डूर" तीस ग्राम
"आरोग्यवर्धनी" दस ग्राम
"शंख भस्म" दस ग्राम
साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम पानी से लें । "रोहितकारिष्ट" दो-दो चम्मच पानी से ले लें ।

तली वस्तुएं-देर से पचने वाली वस्तुएं सेवन न करें । तीन माह नियमित दवा लें ।

रविशंकर, काजी पेठ

प्रश्न : उम्र ३० वर्ष पत्नी को सहवास के समय बहुत दर्द होता है । सभी परीक्षण कराये सभी कुछ ठीक है । गृहस्थ जीवन का सुख न मिलने के कारण, मानसिक तनाव बना रहता है ।

उत्तर : "चंद्रप्रभावटी" एक वटी
"आरोग्यवर्धनी वटी-एक वटी
सुबह-शाम पानी से लें ।

रमेश, फरीदाबाद

प्रश्न : उम्र पच्चीस वर्ष । नाक से खून कभी भी आ जाता है । तीन साल से गरमी में यह परेशानी बनी रहती है । अनेक इलाज कराये । स्थायी लाभ नहीं होता है ।

"आवलाचूर्ण" सौ ग्राम
"मुक्ताशुक्तिपिष्टी" पंद्रह ग्राम
नब्बे मात्रा बनायें । सुबह-दोपहर-शाम एक-एक मात्रा पानी से लें । तीन माह नियमित दवा सेवन करें ।

राम, छपरा

प्रश्न : उम्र ४३ वर्ष । पेट में छोटे धागे की तरह छोटे-छोटे कृमि हैं । बहुत ज्यादा परेशान हूं । अनेक इलाज किये लाभ नहीं है ।

उत्तर : "कृमि मुदगर रस" एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से । "विडंगारिष्ट" दो-दो चम्मच भोजन बाद पियें ।

बी ५/७ कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

किसी ध्येय की सफलता के लिए मनुष्य की पूर्ण एकाग्रता और समर्पण आवश्यक है ।

– ब्राउन

विजयदशमी पर्व पर

रीवा-राज्य के ग्रामीण अंचलों में जब कभी बड़े-बूढ़ों से रीवा राजघराने की चर्चा होती है, तब बड़े चाव से लोग रीवा के राजाओं और राजघराने से जुड़ी कहानियां सुनाने लगते हैं। विभिन्न विशेषताओं को बताते हुए यह भी कहते हैं— 'कबहूं देखै लाइक होत रहा, रीवा केर राजसी दसराहा।'

रीवा रियासत बहुत बड़ी तो नहीं रही, किंतु



बांधवेश महाराज गुलाब सिंह दशहरा जुलूस निकालने के पूर्व भाषण देते हुए

इसका प्राचीन गौरव महत्त्वपूर्ण रहा है। रीवा के नरेश कवि-कलाकारों का सम्मान करते थे, साधु-संतों की सेवा करते थे और प्रजा-पालन में तत्पर रहते थे। एक बार अब्दुल रहीम खानखाना ने एक ब्राह्मण की पुत्री के विवाह के लिए सहायता देने के उद्देश्य से निम्नलिखित दोहा रीवा के महाराजा रामचंद्र के पास भेजा—

चित्रकूट में रमि रहे रहिमन अवध नरेस।
जा पर विपदा परत है सो आवत एहि देस॥

राजा ने इस दोहे को पढ़ते ही एक लाख रुपये प्रदान कर रहीम के पत्र का सम्मान किया। उन्होंने ही संगीत सम्राट तानसेन को आश्रय देकर सम्मानित किया। उसी समय रीवा राज्य के सीधी इलाके (वर्तमान सीधी जिला) के गोघरा गांव में महान मेधावी बीरबल पैदा हुए थे और राजा के द्वारा समादृत हुए थे। तानसेन और बीरबल दोनों ही रीवा की ओर से शहंशाह अकबर के दरबार में गये थे और नवरत्नों में गिने जाते थे। महाराज विश्वनाथ

रीवा क

सिंह ने कविवर हरिनाथ के एक कवित्त पर एक लाख रुपये प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया था। विश्वविजयी गामा को आश्रय देनेवाले रीवा के राजा वेंकटरमण सिंह ही थे। आज भी गामा का अखाड़ा रीवा के अमहिया मोहल्ला में स्थित है। रीवा नरेशों ने केवल कवि-कलाकारों को सम्मानित ही नहीं किया है, अपितु स्वयं भी साहित्य-सृजन में भाग लिया। महाराज जयसिंह, विश्वनाथ सिंह और रघुराज सिंह इन तीनों नरेशों ने लगभग अर्द्धशतक ग्रंथों की रचना की है। हिंदी के प्रथम नाटक 'आनंद



दशहरा दरबार सन' ४७

दशहरा : राजसी ठाठबाट !

● रामसागर शास्त्री

रघुनंदन' के प्रणेता महाराज विश्वनाथ सिंह ही थे । कसाइयों के हाथों से गायों को छुड़ानेवाले महाराज वेंकटरमण सिंह थे, उन्होंने ही खुले जंगल में सफेद शेर को बंदी बनाया था । देश आजाद होने के पूर्व महाराजा गुलाब सिंह ने १६ अक्तूबर, १९४५ को उत्तरदायी शासन की घोषणा कर जन-प्रतिनिधियों का मंत्रिमंडल बना दिया था । देशी रियासतों में रीवा की अपनी अलग पहचान थी ।

रीवा के राजघराने में विजय-दशमी उत्सव मनाने की परंपरा काफी पुरानी रही है । महाराजा वेंकटरमण सिंह के शासन-काल (सन १८८० से १९१८) में दशहरा का उत्सव बड़े पैमाने पर मनाया जाने लगा था । उस समय रीवा राज्य में दस हजार फौज थी । पूरी फौज दशहरा के दिन जुलूस में शामिल होती थी । सबसे पहले मुख्य हाथी पर सोने का सिंहासन रखा जाता था, उसमें बांधव गद्दी के राजाधिराज लक्ष्मणजी की सोने की मूर्ति स्थापित की जाती थी । हाथी के पीछे महाराजा वेंकटरमण सिंह अश्व पर सवार होकर चलते थे । उनके पीछे पदानुसार इलाकेदार, पवाईदार, संभ्रांत नागरिक और फौज चलती थी । इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए राज्यभर की जनता पैदल चलकर रीवा पहुंचती थी । सायंकाल रावण-वध के बाद कार्यक्रम संपन्न होता था । दूसरे दिन राजदरबार होता था और इलाकेदार, पवाईदार और जनता राजा को नजर-न्यौछावर भेंट चढ़ाती थी ।

महाराजा गुलाब सिंह के शासनकाल (सन १९१८ से १९४६) में विजय दशमी का उत्सव और अधिक धूमधाम से मनाया जाने लगा । महीनेभर पहले से दशहरा के उत्सव की तैयारी

होने लगती थी । पूरा नगर नयी दुल्हन की तरह सज जाता था । इलाकेदार, पवाईदार, जनता एवं कर्मचारियों को किस प्रकार से दशहरा-उत्सव में सम्मिलित होना है, पूरा कार्यक्रम लिखित रूप में तैयार हो जाता था । ज्यों-ज्यों उत्सव नजदीक आता जाता, त्यों-त्यों सभी सजग होते जाते थे । दशहरा के दिन प्रातःकाल से ही हजिरिहा परेड मैदान में इलाकेदारों, पवाईदारों, अंतर पवाईदारों की भीड़ लग जाती थी ।

हाजिरीवाला मैदान

रीवा के किला के पूर्व जनाना बाग के सामने रानियों को झूला झूलने के लिए कनात लगाकर स्थान सुरक्षित कर दिया जाता था, उसके सामने पश्चिम की ओर लंबा-चौड़ा मैदान 'हजिरिहा परेड' नाम से विख्यात था, क्योंकि पहले फौज की हाजिरी होती थी और बाद में इलाकेदार, पवाईदार आदि की हाजिरी होने लगी, इसलिए मैदान का नाम 'हजिरिहा परेड' नाम पड़ गया । महाराजा वेंकटरमण सिंह के शासनकाल में प्रत्येक एकादशी को पूरी दस हजार फौज इस मैदान में खड़ी होती थी और सबकी हाजिरी होती थी । उसके बाद समस्त फौजी जवान सामने स्थित भगवान श्री जगन्नाथजी के मंदिर में पंक्तिबद्ध होकर जाते थे और भगवान के दर्शन कर चरणामृत लेते थे । महाराजा स्वयं भी फौजी अधिकारी की हैसियत से भगवान का चरणामृत लेने के लिए जाते थे । फौजी जवानों के चरणामृत लेने के कारण भगवान श्री जगन्नाथजी के मंदिर का नाम 'चरणामृती मंदिर' पड़ गया । पुराने लोग आज भी इसे चरणामृती मंदिर ही कहते हैं ।

हजिरिहा परेड मैदान में खासगी विभाग के कर्मचारी राज्य के सभी इलाकेदारों और पवाईदारों की हाजिरी लेते थे । महाराजा के आदेशानुसार हर इलाकेदारों को दशहरा-उत्सव में भाग लेने के लिए दो हाथी, तीन ऊंट, पांच घोड़े और दस पैदल सिपाही अपने साथ लाना अनिवार्य था । पवाईदारों के लिए एक हाथी, पांच घोड़े, पांच पैदल सैनिक नियत था । सभी इलाकेदार, वरहगौंहा (बारह गांव के ठाकुर) पवाईदार संभ्रांत नागरिक भी सरदार घोषित थे । वे सभी सिपहसालार लवाजमा के साथ चलते थे । तलवार धारण करना, चूड़ीदार पायजामा, अचकन, जोधपुरी साफा पहनना सबके लिए आवश्यक था । ऊंटों पर नगाड़े बजते थे । जो इलाकेदार, पवाईदार या कोई सरदार अपने निर्धारित लवाजमा के साथ उपस्थित नहीं होते थे, उन्हें जुर्माना भरना पड़ता था ।

दशहरा के दिन सायंकाल छह बजे हजिरिहा

रीवा की क्षेत्रीय भाषा बघेली में वहां के लोग दशहरा को दसराहा कहते है, क्योंकि उनकी मान्यता है दशहरा के दिन दसों दिशाएं, जो वर्षा ऋतु के कारण अवरूद्ध थीं, खुल जाती हैं ।



दशहरा जुलूस में गजरथ

परेड से इलाकेदार और पवाईदार अपनी श्रेणी के अनुसार जुलूस के रूप में किले के लिए प्रस्थान करते थे और सात बजे तक किले पहुंच जाते थे । निर्धारित समय पर अर्थात ठीक सात बजे महाराजा गुलाबसिंह अपने तामझाम से सफेद चूड़ीदार पायजामा, सफेद अचकन, शुतुरमुर्ग की कलगी लगे जोधपुरी साफा बांधे किले से निकलते थे । महाराजा के निकलने के पूर्व नकीव बोला जाता था कि 'महाराजा बांधवेश पधार रहे हैं ।' इसके बाद महाराजा नीलकंठ पक्षी का जोड़ा आकाश में उड़ाकर चौदह कहारों के मियाना (पालकी—जैसा, किंतु अधिक सुंदर) में बैठकर सबसे पहले

दशहरा जुलूस में सबसे आगे बैंड-पार्टी



राजाधिराज के मंदिर में जाकर दर्शन करते थे । उसके बाद महामृत्युंजय का दर्शन कर राघव महल के सामने बनी छतरी पर खड़े होकर हाथ जोड़कर सर्वप्रथम कहते थे— 'मैं जनता-जनार्दन को प्रणाम करता हूं ।' इसके बाद उपस्थित तीन-चार लाख जनता के समक्ष सरस्वतीजी की वंदना करते थे । तत्पश्चात गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस के उत्तरकांड का प्रथम श्लोक बोलकर पुष्पक विमान पर विराजमान भगवान रामचंद्र को प्रणाम करते थे । इसके बाद वह भाषण देते थे । भाषण बघेली भाषा में होता था । लगभग दो घंटे के भाषण में वह राज्य की विभिन्न समस्याओं एवं जनता के हित में किये गये कार्यों की चर्चा करते थे । उस समय प्रत्येक स्टेट में अंगरेजों के प्रतिनिधि रहते थे । जिन्हें 'एजेंट वाइस प्रेसीडेंट आफ इंडिया' कहा जाता था, जो लंदन रिटर्न होते थे । उन पर व्यंग्य करते हुए महाराजा अपने भाषण में कहा करते थे—
'अष्टानां लोक पालानां नराणां च नराधियः ।
अर्थात, आठ दिग्पालों की मुझ पर सदैव

छत्रछाया रहती है । मैं नरों में श्रेष्ठ राजा हूं । एजेंट साहब लंदन रिटर्न हैं पर मैं देववाणी संस्कृत जानता हू, अतः मैं वैकुंठ रिटर्न हू । कोई भी सरदार या मेरा मुलाजिम प्रजा को सताएगा, तो जैसे बहेलिया लावा के बच्चे को मसल देता है, उसी प्रकार मसल दिया जाएगा ।'

प्रत्येक दशहरा के अपने भाषण में महाराजा गुलाब सिंह अपनी प्रजा की सुविधा और लाभ पहुंचाने की कोई न कोई नयी घोषणा अवश्य करते थे । हिंदी भाषा के संबंध में वे कहा करते थे—

हिंदी रीवा राज्य की, भाषा सर्व प्रधान
हिंदी को अपनाइये, जो है सुगम महान ।

भाषण के अंत में कहते थे— 'अब मैं अपना भाषण समाप्त कर जंकामंका वाली कुरसी पर बैठता हूं ।' वे सोने-चांदी और हीरे-मोती से जड़ी हुई कुरसी पर थोड़ी देर बैठते थे । उसके बाद नौ बजे जुलूस निकलता था । सबसे पहले 'दिलदार' नामक हाथी पर सोने का सिंहासन रखा जाता था, उस पर बांधवगढ़ी के राजा शेषावतार लक्ष्मणजी की सोने की मूर्ति रखी जाती थी । 'दिलदार' हाथी सबसे आगे चलता था । दूसरे हाथी पर राजा और उसके बाद अपने-अपने हाथी-घोड़ों पर श्रेणी के अनुसार सभी इलाकेदार, पवाईदार, संभ्रांत नागरिक, फौज, पुलिस, आम जनता चलती थी । आगे-आगे बैंडबाजा बजता चलता था । बीच-बीच में ऊंटों पर नगाड़े बजते थे । पूरे मार्ग में जुलूस देखने के लिए अपार जनसमूह पंक्तिबद्ध कतारों में खड़ा रहता था । जुलूस के आगे निकलते ही जन-समूह भी पीछे-पीछे चल देता था । बीच-बीच में 'बांधवगढ़ी की जय', 'बांधवंश की जय', 'महाराजा की जय', आदि जयघोषों से आकाश गुंजायमान हो जाता था । महाराजा हाथ जोड़कर मुसकराते हुए जनता जनार्दन का अभिवादन स्वीकार करते थे । मुख्यमार्ग से चौहट्टा (चौराहा) होते हुए परेड ग्राउंड पहुंचते थे, जहां कई लाख जनता महाराजा के दर्शन के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षारत रहती थी । जुलूस पहुंचने पर खड़ी भीड़ जय-जयकार करती थी । इलाकेदार, पवाईदार, फौज-पुलिस और आम जनता सभी स्त्री-पुरुष अपने-अपने नियत स्थान में व्यवस्थित बैठ जाते थे । अपार जन समूह अपने आप व्यवस्थित दृष्टिगोचर होता था ।

हाथी कुचलता था रावण को

मैदान में रावण और कुंभकर्ण की मिट्टी की बनी मूर्तियां स्थापित की जाती थीं । मैदान में पहुंचने पर सरदारों की पुनः हाजिरी होती थी । उसके बाद दिलदार हाथी रावण और कुंभकर्ण की मूर्तिओं को गिराकर कुचल देता था । रामलीला मंडली के राम-लक्ष्मण भी इस लीला में सम्मिलित होते थे । रामलीला के बाद जुलूस के रूप में प्रातः पांच बजे वापसी होती थी ।

दूसरे दिन उज्जैनिन महारानी मेमोरियल हाल में दशहरा दरबार लगता था । उसमें सभी सरदार सम्मिलित होते थे । सभी इलाकेदार, पवाईदार और आम जनता अपनी हैसियत के अनुसार महाराजा को गिन्नी, सोने की मोहर, चूड़ा आदि निर्धारित नजराना देते थे और न्यौछावर करते थे । कुछ नकद रुपया भी भेंट करते थे । नजर-न्यौछावर में प्राप्त सोने में गड़बड़ी होने पर महाराजा ने राज्य की ओर से

गिलट की नकली गिन्नी, मोहर और रुपये बनाने का आदेश दे दिया था, इसलिए नजर न्यौछावर करनेवालों को सोना एक दिन पूर्व दे देना पड़ता था। उसके बदले में नकली सामान मिल जाता था, जो मौके पर राजा को भेंट कर दिया जाता था। असली सोना या जेवरात सीधे नजर-न्यौछावर में नहीं दिया जा सकता था। असली को कार्यालय में जमा करके नकली लेना ही पड़ता था। इस नियम का कड़ाई से पालन होता था।

तीसरे दिन सहभोज का आयोजन होता था, जिसमें सभी इलाकेदार, पवाईदार, सरदार मुलाजिमों को सम्मिलित होना अनिवार्य था। सहभोज में पूड़ी, सब्जी, तस्मई, गोविंदवरी आदि विविध व्यंजन परोसे जाते थे। सहभोज में महाराजा स्वयं सम्मिलित होते थे। यदि कोई सरदार या मुलाजिम सहभोज में सम्मिलित नहीं होता था, तो उसकी पदावनति कर दी जाती थी। क्योंकि कर्मचारियों के नियुक्ति आदेश में लिखा रहता था कि यदि ला परहेजी हैं, तो नियुक्ति दी जाती है। इसकी जांच सहभोज में हो जाती थी।

आज दशहरा के उत्सव में वह उत्साह तो नहीं रह गया है, फिर भी उत्सव मनाने की परंपरा चल रही है। अब भी दशहरे का जुलूस किले से ही निकलता है। जनता स्वयं तैयारी करती है। आधुनिक ढंग से विभिन्न प्रकार की चौकियां, झांकियां निकाली जाती है। सर्वोत्तम चौकी को पुरस्कार भी दिया जाता है। किंतु इसमें शासन की ओर से कोई सहयोग नहीं मिलता। जनता द्वारा आयोजित इस दशहरे के जुलूस में वर्तमान महाराजा मार्तंडसिंह जू देव सम्मिलित अवश्य होते हैं, और अपनी प्राचीन परंपरा का निर्वाह करते हैं।

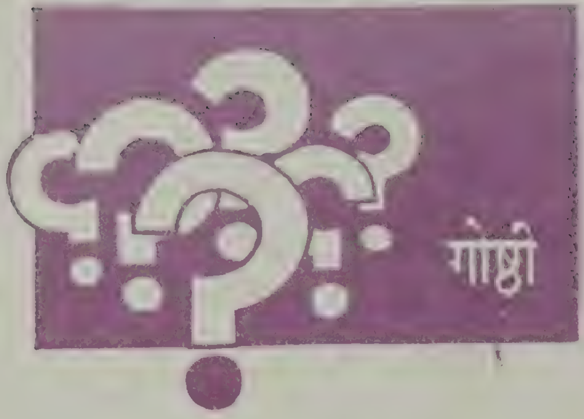
दशहरा को क्षेत्रीय जनता अपनी भाषा में दसराहा कहती है, उसकी मान्यता है कि दसराहा के दिन से दसों मार्ग जो वर्षा ऋतु के कारण अवरुद्ध थे, खुल जाते हैं।

—शास्त्री भवन
अमहिया, रीवा (म.प्र.)

कोलेस्ट्रोल से बहरापन

अभी तक हम सब केवल यही जानते थे कि कोलेस्ट्रोल हृदय रोगों का कारण है लेकिन हाल ही में हुई खोजों से ज्ञात हुआ है कि उच्च कोलेस्ट्रोल की मात्रा से बहरापन भी उत्पन्न हो सकता है। अमरीका में कान के विशेषज्ञ उपचार के लिए विख्यात मोफिस स्थित शेया क्लीनिक में किये गये अनुसंधानों से पता चला है कि कोलेस्ट्रोल बढ़ना अप्रत्यक्ष रूप से बहरेपन को जन्म देता है। डॉक्टरों ने वहां मेनियर्स के सैकड़ों मरीजों के इलाज के दौरान पाया कि उनमें कम से कम ३० प्रतिशत के खून में कोलेस्ट्रोल की मात्रा ज्यादा थी। उन्हें भोजन में कम कोलेस्ट्रोल और नमक रहित खाद्य पदार्थ लेने की सलाह दी गयी तो उन्हें आश्चर्यजनक रूप से लाभ हुआ।

—प्रकाशचंद्र गंगराड़े



उदित नारायण उपाध्याय, रांची

● **आकाश, पृथ्वी, अग्नि, नाग और त्रिशूल क्यों चर्चित रहते हैं ?**

□ ये सभी भारत में बने क्षेप्यास्त्र हैं जो पाकिस्तान की आंखों में चुभते हैं ।

कल्पना सिंघल, अंबाला

● **विदेशों में बसे भारतीय दीवाली आदि पर्व मना पाते हैं ?**

□ त्योहार मनाने के बारे में किसी भी धर्म के अनुयायियों पर कोई बंधन नहीं है । अमरीका में अनेक भव्य मंदिरों की स्थापना हो चुकी है । यही स्थिति यूरोप के अन्य देशों में भी है । ब्रिटेन में पुराने गिरजों की इमारतों को खरीदकर भारतीयों ने अपने पूजा-स्थल बनाये हैं । लंदन के निकट भारतीयों की बस्ती साउदाल में सिखों का एक भव्य गुरुद्वारा है । कैनडा में भी ऐसे ही अनेक उपासनागृह अस्तित्व में हैं । अतः समस्त त्योहार सोल्लास मनाये जाते है जिनमें दीपावली का विशेष महत्त्व है ।



जय प्रकाश मिश्र, सीतामढ़ी

● **शक्तिपीठ और सिद्धपीठ क्या है ?**

□ किसी धार्मिक क्रिया के मुख्य आधारस्थान को पीठ कहते हैं । 'तंत्रचूड़ामणि' में ५३ शक्तिपीठ गिनाये गये हैं । दक्ष प्रजापति की पुत्री और भगवान शंकर की पत्नी सती द्वारा यज्ञ में आत्मदाह के बाद शिव द्वारा क्रोधपूर्ण मुद्रा में तांडव करते हुए उनका शव ले जाए जाते हुए सती के जो अंग जहां-जहां गिरे वे स्थान पवित्र माने गये तथा उन्हें शक्ति (अर्थात देवी) पीठ की संज्ञा दी गयी । 'शिव चरित्र' और 'दक्षियणी तंत्र' के अनुसार केवल ५१ शक्तिपीठ हैं । सिद्धपीठ वे पवित्र स्थल हैं जहां की गयी उपासना से तुरंत मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं । सिद्धपीठ अनेक हैं । दतिया स्थित पीतांबरापीठ भी सिद्धपीठ माना गया है । इनके अतिरिक्त कुरुक्षेत्र और ऋषिकेश सदृश ५१ सिद्धक्षेत्र भी गिनाये गये हैं । (स्रोत : 'हिंदू धर्म कोश' तथा 'हमारे पूज्य तीर्थ') ।

रवीन्द्र कुमार, पटना

● **पृथ्वी का व्यास कितना है ?**

□ इसका विषुवतीय व्यास १२७५६ किलोमीटर और ध्रुवीय व्यास १२७१४ किलोमीटर है । (मैकमिलंस एनसाइक्लपीडिया) ।

सुकुमार गांगुली, इलाहाबाद

● **अंतरराष्ट्रीय ग्रीन क्रॉस क्या है ?**

□ [illegible] समय जिस प्रकार रेडक्रॉस सहायता के लिए तत्पर हो जाता है उसी प्रकार अंतरराष्ट्रीय ग्रीन क्रॉस पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सहायतार्थ पहुंच सके इसी उद्देश्य से इसकी स्थापना की गयी है । रियो द जेनेरियो (ब्राज़ील) के सन १९९२ के पृथ्वी सम्मेलन में

इस संगठन की स्थापना का निर्णय हुआ था । अप्रैल, १९९३ में जापान में इसको मूर्तरूप प्राप्त हुआ ।

भगवंत कटियार, कानपुर देहात

● **चंद्रकांता सीरियल किस उपन्यास पर आधारित है ?**

☐ उन्नीसवीं शताब्दी के इसी नाम के देवकीनंदन खत्री लिखित उपन्यास पर आधारित है ।

पीयूष अग्निहोत्री, कानपुर

● **जैन धर्म के संस्थापक वर्द्धमान महावीर ने शरीर कहां त्यागा था ?**

☐ पावापुरी में ।

मनोज कुमार श्रीवास्तव, पटना

● **ब्राह्मी एवं प्राकृत भाषाओं के उद्भव बतायें ?**

☐ ब्राह्मी कोई भाषा नहीं, एक प्राचीन लिपि है । इसका समय ५वीं सदी ईसा-पूर्व माना गया है । उस समय से लेकर ३५० ई. तक ब्राह्मी लिपि का प्रयोग मिलता है ।

प्राकृत-व्यापक अर्थ के अनुसार प्राकृत का प्रारंभिक रूप पालि, मध्यकालीन रूप प्राकृत तथा उत्तर कालीन रूप अपभ्रंश कहा गया है । मध्यकालीन रूप के अंतर्गत साहित्यिक प्राकृत एक विशिष्ट रूप है । इसके मुख्य भेद शौरसेनी, मागधी, अर्द्धमागधी, महाराष्ट्री, पैशाची है, जिनका उद्भवकाल १०० ई. से ६०० ई. तक माना जाता है । (वैसे यह पूरे एक लेख का विषय है) ।— स्रोत : हिंदी साहित्य कोश. ज्ञान मंडल पृ. ४९२ ।

राहुल वर्मा, हिसार

● **यूरोटनेल का परिचय क्या है ?**

☐ इंगलैंड को यूरोप की मुख्यभूमि से जोड़ने के लिए इंगलिश चैनल (समुद्र) के नीचे से एक सुरंग बनाकर उसमें रेलमार्ग बनाया गया



है । इसे यूरोटनेल का नाम दिया गया है । ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ और फ्रांस के राष्ट्रपति मितरां ने ६ मई, १९९४ को संयुक्त रूप से इस भूमिगत रेलमार्ग का उद्घाटन किया था ।

प्रतिभा जैना, दिल्ली

● **कार्बन और हीरा जहरीले नहीं, फिर हीरे को निगलना क्यों घातक है ?**

☐ कार्बन और हीरा जहरीले नहीं होते, किंतु हीरे की धार अत्यधिक तीक्ष्ण होती है । इसे निगलने से पाचन तंत्र से संबंधित हमारी आंतें कट जाती हैं जो व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनती है । यह सामान्य हीरे से नहीं होता, धारदार हीरे से ही संभव है ।

धनपद यदुवंशी, ग्वालियर

● **संयुक्त राष्ट्र की प्रारंभिक सदस्य संख्या कितनी थी, और अब ?**

☐ संयुक्त राष्ट्र संघ २४ अक्तूबर, १९४५ को ५० सदस्यों से अस्तित्व में आया था और अब इसकी सदस्य संख्या १८४ है । उक्त जिन ५० देशों ने संयुक्त राष्ट्र घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किये थे उनमें भारत भी एक था, और इन देशों को संस्थापक सदस्य कहते हैं ।

मोहन कुमार सरकार, भागलपुर

● **रजनीगंधा-सदृश पौधे रात में ही क्यों सुगंध देते हैं ?**

☐ कुछ पौधे ऐसे होते हैं जो न्यूनतम तापमान में ही पल्लवित होकर बहार पर आते हैं । उन्हें

अधिक तापमान अनुकूल नहीं बैठता । अतः वे रात में फूलते हैं ।

सलोनी वर्मा, मुजफ्फरपुर

● **हिटलर की प्रेमिका कौन थी, और उसकी मृत्यु कैसे हुई ?**

□ हिटलर की प्रेमिका, और मृत्यु से कुछ ही समय पूर्व बनी उसकी पत्नी, का नाम इवा ब्रान (सन १९१०-४५) था । युद्ध में बरलिन का पतन होने पर बंकर में ही दोनों ने आत्महत्या कर ली थी ।

सुलभा आर्य, बड़नगर (म.प्र.)

● **भारत का सबसे बड़ा उद्योग कौन-सा है ?**

□ हमारे देश का सबसे बड़ा उद्योग वस्त्रोद्योग है । भारत के कुल औद्योगिक उत्पादन में कपड़ा उद्योग का हिस्सा लगभग २० प्रतिशत है । इसके अतिरिक्त कुल निर्यात में भी इसकी भागीदारी २० प्रतिशत है । इस उद्योग में अनुमानतया पौने दो करोड़ लोग कार्यरत हैं । अब इस उद्योग के निर्यात संसार के समस्त प्रमुख देशों को हो रहे हैं ।

देवेन्द्र रघुवंशी, सुचेतगढ़

● **जल को जीवन का आधार क्यों मानते हैं ?**

□ मनुष्य के शरीर में उसके वजन का ७० प्रतिशत जल के रूप में होता है । इसमें १२ प्रतिशत की कमी होने पर मनुष्य मरणासन्न हो जाता है । जल शरीर के रक्त संचारण को संभव बनाता है । शरीर की अनावश्यक वस्तुएं जल के सहारे ही बाहर निकलती हैं । शरीर के तापक्रम का नियमन जल से ही होता है ।

रियाज अहमद, टोंक

● **मुद्रण की शुरुआत संसार में किस देश से हुई, भारत में प्रेस कब लगा ?**

□ इस क्षेत्र में चीन अग्रणी माना जाता है । संसार में सर्वप्रथम ६५० ईसवी में लकड़ी और धातु से बनाये गये अक्षरों से छपाई का सूत्रपात चीन में किया गया था । वर्ष ८६८ में संसार की प्राचीनतम पुस्तक 'हीरक सूत्र' चीन में ही छपी बतायी जाती है । संसार का पहला छापाखाना जरमनी के जॉन गुटेनवर्ग ने १५वीं शताब्दी में स्थापित किया था । लेकिन सर्वप्रथम सफल प्रेस स्थापित करनेवाला इंगलैंड का विलियम कैक्सटन था, जिस ने सन १४७६ में वेस्टमिंस्टर में मुद्रणालय खोला था । भारत में पहला मुद्रणालय सन १५५६ में पुर्तगाल से लाये गये यंत्रों से स्थापित किया गया था । इस छापेखाने में पहली पुस्तक 'ईसा के उपदेश' छपी ।

शशि कुमार जोशी, अजमेर

● **संयुक्त राज्य अमरीका का स्वतंत्रता दिवस किस दिन होता है ?**

□ अमरीकी स्वतंत्रता दिवस ४ जुलाई को मनाया जाता है । अमरीकी कांग्रेस ने सन १७७६ में इसी दिन आजादी की घोषणा की थी ।

डिगेश्वर महतो, हजारीबाग

● **हावड़ा पुल का निर्माण कब और किसने कराया था ?**

□ हावड़ा पुल (या रवीन्द्र सेतु) १९४३ में बनकर तैयार हुआ था । इसका निर्माण संयुक्त बंगाल की तत्कालीन सरकार ने कराया था । यह संसार का व्यस्ततम पुल है ।

चलते-चलते

● **अकबर अली जेठा**

● **हम अपनी नौकरियां बदल देते हैं, मित्र बदल देते हैं, यहां तक कि पत्नी भी बदल देते हैं । स्वयं को क्यों नहीं बदल पाते ?**

□ स्वयं को तो हम हर क्षण बदलते रहते हैं ।

— सूत्रधार



देवदासी

● सच्चिदानंद जोशी

आज फिर किरण से मेरा झगड़ा हो गया और मैं उसे आदतन बुरा-भला कह बैठा। अब मन घबरा रहा है, कि कहीं बात का बतंगड़ न बन जाए। ऐसा न हो कि एक बार फिर हम दोनों अपने-अपने द्वीपों पर लौट जाएं और समय का प्रवाह फिर हमारे बीच से बह निकले। पता नहीं क्यों हर बार झगड़ा होने पर यही डर मन में समाये रहता है। फिर भी मन झगड़ा किये बगैर मानता ही नहीं।

यूं तो पति-पत्नी का रिश्ता ही ऐसा है कि इनमें छोटी-मोटी नोक-झोंक चलती ही रहती है। बल्कि वह तो संबंधों को और प्रगाढ़ होने में मदद देती है। पर शायद मेरी जिंदगी में ऐसा नहीं है। मेरे अपनी पत्नी से संबंध ऐसे नहीं हैं कि मैं ऐसी नोकझोंक का, ऐसे झगड़ों का आनंद ले सकूं। सच कहूं, तो अब तक मुझे इसकी कोई शिकायत भी नहीं थी। पर अब न जाने क्यों मन मर्यादाओं को तोड़ने के लिए अकुला-सा रहा है, आदर्शों के बांध टूटते नजर आ रहे हैं, और विचारों के रेले ने एक नया मोड़ ले लिया है।

अभी मेरे पास सोयी किरण को देखें, तो लगेगा कि कुछ हुआ ही नहीं है, हम दोनों के बीच। यही विशेषता है उसकी, पता ही नहीं चलता कि उसके मन में आखिर है क्या ? वह सोचती क्या है ? करती क्या है ?

न जाने क्यों, किरण समझती है कि मैंने उस पर कोई उपकार किया है। न जाने कौन-सी ऐसी ग्रंथि है, उसके मन में जो उसे हीन-भावना से भर देती है। मैं उसे उस हीन-भावना से

बाहर निकालने का लाख प्रयत्न करता हूं, लेकिन सब बेकार चला जाता है। मैं हमेशा उसे समझाने का प्रयत्न करता रहता हूं कि हमारा विवाह कोई मजबूरी, लाचारी या परोपकार में लिया गया निर्णय नहीं था। पर मैं उसके मन की गहरी कंदराओं में भटक जाता हूं। उसके मन की थाह लेने में अपने आपको असफल पाता हूं।

आज भी बात इतनी-सी ही थी पर बढ़ते-बढ़ते इस मकाम पर पहुंच गयी। आज हमारी शादी की चौथी सालगिरह थी। दोस्त लोग भी काफी दिनों से पीछे पड़े थे, इसलिए मैंने एक अच्छी-खासी पार्टी का आयोजन कर डाला। वैसे मैं शुरू से ही एकांतचित्त आदमी हूं, पार्टियां मुझे रास नहीं आतीं। पर पार्टी में घिर जाने पर चुपचुप रहना भी पसंद नहीं है। मैं पार्टी का पूरा आनंद उठाता हूं।

लेकिन किरण का नजरिया दूसरा है। उसे लोगों से मिलना-जुलना, उनके बीच बैठकर बतियाना अच्छा लगता है, कई बार वह शालीनता की सीमा रेखा पार करने की हद तक पहुंच जाती है। किरण ऐसे ही माहौल में बातचीत कर रही थी, मेरे कुछ सहकर्मियों से। उनमें से कुछ पूरे मदहोश थे, कुछ आधे होश में थे। ऐसे में किरण का उनसे बात करना, मजे लेकर खिलखिलाना, मुझे अच्छा नहीं लगा। किरण का स्वभाव निष्छल है पर सामनेवाले की हालत भी तो देखनी चाहिए। लिहाजा मैंने किरण को एक तरफ ले जाकर उसे समझाना चाहा।

''किरण जरा बचपना कम करो। अब यह सब अच्छा नहीं लगता। वे लोग होश में नहीं हैं, कल दफ़्तर में वाही-तबाही बकते फिरेंगे तुम्हारे बारे में।''

मेरा इतना कहना था कि किरण मुंह फुलाकर बैठ गयी, मैंने उसे समझाने का प्रयत्न किया। मैंने लाख कोशिश की कि आये हुए मेहमानों के सामने तमाशा न हो... ''जरा समझो किरण। अब तुम छोटी नहीं हो। हमारी शादी को चार साल होने जा रहे हैं। थोड़ी तो गंभीरता लाओ, अपने व्यवहार में। अब अगर तुम मां बन गयी होती तो सोचो क्या यह सब शोभा देता तुम्हें ?'' यह बात मैंने उसे समझाने के उद्देश्य से कही थी पर किरण को चुभ गयी। पश्चाताप मुझे भी हुआ। मैंने उसके मर्म पर अंगुली रख दी। हालांकि यह बात उतनी ही सच थी कि यदि वह मां नहीं बन सकी, तो मैं भी पिता बनने से वंचित रह गया था। लेकिन किरण तो यकायक भड़क उठी। कहने लगी, ''मेरी कोई भी बात तुम्हें अच्छी नहीं लगती। क्यों खीज उतार रहे हो मुझ पर। अब अगर मुझे बच्चा नहीं हुआ, तो इसमें मेरा दोष कितना है ?'' और फिर वह एकाएक गंभीर होकर बोली, ''सुनो नंदन क्या तुम्हारे भी मन में शंका है कि मैं कभी मां नहीं बन सकती। उस घटना के बाद मैं सचमुच मां बनने के काबिल नहीं रह गयी हूं क्या ? क्या अभी भी तुम सोचते हो कि इस घटना में सारा दोष मेरा है। क्या तुम्हें पश्चाताप हो रहा है, अपने निर्णय पर ?'' और किरण ने उस घटना का हवाला देते हुए एक बार फिर मुझे आहत् कर दिया।

किरण अपनी रौ में बोले चली जा रही थी। ''सुनो नंदन तुमने शादी करके बहुत-बहुत बड़ा उपकार किया है, मुझ पर। अब यदि तुम मुझे

अभी मेरे पास सोयी किरण को देखें, तो लगेगा कि कुछ हुआ ही नहीं है हम दोनों के बीच । यही विशेषता है उसकी, पता ही नहीं चलता कि उसके मन में आखिर है क्या ? वह सोचती क्या है करती क्या है ? न जाने क्यों, किरण समझती है कि मैंने उस पर कोई उपकार किया है, न जाने कौन-सी ऐसी ग्रंथि है, उसके मन में जो उसे हीनभावना से भर देती है ।

छोड़ना भी चाहो, तो मैं बुरा नहीं मानूंगी । तुम्हारे साथ बिताये यह चार साल ही मेरी बाकी जिंदगी को चलाने के लिए संचित पूंजी होंगे । यदि सचमुच तुम मुझे छोड़कर जाना चाहते हो तो जाओ । मैं सारा दोष अपने ऊपर ले लूंगी, तुम पर आंच नहीं आने दूंगी ।''

बात-बात में उसका स्वर कब ऊंचा हो गया, पता ही नहीं चला और सारे मेहमान धीरे-धीरे हमारे इर्द-गिर्द इकट्ठा होने लगे । अपनी बात कहकर किरण जब रुकी, तो लोगों को अपने पास खड़ा देखकर, वह जड़वत् हो गयी और चेतनाशून्य होकर नीचे गिर गयी ।

कहना मैं उससे बहुत कुछ चाहता था । बताना चाहता था उसे कि हमारा विवाह कोई आदर्शवाद नहीं था, न ही वह कोई सामाजिक कार्य था । वह तो एक तरफे प्रेम की परिणिति था । एक ऐसा प्रेम, जिसे किरण कभी नहीं समझ पायी । एक ऐसा प्रेम, जिसने किरण के तमाम दोषों को ढक लिया । एक ऐसा प्रेम जो शाश्वत है, क्योंकि वह किसी घटना से नहीं, बल्कि व्यक्ति से जुड़ा है, एक ऐसे व्यक्ति से जिसे मैंने पूरे जीवन के लिए संगिनी बनाया है । पर मैं उससे ऐसा कुछ नहीं कह पाया । हो सकता है कि मेरा अहम्, मेरा पुरुषार्थ आड़े आ गया हो ।

सुबह के इंतजार में लेटा पड़ा हूं । कब दिन शुरू हो और मेरा विचार-चक्र टूटे ।

बात तब की है जब मैं नौकरी के सिलसिले में लखनऊ पहुंचा था । नयी-नयी नौकरी थी और नया-नया उत्साह भी । किराये पर एक अच्छा-सा फ़्लैट मिल गया था । तनख्वाह भी ठीक-ठाक थी और कुल मिलाकर दिन बड़े अच्छे गुजर रहे थे । मां भी एक-दो बार घर-गृहस्थी जमाने के उद्देश्य से आयी और जाते-जाते बहू ले आने की हिदायत देकर चली गयी ।

रोज नये-नये रिश्ते आ रहे थे । अच्छे से अच्छे घरों के । सुंदर लड़कियों के ! लेकिन मुझे कोई लड़की पसंद ही नहीं आ रही थी । मेरी कल्पना की जीवन-संगिनी किसी की समझ में नहीं आ रही थी । मां का उलाहना भरा खत भी आया, इस बीच, कि तेरे लिए मैं लड़की कहां से ढूंढूं, अच्छा होगा तू खुद ही ढूंढ़ ले ।

मैं कैसे बताता मां को कि मेरी साकार कल्पना तो यहीं थी मेरे पास, मेरे साथवाले फ़्लैट में । हू-बहू मेरी ही परिकल्पना, वैसे ही नाक-नक्श, वैसा ही रंग, कद-काठी । मैं ईश्वर से रोज मनाता कि ''भगवान कैसे भी हो मेरी शादी इसी से होनी चाहिए ।''

साथ-साथ रहने के कारण उन लोगों से

थोड़ी-बहुत जान-पहचान तो हो ही गयी थी। वे लोग पंजाबी थे और किरण उनकी इकलौती बेटी थी। पहला खटका तो यही था कि मां कभी राजी नहीं होगी इस अंतर्जातीय विवाह के लिए। दूसरा खटका था किरण खुद। किरण से मेरे कभी भी आत्मीय संबंध नहीं हो पाये। बावजूद इस बात के कि उसके माता-पिता मुझे बहुत चाहते थे, किरण के स्वर में एक अजीब-सा रुखापन मुझे झलकता था। मैं अकसर उनके घर बैठता, उनके पिता से गप्पें लगाता, कभी-कभार खाना खा लेता, पर किरण से मेरी दूरी ज्यों की त्यों बनी रही।

मन हुआ कई बार कि सीधे किरण के पिता से बात करूं। पर यही सोचकर अपने आपको जब्त कर लिया कि जब किरण का झुकाव मेरी तरफ नहीं होगा, उसके पिता से मैं इस विषय में बात नहीं करूंगा।

मैं बड़े भइया के सुझाये रिश्ते पर लगभग अपना मन बना चुका था और इसकी स्वीकृति मां को भेजनेवाला ही था कि वह भयानक हादसा हो गया। ऐसा हादसा कि जिसने मुझे अंदर से बाहर तक हिला दिया।

अचानक एक दिन किरण घर से गायब हो गयी। उसके माता-पिता बदहवास-से उसे इधर-उधर ढूंढ़ते रहे, पर वह नहीं मिली। चारों तरफ शोर मच गया। तरह-तरह की अफवाहें उठने लगीं, कई तरह की आशंकाओं ने जन्म लिया।

दुखदायी यह था कि किरण का अपहरण नहीं हुआ था, वह किसी लड़के के साथ भाग गयी थी। कोई लड़का था जिसके साथ किरण का खूब मिलना-जुलना था, उसी के साथ किरण भाग गयी थी। उसके माता-पिता तो एकदम किंकर्तव्यविमूढ़-से हो गये। लड़की का घर से गायब हो जाना, वह भी किसी लड़के के साथ। तरह-तरह की बातें उठ रही थीं, अनेकों लांछन लगाये जा रहे थे, उन पर। कई सही और कई गलत मनगढ़ंत कहानियां प्रचलित हो गयी थीं। ऐसे प्रसंग में मां-बाप का सिर उठाकर चलना भी मुश्किल हो जाता है। और मेरी हालत भी तो उन दिनों अजीब हो गयी थी। न जाने कैसी बौखलाहट, झुंझलाहट मन में थी। न जाने क्यों एक अपराध-भाव मुझे खाये जा रहा था।

सात दिन बाद ही पुलिस ढूंढ़ पायी उसे। उसके साथ मिले तीन लड़कों को गिरफ़्तार कर लिया गया। मामला अपहरण और बलात्कार का बना। वह लड़का जिसके बहकावे में किरण भागी थी इतना गलीच और घिनौना था कि उसके साथ किरण के विवाह की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। लिहाजा पुलिस केस, कोर्ट-कचहरी, मुकदमेबाजी इन सभी दौरों से किरण को गुजरना पड़ा। उन तीनों को सजा हो गयी।

इस घटना पर जमकर अखबारबाजी हुई। विवाद उठते रहे। कई समाज-सुधारक कहलानेवाले लोगों ने इस घटना पर अपनी रोटियां सेंकी। किरण का नाम खासा परिचित हो गया और लोग उसके साथ हुई घटना के बारे में जानने को अधिकाधिक उत्सुक होने लगे। इसमें सहानुभूति का अंश नगण्य होता था, बस रस निष्पत्ति ही मूल उद्देश्य रहता था। अखबारों में उसके ऊपर हुए बलात्कार की खबरें लोग चटखारे लेकर पढ़ने लगे। फलतः किरण को

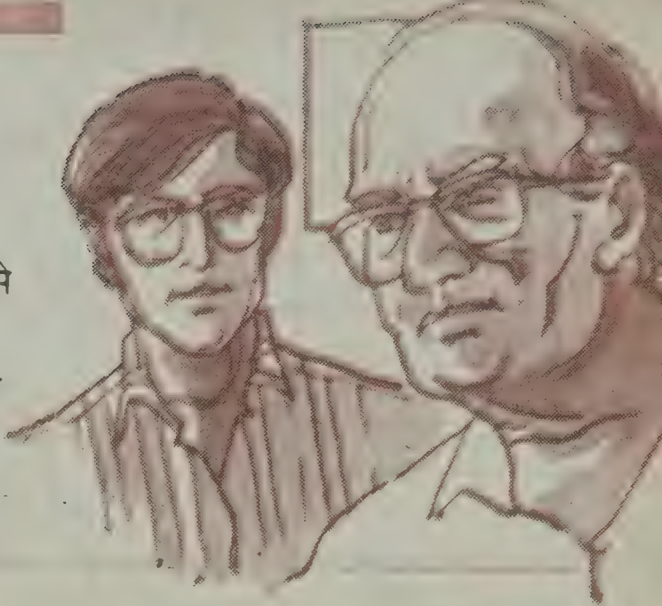
समाज से मिली बदनामी और निर्वासन । लड़कियां, यहां तक कि उसकी अंतरंग सहेलियां तक उससे बातें करने से कतराने लगीं । बड़े-बूढ़े भी उसे घृणा और तिरस्कार से देखने लगे ।

इस घटना के बाद किरण और भी खामोश हो गयी । उसका घर से बाहर निकलना प्रायः बंद था । अब न तो वह कॉलेज जाती, न ही और कहीं । अपने ही अंदर घुलती जा रही थी वह ! कच्ची उम्र में किया गया पाप, उसे बराबर कचोट रहा था ।

मैं उसे समझाना चाहता था, उसका मनोबल बढ़ाना चाहता था । पर हमेशा यही लगता था कि कहीं वह गलत न समझ बैठे । कहीं मेरी सहानुभूति को वह स्वार्थ न समझ बैठे । क्योंकि ऐसे मौकों पर सहानुभूति जताकर, इसका फायदा उठानेवालों की भी कमी नहीं थी । लेकिन उसे लेकर मन उद्विग्न था । बार-बार लगता था कि मैं एक बार, सिर्फ एक बार, जाकर किरण को समझा सकूं । बरबस अपने आपको रोके था । मेरे मन की गुत्थी उलझती ही जा रही थी । उधर घर से शादी के लिए निरंतर दबाव बढ़ता जा रहा था । कई दिन अनिश्चय की स्थिति में रहने के बाद, अंततः मैंने निर्णय ले ही लिया ।

मैंने किरण के माता-पिता के सामने किरण से शादी का प्रस्ताव रखा । किरण के पिता मेरी बात सुनकर हक्के-बक्के रह गये, ''तुम्हें तो सारी बातें मालूम हैं, नंदन । फिर तुम क्यों ऐसा कर रहे हो ?''

''यह सब हुआ, मैंने तो कुछ भी याद नहीं रखा । आप भी उसे एक खराब सपना



समझकर भुला दीजिए । बस आप किरण से इस विवाह की सहमित ले लें, बाकी सब मैं देख लूंगा ।'' मैंने दृढ़तापूर्वक कहा ।

किरण के पिता फिर भी विचलित थे । मुझे भी मालूम था कि वे इस प्रस्ताव को इतनी आसानी से नहीं स्वीकारेंगे । ''देखो बेटा सोच-समझकर निर्णय लो । जीवन के निर्णय यूं कोरे आदर्शवाद पर नहीं लिये जाते । कहीं ऐसा न हो कि यह निर्णय तुम्हारे और किरण दोनों के लिए घातक सिद्ध हो ।'' लेकिन मैं तो निश्चय करके ही आया था, ''यह आदर्शवाद नहीं है, अंकल । आज नहीं तो कल आप किरण की शादी के बारे में सोचेंगे ही । हो सकता है शादी के पहले किरण का इतिहास लड़केवालों तक पहुंचे और रिश्ता होने से पहले टूट जाए । या आप किसी दूसरे शहर में चुपचाप बात तय कर दें और कल को यदि शादी के बाद यह रहस्य उजागर हो तो क्या गारंटी है कि वह लड़का उस हालत में किरण को स्वीकार कर ही लेगा । मैं सब जानते-बूझते शादी का प्रस्ताव कर रहा हूं । इससे बढ़कर मेरी निष्ठा और ईमानदारी का क्या प्रमाण हो सकता है ।''

मैं अपनी बात पर अड़ा रहा और आखिर किरण के पिता भी मान ही गये । मेरा यह प्रस्ताव उनके जीवन में संजीवनी बनकर आया था । किरण ने भी इसे अपनी मौन सहमति दे दी, जो मेरे लिए आवश्यक थी ।

मेरे घर में इस विवाह की प्रतिक्रिया अपेक्षित ही थी । मां और भैया भड़क उठे । उन्हें न विजातीय बहू पर ऐतराज था, न उसके रूप पर, उन्हें एतराज था, तो उसके भूतकाल पर ।

मैं अपनी जिद पर अड़ा रहा । शादी हुई, मैं अपने घर से अकेला बाराती था । एक-दो दोस्तों को भी बुला लिया था जो निमंत्रित कम गवाह ज्यादा थे । मेरी शादी उसी से हुई जिससे मैं चाहता था, पर परिस्थितियां भिन्न थीं । मैं बहुत ज्यादा सतर्क हो गया कि कहीं किरण को मेरी बात का बुरा न लग जाए और वह ! वह मेरे ऋण के नीचे ऐसी दब गयी, मानो वह पत्नी नहीं मेरी दासी हो ।

स्वाभाविक था कि शादी के बाद हम लखनऊ छोड़ देते, लिहाजा मैंने अपना तबादला भोपाल करवा लिया, एक ऐसे शहर में जहां मेरा कोई सगा, कोई परिचित नहीं था । किरण के लिए भी यह शहर एकदम अनजान था । मैं चाहता था कि अतीत हमारा पीछा न करे ।

नये शहर में गृहस्थी नये सिरे से शुरू की । हमारे अंदर एक नया उत्साह था, नयी उमंग थी । अब उस वातावरण का तनाव भी हमारे ऊपर से उठ गया था । हमारी भावनाएं पनपीं, हम एक-दूसरे को जानने-समझने की कोशिश करने लगे और जिंदगी खुशहाल लगने लगी ।

लेकिन आज जो प्रसंग हुआ, वैसा प्रसंग कभी भी उठते ही मन दुविधा में पड़ जाता है । उसके मन में जो अपराधबोध है, उसे बाहर निकालना कठिन हो जाता है । मैं उसे हजार बार कह चुका हूं, आश्वस्त कर चुका हूं कि मैं उस घटना को भूल चुका हूं । कई बार बता चुका हूं उसे कि मैं उसे इस घटना के पहले भी यूं ही चाहता था । पर न वह समझ पाती है, न मैं उसे विश्वास दिला पाता हूं ।

मैं एक सामान्य पति बनकर जीना चाहता हूं, एक ऐसा पति जिसे नाराज होने की, प्रेम करने की, कभी-कभी चंचल होने की स्वतंत्रता हो । पर उसने तो मुझे एकदम आदर्श बना दिया है । उसने मेरी मर्यादाएं बांध दी हैं । और अब इस मंत्रचलित समर्पण से मुझे ऊब होने लगी है । मेरे सपनों के घर को जैसे उसने मंदिर बना दिया है और खुद देवदासी बनकर सेवा करने में जुटी है ।

कब तक चलेगा ऐसा ? अपने ऊपर हुए अत्याचारों की सजा भुगत रही है वह खुद और मैं ! मैं किस अपराध के लिए प्रताड़ित किया जा रहा हूं । मैं देवता बनकर नहीं जीना चाहता, मैं सामान्य आदमी बनकर जीना चाहता हूं । मुझमें भावनाएं हैं, संवेदनाएं हैं और मैं उन्हें संजोकर रखना चाहता हूं ।

अब सुबह का इंतजार है । फिर कोई नयी बात सोचूंगां । नयी तरकीब से सोचूंगा । फिर शायद किरण मेरी बात समझ सके । यही प्रयास तो मेरी नियति बनता जा रहा है अब ! अंतहीन प्रयास ।

—एफ-७७, कोटरा सुल्तानाबाद,
भोपाल-४६२००३

डॉ. वचनदेव कुमार की अंतिम कविता



अजनबी

वचनदेव कुमार हमारे नियमित लेखक रहे हैं। अचानक उनका निधन कुछ समय पहले हो गया। यह उनकी भेजी अंतिम कविता है—सं.

दृष्टि से जाना जाता है दृश्य
पर क्या
स्रष्टा जानता है अपनी सृष्टि को ?
मैंने ही तो तुम्हारा नख-शिख गढ़ा
कोणार्क या हलेविद की शिला-मूर्तियों की तरह
मैंने ही तो तुम्हारा आपाद-मस्तक रंगा
अजंता के भित्ति-चित्र या बाटिक पेंटिंग की तरह
मैंने ही तो तुम्हारी हर मुद्रा रची
कत्थक कली या मणिपुरी नृत्य-भंगिमाओं की तरह !
मैंने ही तो तुम्हारा हर स्वर साधा
तानसेन या बैजू बावरा के राग-संधान की तरह !
मैंने ही तो तुम्हारा हर स्वर गूंथा
'रामचरितमानस' या 'भगवद्गीता' की तरह !
किंतु, क्या मैं जानता हूं
तुम्हारे व्यक्तित्व के शतांश को ?
क्या सागर के लिए
अजनबी नहीं होती हर लहर ?

समर्पित स्व. सोमदत्त बखोरी को

अनंत यात्रा

उस दिन आम के पेड़ के नीचे
पानी पीकर जब कटोरे को
आम के पेड़ के नीचे छोड़ आया था
तो मां ने डांट कर मुझे
उसे रसोई में जहां से उसे लिया था
वापस करने का आदेश दिया था
और मेरे दोस्त ऐसा तो तुम्हारे साथ भी हुआ होगा
इसलिए उस आखिरी घड़ी में भी
तुमने उस आदेश का पालन ही तो किया
जिस शरीर का अंग अंग
यहां की माटी, यहां के पानी
यहां की हवा, यहां की आग
और यहां के आकाश से बना था
उसे यहां छोड़ लौट गये तुम
जहां से इस कुरुक्षेत्र में आये थे
जिस तरह जन्म महज एक लफ्ज़ है
मौत भी तो केवल एक शब्द है ।
सत्य तो यह है हम बारी-बारी से आते हैं ।
सफर पूरा कर बारी-बारी से जाते हैं ।
मैं यह भी कैसे मान लूं मेरे दोस्त
कि तुम खाली हाथ आये और खाली हाथ गये
तुम तो मुट्ठीभरे आये थे
मुट्ठी भर-भर बांटा तुमने
अनंत यात्रा को जाते-जाते एक नये मुसाफिर के वास्ते
तन बदन के साथ मन भी यहीं छोड़ गये
सफर जारी रहे इसलिए उस मुसकान को भी छोड़ गये
जो वहां से लाये थे जहां से तुम आये थे ।

—अभिमन्यु अनत
संवादिता, त्रिओल, मारीशस



वृक्ष की पीड़ा

बीच में कुल्हाड़ा रोककर
पेड़ काटनेवाले ने पूछा—
जीवनभर फूलों की हंसी हंसनेवाले वृक्ष !
आज पत्तियों के आंसू टपकाकर क्यों रोता है
पेड़ ने उत्तर दिया
काटे जाने का दर्द नहीं है मुझे
सिर्फ, सालता है संसार का यह चलन
दूसरों को छाया देनेवाला का
यही हाल होता है ।

हल्केपन का बोझ

कोई भी बोझ हो, कितना ही भारी
कमरतोड़ नहीं होता
आदमी ढोता है उसे
हिम्मत से, हिकमत से
किंतु
एक खेल ऐसा है जो खेलते नहीं बनता
यानी हलकेपन का बोझ
झेलते नहीं बनता ।

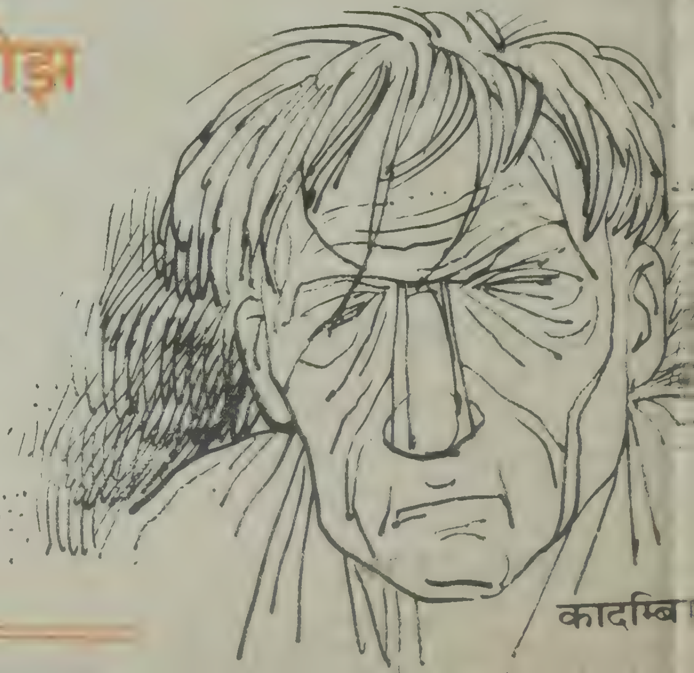
संसार और इतिहा

संसार उनका होता है
जो इसे फलदार पेड़ समझकर
जोर से हिलाते हैं
और मजे में खाते हैं
मगर इतिहास उनका होता है
जो देवताओं की तरह अमृत नहीं,
शिव की तरह हालाहल पीते हैं
अपने से ज्यादा दूसरों के लिए जीते हैं ।

उजाले के सिपाही

सूरज है एक सेनापति
दमकता हुआ दीपक
दहकती हुई मशाल
मादक, मस्त चांद के साथ
झिलमिल टिमटिमाती हुई नक्षत्र-माल
सब हैं प्रकाश के वाहक
ज्योति-पथ के राही
यानी अंधेरे के खिलाफ तैनात
उजाले की सेना के सिपाही ।

—गिरिजाशंकर त्रिवे
दीपशि
४२/९, इंदर रोड, देह



अंतर

आंधी में भरभरा कर
गिरा हुआ पेड़
होता है—उस बूढ़े की तरह
जो जिंदगी के बाकी बचे दिनों को
महज काटने की विवशता झेलता है

वह चाहकर भी
मांग नहीं पाता है
सूरज से थोड़ी-सी सांस
मिट्टी से थोड़ी-सी नमी
और अपने नीचे खड़ी
किसी राह भटकी आकृति से
थोड़ी-सी सहानुभूति
बिलकुल उसी बूढ़े की तरह
जो खाट की पाटी से लगा
चाहकर भी बुला नहीं पाता है
यमराज के किसी दूत को
जो उसकी अंतिम सांस को
उसकी देह से अलग कर दे ।

सड़क के किनारे
धराशायी पेड़
और घर के किसी कोने में
चारपाई पर पड़े बूढ़े में
कुछ भी नहीं होता अंतर
सिवाय इसके कि गिरने के बाद
पेड़ का तना और उसकी शाखाएं
आ जाती हैं काम/ जबकि
किसी बूढ़े के गुजरने पर
उसके अंतिम क्रियाकर्म के बाद
एक कील ठोंककर
महज उसकी तसवीर भर टांग देते हैं
घर की किसी दीवार पर ।

—भगवान दास मोरवाल
डब्लू जेड-५८३ (नजदीक जैन मंदिर)
पालम गांव, नयी दिल्ली-११००४५

सीतामढ़ी

बड़ भागी है सीतामढ़ी
बी. बी. सी. रेडियो ने बोला है नाम
जले हुए बच्चों, लुटी हुई औरतों के नाम
पूजा है अर्चना है गीत है शंख है
पंडित है श्लोक है
चंदन की गंध है
मिसरी और तुलसी का चरनामृत जल है
राम जानकी मंदिर में जलते हुए
दीप हैं
द्वार पर आज भी प्रहरी हनुमान
जय श्री राम की
बड़ भागी है सीतामढ़ी
महमुदवा की झोपड़ी में
मंत्रीजी आये हैं—जले हुए द्वार की ओर से
फटी ओढ़नी से मुंह ढांपकर
झांकती है नूरजहां—कित्ती तो गाड़ी है—
पहली बार देखे हैं इत्ते-इत्ते लोग
नोटों की गड्डी उछालते हैं मंत्री
कहते हैं जले हुए जख्मों को भूलिए
मरे हुए शौहर या बच्चे मां बीवी को भूलिए
बोलिए कितने चाहिए नोट
गम भुलाने के लिए ?
हम आपका दर्द खरीदने आये हैं ।
बड़भागी है सीतामढ़ी
दिल्ली से आते हैं नेता—अखबारों में छपता है नाम
पूछते हैं लोगों से—बोलिए, चुप न रहिए
किसनेलगायीहै आग आपके घरों में
और आपके दिलों में
हम आग बुझाने आये हैं
यह सरकार गिराने आये हैं ?
कितनी बड़ी बात । कितना बड़ा नाम
मसजिद में पढ़ा जा रहा अजान

—डॉ. पद्मा शा झा
सदस्य, बिहार विधान परिषद,
८/१३, आर. ब्लाक, पटना (बिहार)

ग्रह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन होगा । उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रु पक्ष का शमन होगा । स्वास्थ्य विकार रहेगा । वाहनादि से सावधानी रखें । नवीन स्थान की यात्रा होगी । यात्रा उपलब्धिदायी होगी । आध्यात्मिक क्रियाशीलता से सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी ।

वृषभ : पारिवारिक एवं राजकीय समस्याओं का समाधान होगा । जोखिमपूर्ण कार्यों से लाभ होगा । उत्साह तथा उल्लासपूर्ण वातावरण का उदय होगा । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी । शत्रुपक्ष से सुलह के अवसर होंगे । परोपकारी कार्यों से यश वृद्धि होगी । सामाजिक नेतृत्व के अवसर मिलेंगे । प्रवास कार्यों में पीड़ा होगी, किंतु नवीन मित्रों का समागम सुखद होगा ।

मिथुन : नवीन योजनाओं से भाग्योदय होगा । न्यायालयीन कार्यों में उल्लेखनीय उपलब्धि होगी । नवीन संपत्ति अथवा वाहन का सुख प्राप्त होगा । आजीविका की दिशा में इच्छित कार्यों में सफलता मिलेगी । प्रवास में पीड़ा होगी । शत्रु पक्ष से सचेत रहें । व्यर्थ संभाषण से विरोधाभासों का उदय होगा । पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी ।

कर्क : नवीन दायित्वों में वृद्धि होगी । उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रुपक्ष का पराभव होगा । लंबित योजना पूर्ण होगी । प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । प्रवास में अपरिचितों से सतर्कतापूर्ण व्यवहार रखें । संपत्ति के कार्यों में विलंब हितकर होगा ।

सिंह : मास उपलब्धिपूर्ण होगा । आत्मविश्वास एवं साहसिक प्रयासों से विशिष्ट लाभ होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । नवीन संपर्कों से वांछित परिवर्तन होगा । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि प्रभावित करने का प्रयास करेगा । संभाषण में संतुलन रखें, धार्मिक स्थान की यात्रा होगी । न्यायालयीन अथवा संपत्ति के कार्यों में सफलता मिलेगी । स्वास्थ्य विकारों का उदय होगा ।

कन्या : पारिवारिक सहयोग से उत्साह में वृद्धि होगी । नवीन कार्यों की अधिकता होगी । उच्चाधिकारियों से संयमित व्यवहार करें । आकस्मिक धनागम से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी । मनोरंजन, भ्रमण अथवा आमोद-प्रमोद में व्ययाधिक्य होगा । परोपकारी कार्यों में सावधानी रखें । उदर अथवा रक्त विकार का सामना करना होगा ।

तुला : मास में राजकीय कार्यों की पूर्ति होगी । स्वजनों के सहयोग से संपत्ति की समस्या का समाधान होगा । आकस्मिक धनालाभ होगा ।

ग्रह स्थिति : सूर्य १७ अक्तूबर से तुला में, मंगल कर्क में, बुध तुला में, वक्री २४ को कन्या में, गुरु तुला में, शुक्र तुला में, शनि कुंभ में, राहू तुला में, हर्षल नेप्चयून धनु में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

पर्व और त्यौहार

१ अक्तूबर-इंदिरा एकादशी, एकादशी श्राद्ध, २-प्रदोष व्रत, महात्मा गांधी एवं लालबहादुर शास्त्री जन्मदिवस, ४-पितृ विसर्जन, श्राद्ध की अमावस्या महालया समाप्त, ५-कहू अमावस्या, ६-शारदीय नवरात्रारंभ कलश स्थापना, ९-ललिता व्रत, १२-दुर्गाष्टमी महाष्टमी/श्री महानवमी व्रत, १३-विजयादशमी विजय मुहूर्त (दिन में १.११ से १.५४ मि. तक), १५- पापा कुशा एकादशी, १६-प्रदोष, अग्रसेन जयंती, १८-व्रत पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, १९-अश्विनी पूर्णिमा, २१-अशून्य शयन व्रत, २३-संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी, २७-अहोई अष्टमी, २८-श्री राधा जयंती, ३१-गोवत्स द्वादशी ।

प्रवास की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । परोपकारी कार्यों से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । मासांत में नवीन दायित्व मिलेगा ।

वृश्चिक : आजीविका की दिशा में व्यर्थ विरोधाभासों का उदय होगा । गृहोपयोगी वस्तु पर धन व्यय होगा । पारिवारिक वातावरण खिन्नतापूर्ण रहेगा । निकटजन अथवा मित्रों से सहयोग मिलेगा । संपत्ति अथवा न्यायालयीन कांर्यों में व्यर्थ धन व्यय होगा । मासांत में उच्चाधिकारी वर्ग की अनुकंपा होगी । रोजगार संबंधी आंशिक सफलता मिलेगी ।

धनु : मास में परिश्रम तथा पुरुषार्थ से प्रतिकूल स्थितियों पर विजय मिलेगी । पारिवारिक वातावरण खिन्नतादायी होगा । व्यर्थ व्ययों की अधिकता रहेगी । नवीन स्थान के प्रवास में सावधानी रखें । संपत्ति कार्यों में धीमी उन्नति होगी । प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । उत्तरार्ध में लगन तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी प्रभावित होंगे । आकस्मिक धन लाभ से लंबित समस्या का समाधान होगा ।

मकर : आर्थिक दिशा में अवरोध उपस्थित होंगे । मित्रों से अकारण वैमनस्यता बढ़ेगी । संभाषण में संतुलन रखें । उच्चाधिकारियों से अपेक्षित सहयोग मिलेगा । पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता रहेगी । मित्रों के सहयोग से संपत्ति की समस्या का समाधान होगा । प्रवास में जोखिमपूर्ण कार्य न करें ।

कुंभ : मास में कार्यों की अधिकता होगी । संपत्ति संबंधी उल्लेखनीय सफलता मिलेगी । आजीविका की दिशा में वांछित पद परिवर्तन से प्रसन्नता होगी । पारिवारिक दायित्वों से तनाव में वृद्धि होगी । व्यर्थ संभाषण से पीड़ा होगी । आध्यात्मिक कार्यों से यश में वृद्धि होगी । व्यर्थ संभाषण से पीड़ा होगी । आध्यात्मिक कार्यों से यश में वृद्धि होगी । प्रवास से धनलाभ होगा ।

मीन : मास में उच्चाधिकारियों से विरोधाभासों में वृद्धि होगी । शत्रुपक्ष क्रियाशील रहेगा । पारिवारिक सहयोग से उत्साह तथा साहस में वृद्धि होगी । सामाजिक अथवा धार्मिक कार्यों में नेतृत्व का अवसर मिलेगा । संपत्ति के कार्यों में व्यर्थ व्यवधान एवं विलंब होंगे । प्रवास लाभदायी होगा । उत्तरार्ध में नवीन मित्रों का समागम होगा ।

—ज्योतिषधाम पत्रिका
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर .
गोविंदपुरा, भोपाल (म. प्र.)



● अजय भाम्बी

टेकराज पांडेय, म. नगर (नेपाल)
प्रश्न : आर्थिक परेशानी कब तक ? रोजगार का साधन क्या होगा ?
उत्तर : नौकरी के लिए प्रयास करें, जल्द ही सफलता मिलेगी ।

मनीषा गुप्ता, उत्तर काशी
प्रश्न : मुझे भाई की प्राप्ति कब तक होगी ?
उत्तर : अगले वर्ष योग बन रहा है ।

राजीव रंजन सिंह, आरा
प्रश्न : न्यायाधीश बनने की संभावना कब ?
उत्तर : १९९५ में संभावना है ।

अनिरुध कपिल, जम्मूतवी
प्रश्न : क्या आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति होगी ?
उत्तर : आध्यात्मिक लक्ष्य से आपका क्या तात्पर्य है कृपया अगली बार स्पष्ट करें ।

कल्पना, उदयपुर
प्रश्न : सगाई कब होगी ?
उत्तर : सगाई का योग चल रहा है ।

गौरव कुमार, झांसी
प्रश्न : क्या चार्टर्ड एकाउंटेंट बनने का योग है ?
उत्तर : प्रयत्न करें, बन जाएंगे ।

मीरा त्रिपाठी, शिवपुरी
प्रश्न : क्या जिस लड़के से मेरा प्यार चल रहा है, उसी से मेरा विवाह होगा ?
उत्तर : संभावना कम है ।

चिमन लाल, दिल्ली
प्रश्न : प्राइवेट प्रैक्टिस कब चलने लगेगी ?
उत्तर : हतोत्साहित न हों, प्रेक्टिस अवश्य चलेगी ।

नवीन, केकड़ी (अजमेर)
प्रश्न : पदोन्नति कब होगी ?
उत्तर : अप्रैल' ९५ तक ।

राजेन्द्र कुमार, लखनऊ
प्रश्न : लखनऊ से स्थानांतरण कब तक तथा किस दिशा में ?
उत्तर : प्रयास करें जल्द ही हो जाएगा ।

शांति लाल, आमेर
प्रश्न : आत्म साक्षात्कार योग कब ?
उत्तर : मार्च' ९७ में । अपने ध्यान को गहरा करें ।

पुष्पा संग्रोला, हल्द्वानी
प्रश्न : मेरा स्वयं का मकान कब तक ?
उत्तर : तीन वर्ष के भीतर ।

जयराज शर्मा, बांदा
प्रश्न : पी. एच.डी. कब तक पूरी होगी ? पूरी भी होगी या नहीं ?
उत्तर : अवश्य पूरी होगी, प्रयास करें ।

डॉ. एन. एल. भाटिया, भिलाई
प्रश्न : कष्टों से छुटकारा कब ?
उत्तर : अगले वर्ष से ।

अरुण साहनी, दिल्ली
प्रश्न : विदेश व्यापार एवं भाग्योदय कब ?
उत्तर : भाग्योदय ३२ साल की आयु में ।

सारिका, मुरादाबाद
प्रश्न : बीमारी (दौरे) से कब मुक्ति मिलेगी ?
उत्तर : नवम्बर से स्वास्थ्य में सुधार आने की संभावना है । योग्य चिकित्सक का भी परामर्श लें ।

सुजान सिंह, विदिशा
प्रश्न : रुका हुआ पैसा कब प्राप्त होगा ?
उत्तर : जून' ९५ के बाद ।

प्रियदर्शिनी, बंबई
प्रश्न : दूसरी संतान कब और क्या ?
उत्तर : अगले वर्ष कन्या ।

अनिल कुमार, लखनऊ
प्रश्न : पेट का रोग कब ठीक होगा ? कोई उपाय ?
उत्तर : आपकी कुंडली गलत है ।

श्रीमती श्यामलता, देहरादून
प्रश्न : प्रवक्ता पद पर नौकरी कब तक लगेगी । रत्न सुझायें ?
उत्तर : अगले वर्ष संभावना है । पन्ना धारण करें ।

सरल जैन, किशनगढ़ (अजमेर)
प्रश्न : कार व मकान कब तक ?
उत्तर : दोनों योग ११ नवम्बर के बाद चलेंगे ।

आभा कौशिक, गोरखपुर
प्रश्न : विवाह कब तक, रत्न बतायें ?
उत्तर : जुलाई' ९५ तक । पुखराज धारण करें ।

शालू भाटिया, झांसी
प्रश्न : मेडिकल में दाखिला कब तक ?
उत्तर : १९९५ में आपको सफलता प्राप्त होगी ।

अजय कुमार, गया
प्रश्न : व्यवसाय या नौकरी कब तक ?
उत्तर : अभी नौकरी, फिर व्यवसाय ।

कृपाशंकर कुदेसिया, आगरा
प्रश्न : यह लड़का अपनी मौसी के पास से अपने मां-बाप के पास कब आएगा ?
उत्तर : अगले वर्ष के उत्तरार्ध में ।

—'नक्षत्र-निकेत',
४०६, ढाका चैम्बर २०६८-६९/३८ नाईवाला करोलबाग, नयी दिल्ली-५

१५१



नाम..
जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख)..........**महीना**............**सन**..............................
जन्म-स्थान....................**जन्म-समय**..
वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण...
पता..
आपका एक प्रश्न ....
इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें......................................

संपादक (ज्योतिष विभाग)—प्रविष्टि १५१, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
अंतिम तिथि : २० अक्तूबर, १९९४

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

दिल का वाल्व खराब

क. ख. ग., बैरागढ़ (भोपाल) : आयु २२ वर्ष, बी. ए. फाइनल कर चुका हूं। १२वीं कक्षा में अचानक सर दर्द की वजह से न पढ़ पाने की समस्या थी। मेडिकल जांच द्वारा पता चला कि दिल का एक वाल्व खराब है। तब से मुंह सूखता है, तीन-चार लोगों के बीच बात नहीं कर पाता तथा बात-बात पर घबराहट होती है। अकेले फिर मैं अपने को कोसता रहता हूं। घर का वातावरण शुरू से तनावपूर्ण था। मुझे याद है बचपन में मेरे पिता बात-बात पर पिटाई करते थे। किसी भी अच्छी नौकरी के लिए साक्षात्कार देने में मुंह सूखने, न बोल पाने की समस्या हावी हो जाती है। डॉक्टर साहब क्या करूं ?

दिल के वाल्व का आजकल ऑपरेशन संभव है। हमारे देश में इस क्षेत्र में बहुत प्रगति हुई है। हाल ही में दिल का प्रत्यारोपण कर हमारा देश उन गिने-चुने देशों में है। परंतु लगता है अपने को भिन्न व एक रोगी समझ कुंठा, हीन भावना के आप शिकार हो गये। घरेलू वातावरण से यह भावनाएं दृढ़ता पकड़ने लगीं। अब अपने बचपन को लेकर पिता को दोषी ठहराना व्यर्थ है। वास्तव में जब हम तनाव व उदास होते हैं, तब केवल खराब बातें ही सोचते हैं। वह क्षण याद नहीं आते जब पिता ने कभी प्यार भी किया होगा। मुंह सूखना 'तनाव' का चिह्न है। इसकी वजह से आपको दूसरों के सम्मुख बोलने में दिक्कत होती है। आपको चाहिए कि पहले अपने सामनेवाले ऐसे व्यक्ति से खुलकर बात करें जो मानसिक व सामाजिक स्तर पर आपसे नीचे हो, फिर धीरे-धीरे अपना आत्मविश्वास उत्पन्न कर इस स्तर से ऊपर पहुंचें। शुरू-शुरू में मुंह न सूखे इसके लिए इलायची आदि मुंह में रख लें। बाद में इसकी आवश्यकता नहीं होगी।

मन में निराशा

रा. कु. सिंह, गढ़ी कुर्मा (बिहार) : २० वर्ष का स्नातक छात्र हूं। दसवीं कक्षा के पश्चात से ही मन में निराशा, कुंठा घर कर गयी है, जिसके चलते अत्यधिक निराशावादी व घोर प्रतिक्रियावादी हो गया हूं। खुद को तो हंसी आती नहीं दूसरों की हंसी पर गुस्सा आता है। इसी चिड़चिड़ेपन की वजह से मित्रगण मुझे 'आधा पागल' कहते हैं। अपने सगे-संबंधियों की कभी-कभी मृत्यु की कामना करने लगता हूं। फिर अपने आप को पापी समझता हूं। परेशानी में स्वयं की मृत्यु की कामना करता हूं। कृपया उचित समाधान करें।

आप दो-तीन वर्ष से डिस्थाइनिया नामक रोग, जो कि एक प्रकार से अवसाद ही है के शिकार हैं। हर बात का निराशावादी पहलू ही देखना व सोचना, मृत्यु के बारे में विचार, चाहे सगे-संबंधी की हो या स्वयं की तथा पश्चाताप की भावना, चिड़चिड़ापन, हंसी न आना ही इस रोग के मुख्य लक्षण हैं जो आप में है। यह रोग दिमाग के रासायनिक असंतुलन से होता है। मनोचिकित्सक इसे दवा द्वारा तथा बात-बीत द्वारा सही कर लेते हैं। आप बिलकुल ठीक हो सकते हैं। स्वयं का दृष्टिकोण भी बदलने से लाभ होगा।

रूखा-रूखा व्यवहार

एम. जी. एस., बेगूसराय : समस्या २४ वर्षीय बड़े भाई की है । बचपन में ही मां का स्वर्गवास हो गया । तब से ये बहुत कम बोलने लगा । घरवालों से रूखा-रूखा व्यवहार करता है, परंतु बाहरवालों से ठीक बात करता है । घर की कोई बात भी नहीं मानता । प्रायः दूसरे लोगों की बात सुनता है । केवल छोटी बहन से ही थोड़ी-बहुत बात करता है । ११वीं कक्षा पास न कर सका, फिर पढ़ाई भी छोड़ दी । अब फिर से पढ़ना चाहता है । उर्दू मदरसा बोर्ड की अब शिक्षा प्राप्त कर रहा है । नींद की एक-दो वर्ष से शिकायत है । कोई रिश्तेदार आता है तो उसके साथ जाने की करता है । इधर-उधर भागने की धमकी देता है । मानसिक रोग विशेषज्ञ ने दो-ढाई माह में सही करने को कहा था । पांच माह हो गये हैं कोई लाभ नहीं । सलाह दें ।

'रोग दो-ढाई माह में सही होगा'— ऐसा निश्चित समय कोई मनोचिकित्सक नहीं दे सकता । वास्तव में आपके बड़े भाई के रोग को संमझने के लिए आपके भाई के व्यक्तित्त्व को समझना होगा । बचपन में मां के स्वर्गवास का भी काफी महत्त्व उसके लिए रहा । कई बार 'नारको' विश्लेषण द्वारा या फिर सम्मोहन द्वारा उसकी बचपन में बीते मन के आघातों की याद हराकर तथा उसमें भावनाओं के वेग को तेज किया जाता है । इससे भी लाभ संभव है । घरवालों के प्रति रूखापन व प्रतिक्रियावादी होने का कारण उसके बचपन से ही जुड़ा है । उसे खुलकर बुलवाने का कार्य मनोचिकित्सा पद्धति में महत्त्वपूर्ण है । यह तो अच्छी बात है कि अब वह फिर से पढ़ना चाहता है इसलिए उसे अब सही करना इतना कठिन कार्य नहीं, क्योंकि वह जिंदगी को आड़े हाथों ले रहा है । भागकर नहीं । भागने की धमकी व नींद न आना उसके तनाव के लक्षण हैं । इसलिए घबराएं नहीं ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें । —संपादक

पढ़ने में परेशानी

अ. क., इलाहाबाद : २८ वर्ष का प्रतियोगी छात्र हूं । सुबह पश्चिमोत्तासन, हलासन व सर्वांगासन करने के पश्चात सिर के अगले हिस्से (ललाट) में भारीपन हो जाता है । जिस कारण पढ़ने में व्यवधान होता है । उचित सलाह दें ।

तुरंत यह योगासन बंद कर अपना पहले शारीरिक परीक्षण कराएं । रक्तचाप, गरदन में अकड़ की खासतौर पर जांच कराएं । उसके पश्चात ही योगासन करें । आशा है आप योग की शिक्षा किसी योगाचार्य द्वारा ही ले रहे हैं । पहले केवल सरल आसन करने चाहिए तथा धीरे-धीरे ही अपनी क्षमतानुसार उनका स्तर बढ़ाना चाहिए । कहीं पर दर्द होने का अर्थ है कि आपने इस नियम का अनुसरण नहीं किया अथवा आप सही तौर पर शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं हैं ।

निराशा को आशा दें

अ. : १८ वर्ष की छात्रा हूं । १०वीं तक हमेशा प्रथम श्रेणी में पास होती रही । ११वीं में द्वितीय श्रेणी आयी तथा बहुत मेहनत के बावजूद १२वीं में सप्लीमेंटरी और फिर दूसरी बार २ नंबर से फेल हो गयी । मैं बिलकुल पागल-सी हो गयी । हमेशा रोती रहती । फिर ४-५ माह बाद हिम्मत बांधी, पढ़ाई में दिन-रात एक कर दिया तथा १२वीं कक्षा दुबारा दी । इसमें ५५ प्रतिशत नंबर आये । प्रथम श्रेणी फिर भी नहीं आयी । सुना है मेहनत का फल मीठा होता है, फिर मेरे लिए ही कड़वा क्यों ? मेरी

दीदी अजमेर में डॉक्टर है । उनसे घर में सभी खुश हैं । क्या मैं अपने माता-पिता को कोई खुशी नहीं दूंगी । मुझे आत्महत्या के अलावा कोई रास्ता नहीं दिखता, क्योंकि मैं जितनी मेहनत करूं, फिर भी सफलता हाथ नहीं लगती । पिता मुझे बहुत प्यार करते हैं, परंतु मैं उन्हें कोई खुशी नहीं दे सकती । आप से केवल आशा रह गयी है कि निराशा को आशा में बदल देंगे ।

आपको ११वीं व बारहवीं में इस कारण समस्या आयी, क्योंकि बोर्ड की परीक्षा बहुत महत्त्वपूर्ण होती है । कैरियर का दारोमदार इसी पर निर्भर है । प्रतिस्पर्धा भी बढ़ जाती है तथा तनाव भी बहुत अधिक होता है । यदि जीवन में केवल कार्य ही दिखे तो फिर दिमाग जवाब दे जाता है । यह तो सराहनीय है ही कि आपने सफलता न मिलने पर भी अथक परिश्रम किया, उत्तीर्ण भी हो गयीं । ऐसा भी बहुत कम व्यक्ति कर पाते हैं, हां यदि परिश्रम के साथ मनोरंजन व मित्रगण से मेल-जोल, हंसी-मजाक, खेल-कूद आदि का सही मिश्रण करें तो परिश्रम करने की शक्ति भी बढ़ जाएगी तथा जीवन निरर्थक व व्यर्थ नहीं दिखेगा । आशा है अपने मन पर काबू पाकर आप आगे बढ़ जाएंगी । तब सफलता स्वयं आपके कदम चूमेगी ।

सेक्स रोग

क., नयी दिल्ली : ५८ वर्ष का एक स्वस्थ व अच्छी नौकरी पर कार्यरत व्यक्ति हूं । ६० वर्ष तक अभी नौकरी करनी है । दौरे पर भी जाता रहता हूं । पत्नी ५० वर्ष की महिला है । उसकी अचानक सेक्स से अरुचि हो गयी है । इससे मैं मानसिक रूप से परेशान हूं । सिगरेट, शराब से दूर रहता हूं । दवा बतायें जिससे सेक्स इच्छा खतम हो, क्योंकि मेरी पत्नी के अनुसार इस आयु में सेक्स की इच्छा एक रोग है ।

सिगरेट, शराब व अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से दूर रहने के कारण आप स्वस्थ हैं । आपकी पत्नी के दिमाग में यह भ्रम पैदा हो गया अथवा, उन्हें कोई शारीरिक समस्या है । अतः मेरी सलाह है कि आप किसी स्त्री रोग विशेषज्ञ को उन्हें अवश्य दिखायें । सेक्स का संबंध मस्तिष्क से अधिक है, शरीर या आयु से इतना नहीं । यदि फिर भी कोई समस्या हो तो व्यक्तिगत तौर पर संपर्क करें ।

सिगरेट का असर

रा. श., मनकापुर, गोंडा (यू.पी.) : ४४ वर्ष का हूं । २५ वर्ष का था तब से सिगरेट पीता हूं । चौबीस घंटे में २० सिगरेट तक पी जाता हूं । इससे पारिवारिक जीवन पर असर पड़ा है ।

सिगरेट, बीड़ी, तंबाकू में निकोटीन होता है, जो एक नशा है । नशीले पदार्थ से इसी प्रकार का नुकसान होता है । पाश्चात्य देशों में इस जानकारी के कारण तंबाकू के सेवन द्वारा हानि को आम जनता समझ चुकी है तथा वहां अब नयी पीढ़ी के युवक इससे दूर रहने लगे हैं । दुःख की बात है कि हमारे देश में बड़े तो क्या बच्चे भी बीड़ी, सिगरेट पीने लगते हैं । तंबाकू में निकोटीन अवश्य ही कामशक्ति पर बुरा प्रभाव डालती है । सिगरेट छोड़ने का सबसे अच्छा तरीका है— छोड़ने की दृढ़ शक्ति का प्रयोग तथा सिगरेट, बीड़ी एकदम छोड़ देना । इसमें कुछ दिन बेचैनी व तलब अवश्य महसूस होगी, बाद में वह समाप्त हो जाएगी । यदि यह संभव न हो सके तो—

१. पूरा पैकेट न खरीदें । एक सिगरेट ही एक समय पर खरीदें ।
२. जिन कार्यों के साथ आदत पड़ गयी हो, कोशिश करें कि वह कार्य बिना बीड़ी, सिगरेट के किया करें ।

लोगों को लूटते हैं

विकास

हे मानव
तुमने कर लिया बहुत विकास
अब बस करो
तुम्हारे विकास ने
कईयों के उजाड़े हैं घर
कितनों का छीना है बचपन
रौंद डाला है
खेत और गांव
शायद तुम्हें
इसका आभास नहीं
आभास तभी होगा
जब सब कुछ/लुट चुका होगा ।

—किरण कुमारी

शिक्षा : स्नातक प्रथम वर्ष
आत्मकथ्य : समाज में व्याप्त समस्याओं को कागज के कोरे पन्नों पर जीवंत करने का प्रयास करती हैं मेरी कविताएं ।
पता : पुत्री स्वर्गीय लखन सिंह
ग्राम : खाजपुरा
पत्रालय : बिहार भिटनरी कॉलेज, पटना-८०००१४

इस
दुनिया में
कोई आगे
बढ़ानेवाला नहीं है
कोई भी
पाठ
पढ़ानेवाला नहीं है
अपने बारे में
हमेशा सोचते रहते हैं
पूछने पर
दूसरे का नाम कहते हैं
कमजोरियां
दूसरों की
हमेशा ढूंढ़ते हैं
चंद
मिनटों में ही
लोगों को लूटते हैं ।

—कन्हैया भारद्वाज

पता : ५२ लक्ष्मी नगर क्रोमपेट मद्रास-४४
उम्र : १७/१/७०
शिक्षा : ए. एम. आई. ई. (सिविल) इंडिया
आत्मकथ्य : क्षणभर में घटित घटना ही मेरी कविता का रूप हुआ करता है ।



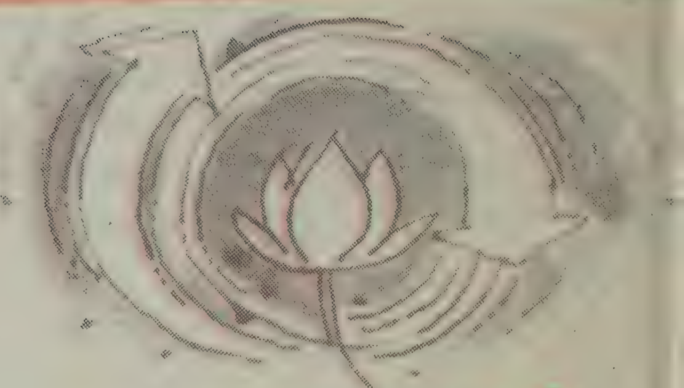


सामंजस्य

अर्थ की शिला पर
खड़ी नहीं हूं
शब्दों की समझ नहीं
व्यर्थ भागता हुआ हताश मन
दिग्भ्रांत करता है
स्थिर तन के हाथ ये
बेजान लगने लगे
इन दोनों की बढ़ती खाई
को रोकना होगा
अब दर्द के गहरे सागर में
आकंठ निमग्न हो
शब्दों के मोतियों को
चुनना होगा
तब असमर्थ, असहाय
मेरी कविता कामिनी
भावनाओं की धारस्वरूप
हो मन के धरातल पर
उतर पड़ेगी नववधू का रूप लिए ।

—कु. अनामिका उपाध्याय

शिक्षा : बी. ए. आनॅर्स
पता : द्वारा—रामाशीष उपाध्याय, ए-३२३, ए. जी. कॉलोनी, पटना—८०००१४
आत्मकथ्य : हृदय में उत्पन्न पीड़ा जब अनायास शब्दों में बढ़ जाती है, तब कविता का रूप लेती है



कालजयी

'काल', तुमने सबको ग्रस लिया
तुमने छीना राम-कृष्ण को
वर्तमान को बदला अतीत में
पर...

यादें तो अमर हैं, अजर हैं
यादों का तो आदि है न अंत
उसने जीता काल-चक्र को
याद...

बस वही तो एक वर्तमान है
वही एक तो कालजयी है
उसे अतीत बनाकर बताओ

—संगीता

शिक्षा : एम. ए. (मनोविज्ञान)
आत्मकथ्य : भाव अंदर रहते घुटते हैं, शब्दों में बंधकर मुक्त हो जाते हैं
पता : द्वारा : एस. के. पाण्डेय, मकान क्र. २०/२५५,
लाल बाग
जिला-राजनांदगांव (म. प्र.)







घास

घास के पांव नहीं होते
नही तो वह आसानी से कुचली नहीं जाती
और उस पहाड़ की फुनकी पर जाकर पनपती
उसकी जड़ें जमीन से जुड़ी होती हैं
गहरा लगाव होता है उसे उस जमीन से
जहां वह पैदा होती है
परंतु भेड़चाल के आगे किसी की नहीं चलती
इसीलिए वह कुचली जाती है
चुगी जाती है
मगर भाग नहीं सकती

—अनिल नेगी

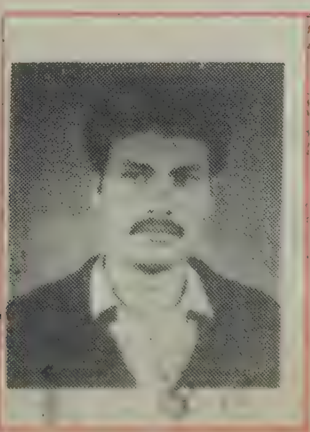
शिक्षा : सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा, स्नातक (कला) ।
आत्मकथ्य : जन्म और मरण के बीच का समय, जीवन, जो सांसों की रफ़्तार से खुद-ब-खुद (स्वयं ही) नपता चला जाता है, वक्त जीवन के साथ कितनी आंख-मिचौली करता है उसमें स्वाभाविक रंग भरने की कोशिश ही मेरी कविता है ।
उम्र : २५ वर्ष
पता : द्वारा श्री बी. एस. नेगी, कांडई रोड, पौड़ी, पौड़ी-गढ़वाल (उ. प्र.) २४६००१

दर्द

क्षितिज के उस पार
नीली चादर ओढ़े
तारों की रोशनी में
स्मृतियों का दर्द छिपा है
घाटी की ढलान, और
वृक्षों के झुरमुट में
महकते कुसुमों के बीच
चमकती दो आंखें
बुलाती हैं/इशारे से
संबोधनों के दायरों को लांघ
औपचारिकताओं का पल्लू छोड़
निर्विकार भाव से
वर्तमान की मशीन, और
अतीत के परदे पर
दर्शायी जाती है
टूटे शीशे-सी विकृत परछाईयां
जिनमें/अतीत की स्मृतियों का
दर्द अंकित है
आईने में
मेरा प्रतिबिंब पूछता है/मुझ ही से
अश्रुओं की परिभाषा और
संबोधनों का अर्थ
क्षितिज के पार/नीली रोशनी में
कौन-सा दर्द छिपा है... ?

—कुंजन आचार्य

शिक्षा : स्नातक (द्वितीय वर्ष) अध्ययनरत
आत्मकथ्य : कविता मेरे लिए एक अनुभूति है । यह आंतरिक पीड़ा की आवाज है जो शब्दों में बोलती है, यही मेरी मित्र है जो कभी मेरा साथ नहीं छोड़ती ।
पता : १-ज-१०, हिरण मगरी, सेक्टर-४ उदयपुर





नयी कृतियां

नन्हे-नन्हे गुनाह : कर्तार सिंह दुग्गल के इस कथा संग्रह की रचनाएं समाज में हो रहे गुनाहों को उद्घाटित करती हैं। किंतु ४५ कहानियोंवाले इस संकलन में मुहब्बत की खुशबू से सरावोर 'अंगड़ाई' शीर्षकधारी कृति पर नजर कुछ अधिक देर तक टिकती है। मनोविज्ञान की छात्रा यासमीन की अम्मी ने अपने कॉलेज के जमाने के सहपाठी इदरीस के प्रति अपने दबे हुए प्रेम की महक से वातावरण को सुगंधित किया है। एक प्रौढ़ा के ऐसे ही दबे हुए प्रेम की आग से चिंगारी उठते 'रुक्मिणी का बेपरवाह ईश्वर' में दिखायी देती है। 'पेरिस की एक शाम' में जबरदस्त क्लाईमेक्स है।

लेकिन कहानीकार भारतीय समाज की दुरावस्था के प्रति भी सजग है, और अपने पात्रों के माध्यम से उसने समाज में 'जो है' उसे तो उद्घाटित किया ही है, 'जो होना चाहिए' उसका भी आह्वान करने से नहीं चूका है। जाति प्रथा के वीभत्स रूप पर 'अबाबीलें' की यह टिप्पणी बहुत सशक्त है, "गरीब, अनपढ़, पिछड़े हुए लोग—जिन्हें मजदूरी करके अपना पेट पालना होता है—यह भी तो एक जाति है।"

लेखक : कर्तार सिंह दुग्गल
प्रकाशक : किताब घर, २४ अंसारी रोड दरियागंज, नयी दिल्ली-२, मूल्य सौ रुपये

कटा हुआ बाजू : केवल सूद का यह एक ऐसा नाटक है जिसमें सर्वधर्म समभाव की भावना को प्रकट करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान परिस्थितियों में इस प्रकार का संदेश प्रचारित करने की अधिक आवश्यकता है। इस विषय पर यद्यपि बहुत लिखा जा चुका है फिर भी ऐसी रचनाओं की आवश्यकता अब भी बनी हुई है। यह नाटक मंचित भी हो चुका है।

लेखक : केवल सूद, प्रकाशक : विद्यार्थी प्रकाशन, के. ७१ कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१, मूल्य : चालीस रुपये।

लाल सूरज : नेपाल के सुविख्यात रचनाकार श्री भरत जंगम ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से चीन के लगभग पांच दशकों से ढके-मुंदे समाज को अनावृत करने का प्रयास किया है। उपन्यासकार ने हांगकांग से चीन में प्रवेश करते हुए चीन की संस्कृति, चीनी जनता के स्वभाव तथा प्रकृति और तथाकथित स्वशासित तिब्बती लोगों की आकांक्षाओं का परिचय अपने पाठकों को दिया है। लेखक की यह एक संवेदनशील कृति है।

लेखक : भरत जंगम, प्रकाशक : इंदु प्रकाशन, लहुरावीर, वाराणसी : मूल्य भा. तीस रुपये, ने. पचास रुपये।

क्षमा याचना सहित : सामाजिक विसंगतियों और विषमताओं को बहुचर्चित व्यंग्यकार विश्वमोहन माथुर ने अपनी गुदगुदा देनेवाली शैली में उजागर किया है। कहीं-कहीं व्यंग्य इतने तीखे भी हैं कि परिस्थितियों पर गहरी चोट भी कर बैठते हैं। लेखक ने अपने व्यंग्य बाण

राजनीतिज्ञों पर भी ताने हैं ।

लेखक : विश्वमोहन माथुर, प्रकाशक : उमेश प्रकाशन, १०० लूकरगंज, इलाहाबाद : मूल्य : पचास रुपये ।

भेड़ की नियति : हास्य-व्यंग्य के रंग में भोपाल की कदीमी बोली का आनंद भी प्रस्तुत संकलन में पाठकों को मिल सकता है । रचनाकार के व्यंग्य लेखन में सामाजिक तीक्ष्णता और मानवीय करुणा की प्रभावशाली अभिव्यक्ति है ।

लेखक : हरि जोशी, प्रकाशक : साहित्य सहकार, ई-१०/४ कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१ ; मूल्य : पचास रुपये ।

आखिर वो मिल गई : निम्न मध्यमवर्ग की समस्याओं पर लिखी गयी इन कहानियों की भाषा सरल और सहज है । इस संकलन की एक कहानी का बांगला में अनुवाद भी प्रकाशित हो चुका है । हमारे समाज की कुप्रथाओं पर इन कहानियों में तीखा प्रहार किया गया है ।

लेखिका : सरला ; प्रकाशक : चयन प्रकाशन, हनुमान हत्था, बीकानेर ; मूल्य : पचास रुपये ।

आत्म-चिंतन : उपनिषद् के ऋषियों पर यह काव्याख्यान सरल भाषा में उनका परिचय प्रस्तुत करता है ।

लेखक : महावीर प्रसाद जोशी ; प्रकाशक : श्री मंगलम प्रकाशन, जयपुर ; मूल्य : पच्चासी रुपये ।

ब्रज-पर्यावरण : पुष्पश्री : ब्रज मंडल का प्राकृतिक सौंदर्य सभी को अभिभूत करता है । प्रस्तुत कृति में ब्रज की प्राकृतिक सुषमा, ब्रज





की संस्कृति, ब्रज के पर्यावरण के अतिरिक्त ब्रज की पुष्प श्री का विवेचन प्रस्तुत किया गया है । पुस्तक की एक विशेषता उन फूलों का आत्मीय परिचय है, जिनसे आज की नयी पीढ़ी लगभग अपरिचित होती जा रही है । इस दृष्टि से भी पुस्तक उपयोगी है ।

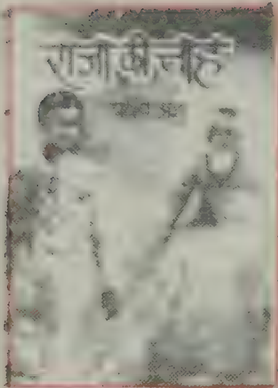
लेखिका : डॉ. हर्ष नन्दिनी भाटिया, प्रकाशक : श्री मदन मोहन ब्रज लोक समिति, टकसाल गली, वृंदावन-२८११२१, मूल्य : एक सौ बीस रुपये ।

पलाश : मनुष्य द्वारा प्रकृति के रूप को जिस प्रकार विकृत किया जा रहा है उसे देखकर लेखक का मन दुःखी हुआ, तथा ये निबंध पर्यावरण की चिंता से प्रेरित होकर लिखे गये हैं । आशा है कि पाठकों तक अपना शुभ संदेश पहुंचाने में लेखक सफल होगा ।

लेखक : विजय कुमार दुबे ; प्रकाशक : श्री प्रकाशन, एच. २४/७ सिविल लाइंस, दुर्ग-४९१००१ ; मूल्य : पच्चासी रुपये ।

महको-महकाओ : चौबीस छोटी-छोटी शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह है । प्रत्येक कहानी रोचक और कोई न कोई अच्छी सीख देती है

लेखक : डॉ. नरेन्द्र कुमार, प्रकाशक : आर्य प्रकाशन ८१४, कुंडेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली, मूल्य : दस रुपये ।





युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानंद : आर्य समाज आंदोलन के सूत्रधार स्वामी दयानंदजी की जीवनी को सरल भाषा, रोचक शैली में प्रस्तुति इस पुस्तक की विशेषता है ।

लेखक : डॉ. नरेन्द्र कुमार, प्रकाशक : मधुर प्रकाशन, २८०४, गली आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली, मूल्य : बीस रुपये ।

बुद्धि चमत्कार की सत्य घटनाएं : इस पुस्तक की समस्त कहानियां सत्य घटनाओं पर आधारित बतायी गयी हैं । प्रत्युत्पन्नमति से नन्हें और मासूम बच्चों तथा निरक्षर किसानों ने किस प्रकार दुर्घटनाओं को रोकने तथा अपराधियों को पकड़ने में अपनी बुद्धि से लोगों को चमत्कृत किया इससे संबंधित ४३ कहानियां इस संकलन में सम्मिलित की गयी हैं । 'शांतो महरी ने कानों को हाथ लगाया', 'तुरत बुद्धि ने प्राण बचाए', 'नन्हे जासूस' के साथ ही समस्त कहानियां रोचक हैं, किंतु भाषा कृत्रिम है ।

लेखक : धर्मपाल शास्त्री, प्रकाशक : किताबघर, गांधी नगर, दिल्ली-३१, पृ. सं. १६८, मूल्य : साठ रुपये ।

भारतीय भवन निर्माण योजना : संस्कृत शब्द 'वास्तु' का अर्थ है 'वास करने का स्थान ।' हमारे प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में वास्तु शास्त्र को महत्त्वपूर्ण मानते हुए इस पर विस्तार से चर्चा की गयी है । ऐसी धारणा है कि मनुष्य के जीवन को दो चीजें सबसे अधिक प्रभावित करती हैं—भाग्य और वास्तु । वास्तु का आधार दिशाएं, सूर्य का प्रकाश, वायु, पृथ्वी की चुंबकीय एवं गुरुत्वाकर्षण शक्तियां । वास्तु शास्त्रों में उल्लेख है कि भवन निर्माण के लिए भूखंड का चयन सावधानी से करना चाहिए । भूखंड चौकोर अथवा आयाताकार उत्तम होता है, और चंद्राकार, त्रिकोणाकार, धनुराकार, आदि त्याज्य है । शयनकक्ष में पलंग इस प्रकार बिछाना चाहिए कि सिर दक्षिण अथवा पूर्व दिशा में रहे । भवन निर्माण में ऐसी ही शास्त्रीय मान्यताओं को लेकर प्रस्तुत पुस्तक में उपयोगी चर्चा की गयी है । इसकी भाषा सरल और सुबोध है । सामान्य व्यक्ति भी इसे पढ़कर अपने भवन निर्माण के समय लाभान्वित हो सकते हैं ।

लेखक : नंद किशोर झाझरिया, प्रकाशक : मिथुन प्रकाशन, ७/४० तिलक नगर, कानपुर-२०८००२ मूल्य : पचहत्तर रुपये

—अनंत राम गौड़

साकुरा के देश में : श्रीमती राज बुद्धिरजा की यह कृति महज एक यात्रा वृत्तांत न होकर जापान के बारे में एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बन गयी है । धर्म से प्रकृति तक, इतिहास से वर्तमान जीवन शैली तक, परंपरा से संगीत तक, व्यवसाय से मनोरंजन तक, भाषा से देश प्रेम तक, सामाजिक आचार-विचार से शिक्षा तक विभिन्न पहलुओं का लेखिका ने अत्यंत सूक्ष्म वर्णन किया है । लेखिका ने जापानी नागरिकों के जीवन को भली-भांति देखा ही नहीं उसे अपने हृदय से महसूस किया है ।

एक ओर लेखिका ने हाराकिरी-जैसे मृत्यु

के जघन्य रूप को निकट से देखा है वहां दूसरी ओर गुप्तचरी का संदेश लाती पतंगों के मनोहारी रूप को निहाराहै ।

पुस्तक की भाषा में इंद्रधनुषी रंग, फूलों की सुगंध, आबदार मोतियों की चमक, अभिव्यक्ति की कुशलता, शब्दों का चातुर्य, वाग्वैयग्ध कलात्मक सौंदर्य, सभी कुछ विद्यमान है ।

लेखिका : डॉ. राज बुद्धिराजा,
प्रकाशक-तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली ।

राजा की चाह : समकालीन उपन्यासों में सामाजिक जीवन दृष्टियों को केंद्र में रखकर कुछ नये कथा-सूत्रों का विकास देखने में आता है । इसमें सामाजिक परिवेश के साथ राजनीतिक-आर्थिक-धार्मिक स्थितियों-परिस्थितियों का चित्र है । साथ ही कुछ तिलस्मी भावों का उभार भी दिखता है, आंचलिकता की लव-लहर ने भी काल विशेष में अपना प्रबल प्रभाव दिखाया है । मनोवैज्ञानिक धरातल पर जो रचनाएं हुई हैं उनमें सहज सामंजस्य उपस्थित न होने के कारण नीति/विश्लेषणात्मक हो गयी है ।

उपन्यास की भाषा सरल-सुबोध है । सर्वत्र संप्रेषणीयता है । शिल्प की दृष्टि से यह एक प्रयोगवादी उपन्यास है । निश्चय ही, समकालीन उत्कृष्ट औपन्यासिक कृतियों में यह अपने वैशिष्ट से रचनाकार की पृथक पहचान देती है ।

प्रकाशक : भावना प्रकाशन, १२६, पटपड़गंज, दिल्ली-९१, मूल्य : ७५ रुपये, पृष्ठ : १२८

—डॉ. राहुल

दृष्टि :

डॉ. अग्रवाल की पुस्तक 'दृष्टि' की हिंदी एवं अंगरेजी के माध्यम से नेत्रों के प्रमुख रोगों का निदान योग, आयुर्वेद, होम्योपैथी एवं प्राकृतिक साधनों द्वारा सुंदर चित्रों की सहायता से समझाने का प्रयत्न किया गया है ।

लेखक : डॉ. एम. एस. अग्रवाल,
प्रकाशक : डॉ. अग्रवाल आई इंस्टीट्यूट अग्रवाल रोड, १५, दरियागंज, नयी दिल्ली ११०००२, पृष्ठ : ८६, मूल्य : पचास रुपये ।

—मधुर शास्त्री

नूर और खुशबू :

इन गजलों में सौंदर्य और सुगंध के समन्वय के कारण अभिव्यक्ति में सार्थकता आयी है । इसी कारण पंक्तियां मन को छू लेती हैं । यह स्थिति रचना में हर स्थान पर तो नहीं है, पर अधिकांश शब्द सीधे हृदय को छू जाते हैं, जैसे—

जैसा कि बांकपन है नदी के बहाव में,
कुदरत ने मुझको बख्श दिया है स्वभाव में ।

मुंह न अश्कों से धोइए साहिब,
फूट कर यूं न रोइए साहिब ।
फसल नफरत की जिनसे उगती है,
बीज ऐसे न बोइए साहिब ।

और

न कोई हक है, न कुछ जोर इस पे चलता है,
कि एक मांगी हुई शय है जिंदगी जैसे ।
बदला है जमाना अब दुनिया को बता दीजे,
हमराह मेरे चलकर हर रस्म मिटा दीजे ।

कवि : काजी तनवीर,
प्रकाशक : सापेक्ष प्रकाशन,
४०/१, बी गोल मार्किट, नयी दिल्ली-१
मूल्य : पचास रुपये ।

—भ.प्र.

संस्मरणात्मक युद्ध-कथा

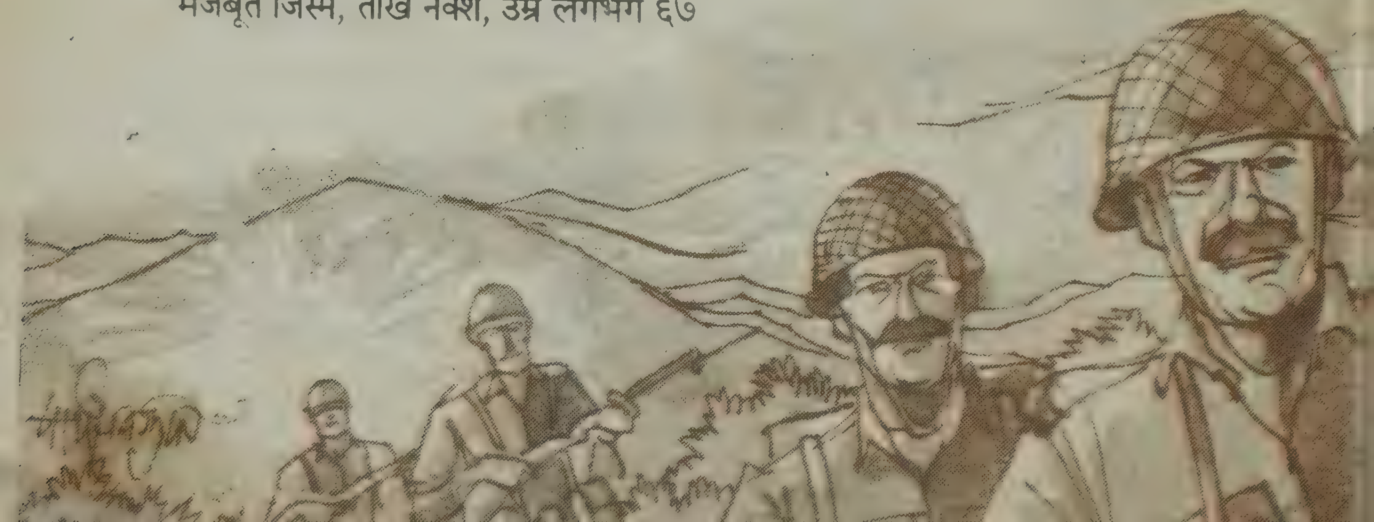
मास्टर-स्पाई रायसाहब कपूर

● धर्मेन्द्र गौड़

जून, १९४३ की दोपहर । बंगाल की सड़ी गरमी । बारिश थमने का नाम न ले । मैं रासबिहारी एवेन्यू स्थित २०५ नं. की आलीशान कोठी में आराम से पड़ा सो रहा था । तभी अचानक घंटी की आवाज ने जगा दिया । उठकर देखा, तो पठान दरबान । बगलवाली कोठी नं. २०७-ए से मेजर डी.आर.एन. क्लार्क ने सलाम भिजवाया था । झटपट हाथ-मुंह धोकर कपड़े बदले और सीधा पहुंचा उनके पास । उन्होंने सामने बैठे एक हट्टे-कट्टे बुजुर्ग से परिचय कराया और कुछ दिनों तक उनकी सहायता करते रहने का आदेश दिया ।

वह सज्जन थे हमारी गुप्तचर संस्था फोर्स वन-थ्री-सिक्स के मास्टर-स्पाई रायसाहब भगवानदास कपूर । ऊंचा कद, गोरा रंग, मजबूत जिस्म, तीखे नक्श, उम्र लगभग ६७ वर्ष । मुकम्मिल सूट-बूट में खूब फब रहे थे । रहनेवाले थे गुजरांवाला जिला के अंतर्गत हाफिजाबाद गांव के (अब पाकिस्तान में) । १३ जनवरी, १९४२ को इंपीरियल इंटेलिजेंस ब्यूरो के डिप्टी डायरेक्टर मिस्टर जेंकिंस ने तार द्वारा रायसाहब को दिल्ली बुलवाया था । रायसाहब ने सन १९१२ से १९३१ तक इंटेलिजेंस ब्यूरो में कार्यरत रहने के उपरांत अवकाश ग्रहण किया था ।

१४ जनवरी, १९४२ को जेंकिंस ने रायसाहब का परिचय सर कॉलेन हरक्युलीज मिकेंजी और सर गाल्विन वी. स्टुअर्ट से दिल्ली में कराया और चीफ एजेंट की हैसियत से एक हजार रुपये मासिक वेतन पर उनकी नियुक्ति



फोर्स वन-थ्री-सिक्स में की गयी । तनख्वाह के अलावा उनके दीगर इख्राजात भी ब्रिटिश सरकार के जिम्मे रहे । उनकी नियुक्ति का खास मकसद था फारस (वर्तमान ईरान) और अफगानिस्तान में दुश्मन के जासूसों की गतिविधियों को प्रति-गुप्तचरी (काउंटर एस्प्योनाज) द्वारा असफल करना । इसके लिए पंद्रह दिनों तक तो वे इंटेलिजेंस ब्यूरो की बीसियों गुप्ततम फाइलों का ही अध्ययन करते रहे साउथ ब्लॉक के एक अकेले कमरे में ।

उन दिनों पंजाब सी.आई.डी. के डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल मिस्टर ई.डब्ल्यू.सी. वेस थे । इंटेलिजेंस ब्यूरो के डायरेक्टर सर जॉन पील्डिच ने रायसाहब के बारे में उन्हें एक अति गोपनीय एवं व्यक्तिगत पत्र लिखा । जोर इस बात पर दिया कि चूंकि इस संस्था की सहायता करना निहायत जरूरी है, हरसंभव तरीके से रायसाहब की सहायता की जाए । इस वर्गीकृत पत्र में लिखा, '.....केवल धुरी राष्ट्रों के पास ही 'फिफ्थ कॉलमिस्ट' (गुप्तचर) नहीं हैं, मित्र-राष्ट्रों की भी अपनी एक संस्था है । इसके उच्च कोटि के व्यक्ति इंगलैंड से भारत आकर कुछ समय से काम में जुट गये हैं । मुझे आदेश मिला है कि मैं इनकी पूरी-पूरी सहायता करूं और इन्हें आला किस्म के कार्यकर्ता दूं । रायसाहब को तो आप भलीभांति जानते ही हैं ।



उनका इस संस्था से परिचय करा दिया गया है। आप कृपया उनकी पूरी-पूरी मदद करें। यह केवल आपकी व्यक्तिगत जानकारी के लिए ही लिख रहा हूं। पत्र पढ़ने के तुरंत बाद इसे जलाकर राख कर दें।'

लाहौर में वेस से मिलकर ३० जनवरी, १९४२ को रायसाहब दिल्ली वापस लौट आये। तब तक मिकेंजी ने नॉर्थ ब्लॉक में 'जी.एस.आई. (के)' अथवा 'म्यूलो', अथवा 'फोर्स वन-थ्री-सिक्स' का दफ्तर खोल दिया था। मकसद था उच्च कोटि की गुप्तचरी, प्रति-गुप्तचरी करके दुश्मन के जासूसी कारनामों को नेस्तनाबूद करना। ब्रीफिंग करते समय मिकेंजी ने रायसाहब से साफ-साफ कह भी दिया था— 'इस गुप्तचर संस्था के काम में बाधा पहुंचानेवाले किसी भी व्यक्ति का सफाया कर देने की आपको पूरी छूट है। खुले दिल से पैसा खर्च करने पर भी कोई पाबंदी नहीं। मतलब है काम होने से।'

एक माह बीतने भी न पाया कि रायसाहब ने चार एजेंट नियुक्त कर लिये। अन्य निजी खर्चों के अलावा उन्हें पांच सौ से एक हजार रुपये मासिक वेतन पर रखा गया था। मिकेंजी और रायसाहब के अलावा उनके असली नामों की कभी किसी को हवा तक न लग पायी। इनके 'नोम डि'प्ल्यूम' (छद्म नाम) अलबत्ता कुछ खास लोगों को पता थे— अलेक्ज़ेंडर, नेपोलियन इंडस और ग्रेवयार्ड। वे मेरठ हैडक्वार्टर्स को इन्हीं नामों से शार्टवेव पर संदेश ट्रांसमिट करते थे।

अपने दिल्ली आगमन पर मिकेंजी सदा सीसिल होटल में ठहरते थे। सन १९४३ के शुरू में उन्होंने रायसाहब को यहीं बुलाया और उनके हाथ में थमा दी आठ आदमियों की एक फेहरिस्त (टारगेट लिस्ट), जिनसे उन्हें फारस और अफगानिस्तान जाकर संपर्क स्थापित करने थे। चार फारस में थे और चार ही अफगानिस्तान में। अफगानिस्तान की सूची में लिखे तीन अफ़गान थे। एक काबुल, एक जलालाबाद और एक सोवियत सीमा पर गुंबद दर्रे के आसपास कहीं। चौथा जरमन था। वह काबुल में रहता था। काबुल निवासी पहला व्यक्ति अफगान नागरिक था और अफगानिस्तान सरकार में मंत्री भी। अंतिम दोनों व्यक्तियों को ब्रिटिश पक्ष में लाने के लिए मिकेंजी जमीन-आसमान के कुलाबे एक कर रहे थे। फारस की लिस्ट में थे दो भारतीय, एक अफगान और एक यूनानी। एक भारतीय तेहरान में रहता था और दूसरा शीराज में। अफगान इस्फहान में और यूनानी तेहरान में।

रायसाहब को फिर एक बार स्पष्ट हिदायत दी गयी कि उनके काम में अधिक खतरा और बाधा पहुंचानेवालों को तुरंत मौत के घाट उतार दिया जाए और जो कम खतरनाक हैं, उनका शरीर ऐसा विकृत किया जाए, कि फिर पहचाने ही न जा सकें।

संसार के सभी देशों में गुप्तचरों का एक नियम-सा बन गया है— कभी किसी पर पूरा भरोसा न करना। इस मामले में जो भी चूका, वही गया। यही वजह थी कि मिकेंजी ने भी रायसाहब पर पूरा भरोसा नहीं किया। फारस और अफगानिस्तान में उनके कुछ अपने भी एजेंट कार्यरत थे। वे उच्चकोटि का प्रचार करने में माहिर थे और उन दिनों जनसाधारण के बीच

मिकेंजी ने राय साहब से साफ-साफ कह दिया था— ''इस गुप्तचर संस्था के काम में बाधा पहुंचानेवाले किसी भी व्यक्ति का सफाया कर देने की आपको पूरी छूट है । पैसे खरचने की भी रोक नहीं, मतलब है काम होने से ।'

वे यही अफवाह फैलाने में मशगूल थे कि उनकी जरमनों के अनुकूल की गयी कार्रवाइयों से वास्तव में उन्हीं की हानि हो रही है ।

फारस और अफगानिस्तान में चौकन्ने रहने की एक खास वजह थी । मिकेंजी को बर्लिन-स्थित 'फोर्स वन-थ्री-थ्री' के ब्रिटिश गुप्तचर से इशारा मिल चुका था कि हिटलर फारस और अफगानिस्तान के रास्ते भारत पर धावा बोलनेवाला है । ब्लूचिस्तान में छतरी सैनिक उतारने की भी तजवीज थी, जिसके अनुसार जरमनी और जापान की फासिस्ट फौजें भारत में ही एक-दूसरे से हाथ मिलातीं । यह योजना फरवरी, १९४१ में तैयार की गयी थी और सितंबर आते-आते ब्रिटिश गुप्तचरों को इसका पता भी चल गया (कालांतर में ब्रिटिश सैनिकों के फारस और अफगानिस्तान प्रवेश के बाद ही दुश्मन के हौसले पस्त हुए और मध्य-पूर्व होकर मध्य-एशिया में दाखिल होने के उनके सारे ख्वाब मिट्टी में मिल गये ।

भयंकर तूफान के कारण सक्खर और क्वेटा के बीच मीलों तक रेलवे लाइन उखड़ गयी । यातायात पूर्णतः ठप हो गया । यही वजह थी कि एजेंटों को पूर्वी फारस न भेजा जा सका ।

फिर भी रायसाहब अपने पांच एजेंटों को तो क्वेटा के रास्ते पश्चिमी फारस भेजने में सफल हो ही गये । उन दिनों क्वेटा में इंपीरियल इंटेलिजेंस ब्यूरो के प्रतिनिधि मिस्टर वुड थे । मिकेंजी के निकट संपर्कीय होने से उनसे भी कुछ एजेंट बनाने के लिए कहा गया, जो दक्षिण-पूर्व फारस में धुरी-राष्ट्रों के जासूसों को बेनकाब करके उनकी गतिविधि निष्फल करके तोड़फोड़ कर सकें ।

वुड ने रजामंदी दे दी । फिर कुछ एजेंट भी भरती किये और उन्हें आदेश दिया तेहरान जाकर मेजर फिलिप से मिलने का । वे उन दिनों फारस में ब्रिटिश इंटेलिजेंस के प्रमुख गुप्तचर (मास्टर स्पाई) थे । 'कवर' (आवरण) इतना शानदार था उनका कि अंगरेजों के जासूस होने का उन पर कोई शक भी तो नहीं कर सकता था । फारस सरकार में सुरक्षा अधिकारी थे । यह आवरण उनके गुप्त कार्यों में काफी सहायक रहा ।

इन एजेंटों को सभी खुफिया लवाजमात के साथ रवाना किया गया था । 'साइलेंट किलिंग' के लिए साइलेंसर लगी पिस्तौलें, कई तरह के जहर, सोने की गिन्नियां, छोटे ट्रांसमीटर और

रिसीवर, अनेक प्रकार की गुप्त स्याहियां, फारस में ही उचित नाप से सिले-सिलाये जनसाधारण — जैसे कपड़े आदि । इन एजेंटों ने निहायत शानदार काम किये । हिटलर की गुप्तचर संस्था 'गेस्टपो' के कई प्रमुख एजेंटों को बेनकाब किया । एक ग्रीक की तो हत्या ही कर डाली । कइयों की बुरी तरह पिटाई करके हाथ-पैर तोड़े ।

मई १९४३ में रायसाहब को 'एस्कोर्ट' द्वारा एक दस्ती पत्र मिला मिकेंजी के सैनिक सलाहकार कर्नल ल्यूइस पग का । इस हिदायतनामे में आग्रह था बर्मा और मलाया में बसे सिखों से तुरंत संपर्क करके, किसी भी संख्या में एजेंट बनाकर उनकी नियुक्ति 'फोर्स वन-थ्री-सिक्स' में करने का । तभी तो रायसाहब कलकत्ता आये थे, अपने मित्रों और परिचितों का सहयोग प्राप्त करने ।

उस समय तक कलकत्ता के कार्यालय और प्रशिक्षण केंद्र भली-भांति विकसित हुए नहीं थे । रायसाहब ठहरे थे नंबर १, किड स्ट्रीट पर 'पैलेस कोर्ट' में । वह मुझे भी अपने साथ वहीं ले गये । चाय-नाश्ते के दौरान कुछ देर तक मेरा-उनका विभागीय वार्तालाप चला, फिर उतर आये घरेलू बातचीत पर । दोपहर बाद हम दोनों पहुंचे मटिया बुर्ज । घंटों की दौड़-धूप के बाद भी जब उनके बंगाली मित्र का पता न चला, तो रात में हारे-थके लौटे अपने-अपने डेरे पर । दूसरे दिन सुबह से ही तमाम मुहल्ले की खाक छाननी शुरू की । आखिरकार, उनका मित्र मिल ही गया । दोनों ने एक-दूसरे का बड़े तपाक से स्वागत किया । उनकी पहली भेंट प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१८) के दौरान 'जरमन-इंडियन कांसप्रेसी केस' के सिलसिले में सान-फ्रांसिस्को में हुई थी । वह उस मामले में सरकारी गवाह था । बर्मा और मलाया में उसके अनेक सिख दोस्त थे, जिन्होंने जापानी कब्जे के बाद भी भारत में शरण नहीं ली थी । वे वहीं डटे रहे थे ।

उस बंगाली मित्र ने रायसाहब को हर तरह का सहयोग देने का वचन दिया । तभी आश्वस्त होने पर उसे गोपनीय प्रयोजन बताया गया, कि कुछ संदेश बैंकॉक (थाईलैंड) में एक व्यक्ति के पास पहुंचाने हैं । ऊपर से तो बड़े ही साधारण लगते थे ये संदेश, लेकिन उनके अर्थ असाधारण रूप से गंभीर थे । शर्त बस इतनी थी कि इन संकेतयुक्त संदेशों को केवल स्मृति में ही बांधकर वहां तक ले जाना था । लिखत-पढ़त में लाने की सख्त मुमानियत थी । इस गुप्त अभियान में रायसाहब और उनके बंगाली मित्र को कितनी सफलता मिली, यह तो मुझे ज्ञात नहीं, मगर इतना अवश्य जानता हूं कि अरसे से लापता उस सिख एजेंट ने बैंकॉक, मुआंग नान और च्यांग माई से जापानी सैनिक अड्डों के बारे में बड़ी ही महत्त्वपूर्ण जानकारी भेजी थी ।

इस घटना के तुरंत बाद रायसाहब किसी खास काम से गुजरांवाला चले गये । उन्हें वहीं एक अन्य बंगाली सज्जन का सुराग मिला, जो झेलम में किसी बीमा कंपनी का एजेंट था । उसके भी दो सिख मित्र थे, एक रंगून में और दूसरा बैंकॉक में । क्षणभर का भी विलंब किये बिना रायसाहब झेलम पहुंचे और उससे मिलकर उसकी सेवाएं 'कट-आउट' के रूप में हासिल कीं । ('कट-आउट' एक ऐसे

राय साहब ने मिकेन्जी को केवल अपने अट्ठारह एजेंटों के विषय में ही बताया था । शेष उनके अलावा कोई जान ही न पाया ।

विश्वसनीय व्यक्ति को कहते हैं, जो एजेंट और गुप्तचर अधिकारी का मध्यस्थ होकर दोनों के पारस्परिक संदेशों का आदान-प्रदान करता है । इस क्रिया से दोनों के बार-बार मिलने से उठनेवाले संदेहों की गुंजाइश नहीं रहती) ।

कालांतर में रायसाहब के सहयोग से उस बीमा एजेंट को अपने सिख मित्रों से संपर्क स्थापित करने में कामयाबी हासिल हुई । फिर उन्हें मिकेंजी के हवाले कर दिया गया । कुछ समय बाद उन एजेंटों ने अपने-अपने अधिकार-क्षेत्र में बड़ा ही सराहनीय कार्य किया । वे 'फोर्स वन-थ्री-सिक्स' हेडक्वार्टर्स को जापानी इंपीरियल एयरफोर्स की आक्रामक (ऑफेंसिव) और रक्षात्मक (डिफेंसिव) दोनों प्रकार की गतिविधियों से अवगत कराने लगे । साथ ही उनकी हवाई शक्ति (एयर पावर) के तकनीकी भेदों (टेक्नीकल डाटा-इलैक्ट्रॉनिक, ट्रांसफार्मर्स, कंप्यूटर सर्किट, इंजन वगैरह) का पता लगाकर ऐसी सूचनाएं भी दीं, जो विशेष अहमियत रखती थीं । बैंकॉक के ही सिख एजेंट ने सर्वप्रथम जापानी गुप्तचर संस्था 'तोक्काका' के बारे में जानकारी दी, जो उन दिनों मेजर कोबो की देखरेख में थाईलैंड के कम्युनिस्टों पर कड़ी निगरानी रख रही थी । इससे पहले इस संस्था को कोई जानता तक न था ।

रायसाहब के गुजरांवाला रवाना होते ही मुझे दो दिनों के लिए भेजा गया 'बनानारिज' । (शिमुराली रेलवे स्टेशन के निकट हुगली नदी के किनारे कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट कमिश्नर का पुराना बंगला, जिस पर 'फोर्स वन-थ्री-सिक्स' के अफसरान के कब्जा कर रखा था) । चूंकि बंगाल के विषय में मेरी भौगोलिक जानकारी नहीं के बराबर थी, कैप्टेन ऑल्सन ने मेरी कसकर ब्रीफिंग की । खासतौर पर उस इलाके की, जहां चंद रोज बाद मुझे रायसाहब के साथ जाना था । ब्रीफिंग के दौरान मुझे नोट्स लिखने की अनुमति भी दी गयी थी ।

अंगरेजी अफसर जानते थे कि मेरी जानकारी मुख्यतः मैनपुरी, इटावा, आगरा, मथुरा, बनारस, नैनीताल तक ही सीमित है, जहां यातायात के मुख्य साधन रेलें और सड़कें हैं । बंगाल में ठीक यही स्थान नावों का है । झील, दलदल, नदी, नाले और कीचड़-भरे पोखरों के कारण बंगाल में पानी ही सड़क है, पानी ही जीवन है । मई से अक्तूबर तक छह महीने मानसून के जबरदस्त थपेड़े । देहातों में बांस और घास-फूंस के झोंपड़े । दक्षिण-पूर्व कोने में बर्मा सीमा पर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ । बीहड़ जंगलों से भरी जोंकों और खतरनाक जानवरों से ग्रस्त तेज ढलानवाली चटगांव की पहाड़ियां, जो अराकान में जाकर मिलती हैं । यहीं जापानियों से हमारा भीषण युद्ध हो रहा था । यहीं भारत फासिस्टों के खिलाफ लड़ाई में कूदा था । चारों ओर चाय बागानें, पटसन और धान के हरे-भरे खेत । नारियल और सुपारी के झुंड के झुंड ।

दक्षिण में लगभग तीन सौ किलोमीटर लंबी और सौ किलोमीटर गहरी सुंदरवन की सपाट पट्टी, जहां न हरे-भरे खेत, न आबादी । घने

केप्टेन ऑल्सन ने गुप्तचरी का नायाब तरीका आंखों में आंखें डालकर आदमी को पहचानने का सिखाया ।

जंगलों से लबरेज खतरनाक जंगली इलाका यहां समुद्र गंगा और ब्रह्मपुत्र को लीलता है । फिर अंदर घुसकर समुद्र खारे पानी की झीलों में बंट जाता है । पिच्चयानवे प्रतिशत लोग गांवों में बसते हैं, अधिकतर मुसलमान । हिंदुओं के अलावा अन्य अल्पसंख्यक वे पहाड़ी हैं, जो ज्यादातर चटगांव में रहते हैं । बौद्ध भी मुख्यतः चटगांव निवासी हैं । उनकी संख्या लगभग पचास हजार है । अंगरेजों के प्रति श्रद्धा रखनेवालों में विशेषकर जैसोर, खुलना, फरीदपुर, ढाका, नारायणगंज, टिपरा (कोमिल्ला), चांदपुर, फेनी, नोआखाली, फाजिलपुर, नजीरहाट, दोहजारी, चटगांव और कॉक्स बाजार के मुसलमानों को ही बताया गया । चटगांव के कुछ बौद्धों को भी श्वेत महाप्रभुओं का भक्त कहा गया । अधिक जोर दिया नोआखाली जिले में हटिया टापू के मछेरों पर । सुंदरवन के रास्ते ही तो जापानी घुसपैठ का जबरदस्त खतरा था । जापानियों का इरादा था ब्रिटिश फौजों को पूर्व की ओर भटका कर पीछे से कलकत्ता पर आक्रमण करके कब्जा करने का । अतः सुंदरवन के चप्पे-चप्पे पर जासूसों का जाल बिछाना निहायत जरूरी था ।

आंखों में आंखें डालकर आदमी को पहचानने का नायाब तरीका भी बताया कैप्टेन ऑल्सन ने :—

१. गहरे भूरे रंग की आंखोंवाला आदमी बेरहम, टरकाऊ स्वभाव का होगा ।
२. आंखें जितनी ही गहरे काले रंग की होंगी, वह आदमी उतना ही सख्त तबीयत का होगा और खतरे के समय उसकी प्रतिक्रिया उतनी ही विस्फोटक होगी ।
३. हरे या हलके धुएं-जैसे रंग की आंखोंवाला व्यक्ति बड़ा चालाक, बात को समझने और ध्यान से सुननेवाला एवं सहनशील होता है । उसके ऊपर आर्थिक और सामाजिक दबावों का कोई असर नहीं होता ।
४. काली आंखोंवाला व्यक्ति गुस्सैल होता है । जरा-सी भी गलती बरदाश्त नहीं करता । बुरा वक्त आने पर डटकर मुकाबला करता है । निर्णय तुरंत लेता है, जो अधिकांशतः सही साबित होता है ।
५. नीली आंखोंवाले व्यक्ति में असाधारण सहनशक्ति होती है । वह मूडी होने के साथ भावुक भी होता है । उसे सदा कोई-न-कोई शिकायत रहती है ।
६. धुएं-जैसे रंग की आंखोंवाले व्यक्ति जिद्दी होने के अलावा साहसी भी होते हैं ।
७. हल्के भूरे रंग की आंखोंवाले शरमीले, अपने तक ही सीमित रहनेवाले असामाजिक होते हैं । वे अपना ही रोजगार-धंधा करना पसंद करते हैं, नौकरी नहीं ।
८. हरे और लालामी लिए भूरे रंग की आंखोंवाले जीवन में बहुत सुख भोगते हैं । दृढ़-संकल्पी होने के अलावा अपनी सीमाओं का अहसास भी रखते हैं ।

इस शानदार ब्रीफिंग के बाद मैं कलकत्ता वापस आ गया और कुछ दिनों तक विभिन्न

एस्कोर्ट ड्यूटियों में लगा रहा। १४ जुलाई, १९४३ को गुजरांवाला, झेलम, चकलाला, रावलपिंडी, लाहौर का चक्कर लगाकर रायसाहब भी कलकत्ता आ गये। मुझे उनके साथ फिर नत्थी कर दिया गया। १६ जुलाई, १९४३ की रात सूरमा मेल से हम दोनों ढाका रवाना हुए। सड़क तो थी नहीं, वरना २३५ किलोमीटर लंबा सफर पांच घंटे में तय कर लेते। रेल के रास्ते ३६० किलोमीटर लंबी यात्रा में चौदह घंटे लग गये। रात एक स्टेशन पर उतरकर स्टीमर से नदी पार की। तब कहीं सुबह ढाका पहुंचे।

रंगपुर के मिलिटरी इंटेलिजेंस अफसर कर्नल ई. ग्रेगरी को इत्तिला दी ही जा चुकी थी, अतः वह भी वहीं मौजूद थे। उन्होंने नारायणगंज, टिपरा (कोमिल्ला), चांदपुर, नोआखाली, फैनी, नजीरहाट, दो हजारी और चटगांव के कुछ विश्वसनीय व्यक्तियों की फेहरिस्त रायसाहब के हवाले की। उन्हीं के माध्यम से फोर्स वन-थ्री-सिक्स में उनकी नियुक्ति करके उन्हें बर्मा के किसी भी तटीय प्रदेश में जासूसी करने के लिए भेजे जाने की तजवीज थी। वे सभी निम्न वर्ग के मल्लाह, मछुआरे, कसाई। केवल चटगांव के ही दो बौद्ध थे। शेष सभी कट्टर मुसलमान।

मानसून जोरों पर था। जनरल गिफर्ड ने जनरल इरविन से ईस्टर्न आर्मी के कमांडर का चार्ज ले लिया था। बारिश थमते ही अराकान पर जबरदस्त हमले की तैयारियां हो रही थीं। फोर्स वन-थ्री-सिक्स की सिफारिश पर जनरल गिफर्ड ने सेना में तीन बातों पर विशेष ध्यान दिया— १. लड़ाई के मैदान में झोंकने से पहले सैनिकों को मुकम्मिल तालीम दी जाए, २. सैनिकों को भूखे-प्यासे न लड़ने दिया जाए, और ३. सैनिकों के टूटने से पहले ही नये सैनिक दस्ते मोरचे पर रवाना किये जाएं।

पांचवीं और सातवीं डिवीजनें जोरदार हमले की तैयारियां कर रही थीं। छब्बीसवीं और सत्तरहवीं डिवीजनें रिजर्व में रखी गयीं। सुंदरवन फलोटिला रसद और गोला-बारूद ढोने में लग गया। न हवाई जहाज उपलब्ध थे, न समुद्री जहाज। ८१वीं पश्चिमी अफरीकी डिवीजन को भी इस आक्रमण में शामिल कर लिया गया, क्योंकि कालादान नदी के पूर्वी तट पर अलग से घेरा डालना था। उन दिनों ये अफरीकी सैनिक महाबलेश्वर (महाराष्ट्र) की पहाड़ियों में जंगल-युद्ध का प्रशिक्षण ले रहे थे। बजाय समतल स्थान के इन हब्शियों को जंगल ही प्रिय था। सामान ढोने के लिए न तो उनके पास कोई सवारी थी, न जानवर। अपना माल-असबाब, हथियार-गोलियां, ग्रिनेड स्वयं ही ढोने में उन्हें विशेष आनंद आता था।

बंगाल की सड़ी गरमी, जानलेवा मच्छर और तूफानी बारिश के बीच रायसाहब के साथ मुझे तीन सप्ताह तक नारायणगंज, टिपरा, नोआखाली, फेनी, फाजिलपुर, नजीरहाट, दो हजारी और चटगांव का दौरा करना पड़ा। कहीं रेल से जाते, तो कहीं सड़क, नाव या स्टीमर से। कई बार जोंकों-भरी दलदल भी पैदल पार करने की नौबत आयी। इसी अवसर पर मुझे रायसाहब की दरियादिली, उनका अदम्य साहस देखने को मिला। इस बुढ़ापे में भी थकान का नाम नहीं। गुप्तचरी, प्रतिगुप्तचरी की बारीकियां, दांव-पेंच समझाते न अघाते।

सुंदरवन की ओर से संभावित जापानी

खतरा था ही, अतः वहीं हरिनघाट, पटुआखाली, बाकरगंज, बारीसाल, नजीरपुर, भोला, दौलतखाना, कुतुबदीया, मेखखेल और कॉक्स बाजार में रायसाहब ने कुछ एजेंट बनाये। अधिकांशतः स्थानीय मल्लाह और मछुए थे। अपने पेशे के अलावा वे दुश्मन की घुसपैठ से चौकन्ने भी रहते थे। पांच सौ से एक हजार रुपये मासिक वेतन पर नौ एजेंट नियुक्त किये गये थे। दो प्रमुख गुप्तचर भी बनाये, जिनके बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं। उन नौ एजेंटों के नाम थे— जमील, रशीद, जलील, उस्मान, हलाल, वाचल, गफ्फार, सरवर और सराई। अंतिम दोनों व्यक्ति पढ़े-लिखे नौजवान थे। सरवर मुसलमान और सराई बौद्ध। ये दोनों ही चटगांव निवासी। उनके परिवार के लिए दो-दो मास का अग्रिम वेतन देकर हम दोनों को अपने साथ कलकत्ता लाये। शेष को अलग से भिजवाया।

एक सप्ताह के अंदर इन्हें दो दलों में बांटकर ट्रेनिंग के लिए भारत में खड़गवासला, बनानारिज और कालिमपोंग के निकटवर्ती बीहड़ पहाड़ी जंगलों में, तथा लंका में माउंट लवीनिया, अंगुलाना रवाना किया गया। जापान-अधिकृत बर्मा में तोड़फोड़ के लिए प्रशिक्षण निहायत जरूरी था। तभी तो उन्हें विस्फोटक पदार्थों और गुप्त स्याहियों का प्रयोग करने, स्थल और नदी-नालों में सुरंगें बिछाने, रेडियो ट्रांसमीटर से खुफिया खबरें भेजने की ट्रेनिंग दी गयी थी।

पहली पार्टी में जमील, रशीद, जलील और उस्मान थे तथा दूसरी में हलाल, वाचल, गफ्फार और सराई। पहले दल का नेता था उस्मान और दूसरे का सरवर। दोनों पार्टियों को अलग-अलग तारीखों में क्रमशः कुतुबदीया और कॉक्स बाजार से बर्मा के पश्चिमी तट पर किसी खास जगह के लिए नावों पर रवाना किया गया था। दोनों दलों के रामरी द्वीप तक तो सकुशल पहुंचने के संदेश मिले, फिर बाद में पहले दल का कुछ पता न चला। शायद, जापानियों को उनकी गंध मिल गयी थी और उन्हें वहीं भून डाला गया हो।

दूसरी पार्टी के दो एजेंट किसी प्रकार मरते-खपते चेदुबा द्वीप पहुंचने में सफल हुए। कुछ समय बाद तोंगुप, ग्वा होते हुए हेनजाडा पहुंचे। बर्मा स्टेट रेलवे का यह एक महत्त्वपूर्ण जंक्शन स्टेशन था। यहीं से रेल, सड़क और नदी के रास्ते जापानियों का फौजी साजोसामान उत्तरी तथा पश्चिमी सैनिक मोर्चों पर भेजा जाता था। यहीं दोनों ने कुलीगिरी का पेशा अपनाया। कुछ दिनों तक तो बड़ी बेफिक्री और लगन के साथ अपना छदमवेश पुख्ता करने में लगे रहे। फिर फौजी साजो-सामान की टोह लेने में लग गये। जापानियों का एक खास नियम था कि अपना सामान वे स्वयं ही वैगनों में लादते थे। सुरक्षा के इस मामले में न तो वे बर्मियों का यकीन करते थे, न ही प्रवासी भारतीयों का।

एक दिन दोनों ने एक ऐसे वैगन में विस्फोटक (आग लगानेवाली) सामग्री लाद दी, जिसे शंटिंग के लिए यार्ड में गोला-बारूद से लदी मालगाड़ी के बगल में रुकना था। निर्धारित समय पर इस खुले वैगन में आग लगी और उसकी लपटों ने फौजी वैगनों को भी लपेट में ले लिया। यार्ड समेत पूरी गाड़ी

जलकर भस्म हो गयी। गोला-बारूद फटने से बड़ी ही तबाही हुई। सैकड़ों जानें गयीं। हजारों घर बरबाद हुए। इस विध्वंस से जापानियों के पैर लड़खड़ा गये। इस असाधारण कारगुजारी पर सर गाल्विन स्टुअर्ट ने टिप्पणी दी— 'सेबोटाज ऑफ ए वैरी हाईऑर्डर' (बहुत ही उच्च श्रेणी का विध्वंस) रायसाहब की शोहरत में चार चांद लग गये।

रायसाहब द्वारा नियुक्त किये गये कुछ एजेंटों को कर्नल एफ.एफ. बीमिस ने भी पनडुब्बियों के जरिये बैंकॉक भेजा था। उनमें एक था चटर्जी। उसका देहांत हो चुका है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों में बनाये गये १५० एजेंटों में उसका भी नाम था। कइयों की भरती रायसाहब ने गहरी छानबीन के बाद ही की थी। इस सिलसिले में यह बताना जरूरी है कि साम्यवाद से हिटलर को सख्त नफरत थी। तभी तो एक तीर से दो शिकार करने के उद्देश्य से सोवियत यूनियन पर धावा बोलकर इंगलैंड

एजेंटों ने निहायत शानदार काम किये। हिटलर की गुप्तचर संस्था 'गेस्टपो' के कई प्रमुख एजेंटों को बेनकाब किया।

को कमजोर करने की ठानी। २२ जून, १९४१ को रूस पर तीन तरफ से आक्रमण करके तुरंत यूक्रेन प्रदेश पर जरमन प्रभुत्व कायम किया। इस अवसर पर भारतीय कम्युनिस्टों को भी गिरगिट की भांति रंग बदलते देर न लगी। तुरंत उनके महामंत्री पूर्णचंद्र जोशी ने ब्रिटिश सरकार के होम मेंबर मिस्टर मैक्सवैल को संदेश भिजवाया कि इस 'जन-युद्ध' (पीपुल्स वार) में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी उनका पूरा-पूरा समर्थन करती है। आखिर, अब उन्हें जेलों में क्यों सड़ाया जा रहा है ?

पोलित ब्यूरो के इस प्रस्ताव दिनांक १५ दिसंबर, १९४१ को अंगरेजों ने मान लिया,

बुद्धि-विलास के उत्तर

१.नृसिंह (चौथा), राम (सातवां) और कृष्ण (आठवां), २. क. अल बरूनी, महमूद गजनवी के साथ, ख. 'तारीख-उल-हिंद', ३. क. दिल्ली में बल्लीमारान और गली कासिम जान के नुक्कड़ पर, ख. चौंसठ खंभा के पास, ४. क. ऊधम सिंह ने—हिंदू, मुसलमान, सिख एकता के प्रतीकस्वरूप, ख. जलियांवाला कांड के समय पंजाब के गवर्नर सर माइकल ओडायर को कैक्सटन हाल, लंदन में १९४० में गोली से मारा था, मौत की सजा दी गयी, ५. क. मूंदड़ा कांड—जीवन बीमा निगम ने मूंदड़ा की कंपनी के शेयरों को खरीदकर उसके दामों को बढ़ाने की कोशिश की, ख. कृष्णमाचारी, ६. क. ८८ से. मी., ख. ७९ से ९७ से. मी. तक, ७. क. साढ़े ८ अरब, ख. चावल, ८. क. जोर्डन तथा इस्राइल के बीच, ख. वाशिंगटन में—अमरीकी राष्ट्रपति के साक्ष्य में, ९. केन्या के विलियम सिजेई ने ओस्लो में, २६ मिनट ५२.२३ सेकंड में (२२ जु.), १०. जापान के योको हामा में—११० मीटर ऊंचा, ४८० व्यक्ति बैठ सकते हैं, ११. डॉल्फिन (मछली)

क्योंकि सोवियत यूनियन ने इंगलैंड, अमरीका और फ्रांस की ओर मैत्री का हाथ बढ़ाया था। इसी आधार पर २९ जुलाई, १९४२ को अंगरेजों द्वारा लगाये गये सभी बंधनों से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को मुक्त कर दिया गया। तभी तो अंगरेजों ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को फासिस्टों के खिलाफ पूर्वी युद्ध क्षेत्र की हर 'फील्ड' में जीभर के झोंका। यही कारण था कि उन दिनों न तो कोई विद्यार्थी आंदोलन हुआ, न मजदूर संघर्ष। ब्रिटिश सरकार की खाद्य-नीति का भी खुले-दिल से समर्थन किया गया। कैसी विडंबना थी कि जब बंगाल में लाखों, करोड़ों भूख से तड़प-तड़पकर प्राण त्याग रहे थे, नयी दिल्ली में भारत सरकार के फूड मेंबर सर जे.पी. श्रीवास्तव जमुना तट पर कराये जा रहे यज्ञ में टनों खाद्यान्न और शुद्ध घी स्वाहा कर रहे थे। अभी तक मुसलिम लीग ही कांग्रेस को गाली देती थी, अब कम्युनिस्टों ने भी उनके सुर में सुर मिलाकर कांग्रेस के खिलाफ जहर उगलना शुरू कर दिया। अंगरेज कम्युनिस्टों को आर्थिक सहायता देते थे—

१. ग्रिंडले आरबुथनट्स, नयी दिल्ली,
२. टॉमस कुक एंड सन, नयी दिल्ली और
३. लॉइड्स बैंक, नयी दिल्ली के माध्यम से।

उन १५० एजेंटों में अधिकांश मद्रास और उड़ीसा निवासी थे, शेष बंगाल के। उन्हें तोड़फोड़, आगजनी, फील्ड क्राफ्ट की मुकम्मिल ट्रेनिंग दी गयी थी। वे बर्मा या किसी अन्य जापान अधिकृत देश में कितने सफल रहे, इसका मुझे तनिक ज्ञान नहीं। रायसाहब से पूछने की हिम्मत भी नहीं हुई। संस्था के नियमों में जकड़ा जो था।

रायसाहब ने मिकेंजी को केवल अपने अट्ठारह एजेंटों के विषय में ही बताया था। शेष तो उनके अलावा कोई जान ही न पाया। भारत विभाजन के बाद अंतिम बार रायसाहब से दिल्ली में भेंट हुई थी। उस शाही तबियत इनसान को पहली बार झुकी कमर लिए खाली हाथों देखा था। जिस शख्स ने पैसा सदा पानी की तरह बहाया, वही चांदनी चौक में बनियान खरीदते वक्त फुटपाथ पर बैठे एक हाकर से मोल-भाव कर रहा था। संभवतः अब वे इस संसार में नहीं हैं। कभी-कभी तो ऐसे जिंदादिल और काबिल जासूस की याद आ ही जाती है।

— रुंगटा बिल्डिंग, सिनेमा रोड,
गोरखपुर-२७३००१

लुप्त होने को है साइबेरियाई सारस

इस पृथ्वी पर रहने वाले साइबेरियाई सारस अब लुप्त होने को ही हैं। दस हजार किलोमीटर की यात्रा करके ये साइबेरिया से भरतपुर आते हैं। भरतपुर के केवलादेव घना राष्ट्रीय उद्यान में १९७१-७२ में ७७ साइबेरियाई सारस आये। फिर १९७९-८० में ३३ ही आये। बाद में १९९२-९३ में केवल ५ आये तथा १९९३-९४ में एक भी सारस नहीं आया।

—लक्ष्मी सोनी

कादम्बिनी क्लब

शिवता संहारक न बन जाए

पीकर वैषम्य का गरल,
शिवता संहारक न बन जाए ।

नीलकंठ बनी है मनुजता,
बैठी कैलाश पर अभावों के ।
श्रद्धा को छल रही दनुजता,
जर्जर विश्वास दुष्प्रभावों से ।
ज्वालाएं तांडव करतीं दीखें,
सपनों के जल रहे महल ।
शिवता संहारक न बन जाए ।

घेरतीं दिशाओं को शंकाएं,
पग-पग पर फैलाकर अंगारे ।
धधक-धधक जलती हैं आशाएं ।
हाथ मल रही हैं द्वारे-द्वारे ।
अनजाने कंठों की चीखों से,
हिल उठता है अंत स्तल ।
शिवता संहारक न बन जाए ।

जगमग दीवारों की बाहों में,
अविष्ठित आतंकित मन ।
भटका ऊंची-नीची राहों में,
अकुलाता कंपित उन्मन ।
ज्वलित प्रश्न जीवन के मूल्यों के,
प्राणों को पीते पल-पल ।
शिवता संहारक न बन जाए ।

—पं. नरहरिदत्त बसेड़िया
ज्योतिष कार्यालय साईंखेड़ा,
जिला—नरसिंहपुर

अब

मुसकराहट में घुला विष झर रहा अव्यक्त
झेलता रहता चुभन, निर्बल बना अब वक्त

जल रहा है बदन खाकर दंभ का आघात
अरुण मुखमंडल बना अब श्याम दल जलजात

भूमि पद तल से खिसकती जा रही है मौन
दे सहारा त्वरित आकर है भला अब कौन ?

अब अनिच्छा की लहर है उठ रही सब ओर
भोर का मृदु विहग कलरव बन गया कटु भोर

होंठ पर अब छंद मधु होते नहीं अभिव्यक्त
हृदय निष्ठुर बन गया है, अधर पर है रक्त

कंठ हैं प्यासे बना मौसम बड़ा बेशर्म
बर्फ पानी में बदल अब बन गयी है गरम

घिर गयी अब हृदय में काली घटा घनघोर
दिख नहीं पड़ता अंधेरे में चलें किस ओर

—कैलाश चंद्र
कादम्बिनी क्लब इसरी बाजार (गिरिडीह)



व्यंग्य : प्रदीप सवाई-पटेलाबाद

सांस्कृतिक समाचार

राष्ट्रपति द्वारा गीता फॉर आल का विमोचन

राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने कवि लेखक पी. डी. मिश्र, प्रबंध संचालक, सहकारी शक्कर कारखाना कैलारस जिला मुरैना द्वारा लिखित पुस्तक 'गीता फॉर आल' का लोकार्पण किया। राष्ट्रपति ने कृति का विमोचन करते हुए कहा कि गीता व्यावहारिक समाजशास्त्र का ग्रंथ है। उन्होंने लेखक को हार्दिक बधाई दी एवं प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर दिल्ली तथा भोपाल के अनेक आध्यात्म व साहित्य-क्षेत्र के विद्वान उपस्थित थे।

म. प्र. संस्कृति परिषद के पूर्व सचिव डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी द्वारा संस्कृत भाषा में काव्यांजलि का सस्वर गायन किया गया तथा श्री मिश्र द्वारा की गयी रचना की पृष्ठभूमि से अवगत कराया गया।

१५वां पंडित दुर्गाप्रसाद दुबे पुरस्कार १९९४ समारोह

१५वां पंडित दुर्गा प्रसाद दुबे पुरस्कार १९९४ हिंदी के विद्वान, शिक्षक व छात्र-छात्राओं को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल मोतीलाल वोरा ने प्रदान करते हुए कहा कि हिंदी के विकास व उत्थान में पंडित दुर्गाप्रसाद दुबे पुरस्कार का सराहनीय योगदान है। नरेन्द्र मोहन संपादक दैनिक जागरण ने अध्यक्षता करते हुए कहा—क्षेत्रीय भाषाओं को अंगरेजी का स्थान ले लेना चाहिए, तभी राष्ट्र समृद्धिशाली होगा। संस्थापक अध्यक्ष श्री के. ए. दुबे पद्मेश ने कहा कि १९८० से एक ही मंच पर एक ही पुरस्कार से शिक्षक व छात्र सम्मानित होते हैं।



डॉ. पी. के. तिवारी सहायक आयुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. विकास द्विवेदी, डॉ. सुजाता वर्मा, आनंद कुमार मिश्र, दिनेश चंद्र पाठक आदि शिक्षाविद तथा १२ छात्रों एवं श्री राजेन्द्र अवस्थी संपादक कादम्बिनी को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रति वर्ष १३ अगस्त को यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। अब तक ६१ शिक्षकों, १८९ छात्र-छात्राओं को यह पुरस्कार मिल चुका है।

स्व. शंकर लाल द्विवेदी स्मृति

सासनी (अलीगढ़)। बृजभाषा के मूर्धन्य कवि स्व. श्री शंकर लाल द्विवेदी की पुण्य तिथि के अवसर पर उनकी स्मृति में एक अखिल भारतीय विराट कवि सम्मेलन का आयोजन साहित्यिक संस्था साहित्य विकास परिषद द्वारा किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन समाजसेवी पं. प्रकाश चंद शर्मा ने किया। गीतकार श्री किशन सरोज ने स्व. द्विवेदी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर एक स्मारिका का विमोचन गीतकर श्री सोम ठाकुर द्वारा किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता कवि पं. नाथूराम शर्मा 'शंकर' के पौत्र सुकवि श्री कृपाशंकर शर्मा 'कृपाचार्य' द्वारा की गयी। सम्मेलन का प्रारंभ श्री मुरारी लाल शर्मा की सरस्वती वंदना से किया गया। तत्पश्चात श्री प्रदीप प्रशांत ने काव्य पाठ किया।

इनके अतिरिक्त श्री राहुल द्विवेदी, श्री कामेश शर्मा, श्री सुधीर पचौरी, श्री रघुवीर सहाय 'चातक', श्री मंगल पांडे, श्री महावीर सिंह, श्री देशराज सिंह 'राना', श्री महेश चंद्र गुप्त आदि स्थानीय कवियों ने भी अपना काव्य पाठ प्रस्तुत किया। सम्मेलन के अंत में संस्था के प्रचार मंत्री श्री आशीष द्विवेदी ने सभी का आभार प्रकट किया।



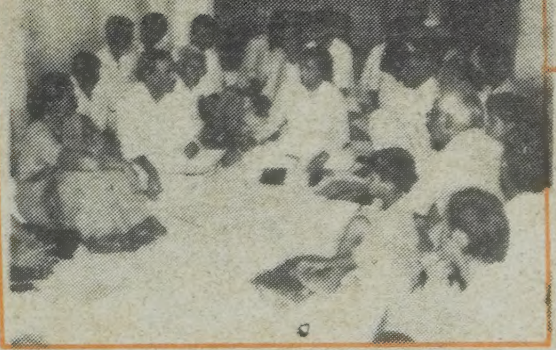
रमेश कृष्णन व बहादुर प्रसाद

के. के. बिड़ला फाउंडेशन पुरस्कार

विख्यात टेनिस खिलाड़ी रमेश कृष्णन और प्रसिद्ध धावक बहादुर प्रसाद को के. के. बिड़ला फाउंडेशन के वर्ष १९९३ के खेल-कूद पुरस्कार के लिए चुना गया है। प्रत्येक पुरस्कार के साथ ५०,००० रुपये की राशि दी जाती है।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी में सुधार

दिल्ली। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के सभागार में स्थापित गोस्वामी तुलसीदास, गुरुनानक देव, मिर्जा गालिब, अमीर खुसरो एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के तैलचित्रों का अनावरण किया। उन्होंने 'शिक्षा संस्कृति एवं आम आदमी' विषय पर उद्घाटन भाषण देकर लाइब्रेरी द्वारा स्थापित व्याख्यान माला का श्रीगणेश किया। श्री शंकर दयाल सिंह, सांसद तथा अध्यक्ष, दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उन्होंने लाइब्रेरी के विस्तार की भावी योजनाओं की जानकारी दी। साथ ही व्याख्यान माला के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लाइब्रेरी के सभागार में प्रमुख विद्वानों द्वारा पुस्तकों तथा अन्य सम-सामयिक विषयों पर महीने में एक बार व्याख्यान दिये जाएंगे। इस कार्यक्रम के द्वारा आम आदमी को ज्वलंत विषयों की जानकारी होगी और सामान्य जनता इससे लाभान्वित होगी। इस अवसर पर श्री साहिब सिंह वर्मा, विकास एवं शिक्षा मंत्री, दिल्ली सरकार ने कहा कि दिल्ली के लिए पुस्तकालय विस्तार की योजना सरकार के विचाराधीन है। निदेशक, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने लाइब्रेरी द्वारा चलाये जा रहे क्रियाकलापों की जानकारी दी।



मातृ काव्य सध्या

हिंदी प्रचार सभा मथुरा के तत्वावधान में स्व. श्रीमती रानी देवी बघेल की पांचवीं पुण्य तिथि पर डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ (पूर्व प्राचार्या के. आर. कन्या महाविद्यालय मथुरा) की अध्यक्षता में एक मातृ काव्य संध्या का आयोजन किया गया।

इसका संयोजन हरी सिंह पाल, कार्यक्रम अधिशासी, आकाशवाणी मथुरा तथा संचालन डॉ. कृष्णावतार उमराव विवेकनिधि ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री गिरीश चंद्र भटनागर केंद्र निदेशक, आकाशवाणी मथुरा बृज भारती के संपादक डॉ. भगवान सहाय पचौरी, आबकारी आयुक्त एवं कवि श्री रघुवीर सिंह 'अरविंद', अ. भा. साहित्यकार अभिनंदन परिषद के निर्देशक डॉ. श्याम सुंदर सुमन उपस्थित थे। काव्य संध्या का शुभारंभ डॉ. सोहन लाल शीतल की सरस्वती वंदना से हुआ। इसमें सर्वश्री मदन मोहन उपेन्द्र, शमीम मथुरावी, गीतकार, कमलेश द्विवेदी, महेश चंद्र जैन ज्योति, लोक कवि गौरी शंकर दुबे, संतोष कुमार सिंह, भगवान दास आजाद, कुंदन लाल पंकज, लाखन सिंह 'बेधड़क', पं. घनश्याम 'सुदामा', गजलकार महेन्द्र सक्सेना 'हुमा', डॉ. सत्यदेव 'आजाद' (व. उद्घोषक आकाशवाणी) होरी लाल 'प्रेमी', मुनीश मदिर, हरी सिंह पाल, रघुबीर सिंह अरविंद, डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ, डॉ. विवेकनिधि ने मातृ शक्ति को नमन करते हुए अपनी काव्य रचनाएं प्रस्तुत कीं।

बढ़ रही अश्लीलता

घड़साना, श्रीगंगानगर। संयोजक सोहनलाल कटारिया के आलेख 'भारतीय संस्कृति पर हमला' पर चर्चा हुई। सर्वश्री कुलदीप कुमार मंडन, जगदीशलाल, निरंजनलाल अग्रवाल, बजरंग सारस्वत भी इस विषय पर बोले।

समस्यापूर्ति—१८१



प्रथम पुरस्कार

बिखरा

जब रात बढ़ी तब बात बढ़ी,
स्पर्श मिला सिहरा-सिहरा ।
रीता घट भर कर छलक उठा,
तन पुष्प भांति निखरा-निखरा ।
फिर रात गयी और बात गयी,
शाश्वत गाथा दुहरायी गयी ।
रजनी के प्रियतम भोर भये,
सब छोड़ गये बिखरा-बिखरा ।

— प्रेम शंकर शर्मा

द्वारा : भारतीय स्टेट बैंक
रेलवे कॉलोनी
गोरखपुर (उ.प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

जिनको सींचा है माली ने अपने रुधिर कणों से ।
जिन्हें उबारा है सुमनों ने दुख के सभी क्षणों से ॥
बहुरंगी मनकों से ग्रंथित है यह अनुपम माला ।
किंतु पड़ी जो गांठ, हृदय को है कलुषित कर डाला ॥
आपस में गुत्थमगुत्थी से हुआ सभी को खतरा ।
इसीलिए यह देश हमारा आज है बिखरा-बिखरा ॥

— श्रीमती सोना सिंह

द्वारा जगदीश चंद्र तालुकदार
वाया इंटर प्राइज
तरुण नाम दिसपुर, गुवाहाटी-५

तृतीय पुरस्कार

सोह रहा शुभ कलश अनोखा
प्रीत-कूप-सा गहरा
कदली-पत्र पुष्प दल मंडित
जैसे स्वप्न सुनहरा
आभूषण क्षण में देते हैं
रूप-प्रिया का निखरा
किस दमयंती कन्या का
शृंगार-हार है बिखरा

— डॉ. नरेश प्रसाद वर्मा

बैरका भवन, लखीबाग, मानपुर
पो. बुनियादगंज-८२३००३
गया (बिहार)

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-२०
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित